॥ श्रीहनुमते नमः ॥

श्रीहनुमान कथा

विजय कौशल

॥ श्रीराम ॥

॥ सागर पर श्री हनुमान-कथा ॥

सेतु-बन्धन

(आत्मा और परमात्मा के बीच)

श्री विजयकौशल जी के श्रीमुख से

श्री हनुमान कथा

सम्पादक

आचार्य बालकृष्ण शास्त्री

दिनांक : 19 जून, 2009 से 28 जून, 2009

स्थान : स्टार क्रूज, महासागर

प्रकाशक

श्री गुरूदेव सेवा ट्रस्ट

निकुंजवन, पानीघाट, परिक्रमा मार्ग,

श्रीधाम वृन्दावन

मो- 09412226493, 09759854975

संस्करण : प्रथम संस्करण-2014

न्यौछावर : ₹ 300

मुद्रक :

सोना प्रिंटर्स प्रा. लि.

एफ 86/1, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया

फेज-1, नई दिल्ली-110 020

दूरभाष: 011-26811313, 47219999 www.sona.in

आदरणीय बन्धुओं ! बहिनों !!

एक बार **पूज्यपाद स्वामी राजेश्वरानन्द जी महाराज** के श्रीमुख से **श्री हनुमत् चरित** सुनकर मन को यह प्रेरणा हुई कि अब लम्बे समय तक **श्रीहनुमानजी** की कथा का ही प्रसाद बाँटा जाए। इसी क्रम में इसका प्रथम शुभारम्भ **महासागर** की लहरों पर स्टार-क्रूज में बैठकर हुआ। **दिव्य प्रेम सेवा मिशन** हरिद्वार द्वारा प्रायोजित इस कथा में सात दिन तक **श्रीहनुमानजी महाराज** के परम पावन तेजस्वी चरित्र का दर्शन हुआ।

यह पावन प्रसाद पुस्तक के रूप में सभी को प्राप्त हो जाए इस भाव से हमारे **आचार्य बालकृष्ण शास्त्री जी** एवं **श्री पवन नन्दन ज्ञवाली जी** ने परिश्रम पूर्वक इसे पुस्तक के रूप में प्रकट किया है। श्री विनोद नारायण जैन जिन्होंने इस ग्रन्थ में वर्तनी संशोधन का कार्य सम्पन्न किया। इन सभी महानुभावों के लिए बार-बार साधुवाद।

अब यह प्रसाद आपके हाथों में है। वैसे तो प्रसाद का स्वाद नहीं लिया जाता, पर आपको कैसा लगा, यह आप जानें।

शुभ भावनाओं सहित

वंदउँ गुरू पद पदुम परागा

सुरूचि सुबास सरस अनुरागा

कथा प्रेरक-श्री आशीष जी

विघ्नहर्ता श्री गणेशजी की वन्दना

गाइए गणपति जग वन्दन, शंकर सुवन भवानी के नन्दन।
सिद्धि सदन गजबदन विनायक, कृपासिन्धु सुन्दर सब लायक॥
मोदक प्रिय मुद मंगलदाता, विद्या बारिधि बुद्धि विधाता।
माँगत तुलसीदास कर जोरे, बसहुँ राम सिय मानस मोरे॥

श्रीराम स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव-भय दारुणम्।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज, पद कंजारुणम्।।
कन्दर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुन्दरम्।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक-सुतावरम्।।
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकन्दनम्।
रघुनन्द आनन्दकंद कोशलचंद दशरथ-नन्दनम्।।
सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारु अंग बिभूषणम्।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणम्।।
इति वदति तुलसीदास शंकर शेष-मुनि-मन-रंजनम्।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनम्।।
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो।
करुणा निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली।।
श्रीराम जय राम जय जय राम। श्रीराम जय राम जय जय राम।।
मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहु सो दसरथ अजिर बिहारी।।
जै जै जै हनुमान गौसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।
जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा। करहु सो बेगि दास मैं तोरा।।
दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।।

॥ अथ हनुमान कथा॥

सुनु कपीस लंकापति बीरा। केहि बिधि तरिअ जलधि गम्भीरा॥
संकुल मकर उरग झष जाती। अति अगाध दुस्तर सब भाँती॥

ये चौपाइयां उस प्रसंग की हैं जब भगवान् लंका-विजय का संकल्प कर चले हैं और सागर के किनारे पहुँचे हैं। प्रभु सागर के किनारे विराजमान हैं। चार सौ कोस का विशाल अथाह सागर हिलोरें मार रहा है। प्रभु थोड़े से चिन्तातुर भाव में हैं। बैठे-बैठे प्रभु सोच रहे हैं कि अब सागर कैसे पार हो? प्रभु ने बाँये देखा, दाँये देखा। एक ओर सुग्रीवजी विराजमान हैं तथा एक ओर लंकाधिपति विभीषण महाराज विराजमान हैं। श्रीहनुमानजी सेवा में हैं। लक्ष्मण जी रक्षा में खड़े हैं। प्रभु ने सबको देखा और प्रश्न किया?

सुनु कपीस लंका पति बीरा। केहि बिधि तरिअ जलधि गम्भीरा॥
संकुल मकर उरग झष जाती। अति अगाध दुस्तर सब भाँती॥

प्रभु ने चिंता के भाव से पहले सुग्रीवजी की ओर निहारा, सुन कपीस! हे कपियों के ईश्वर हे सुग्रीव जी! फिर लंकाधिपति महाराज विभीषण की ओर देखकर कहा है, हे लंकाधिपति! और यह **'बीरा'** गोस्वामीजी ने शायद हनुमानजी के लिए संकेत किया है। हे वीर हनुमान् जी **'केहि विधि तरिअ जलधि गम्भीरा'** इतना गहरा सागर! अथाह दूर-दूर तक अनन्त जलराशि और इसके अन्दर अनेक कुलसहित भयानक जलचर **"संकुल, मकर उरग झष जाती"** इसको कैसे पार करें? **"केहि विधि तरिअ?"** इसको कैसे पार करें? बड़ा गम्भीर प्रश्न प्रभु ने उपस्थित किया। मुझे ऐसा लगता है कि भगवान् को ये सागर पार करना क्यों कठिन लगता है? जिसका नाम भवसागर पार कराता हो और जिसका काम भवसागर पार कराना हो उसको यह सामान्य सागर

पार करने के लिए चिन्तातुर होना पड़ा, ये शायद लीला का दृश्य है। सच तो यह है कि भगवान् यह प्रश्न हम सबके पार होने के लिए कर रहे थे। हम सब भवसागर में डूबे हैं और जितने इस क्रूज, इस विशाल जहाज की यात्रा पर आए हैं वो दो-दो महासागरों में डूबे हैं। भवसागर में पहले से डूबे थे, प्रशान्त महासागर में अब आकर खड़े हो गए। मीलों दूर जहाँ तक दृष्टि जाती है, वहाँ तक अथाह सागर हिलोरें मारता हुआ ऐसा नील वर्ण लगता है जैसे आकाश-भूतल पर अवतरित हो गया हो। तो प्रभु ने जब सबकी ओर देखा, सबने अपने-अपने अनुसार, अपनी मति के अनुसार, बुद्धि के अनुसार कहा भगवन्! यह सागर आपका कुलगुरु है, इसकी विनय-प्रार्थना करें, हाथ जोड़कर इससे मार्ग की कामना करें, यह हमको मार्ग देगा। प्रभु को तो अच्छा लगा, लेकिन लक्ष्मणजी को अच्छा नहीं लगा। लक्ष्मणजी के मन को यह सुहाया नहीं, लक्ष्मणजी ने कहा, कैसी कायरों जैसी बात है महाराज? **दैव-दैव आलसी पुकारा!** देवताओं को आलसी पुकारते हैं। हम तो रघुवंशी हैं, हम पुरुषार्थी हैं, हमारे तरकश में अग्निबाण हैं, एक सागर क्या अनन्त सागर सोखे जा सकते हैं। बाण चढ़ाइये ना! प्रभु मुस्कुरा दिए। चूँकि विभीषण जी की बात काटी नहीं जा सकती और लक्ष्मण जी को डाँटा नहीं जा सकता। दोनों की बात रखनी थी। जामवंतजी बुद्धिमान थे, वृद्ध थे और जब संकट आए तब वृद्धों की सलाह जरूर लेनी चाहिए। भगवान् ने जामवंतजी से पूछा आप बताएं सागर कैसे पार करें? जामवंतजी ने कहा महाराज! हमारी सेना में नल और नील नाम के दो शिल्पी हैं। **'शिल्प कर्म जानहिं नल-नीला।'**

आपकी आज्ञा हो तो इस पर सेतु बाँधा जा सकता है, पुल बनाया जा सकता है। बहुत दुस्तर है। प्रभु सोच रहे हैं चार सौ कोस का सागर बिना किसी आधार के पुल बने तो बने कैसे? प्रभु ने संकट मोचन श्रीहनुमानजी की ओर निहारा। हनुमान् जी मुस्कुरा दिए। हनुमान् तुम बोलो न कैसे सागर पार करें? हनुमानजी ने कहा प्रभु! अनुभव ही सबसे ज्यादा प्रमाण हुआ करता है। इसमें तनिक भी चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं।

मेरे पास इस सागर को पार करने का अनुभव है और मैं ऐसा मानता हूँ कि मेरा अनुभव सबको पार कर देगा। भगवान् ने पूछा तुम्हारे पास कौन सा अनुभव है–

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं॥

भगवन् यह तो अनुभव सिद्ध है। आपके नाम की महिमा इसको तो क्या हजारों हजार मील लम्बे सागरों को पार करा सकती है। इसकी पुष्टि गोस्वामी जी ने नाम की महिमा में की है–

कलिजुग केवल नाम अधारा। सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा॥

भवसागर पार करने का उपाय श्रीहनुमानजी के पास है। और अगर श्रीहनुमानजी को प्राप्त करना हो तो कौन सा उपाय है। गोस्वामीजी ने कहा है कि यदि हनुमानजी को प्राप्त करना है तो श्री हनुमानचालीसा इसका उपाय है। क्योंकि हनुमानचालीसा हनुमानजी का सिद्ध मंत्र है। हनुमानचालीसा हनुमानजी का सिद्ध ग्रन्थ है। हनुमानजी को प्राप्त करने का यह सिद्ध पंथ है। विश्व का कोई भी हिन्दू, चाहे वह विश्व के किसी भी कोने में रहता हो, वह तीन मंत्र अवश्य जानता है। एक तो वेद का जो महामंत्र है गायत्री मंत्र! इसे हर हिन्दू जानता है और हिन्दू का हर बालक जानता है। आप किसी के भी घर जाइए, छोटे बालक से पूछते हैं कि बेटा कोई कविता सुनाओ तो बालक हाथ जोड़कर **"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्"** सुनाता है। संसार का हर हिन्दू गायत्री मंत्र को जानता है। दूसरे किसी भी उपासना, पद्धति को मानने वाला होगा लेकिन हर हिन्दू **"मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी॥"** इस चौपाई को गाता है। तीसरे शुद्ध हो, अशुद्ध हो, पूर्ण हो, अपूर्ण हो लेकिन संसार का प्रत्येक हिन्दू श्रीहनुमानचालीसा जानता है। लोग कहते हैं कि आजकल युवक धर्म से विचलित हो रहा है लेकिन ऐसी बात नहीं है। युवकों में हनुमानजी तथा हनुमानचालीसा के प्रति आकर्षण दिखाई देता है, यह हनुमानजी की महिमा है।

हनुमानजी को यदि प्राप्त करना है तो हनुमानचालीसा का आश्रय लें। और एक विशेष बात! हर व्यक्ति की कोई न कोई एक निजी पसन्द होती है, रुचि होती है। हनुमानजी की रुचि क्या है? **रामचरित्र सुनवे को रसिया।** हनुमानजी की रुचि है श्रीरामनाम सुनने में। वे रामचरित्र सुनने के रसिक हैं, जब भी सुनते हैं वे भगवान् की मंगलमय कथा सुनते हैं। यह हनुमानजी की रुचि का विषय है। भगवान् जब सुनते हैं तो हनुमानजी की कथा सुनते हैं। हमने ऐसा सुना है। जब युद्ध के समय लंका में प्रभु सायंकाल अवकाश के क्षण में होते थे तो जामवंतजी को अपने पास बुलाते थे और जामवंतजी के श्रीमुख से हनुमानजी की कथा सुनते थे-गोस्वामी जी ने इसका संकेत किया है।

पवनतनय के चरित सुहाये। जामवंत रघुपतिहिं सुनाये॥

भगवान् जब भी सुनते हैं हनुमानजी का चरित्र सुनते हैं और जब भी अपने श्रीमुख से सुनाते हैं तो हनुमानजी की ही कथा सुनाते हैं-

गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई। बार बार प्रभु निज मुख गाई॥

एक निवेदन आपसे और करता हूँ कि जब भी हनुमानजी की कुछ सुनने की इच्छा होती है वहाँ तब श्रीराम कथा होती है और जब भगवान् की कुछ सुनने की इच्छा होती है तब वहाँ हनुमानजी की कथा होती है और मुझे ऐसा लगता है कि भगवान् की अपनी इच्छा रही होगी कि महासागर के बीच में बैठकर शान्त चित्त से हनुमानजी की कथा सुनी जाए और शायद उन्हीं की प्रेरणा से इस कथा का प्रसंग हनुमतचरित्र उठाया जाए, अन्यथा तो कार्ड में जो घोषणा थी वो श्रीरामकथा की थी। आप महासागर में श्रीरामकथा सुनने पधारे हैं लेकिन यहाँ आकर भीतर से प्रेरणा आयी कि श्रीरामकथा नहीं, हनुमानकथा होनी चाहिए और विषय मेरा नहीं है मुझे ऐसा लगता है कि भगवान ही भीतर से बोले कि स्वयं सागर में बैठकर हनुमत चरित्र सुनना चाहता हूँ

और इसी को आधार बनाकर यह हनुमानचालीसा, हनुमानजी का सिद्ध मंत्र, क्योंकि भगवान शिव और पार्वतीजी इसके साक्षी हैं **"होय सिद्धि साखी गौरीसा।"**

हनुमानचालीसा एक सिद्धि प्रदाता ग्रन्थ है, जो यहाँ पर सुनाया जा रहा है। इहलोक व परलोक की सभी प्रकार की मनोकामना को पूर्ण करने वाला है। यह पूरा का पूरा आशीर्वाद से भरा हुआ है क्योंकि हनुमानजी को आशीर्वाद माँ ने दिया है-

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन्ह जानकी माता।।

आशीर्वाद के रूप में हनुमानचालीसा की प्रत्येक चौपाई के अन्दर जानकीजी विराजमान हैं, माँ विराजमान हैं। यह हनुमानजी की शक्ति है जो माँ ने उन्हें प्रदान की है इसलिए हनुमानचालीसा हमें भोग भी दे सकता है और भगवान् से भी मिला सकता है।

राम मिलाय राजपद दीन्हा।

यह भक्ति भी देता है और मुक्ति भी देता है। यह परलोक को भी सम्भालता है और इहलोक को भी सम्भालता है। आदिदैविक, आध्यात्मिक, आदिभौतिक जो भी इच्छा हो यह हनुमानजी के द्वारा, हनुमानचालीसा के द्वारा पूर्ण की जा सकती है। यह भवरोग को मिटाने वाला मंत्र है, इसकी विशेषता है कि इसमें किसी प्रकार के विशेष अनुष्ठान करने की भी आवश्यकता नहीं है। किसी भी देवता को आप प्रसन्न करना चाहेंगे तो बहुत ही विधि-विधान से उनका अनुष्ठान करना पड़ेगा, उसके मंत्र हैं, मन्त्रों की आहुतियां हैं, नियम हैं, बहुत सारी व्यवस्थायें है,तब कहीं जाकर वह देव प्रसन्न होते हैं, कृपा करते हैं, लेकिन श्रीहनुमानचालीसा को सारे विधि-विधान, सारे नियम, सारी व्यवस्थाओं से गोस्वामीजी ने अलग कर दिया और एक ही व्यवस्था दी है-

जो यह पढ़ै हनुमानचालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा॥

गोस्वामीजी महाराज ने लिखा है कि जो यह पढ़ै यानि केवल पढ़िये, इसका कोई और दूसरा विधि निषेध नहीं है, एक ही विधि है कि इसको पढ़िये और एक ही निषेध है कि इसका पठन-पाठन कभी छोड़िए नहीं। जैसे हम अखबार पढ़ते हैं, जैसे हम पत्र-पत्रिका पढ़ते हैं, उसका कोई नियम नहीं होता। अखबार पढ़ते जाते हैं, उसके साथ चाय भी पीते जाते हैं। अखबार पढ़ते-पढ़ते मित्र से बात भी करते जाते हैं। तो जैसे पढ़ने का वहाँ कोई नियम नहीं है ऐसे ही हनुमानचालीसा के पढ़ने का भी कोई नियम नहीं है। कोई पढ़े, कैसे भी पढ़े, कहीं भी पढ़े और कभी भी पढ़े। यह अपना फल देगा ये शत-प्रतिशत गारण्टी है। शिव इसके साक्षी हैं और इसके लिए किसी पात्रता की भी आवश्यकता नहीं है। कोई पात्रता नहीं, एक ही पात्रता है इसका नियमित पाठ करें। नियमित पाठ ही इसकी पात्रता है। बालक पढ़ें, बूढ़े पढ़ें, युवक पढ़ें, युवती पढ़ें, स्त्री पढ़ें, पुरुष पढ़ें, शुद्ध पढ़ें, अशुद्ध पढ़ें, शुभ पढ़ें, अशुभ पढ़ें, जैसे चाहे वैसे पढ़ें, जहाँ चाहें वहाँ पढ़ें और जब चाहें तब पढ़ें। समय की भी कोई मर्यादा नहीं, सुबह पढ़ें, शाम पढ़ें, दोपहर पढ़ें, रात्रि पढ़ें, आसन पर बैठकर पढ़ें, चारपाई पर लेटकर पढ़ें, यह फल देगा।

मज्जन फल पेखिअ ततकाला। काक होहिं पिक बकउ मराला॥

एक विशेषता हनुमानजी की और है, आप हर देवता से हर वस्तु नहीं ले सकते, क्योंकि जैसे केन्द्रीय सरकार की कैबिनेट होती है और हर कैबिनेट मंत्री के पास उसका एक विभाग होता है तो वह अपने विभाग का निर्णायक होता है, वह दूसरे मंत्रालय के अन्दर अपना कोई सुझाव तो दे सकता है, निर्णय नहीं दे सकता, आप जिस देवता की उपासना करेंगे उस देवता के पास जो शक्ति है, जो आशीर्वाद है वही वह आपको दे सकता है, लेकिन हनुमानजी ऐसे देव हैं कि आप इनसे जो चाहें वह प्राप्त कर सकते हैं।

और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई॥

सब प्रकार के सुखों को प्रदान करना यह हनुमानजी के वश में है क्योंकि वें मात्र देव नहीं हैं बल्कि देवाधिदेव महादेव के अवतार हैं। इसलिए आप जो चाहें सो इनसे प्राप्त कर सकते हैं। किसी ने गाया है हनुमानजी के बारे में-

दुनियां में देव हजारों हैं, बजरंग बली का क्या कहना।
इनकी शक्ति का क्या कहना, इनकी भक्ति का क्या कहना।
दुनियां में देव हजारों हैं, बजरंग बली का क्या कहना॥
ये सात समुन्दर लांघि गये, और गढ़ लंका में कूद गये।
रावण को डराना क्या कहना, लंका को जलाना क्या कहना।
दुनियाँ में देव हजारों हैं, बजरंग बली का क्या कहना॥
जब लक्ष्मण जी बेहोश हुए, संजीवन बूटी ले आये।
पर्वत को उठाना क्या कहना, लक्ष्मण को बचाना क्या कहना।
दुनियां में देव हजारों हैं, बजरंग बली का क्या कहना॥
हे भक्तो! इनके हृदय में, सियाराम की जोड़ी बैठी है।
ये राम दिवाना क्या कहना, गुण गाये जमाना क्या कहना।
दुनियां में देव हजारों हैं, बजरंग बली का क्या कहना॥

श्री हनुमानजी अनुपम हैं, अद्वितीय हैं और इसलिए हम हनुमानजी से आराधना करेंगे कि प्रभु आपने जैसे भगवान् को सागर पार लगाया था वैसे ही हमें भी भवसागर पार लगाइए-

सुनु कपीस लंकापति बीरा। केहि बिधि तरिअ जलधि गम्भीरा।।
संकुल मकर उरग झष जाती। अति अगाध दुस्तर सब भाँती।।

इस गम्भीर सागर को कैसे हम पार करें, इसका मार्गदर्शन श्रीहनुमानचालीसा के द्वारा पाएँ। शुभारम्भ में गोस्वामीजी गुरुदेव का आशीर्वाद लेते हैं, जिनकी कृपा से दुर्लभ सुलभ होता है। सद्भाव से हनुमान चालीसा का पहला दोहा–

श्रीगुरुचरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर विमल जसु। जो दायकु फल चारि।।

पहला दोहा श्री से प्रारम्भ हुआ है, क्योंकि श्रीजी महारानी प्रत्येक चौपाई में आशीर्वाद स्वरूप विराजमान हैं। श्री माने सम्पन्नता, श्री माने वैभव, श्री माने सुख, श्री माने समृद्धि। हनुमानचालीसा इन सब गुणों से भरा हुआ है इसलिए श्री गुरुदेव के चरण भी श्री सम्पन्न हुआ करते हैं और भारत का आध्यात्म गुरुदेव के ऊपर ही टिका हुआ है। भारत के आध्यात्म के भवन के नीचे गुरुदेव की कृपा नींव के पत्थर के रूप में विराजमान है। भारतीय आचार्यों ने कहा है कि बिना गुरु के कोई पार हो ही नहीं सकता और इसलिए गोस्वामी जी ने बिल्कुल डंके की चोट पर बोला है कि–

गुरु बिनु भव निधि तरई न कोई। जौ बिरंचि संकर सम होई।।

जब ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी बिना गुरुदेव की कृपा के पार नहीं हो सकते तो हमारी तो हैसियत ही क्या है? एक सिद्धान्त है जैसे बिना मल्लाह की नाव अगर नदी में जाएगी तो अटक सकती है,भटक सकती है उलट सकती है,फँस सकती है, डूब सकती है तो जैसे नौका को सकुशल किनारे तक पहुँचाने के लिए कोई न कोई मल्लाह चाहिए। ऐसे ही संसार रूपी सागर से इस जीवनरूपी नौका को सकुशल किनारे तक पहुँचाने के लिए भी कोई न कोई मल्लाह, केवट चाहिए और शास्त्र में इस मल्लाह, इस केवट को गुरु कहकर

सम्बोधित किया गया है। एक दूसरा और सिद्धान्त है जैसे बिना किसी डाक्टर या वैद्य की सलाह ली गई औषधि कई बार हानिकारक हो जाती है, ऐसे ही बिना सद्‌गुरु के मार्गदर्शन के किया गया भजन भी कभी कभी कुपरिणामकारी हो जाता है। सुपरिणाम की जगह कुपरिणाम देता है क्योंकि ग्रन्थों में मंत्र तो लिखे हैं, उनके विधि, विधान व अनुष्ठान तो लिखे हैं लेकिन अगर अनुष्ठान करते समय कोई व्यवधान आया तो मार्गदर्शन कौन करेगा, मार्गदर्शन शास्त्र नहीं कर सकता। मार्गदर्शन सतगुरु का सान्निध्य कर सकता है इसलिए भजन भी किसी के सान्निध्य में करना चाहिए। जैसे टीवी देखकर योग करने से कई बार हानि हो जाती है योग व्यायाम भी किसी न किसी सद्गुरु के सॉन्निघ्य में करना चाहिए, क्योंकि हर एक की रुचि, प्रकृति, गुण, धर्म, स्वभाव ये अलग-अलग हुआ करते हैं। जैसे हर एक फल हर एक के शरीर को सूट नहीं करता ऐसे ही आसन व्यायाम है। वात, पित्त, कफ ये अवस्थाएं सबकी अलग-अलग हुआ करती हैं। एक जैन आचार्य ने गुरु की महिमा में एक बहुत अच्छी बात बोली है, उन्होंने कहा है कि ''जिनका कोई गुरु नहीं उसका जीवन शुरू नहीं'', जीवन का शुभारम्भ गुरुदेव के आशीर्वाद से होता है, जीवन की शुरूआत किसी न किसी की कृपा से, आशीर्वाद से होती है। वह बहुत सुन्दर उदाहरण देते हैं पतंग और पतंगे का। उन्होंने बताया, पतंग में भी वही अक्षर हैं, पतंगा में भी वही अक्षर हैं, लेकिन दोनों के स्वभाव और परिणाम में अंतर है। पतंगा स्वतंत्र होता है और पतंग परतंत्र होती है, लेकिन स्वतंत्र पतंगा थोड़ी देर में किसी दीपक की लौ पर जलकर राख और खाक हो जाता है। पतंग भले ही परतंत्र होती है, उसकी डोरी दूसरे के हाथों में होती है लेकिन पतंग हमेशा आकाश में उड़ती है। और जब तक पतंग अपनी डोर किसी दूसरे के हाथ में नहीं देती तब तक उड़ नहीं पाती। तो जिनको ऊपर उड़ना है, उनको अपने जीवन की डोर किसी न किसी संत-सद्‌गुरु के हाथों में देनी होगी, अन्यथा स्वतंत्र रहोगे तो पतंगे की तरह संसार की विषय वासनाओं की आग में जलकर राख और खाक हो जाओगे। जीवन की ऊंचाईयाँ यदि प्राप्त करनी हैं, सीढ़ियाँ चढ़नी है, उछाल लगानी है आकाश

की ऊंचाईयों तक जाना है तो जीवन की डोर किसी न किसी संत-सद्‌गुरु के हाथ में चाहिए, कोई ऐसे हाथ चाहिए जो हमको थाम सकें। ऐसे हाथ चाहिए जो हमें अनन्त की ओर उड़ा सकें, कोई ऐसे हाथ चाहिए जो हमारे सिर पर आ सकें, कोई ऐसे हाथ चाहिए जो हमारे सहारे बन सकें, जो हमारी पीठ थपथपा सकें, जो हमारे डगमगाते जीवन को साध सकें, डूबने से बचा सकें, गिरने से बचा सकें, और यह कार्य केवल सद्‌गुरु ही कर सकता है और किसी दूसरे की क्षमता नहीं। मैं हमेशा कथाओं में गाँव का उदाहरण दिया करता हूँ कि जो पशु किसी खूंटे से बंधे होते हैं वे सुरक्षित भी रहते हैं और निश्चिन्त भी रहते हैं लेकिन जो पशु स्वतंत्र रहते हैं वे चिन्तित भी रहते हैं और असुरक्षित भी रहते हैं। जो खूंटे से बंध गया वह निश्चिन्त बैठा जुगाली करता है उसको कोई चिन्ता नहीं होती, चिन्ता उसको होती है जिसने उसे खूंटे से बाँधा है। निश्चिन्त जीवन जीना है, सुरक्षित जीवन जीना है तो किसी न किसी महापुरुष के खूंटे से बंध जाइए। गुरु कहते हैं जो जागा हुआ है वह प्रकाशित है। भारत के ऋषि-मुनियों ,मनीषियों का, कहना है कोई कितना ही विवेकी क्यों न हो लेकिन गुरु के बिना वो जाग नहीं सकता, अगर हम सो रहे हैं तो सोनेवाले को जगाने के लिए भी कोई जगानेवाला चाहिए। सद्‌गुरु और भगवान् यें दोनों सोते जीव को जगाते हैं। हनुमानजी संत हैं इनका एक ही काम है जो सो रहा है उसको जाकर जगायें। श्रीहनुमानजी लंका आए जानकीजी की खोज करने, आवश्यकता नहीं थी खोजने की क्योंकि सीता जी के अपहरण का समाचार गीधराज जटायु श्रीराम को दे चुके हैं कि रावण जानकी जी का हरण करके ले गया है। यह भगवान् को भी मालूम है। इसके बाद भी हनुमानजी क्यों गए? क्योंकि भगवान् को मालूम है लंका में एक भक्त सो रहा है और पता नहीं कितने जन्मों तक सोता रह जाएगा इसलिए भगवान् ने जानकीजी की खोज को माध्यम बनाकर हनुमानजी को भेजा। हनुमानजी जरा जाकर सोते विभीषण को तो जगाइए और गोस्वामीजी ने इसका संकेत अपनी चौपाइयों में दे दिया। हनुमानजी जब विभीषण के द्वार पर आए तो गोस्वामीजी ने जो शब्द लिखे-

लंका निसिचर निकर निवासा। इहाँ कहाँ सज्जन कर बासा।।
मन महुँ तरक करैं कपि लागा। तेहीं समय विभीषनु जागा।।

विभीषण के दरवाजे पर हनुमानजी के आकर खड़े होने से ही वे जाग पाये थे। जब तक हमारे जीवन के द्वार पर किसी सद्गुरु का आगमन नहीं होता, जब तक कोई सद्गुरु हमारी श्वांसों में नहीं आता तब तक हम जाग नहीं पाते। विभीषण जब जागे हैं तो क्या करने लगे हैं-

राम-राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा।।

यह जागृति का संकेत है। जब जीव जागता है तो जिह्वा पर एक शब्द आता है राम-राम श्री राम जय राम जय जय राम । अगर हमारी जिह्वा हरि नाम नहीं लेती है अगर हरिराम लेने में रस नहीं आता तो फिर हम सोये हैं और सोए हुए जीव को तो कोई सद्गुरु, हनुमान् ही जगा सकता है जिनका काम ही जगाना है। आज विभीषण को जगाया है इससे पहले सुग्रीव को जगाया। सुग्रीव को राजपद मिल गया, कंचन और कामिनी मिल गयी, और सुग्रीव जाकर सो गया। हनुमानजी ने स्वयं जाकर जगाया कि सुग्रीव कब तक सोओगे-

इहाँ पवनसुत हृदयँ विचारा। राम काजु सुग्रीव बिसारा।।
निकट जाइ चरनन्हि सिरुनावा। चारिहु विधि तेहि कहि समुझावा।।

श्रीहनुमानजी के जाने के बाद श्रीरामजी ने सोये जीव सुग्रीव को जगाने के लिए लक्ष्मणजी को भेजा। प्रभु ने काल को भेजा क्योंकि लक्ष्मण शेषनाग हैं और नाग काल का प्रतीक है जिसे संत भी नहीं जगा पाए उसे आकर काल ही जगाएंगे और आकर सुग्रीव को लक्ष्मणजी ने इतना फटकारा-

ऐहि अवसर लछिमन पुर आये। क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाये॥
क्रोधवंत लछिमन सुनि काना। कह कपीस अति भय अकुलाना॥

सुग्रीव को जाकर लक्ष्मण जी जगाते हैं क्योंकि लक्ष्मण हमेशा जाग्रत रहते हैं कभी सोते नहीं, जो भगवान् की सेवा में रहता है वह कभी सोता नहीं और सोएगा भी कैसे, सोया तो वह रहता है जो भोगों की सेवा में रहता है, उसी को मोह की निशा आकर घेरती है। हनुमानजी ने सुग्रीवजी को जगाया, विभीषण जी को जगाया, जो संत की वाणी सुनकर जागे, संकेत सुन जागें, उसे जीव कहते हैं, सज्जन कहते हैं। जो संत के संकेत को समझकर जागता है वह सज्जन है, जो काल की फटकार से जागता है वह भोगी है और जो संत और काल दोनों की फटकार से भी नहीं जागता वह रावण है और जो भोग ग्रस्त है उसको भगवान् की वाणी नहीं, भगवान् का बाण ही जगाता है। जगा नहीं पाता बल्कि सदैव के लिए सुला देता है और मोह तो सोता ही अच्छा लगता है। गुरु की यहाँ विशेष भूमिका है। जो जागा है वह ही हमको जगा सकता है। हम सब मोह के नशे में सोये हैं, जो भक्त होते हैं वे भोले तो होते हैं लेकिन बड़े होशियार होते हैं इसलिए भगवान् से जाकर रोकर प्रार्थना करते हैं कि भगवान् आप कैसे भी हमको अपने जाल में फंसा लीजिए। भगवान् कहते हैं कि जाल से तो सभी मुक्त होना चाहते हैं। मछली जैसा सामान्य जीव भी जाल में फँसना नहीं चाहती और तुम मनुष्य होकर जाल में फँसना चाहते हो? क्यों जाल में फँसना चाहते हो? तो भक्त कहता है कि भगवन् यदि तुम हमें अपने जाल में नहीं फँसाओगे तो माया हमें अपने जाल में फँसा देगी। और माया के जाल में फँसें, इससे तो अच्छा है कि आप अपने जाल में ही फँसा लें। अन्यथा तो माया जाल लेकर खड़ी है और भक्त मायादास बनना नहीं चाहता। मायापति का दास बनना पसन्द करता है और इसलिए भगवान् से जब भी मिलता है यही बोलता है-

ऐहि अवसर लछिमन पुर आये। क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाये।।
क्रोधवंत लछिमन सुनि काना। कह कपीस अति भय अकुलाना।।

सुग्रीव को जाकर लक्ष्मण जी जगाते हैं क्योंकि लक्ष्मण हमेशा जाग्रत रहते हैं कभी सोते नहीं, जो भगवान् की सेवा में रहता है वह कभी सोता नहीं और सोएगा भी कैसे, सोया तो वह रहता है जो भोगों की सेवा में रहता है, उसी को मोह की निशा आकर घेरती है। हनुमानजी ने सुग्रीवजी को जगाया, विभीषण जी को जगाया, जो संत की वाणी सुनकर जागे, संकेत सुन जागें, उसे जीव कहते हैं, सज्जन कहते हैं। जो संत के संकेत को समझकर जागता है वह सज्जन है, जो काल की फटकार से जागता है वह भोगी है और जो संत और काल दोनों की फटकार से भी नहीं जागता वह रावण है और जो भोग ग्रस्त है उसको भगवान् की वाणी नहीं, भगवान् का बाण ही जगाता है। जगा नहीं पाता बल्कि सदैव के लिए सुला देता है और मोह तो सोता ही अच्छा लगता है। गुरु की यहाँ विशेष भूमिका है। जो जागा है वह ही हमको जगा सकता है। हम सब मोह के नशे में सोये हैं, जो भक्त होते हैं वे भोले तो होते हैं लेकिन बड़े होशियार होते हैं इसलिए भगवान् से जाकर रोकर प्रार्थना करते हैं कि भगवान् आप कैसे भी हमको अपने जाल में फंसा लीजिए। भगवान् कहते हैं कि जाल से तो सभी मुक्त होना चाहते हैं। मछली जैसा सामान्य जीव भी जाल में फँसना नहीं चाहती और तुम मनुष्य होकर जाल में फँसना चाहते हो? क्यों जाल में फँसना चाहते हो? तो भक्त कहता है कि भगवन् यदि तुम हमें अपने जाल में नहीं फँसाओगे तो माया हमें अपने जाल में फँसा देगी। और माया के जाल में फँसें, इससे तो अच्छा है कि आप अपने जाल में ही फँसा लें। अन्यथा तो माया जाल लेकर खड़ी है और भक्त मायादास बनना नहीं चाहता। मायापति का दास बनना पसन्द करता है और इसलिए भगवान् से जब भी मिलता है यही बोलता है-

अपने चरणों का दास बनाले। काली कमली के ओढ़नवाले।
गहरी नदिया नाव पुरानी। केवटिया याको नादानी।।
मेरी नैया को पार लगा ले। काली कमली के ओढ़नवाले।।
अपने चरणों का दास बनाले। काली कमली के ओढ़नवाले।।

हम राम कृष्ण के दास हैं। माया के दास बनने से बचना है तो मायापति के दास बनना होगा। वैसे हमारे वैष्णव समाज में दास ही बनते हैं, स्वामी नहीं बनते। स्वामी बनने की सामर्थ्य तो केवल परमात्मा में ही होती है। जीव तो दासता स्वीकार करता है। दास की रक्षा स्वामी किया करते हैं। गोस्वामीजी गुरुदेव का स्मरण कर रहे हैं। श्रीहनुमानजी, शंकरजी के ही रूप हैं और शंकरजी तो त्रिभुवन के गुरु हैं, गुरुओं के गुरु हैं, गुरु के रूप में हनुमानजी का भी स्मरण है-

जै जै जै हनुमान गौसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।

श्रीहनुमानजी गोस्वामीजी को गुरु के रूप में मिले अथवा मुझे ऐसा लगता है कि गोस्वामीजी ने अपने दीक्षा गुरु का यहाँ स्मरण किया है।

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।
अमिअ मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू।।
श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।।

कृपासिन्धु नर रूप हरि यह गुरुदेव का स्वरूप जो नर के रूप में साक्षात हरि है, नारायण हैं। गोस्वामीजी के गुरुदेव का नाम था नरहरिदास और संयोग और सौभाग्य देखिये! मुझे भी जिनकी कृपा मिली मेरे भी जो गुरुदेव हैं उनका भी शुभनाम श्री नरहरिदास है। गुरु ही भगवान् से मिलाता है। गुरु वही है जो हमें भगवान्

से मिलाता है। कई लोग कहते हैं कि जब सीधे ही भगवान् का भजन हो सकता है तो फिर गुरु को बीच में लाने की आवश्यकता ही क्या है? यह हमारा मन नहीं बोल रहा है बल्कि अहंकार बोल रहा है। चूंकि अहंकार किसी दूसरे को स्वीकार नहीं करना चाहता, अहंकार किसी के सामने भी झुकने को तैयार नहीं, इसलिए वह अनेक प्रकार के तर्क उठाता है कि गुरु की आवश्यकता क्या है? आज गुरु है ही कहाँ? बन्धुओं, गुरुओं को मत खोजो। अपने भीतर शिष्यत्व को खोजो। इस दुनिया में ऐसे करोड़ों लोग हैं जो अभागे होकर जीते हैं और अभागे रहकर ही मर जाते हैं। अभागा कौन है? अभागा वह है जिसके ऊपर गुरु की कृपा नहीं है। जिसको गुरु का आशीर्वाद नहीं मिला। वे ही अभागे रहने के लिए मजबूर हैं। मेरा निवेदन है कि यह मत खोजना कि गुरु कैसे हैं? यह अपने भीतर खोजो कि मैं शिष्य कैसा हूँ? ये हमारे गुरु होने लायक हैं या नहीं, चिन्तन यह मत करिए। मैं शिष्य बनने लायक हूँ या नहीं। अपने भीतर श्रद्धा का दर्शन करिए। दैन्यता का दर्शन करिए। दिव्यता का दर्शन करिए। क्योंकि परमात्मा तो सभी के भीतर ही विराजमान हैं। आखिर हमारे अन्दर सांस कौन ले रहा है? हमारी आंखों से देख कौन रहा है? हमारे कानों से सुन कौन रहा है? हमारे हाथों से क्रिया कौन करा रहा है? हमारे कदमों से चल कौन रहा है? हमारी नासिका से सूँघ कौन रहा है? आखिर जो कुछ भी हमारे शरीर में क्रियाएं हो रही हैं, वह कर कौन रहा है? जिस दिन वह सांस लेना बंद कर देगा, आप सांस ले पाओगे क्या? ईश्वर तो प्रत्येक जीव के भीतर विराजमान है, लेकिन गुरुदेव उस अज्ञात ईश्वर का हमको अनुभव कराता है। चित्रकूट की घटना है, रामघाट पर गोस्वामी जी चन्दन घिस रहे हैं। कई दिन रोकर हनुमानजी से प्रार्थना कर चुके थे कि कभी मेरे हाथों से भी प्रभु को चन्दन लगवा दो। तब हनुमानजी ने कहा था एक दिन भगवान् तुमसे चन्दन लगाने की माँग लेकर आएंगे। गोस्वामी जी चन्दन घिस रहे हैं। भगवान् राम और लक्ष्मण बालक का रूप लेकर गोस्वामीजी के सामने खड़े हैं। बाबा हमको भी चन्दन लगा दो ना, सबको लगा रहे हो। बोले! जाओ-जाओ तुम्हारे लिए नहीं है। भगवान् राम आएंगे उनके लिए है। राम सामने खड़े हैं

और गोस्वामीजी कहते हैं राम आएंगे। भगवान् मुस्कुराए! शबरी के द्वार पर भगवान् खड़े हैं शबरी पहचान नहीं पाई। भगवान् दरवाजा खोलो दरवाजा खोलो कहकर पुकारते हैं। उस समय गुरुदेव अपनी भूमिका प्रकट करते हैं। **'शबरी देख राम गृह आए'** दर्शन कर। और वही भूमिका गोस्वामीजी के लिए श्रीहनुमान् ने की। तोते का वेश बनाकर एक पेड़ पर बैठकर बोल दिया हनुमानजी ने-

चित्रकूट के घाट पर, भई संतन की भीर।
तुलसीदास चन्दन घिसें, तिलक देत रघुवीर॥

तो गुरु ही अनुभव कराएगा। श्रीहनुमानजी स्वयं नहीं समझ पाए कि भगवान् आये हैं। किष्किन्धा काण्ड में, ऋष्यमूक पर्वत की तलहटी में प्रभु आ चुके हैं। हनुमानजी ने देख लिया कि कोई दो राजकुमार आए हैं लेकिन पहचान नहीं पाए हैं सीधा प्रश्न किया-

को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा। छत्री रुप फिरहु बन बीरा॥
कठिन भूमि कोमल पद गामी। कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी॥
मृदुल मनोहर सुंदर गाता। सहत दुसह बन आतप बाता॥
की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ। नर नारायण की तुम्ह दोऊ॥
जग कारन तारन भव, भंजन धरनी भार॥
की तुम्ह अखिल भुवन पति, लीन्ह मनुज अवतार॥

श्री हनुमान जी ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। भगवान् सम्मुख खड़े हैं और हनुमानजी पूछ रहे हैं कौन हो तुम? नर-नारायण या जग कारन तारन भव, भंजन धरनी भार?

कितने प्रश्न किए। प्रभु मुस्कुराए! यहाँ हनुमानजी वेश बदलकर आए हैं भगवान् ने थोड़ा भ्रम पैदा कर दिया। भगवान् ने सीधे उत्तर नहीं दिए। हनुमानजी ने जितने प्रश्न किए थे नर, नारायण, जग तारण जितने प्रश्न थे सब काट दिए, प्रश्नों को काटकर बिल्कुल उल्टा उत्तर दिया-

कोसलेस दसरथ के जाये। हम पितु बचन मानि बन आए॥
नाम राम लछिमन दोउ भाई। संग नारि सुकुमारि सुहाई॥
इहाँ हरी निसिचर बैदेही। बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही॥
आपन चरित कहा हम गाई। कहहु बिप्र निज कथा बुझाई॥

हनुमानजी ने जितने प्रश्न किए थे भगवानश्रीराम ने सब प्रश्न काट दिए। भगवान् कहना चाहते हैं कि हम निराकार नहीं हैं। दशरथजी के पुत्र हैं, साकार हैं। जग कारण, तारण भव, हम जग के कारण से नहीं आए हैं किन्तु पिता की आज्ञा से आए हैं। पिता के कारण आए हैं। ब्रह्म तो व्यापक होता है लेकिन हमारी जानकीजी को कोई हरण करके ले गया है। हम तो उन्हें खोज रहे हैं, क्योंकि व्यापक को तो कोई वियोग नहीं होता। हम तो वियोग में घूम रहे हैं। लेकिन जैसे ही भगवानजी के श्रीमुख से निकला कौसलेस तो हनुमानजी को तुरन्त भगवान् के वरदान की याद आ गई कि कौसलेस के यहाँ तो मेरे प्रभु राम अवतार लेनेवाले हैं क्या वही भगवान् इस समय-

प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना। सो सुख उमा जाइ नहिं बरना॥

तुमने नाटक तो किया लेकिन बढ़िया नाटक नहीं किया तुम तो फेल हो गए। भगवान् ने कहा तुम ब्राह्मण बनकर आए लेकिन तुम ब्राह्मण थे नहीं। ठीक से ब्राह्मण बन भी नहीं पाए, ब्राह्मण की भूमिका तुम ठीक से निभा नहीं पाए। हनुमान्जी ने पूछा कैसे नहीं निभा पाए? बोले ब्राह्मण कभी क्षत्रिय को प्रणाम नहीं

करता और हम क्षत्रिय वेश में थे तुमने आकर सिर झुकाकर हमको प्रणाम किया। तभी हम समझ गए थे कि तुम असली ब्राह्मण नहीं हो सकते। हनुमानजी ने कहा कि भगवान् यदि हम बनावटी ब्राह्मण थे, तो आप भी असली क्षत्रिय नहीं थे। क्षत्रिय रूप तो आपने बनाया था, आप असली क्षीत्रय नहीं थे। भगवान् ने कहा कैसे नहीं थे? बोले क्षत्रिय तो हमेशा ब्राह्मण को देखकर वन्दना करता है, प्रणाम करता है लेकिन आपने जब ब्राह्मण को प्रणाम नहीं किया तो हम समझ गए कि आप असली क्षत्रिय नहीं हैं। आप तो क्षत्रिय का वेश लेकर आए हैं। दोनों का अविस्मरणीय रसमय वार्तालाप। तो कहने का अर्थ यह है कि ब्रह्म और जीव के बीच में गुरु होते हैं। जैसे वर और कन्या के बीच में पुरोहित होते हैं बन्धन के लिए, गठबन्धन (विवाह) के लिए ऐसे ही जीव और ब्रह्म के बीच में जो गठबन्धन का कार्य करते हैं वो गुरु करते हैं जैसे माँ बालक का परिचय कराती है, देखो बेटा यह तुम्हारे पिताजी हैं, तुम्हारे दादाजी हैं, चाचाजी हैं, ऐसे ही गुरुदेव हैं जो जीव को भगवान् का परिचय कराते हैं उनका अनुभव कराते हैं, लेकिन हमारा अहंकार गुरु का दर्शन नहीं होने देता। कहाँ आज गुरु? नहीं आज तो गुरु घण्टाल हैं और यह प्रश्न आज का नहीं यह प्रश्न हर युग में उठाया गया है। ऐसा नहीं है कि कलयुग का मनुष्य बहुत दुष्ट है और सतयुग का मनुष्य बहुत अच्छा रहा हो। मनुष्य की मनोस्थिति हर युग में एक जैसी है। गुरु का अर्थ है– गुरु माने किसी के हो जाना, किसी के चरणों में शीश झुकाना इतना ही अर्थ है मेरी बुद्धि में जो मेरे अनुसार चलती थी। हे गुरुदेव! अब मैं इसको समर्पित करता हूँ, अब यह मेरी बुद्धि मेरे अनुसार नहीं चलेगी बल्कि आपके अनुसार चलेगी। इसे आप जैसे चलाएंगे वैसे चलेगी, आप जिधर ले जाएंगे वहीं जाएगी, आप जिधर बैठायेंगे उधर ही बैठेगी, सम्पूर्ण समर्पण।

जहाँ ले चलोगे वहीं मैं चलूँगा।
जहाँ नाथ रखलोगे वहीं मैं रहूँगा।
जहाँ ले चलोगे वहीं मैं चलूँगा।।

ये जीवन समर्पित चरण में तुम्हारे।
तुम्हीं मेरे सर्वस्व तुम्हीं प्राण प्यारे॥
जो कुछ कहूंगा नाथ तुम्हीं से कहूँगा।
जहाँ ले चलोगे वहीं मैं चलूँगा॥
न कोई उलाहना, न है कोई अर्जी।
कर लो करा लो जो है तेरी मर्जी॥
तुम जो कहोगे नाथ, वहीं मैं करुँगा।
जहाँ ले चलोगे, वहीं मैं चलूँगा॥
जहाँ नाथ रख लोगे वहीं मैं रहूँगा।
जहाँ ले चलोगे, वहीं मैं चलूँगा॥

इसको समर्पण कहते हैं किसी के चरणों में गिर जाना। दण्डवत का क्या अर्थ है? बिना विचारे किसी के चरणों में एकदम गिर जाना या समर्पित हो जाना। यह जीवन जीने की दृष्टि है-

पाहि नाथ कहि पाहि गौसाईं। भूतल परे लकुट की नाईं॥

चित्रकूट में श्रीभरतजी इसी क्रम से गिरे। दौड़कर प्रभु श्रीराम गए और बरबस उठा लिया। बरबस कैसे-

उठे रामु सुनि प्रेम अधीरा। कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा॥
बरबस लिये उठाइ उर लाए कृपानिधान॥

और जो इस प्रकार से गिरता है उसको उठाने के लिए भगवान् तथा सद्गुरु अधीर होकर उठाते हैं। जो

उठा सके उसी के चरणों में गिरना। लोग तो तरह-तरह से गिराने की कोशिश करते हैं। सद्गुरु हमको उठा ले। जो गिरे को खड़ा कर दे वही सतगुरु है। जो हमारे भीतर से हीनभावना को निकालकर गौरव के भाव भर दे वही सद्गुरु है। ऐसे गुरु के चरणों को गोस्वामीजी कमल के समान कहते हैं।

बन्दउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

कमल जल में रहकर भी हमेशा जल से ऊपर रहता है तटस्थ, बिल्कुल निर्लिप्त निर्लेप। गुरु देह से तो हमारे जैसे होते हैं लेकिन जैसा हम देख और समझ रहे हैं वैसे वो होते नहीं। देह तो सभी की एक जैसी होती है लेकिन आत्मा सबकी एक जैसी नहीं होती। मन सबका एक जैसा, हृदय सबका एक जैसा नहीं होता। गुरु मनुष्यत्व और देवत्व की सीमा पर स्थित है। कई बार हम अपनी शैक्षिक योग्यता से गुरु की योग्यता नापते हैं। किन्तु मस्तिष्क से हृदय नहीं नापा जा सकता। गुरु उसके बहुत ऊपर है। इसके लिए तर्क की बुद्धि नहीं चाहिए, इसके लिए श्रद्धा से डबडबाते नेत्र चाहिए। झुका हुआ शीश चाहिए। सीधी बात बोलूं, गुरु के अन्दर नहीं दिखाई देगा, आपको जो भी दिखाई देगा अपने भीतर दिखाई देगा। जैसे सिनेमा के पर्दे पर जो कुछ दिखाई देता है वह पर्दे पर नहीं होता। जो कुछ भी होता है वह प्रोजेक्टर में होता है। प्रोजेक्टर में जो भरा है, पर्दे पर वह दिखाई देता है। आपके भीतर श्रद्धा भरी है तो गुरु के अन्दर आपको देवत्व का दर्शन होगा। आपके भीतर कुतर्क और अहंकार भरा है तो गुरु के भीतर आपको कुछ और दिखाई देगा। इसलिए श्रद्धा के डबडबाते नयनों द्वारा गुरु का दर्शन होगा।

जे श्रद्धा संबल रहित, नहिं संतन कर साथ।
तिन्ह कहुँ मानस अगम अति, जिन्हहि न प्रिय रघुनाथ।।

और सच यह है कि देखो गुरु और हममें अन्तर क्या होता है। जो अन्तर नरेन्द्र और विवेकानन्द में है। जो

अन्तर मूलशंकर और महर्षि दयानन्द में है। वही अन्तर हमारे और गुरु में है। हम कई बार विवेकानन्द में नरेन्द्र को खोजते रहते हैं। और मैं निवेदन करता हूँ कि कभी भी, किसी भी महापुरुष से उनके भूत में मत मिलिए। वर्तमान में मिलिए। भूत में वह आप सा ही रहा होगा या आप से भी और ज्यादा गया गुजरा रहा होगा। लेकिन वर्तमान में वह किस स्थान पर बैठा है वहाँ तक हमारी पहुँच तो हो ही नहीं सकती। हम देख भी नहीं सकते। आप अगर वर्तमान में मिलेंगे तो आपको गुरु का दर्शन होगा। अगर आप उनसे भूत में मिलेंगे तो वह तो ऐसे थे, वैसे थे, यही सब याद आएगा। कभी भी उसमें सत्पुरुष का, देवत्व का दर्शन हो ही नहीं पाएगा। हम नरेन्द्र में विवेकानन्द का दर्शन करें। लेकिन कई बार हम विवेकानन्द में नरेन्द्र को खोजने लग जाते हैं, शरीर का धर्म तो सबका एक सा ही होता है। गुरु शरीर से नहीं जीता वह आत्मा से जीता है और इसे समझने के लिए खोपड़ी से निकलकर चरणों में आना पड़ेगा। अगर अहंकार में खोपड़ी के बल खड़े रहेंगे तो खड़े-खड़े थक जाओगे। अगर विश्राम चाहते हो तो किसी वट वृक्ष की शीतल छाया में आकर बैठ जाओ और वट तो विश्वास का प्रतीक है।

बटु बिश्वास अचल निज धरमा। तीरथराज समाज सुकरमा।।

जिसके चरणों में बैठे हैं उसके प्रति अटल विश्वास, अगाध श्रद्धा चाहिए, तब कहीं गुरु का दर्शन होगा। तब कहीं हमें भगवान् की अनुभूति होगी। और अगर किसी बड़े पेड़ की छाया में बैठोगे तो बैठते ही राहत मिलेगी। वृक्ष आपके बैठने से छाया नहीं देते वे तो छाया देते ही हैं। आप बैठेंगे तो अनुभव होगा। दूर अकड़कर खड़े रहोगे तो तपते रहोगे। अगर आपको छांव चाहिए तो सद्गुरु के चरणों में आइये। अगर आनन्द चाहते हो तो अन्नत आनन्द के सागर के किनारे आईये।

जो आनन्द सिन्धु सुखरासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी।।
सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा।।

गोस्वामीजी महाराज चरण रज की माँग कर रहे हैं। मार्ग की धूल यदि खुली आंख में पड़ जाए तो आँख को बंद कर देती है। लेकिन यही सद्गुरु के चरणों से स्पर्श हो जाए तो बंद आँख को खोल देती है। गोस्वामीजी यहाँ चरण रज से मन को पवित्र करना चाह रहे हैं-

श्रीगुरुचरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायुक फल चारि।।

मेरा मन विषय वासनाओं से बिगड़ गया है। इसको सुधारना चाहता हूँदेखो रज तो माथे पर लगाई जाती है, मन में नहीं लगाई जाती।

श्रीगुरु पद रज मंजुल अंजन। नयन अमियदृग दोष विभंजन।।
तेहि करि विमल विवेक विलोचन। बरनउँ राम चरित भव मोचन।।

चरण रज तो काजल के रूप में नेत्रों में लगाई जाती है और हम सब महापुरुषों के चरण रज नेत्रों से ही तो स्पर्श करते हैं लेकिन यह सद्गुरु के चरणों की रज की महिमा है। यह सद्गुरु की महत्ता है कि चरणों की रज नेत्रों में लगाई और हमारा मन पवित्र हो गया। आँख देखने का कार्य करती है,आत्मा दर्शन करती है। हम जो आंख से देखते हैं उसको देखना कहते हैं जैसे ताजमहल, लालकिला हम देखते हैं लेकिन बिहारीजी को हम देखते नहीं बल्कि उनका दर्शन करते हैं। जगत् खुली आँख से तथा जगत्-पिता बंद आँख से दिखता है। आप मन्दिर में जाते हैं बिहारी जी के सामने खड़े होते हैं जैसे ही पुजारीजी पर्दा उठाते हैं तो हाथ जुड़ जाते हैं और आँखें बंद हो जाती हैं। माथे की आँखें होती हैं संसार को देखने के लिए। लेकिन ईश्वर को मन की आँखों से देखा जाता है। गुरुदेव के पावन चरणों की रज जब हमारे मन को पवित्र करती है तब मन भगवान् के दर्शन में लीन हो जाता है और मन पवित्र होता है। महात्मा पुरुषों के श्रीचरणों की कृपा से नेत्रों नें

रज को स्पर्श किया, मन पवित्र हो गया जैसे बिजली का तार हाथ को छुआ तो झटका मन को लगा। इत्र को नाक ने सूंघा लेकिन मन आनन्द का अनुभव करने लगा। ऐसे ही मस्तक गुरुदेव के चरणों में झुका, मन अपने आप ही पवित्र हो गया। और मनुष्य का जब मन बिगड़ जाता है तो पूरा शरीर बिगड़ जाता है। शरीर की जीवन यात्रा बिगड़ जाती है, जीवनचक्र बिगड़ जाता है। अपवित्र मन हमेशा अपवित्र कार्य कराता है। इसलिए मन शान्त नहीं चाहिए बल्कि मन शुद्ध चाहिए। हम मन की शान्ति की माँग करते हैं। मन शान्त नहीं होता, मन शुद्ध होता है। मन जब शुद्ध होता है तब मन शान्त हो जाता है। अन्यथा मन अशुद्ध है, विकार वासनाओं से भरा है तो लाख प्रयत्न करिए मन कभी शान्त होगा ही नहीं। जैसे किसी चिकने बर्तन को साफ करने के लिए हम उसे बालू से, मिट्टी से रगड़कर साफ करते हैं। जैसे बर्तन चमकाए जाते हैं ऐसे ही मन की काई को, मन की कीचड़ को गुरुदेव के पावन चरणों की रज साफ करती है।

काई विषय मुकुर मन लागी।।

हमारे मन में विषयों की काई ने मन के दर्पण को इतना मैला कर दिया है कि उसमें कुछ दिखाई ही नहीं देता और भगवान् को तो निर्मल मन पसन्द है।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।

तो जब दृष्टि शुद्ध हो जाती है तो सृष्टि भी शुद्ध दिखाई देती है। तो गुरुदेव के पावन चरणों की रज। गीता में रज का भी एक दूसरा भी अर्थ बताया है। रज माने धूल भी है और रज माने रजोगुण भी है। गीता बोलती है न।

काम एष:, क्रोध एष:, रजोगुण समुद्भव।।

जो रज जगत् से जुड़ी है वो आपको गड्ढे की ओर ले जाएगी। लेकिन जो रज जगदीश से जुड़ी है वो

आपको शिखर की ओर ले जाएगी। रज काम से जुड़ी है या रज राम से जुड़ी है। रज क्रोध से जुड़ी है या रज करुणा से जुड़ी है? काम और क्रोध ये दोनों मन को बिगाड़ते हैं। काम अच्छे-अच्छे महापुरुष को चौपट कर देता है। काम के दो बेटे हैं, क्रोध और लोभ। मूल में जो पाप है वो काम है। और किसी प्रकार का भी काम चाहे वो स्त्रीजन्य काम हो या पुरुषजन्य काम हो, वस्तुजन्य काम हो या इन्द्रियजन्य काम हो, कामना जन्य काम हो या वासना जन्य काम हो, कोई भी काम का स्वरूप हो, जब हमारे भीतर काम का उदय होता है तब लोभ पैदा हो जाता है कि कामना मेरी सदैव पूरी होती रहे। और अगर काम पूर्ति में विघ्न आता है, बाधा आती है तो फिर हम क्रोध की आग में जलते हैं, फिर हम प्रतिशोध की आग में जलते हैं। मूल में काम है, उसने बहुत बड़े-बड़े महापुरुषों को चौपट किया है। भगवान् शिव के प्रसंग में गोस्वामीजी ने लिखा है कि जब काम ने आक्रमण किया तो इस जगत् की दशा क्या हो गई-

भए कामबस जोगीस तापस पावँरन्हि की को कहै।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे।।
अबला विलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अबलामयं।
दुई दण्ड भरि ब्रह्माण्ड भीतर काम कृत कौतुक अयं।।

चौबीस घण्टे भगवान् के नाम में डूबे रहनेवाले, भगवान् के श्रीचरणों का आशीर्वाद लेने वाले ये जो श्रीनारदजी हैं उनको चौपट कर सकता है तो हमारी और आपकी तो हैसियत ही क्या है? इसी काम ने नारदजी को चौपट किया और क्रोध की, लोभ की, अग्नि में सड़ा दिया। लेकिन भगवान् की शरणागति थी, नारद जी भगवान् की शरण में आए तो रोकर नारदजी ने कहा प्रभु जो होना था वो तो हो गया, लेकिन इस रोग से मुक्त तो कराइए। तो भगवान् ने कहा कि रोग से मुक्ति तो वैद्य जी ही कर सकते हैं। औषधि तो उनके पास

ही रहती है। वैद्य कौन हैं? बोले सद्‌गुरु वैद्य हैं। मन के रोगों की औषधि तो सद्‌गुरु के पास है। कौन है? बोले भगवान् शिव हैं। **तुम त्रिभुवन गुरु वेद बखाना।** भगवान शिव के चरणों में जाओ और वहीं काई की कीचड़ को साफ कर आओ। नारद जी ने पूछा वहाँ जाकर करूं क्या? उन्होंने कहा एक ही काम करो-

जपहु जाइ शंकर सत नामा। होइहि हृदय तुरत विश्रामा॥
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी। सो न पाव मुनि भगति हमारी॥

शंकरजी त्रिभुवन के गुरु हैं। भगवान के सामने नारदजी खड़े हैं। भगवान् रोग मुक्त कर सकते थे लेकिन भगवान् मर्यादा का पालन करते हैं। बोले रोग की औषधि तो वैद्यजी के पास है और सतगुरु ही वैद्य हैं। हनुमानजी स्वयं सद्‌गुरु की भूमिका में **जै जै जै हनुमान गौसाईं, कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।** तो गुरुदेव के रूप में श्रीहनुमानजी का स्मरण।

श्री गुरु चरन् सरोज रज। निज मनु मुकुरु सुधारि॥
बरनउँ रघुबर बिमल जसु। जो दायकु फल चारि॥

हमारे द्वारा जो भी पाप होता है वह कामना के द्वारा होता है इसलिए साधु बहुत सावधान रहते हैं। वे दिन-रात इस बात को गुनगुनाते हैं-

चाह गई चिन्ता मिटी मनुआ बेपरवाह।
जाको कछू न चाहिए सोई शहनशाह॥

एक संत ने बहुत अच्छा कहा- वो कहते हैं कि **"चाह जर से लगी, जी जरा हो गया। चाह हर से लगी, जी हरा हो गया।"** - जी को जलाना है तो जरा से चाह कर। अगर जी को हरा-भरा करना है तो चाह हरि के चरणों में, हरि दर्शन की चाह, हरि दर्शन की प्यासी। जीवन हरा-भरा रहेगा। तो ऐसे पावन चरण

जहाँ मिले वहाँ शीश को झुकायें। मन भी पवित्र होगा और शान्त व आनंदित और गौरवान्वित भी रहेगा। गुरु चरणों में बैठना माने सम्पूर्ण समर्पण,

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।

हनुमानचालीसा के प्रथम चरण में गोस्वामी जी गुरुदेव चरणों को नमन कर रहे हैं। हम भी प्रशान्त महासागर की गोद में बैठ कर गुरुदेव के चरणों की वन्दना करें, हे गुरुदेव हमारा वन्दन स्वीकार करें-

चरणों में गुरुवर के प्रणाम करता हूँ,
स्वीकार कीजिए दास की वन्दना।
गुरु जी आप दयालु हैं दयावान हैं,
करते रहते सदा हम पर अहसान हैं।।
भूल-क्षमा कर देते हैं और अपनी शरण में लेते हैं।।१।।
स्वीकार कीजिए..........।।
हम तो भटक रहे थे अंधकार में,
कोई मंजिल नहीं थी संसार में।
धर्म का दीपक जला दिया,
हमें भजन का मारग बता दिय।।२।।
स्वीकार कीजिए..........।।
अब तो मन में हमारे यही है लगन,
कर दें कृपा तो हो जाए प्रभु से मिलन।
हमको भक्ति का वर देना,

थोड़ी आप सिफारिश कर देन॥३॥

स्वीकार कीजिए.........॥

चरणों में गुरुवर के प्रणाम करता हूँ।

स्वीकार कीजिए दास की वन्दना॥

तो गुरुदेव के श्रीपावन चरणों की रज से गोस्वामीजी ने अपना मन सुधारा है-

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।

यह सिद्धान्त कि शुद्ध मन ही भगवान् का वरण कर सकता है क्योंकि भगवान् को निर्मल मन ही भाता है।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा॥

भगवान् का अगर वरण करना हो तो और भगवान् को अगर वरण करना हो तो मन निर्मल चाहिए। शुद्ध मन ही भगवान् का वर्णन कर सकता है। मन तो हमेशा अपने यश का ही गुणगान करता है। अपना ही वर्णन करता है। आपने ऐसे अनेक लोग देखे होंगे जब देखो अपनी ही गाथा, हमने ये किया, वो किया, ऐसा किया, वैसा किया। विमल यश तो केवल भगवान का है। निर्मल और मैले का अन्तर क्या है? जो वर्णन अपने मन में ईर्ष्या पैदा करे, जलन पैदा करे, प्रतियोगिता का, प्रतिद्वन्दता का, प्रतिशोध की भावना जगा दे वो वर्णन सांसारिक है। और जो वर्णन मन को शान्ति से, आनन्द से, प्रसन्नता से, भक्ति से भर दे हमको विश्राम प्रदान कर दे, वो वर्णन ईश्वर का है। गोस्वामीजी ने लिखा है कि अगर जिह्वा को पावन करना है तो भगवत् यश गाएं, गोस्वामीजी बालकाण्ड के अंत में खुले मन से बोले-

निज गिरा पावनि करन कारन राम जसु तुलसी कह्यो।

रघुबीर चरित अपार बारिध पारु कबि कौने लह्यो॥

उपबीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं।
बैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं।।

गोस्वामीजी बोले हैं कि मैंने तो अपनी जिह्वा को पावन कर लिया है। आज विज्ञान का युग है, विज्ञान ने बहुत प्रकार की प्रगति की है। कल्पनातीत प्रगति की है। लेकिन इतने बड़े वैज्ञानिक युग में भी तन के मैल को साफ करने के प्रसाधन बने हैं। अनेक प्रकार के साबुन, शैम्पू, डिटरजेंट हैं लेकिन मन के मैल को धोने का न कोई साधन है न कोई साबुन है। और मुझे लगता है कि न तो विज्ञान बना पाया है और न ही भविष्य में बना पाएगा। चूंकि तन के मैल को धोया जा सकता है मगर आत्मा के मैल को तो कृपा ही धो सकती है। गोस्वामीजी ने लिखा है कि यदि मन का मैल धोना हो तो-

रघुवंश भूषण चरित यह नर, कहहिं सुनहिं जे गावहीं।
कलिमल मनोमल धोई बिनु श्रम रामधाम सिधावहीं।।
सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै।
दारुन अबिद्या पंच जनित विकार श्री रघुबर हरै।।
जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदासहूँ।
पायो परम बिश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूँ।।

मन का मैल बिना परिश्रम के धुल जाएगा। और गुरुदेव के चरणों की पावन रज से जब मन शुद्ध हो गया तब गोस्वामीजी भगवान् के यश का वर्णन करने लगे, **बरनउँ रघुवर बिमलजसु। जो दायकु फल चारि।।**

हमने ऐसा सुना है कि दिन में गोस्वामीजी विषय लिखते थे और हनुमानजी महाराज रोज रात को इनका लेख मिटा जाते थे। हनुमानजी को लगता था कि मेरा क्यों यश वर्णन करते हैं? मेरे प्रभु का यश वर्णन करना

चाहिए। कई दिन जब ये घटना हुई तो गोस्वामीजी को बहुत चिन्ता हुई कि यह हो क्या रहा है? एक दिन रोकर गोस्वामीजी ने हनुमानजी का आवाह्न किया और शिकायत की कि मैं इस वृद्धावस्था में लिख रहा हूँ और कोई मेरे लेख को मिटा जाता हैं। तो हनुमानजी मुस्कुराने लगे कि अरे यह तो हम मिटाते हैं। प्रभु आप! हनुमानजी ने कहा भैय्या! बन्दर का क्या यश होता है? यश तो रघुवर का होता है। भगवान् के यश गाओ न! गोस्वामीजी ने कहा कि सरकार मैं तो रघुवर का ही यश गा रहा था, रघुवर का। तुम तो बन्दर का यश गा रहे थे। अरे सरकार! आप भी तो रघुवर है, रघुवंशी हैं। आखिर आप भी तो रघुवंश में आ गए कि नहीं? हनुमानजी ने पूछा मैं कैसे आ गया? गोस्वामीजी बोले माता-पिता से ही तो वंश चलता है। उन्हीं का अंश तो वंश के रूप में आगे बढ़ता है। और आप तो रघुवंशी हैं क्योंकि आपके माता-पिता तो भगवान् जानकीनाथ हैं, और आपको माँ ने आशीर्वाद दिया था कि नहीं?

अजर अमर गुन निधि सुत होहू। करहुं बहुत रघुनायक छोहू॥
सुन सुत करहिं बिपिन रखवारी। परम सुमट रजनीचर भारी॥
हैं सुत कपि सब तुमहि समाना। जातु धान अति भट बलवाना॥
सुन सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखेउँ करि विचार मन माहीं॥

अजर अमर गुण निधि सुत होहू। आखिर हनुमान को सुत कहकर माँ ने बोला कि नहीं? और भगवान् राम ने भी सुत कहकर सम्बोधित किया है। **सुन सुत तोहि उरिन मैं नाहिं।** महाराज लव-कुश का जन्म तो रघुवंश में बहुत बाद में हुआ है। उसके पहले तो दत्तक पुत्र के रूप में रघुवंश में आप आ चुके हैं। और दत्तक पुत्र का भी गोत्र वही होता है जो परिवार का होता है। इसलिए हनुमानजी भी रघुवंशी हैं, हनुमानजी का यश भी रघुवर का यश है और दोनों में कोई अन्तर नहीं-

बरनउँ रघुवर विमल जसु। जो दायकु फल चारि॥

हनुमानचालीसा की विशेषता देखो इसके पाठ का फल पहले ही घोषित कर दिया है। अन्यथा तो पाठ जब पूर्ण हो जाते हैं, तब उसका फल घोषित किया जाता है। पूरा गोपाल सहस्रनाम पढ़ लीजिए फल उसका बाद में प्राप्त होता है। विष्णु सहस्रनाम का फल भी बाद में घोषित होता है, सुन्दरकाण्ड का फल भी बाद में घोषित होता है।

सकल सुमंगल दायक, रघुनायक गुन गान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव-सिन्धु बिना जलजान॥

सबके फल बाद में। लेकिन हनुमानचालीसा का फल पाठ से पहले घोषणा कर रहा है-

जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा॥

उसको चारों फल प्राप्त होंगे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-

देहि सद्य फल प्रकट प्रभाऊ॥

गोता लगाइए तत्काल फल। **मज्जन फल देखिये तत्काला,** और शायद यहाँ भगवान् भक्त को अपने से बड़ा कर रहे है और उनके (भक्त) के चरित्र को अपने से अधिक आदर्श दिखा देना चाहते हैं।

राम से अधिक राम कर दासा॥

इसलिए आपको अनुभव होगा कि जितने मन्दिर भगवान् राम के नहीं है उससे ज्यादा मन्दिर हनुमानजी के हैं। बिना फल के देवता को आखिर मानेगा कौन? जो देवता फल ही नहीं देता, उसकी पूजा कौन करेगा? हनुमानजी के जगह-जगह पीपल में, टीले पर, गली में, मुहल्ले में, जंगलों में जहाँ-जहाँ कोई देवता बैठने को तैयार नहीं वहाँ हनुमानजी बैठे मिल जाते हैं। सर्वत्र हनुमानजी ही बैठे दिखाई देते हैं। हनुमानजी से जहाँ चाहो

उनसे आशीर्वाद ले लो, वहीं फल प्राप्त कर लो। जंगल में बैठकर हनुमानचालीसा का जाप करो, वहीं कहीं न कहीं हनुमानजी बैठे मिल जाएंगे। एक संत कथा सुना रहे थे बहुत अच्छी लगी, देखिए हनुमानजी के फल का प्रभाव, बोले-

पति-पत्नी मेला देखने गए। मेले में तो भीड़ होती है और भीड़ में अचानक भगदड़ मच गई । पति-पत्नी का साथ छूट गया। अब पत्नी, पति के लिए रोए और पति, पत्नी के लिए बैचेन कहाँ होगी? कैसी होगी? पत्नी रोए क्या हो गया? कोई ऐसा वैसा न हो गया हो? क्या करें? मन्दिर था पास में भगवान् का। पति ने सोचा कि चलो थोड़ी देर मन्दिर में बैठकर शान्ति मिलेगी फिर चलेंगे। तो द्वार की दाईं ओर हनुमानजी का मन्दिर था। पत्नी ने हनुमानजी को देखा तो जाकर वहाँ बैठ गई, रो-रोकर हनुमानचालीसा का पाठ करने लगी। पति यहाँ भगवान् नारायण के मन्दिर में आ गया। पुजारी ने पूछा क्या बात है बोला! मेले में भगदड़ से पत्नी बिछुड़ गई, पता नहीं कैसी होगी? कहाँ होगी? क्या हाल होगा? महाराज कृपा कर दो। भगवान् से प्रार्थना कर दो। पत्नी मिल जाए हमको। पुजारी ने हँसकर कहा अरे बावले। तुम यहाँ आए हो? पत्नी की खोज की प्रार्थना करने। अरे जो अपनी पत्नी नहीं खोज पाए वो आपकी क्या खोजेंगे? इनके बस की बात नहीं है। अगर इनमें दम होता तो अपनी न खोज लेते। जाओ वहाँ हनुमानजी बैठे हैं उनसे प्रार्थना करो कि मेरी पत्नी से मिला दो। वो इनकी भी खोजकर लाए थे वो तुम्हारी भी खोज कर ला देंगे। और जैसे ही पतिदेव हनुमानजी के मन्दिर में आए यहां पहले से ही पत्नी बैठी हनुमानचालीसा का पाठ कर रही थी। खोये को भी हनुमानजी ने मिला दिया। भगवान् का जो जन्म हुआ है वो चार कारणों से हुआ था-

बिप्र धेनु सुर संत हित। लीन्ह मनुज अवतार।।

भगवान का जन्म ये चार कारणों से हुआ था। सुर, संत, विप्र, धेनु का हित। विप्र माने ब्राह्मण, विप्र कोई

जातिवाचक शब्द नहीं है, अपितु गुणवाचक शब्द है। कोई सोच सकता है कि क्या भगवान् बाकी जातियों के लिए नहीं आए, नहीं भगवान सर्वत्र हैं और सबके लिए समर्पित हैं। विप्र माने जो धर्म, शास्त्र, भगवान, धर्म की रक्षा के लिए आए।

जब-जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी॥
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥

धेनु माने गाय अर्थ के रूप में, गाय इस जगत का अर्थ है। गाय इस भारत की समृद्धि है, भारत की सम्पत्ति है, भारत का वैभव है, गाय से ही गौरव शब्द बना है। जब तक इस देश में गाय रहेगी तब तक इस देश का समस्त विश्व में गौरव रहेगा, जब तक गाय रहेगी तब तक भारत सुखी और समृद्ध रहेगा, वैभव सम्पन्न रहेगा। जब से हमारे देश में गाय की दुर्दशा हुई है तब से देश का गौरव भी गया, समृद्धि व सम्पत्ति भी चली गयी, देश भिखारी हो गया, कर्जदार हो गया। इसलिए इस देश की गाय बचनी चाहिए। गाय समृद्धि का प्रतीक है। धेनु माने-

सात्विक श्रद्धा धेनु सहाई॥

इस देश का जो प्राण है वो सात्विक श्रद्धा है। श्रद्धा के आधार पर ही भारत जीवित है। तो भगवान् धर्म की रक्षा के लिए आते हैं। अर्थ की रक्षा के लिए आते हैं। देवता कामना पूरी करते हैं। काम के लिए, कामना पूर्ति के लिए, देवता मनुष्य की कामना को पूरा किया करते हैं और देवता यज्ञ से प्रसन्न होते हैं। इसलिए हम यज्ञ का आग्रह करते हैं। घर में जरूर मास में दो बार पूर्णिमा और अमावस्या को हम यज्ञ का आग्रह करते हैं। घर में जरूर यज्ञ होना चाहिए। मनुष्य का जीवन देवताओं के अधीन है। देवताओं के द्वारा ही मनुष्य को सारी

की सारी वस्तुएं मिलती हैं जल है, अग्नि है, वायु है, प्राण है, समृद्धि है, सम्पत्ति है। देवता यज्ञ से प्रसन्न होते हैं। विप्र, धेनु, सुर, संत व मोक्ष संतों के आशीर्वाद से मिलता हैं, मोक्ष संतों की कृपा से मिलता है और इसलिए भगवान चार रूप में आए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। लक्ष्मणजी धर्म के प्रतीक हैं, शत्रुघ्नजी अर्थ के प्रतीक हैं, भरतजी काम के प्रतीक हैं और भगवान् साक्षात् मोक्ष के प्रतीक हैं। धर्म की मर्यादा में, धर्म संरक्षण में अर्थोपार्जन और मोक्ष की परिधि में काम का सदुपयोग करें! काम हमको अन्धा न कर दे। आदमी मोक्ष के मार्ग पर बढ़ जाए, और अर्थ हमको धर्म से विरक्त न कर दे, विमुख न कर दे। अन्यथा अर्थ अनर्थकारी होता है। इसलिए अर्थ को धर्म के साथ जोड़ा और काम को मोक्ष के साथ जोड़ा। भगवान् चार रूप लेकर प्रकट हुए-

प्रकट भये चारों भैया। अवधपुर बाजे बधैया॥

तो संयमित काम चाहिए, **बरनउँ रघुवर बिमलजसु। जो दायकु फल चारि॥** आगे बहुत सुन्दर शब्द लिखा है-

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार॥

सबसे बड़ी समझ यही है कि मनुष्य यह मान ले कि मैं नासमझ हूँ, मैं बुद्धिहीन हूँ। हर व्यक्ति अपने को बुद्धिमान समझता है। एक संत कहते हैं कि आँखवाला तो वह है जिसे अपना अंधेरा दिखाई दे। कैसी विचित्र बात है कि व्यक्ति धन कम बताएगा लेकिन बुद्धि कभी कम नहीं बताएगा। अगर आपने कह दिया कि आप बुद्धि से बहुत कम हैं तो वह आपसे लड़ पड़ेगा। आप किसी के बारे में कहें कि वह आपसे ज्यादा धनवान हैं तो वह मान लेगा, आप किसी के बारे में कहें कि वह आपसे ज्यादा स्वस्थ है वह मान लेगा लेकिन यदि आप कहें कि वह आपसे ज्यादा बुद्धिमान है तो वह आपको अपने घर से उठा देगा । बुद्धि-अहंकार का प्रतीक है और अहंकारी कभी दूसरे को अपने से बड़ा देखना ही नहीं चाहता है, सुनना ही नहीं चाहता है। दूसरे का धन और अपनी बुद्धि हमेशा ज्यादा लगती है और मूर्ख की पहचान भी यही है जो अपने को सर्वाधिक बुद्धिमान

समझे, समझो सर्वाधिक मूर्ख है और ऐसा व्यक्ति आपको हमेशा शिकायत करता दिखाई देगा। हमारी तो कोई सुनता ही नहीं, हमारी तो कोई मानता ही नहीं, हमसे कोई सलाह ही नहीं लेता। इस देश में अगर कुछ मुफ्त में मिलता है तो वह सलाह ही है और जिसे कोई नहीं लेता है वह भी सलाह है। दुनिया सलाह देने को तैयार है लेकिन कोई लेने को तैयार नहीं। बाप सलाह देने को तैयार बैठा है लेकिन बेटा लेने को दूर सुनने को भी तैयार नहीं। मूर्ख का मतलब जो अपने को अकलमंद समझे, विनम्रतापूर्वक अपनी अज्ञानता यदि स्वीकार कर लो तो इससे बड़ा साहस का कार्य कुछ नहीं, इससे बड़ा कोई साहस नहीं है, मैं अज्ञानी हूँ, क्या दिक्कत है इसमें।

एक अध्यापक ने अपनी कक्षा में पूछा आपमें से जो सबसे ज्यादा मूर्ख है वह खड़ा हो जाए, अब अपने को कौन मूर्ख माने। एक-दूसरे को बालक देखने लगे तू खड़ा हो जा, तू खड़ा हो जा, कोई खड़ा नहीं हुआ। अध्यापक ने निगाह घुमायी, एक विद्यार्थी पीछे खड़ा हुआ। अध्यापक को थोड़ा संतोष हुआ कि चलो मेरी क्लास में एक तो सत्यवादी बालक है जिसने अपने को मूर्ख स्वीकार कर लिया। बहुत अच्छा बेटे आगे आओ, विद्यार्थी ने वहाँ से कहा सर मैं इसलिए नहीं खड़ा हुआ हूँ तो क्यों खड़े हुए हो? बोला सर आप अकेले खड़े हुए थे अच्छा नहीं लग रहा था इसलिए सोचा आपका साथ दे दूँ। हम सब अपने को बुद्धिमान् मानते हैं। गोस्वामीजी जैसे महापुरुष कह रहे हैं-

बुद्धिहीन तनु जानिके,सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार॥

और इसका एक दूसरा भी अर्थ हो सकता है जिसने अपने तन को ही सब कुछ मान लिया वही बुद्धिहीन है। मनुष्य केवल शरीर नही है, मनुष्य केवल देह नहीं है, मनुष्य तो ईश्वर का अंश है।

ईस्वर अंस जीव अविनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी॥
सो मायावस भयउ गोसाईं। बंध्यो कीर मरकट की नाईं॥

विचार। हम क्रिया पहले करते हैं पश्चाताप का विचार-विमर्श बाद में करते हैं। अरे राम! ऐसा कैसे हो गया, अरे बुद्धि पर कैसे पत्थर पड़ गए। हनुमानजी पहले विचार करते हैं। फिर कार्य करते हैं। हम कार्य पहले करते हैं विचार बाद में करते हैं, इसलिए ठोकर खाते हैं। विद्या माने ज्ञान, विद्या माने विज्ञान, जो हमको दुर्गुणों-दुर्विचारों से बचाती है, वासनाओं से मुक्त रखे वही विद्या है, वही ज्ञान है। हम सब अज्ञानी हैं, हम सब अंधेरे के कारणों में डूबे हैं। श्रीहनुमानजी जब भी उड़ान भरते हैं प्रकाश की ओर, जन्म लेते ही सूर्य की ओर उड़ गए थे। हम सब अंधेरे की ओर जाने की कोशिश करते हैं। श्रीहनुमानजी ज्ञान की ओर प्रकाश की ओर-**तमसो मा ज्योतिर्गमय।**

यह ज्ञान हमें प्रकाश की ओर भगवान् की ओर ले जाएगा। जो शिखर की ओर मुक्ति की ओर ले जाए, वासनाओं से मुक्त कर दें, विरक्त कर दे, उसको ज्ञान (विद्या) कहते हैं-**सा विद्या या विमुक्तये।**

बाल्मीकिजी के आश्रम में जब भगवान् पहुँचे हैं गोस्वामीजी ने लिखा है कि जब प्रभु वन मार्ग से जा रहे थे बाल्मीकिजी के आश्रम की ओर तो क्या देखते-देखते जा रहे थे वो सब लिखा है-

देखत बन सर सैल सुहाये। बालमीकि आश्रम प्रभु आये॥

गोस्वामीजी लिखते हैं कि वन की शोभा निहारते आ रहे हैं। सरोवरों का दर्शन करते आ रहे हैं। पर्वत शिखरों को देखते आ रहे हैं। वन, बाग, उपवन, वाटिका यें सभी साधना की सीढ़ियां है श्रेणियाँ हैं। साधना की पहली सीढ़ी है वाटिका जहाँ प्रेम के पौधे जहाँ रोपे जाते हैं तो वाटिका यह साधना की प्रथम सीढ़ी है क्योंकि इसकी रक्षा बहुत करनी पड़ती है कभी पौधा मुरझा सकता है। वाटिका से थोड़ा बड़ा उपवन साधना की दूसरी सीढ़ी फिर तीसरी सीढ़ी है बाग। बाग घना होता है, बड़ा होता है, समर्थ होता है लेकिन लगाया जाता है चौथी जो अन्तिम सिद्धावस्था है वो है वन, वन लगाया नहीं जाता, बल्कि वन स्वयं पैदा होता है,

श्री हनुमानजी बुद्धिमताम् वरिष्ठम् हैं। **मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।** क्योंकि जो जितेन्द्रिय हैं और जितेन्द्रिय ही बुद्धिमताम् वरिष्ठम् हो सकता है। जितेन्द्रिय के पास ही बल, बुद्धि और विद्या होती है। अजितेन्द्रिय की ये तीनों ही नष्ट हो जाती हैं। जितेन्द्रिय माने क्या? इसका अर्थ है जिसका मन शुद्ध हो वह जितेन्द्रिय है और अशुद्ध मन ही हमसे अशुद्ध कार्य कराता है। श्रीहनुमानजी– **कुमति निवार सुमति के संगी हैं।**

जिसका मन शुद्ध हो गया वही जितेन्द्रिय है। मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, विकार, वासना की जब अशुद्धता आती है तब मनुष्य की इन्द्रियां पाप करती हैं, वह अजितेन्द्रियम् हो गया इसलिए जिसका मन शुद्ध हो गया वह जितेन्द्रिय हो गया और जो जितेन्द्रिय हो गया उसके पास बल, बुद्धि और विद्या ये तीनों आती हैं। साधना के लिए ये तीनों चाहिए, जिसको साधना करनी है उनको बल भी चाहिए, संकल्प का बल, त्याग का बल, साधना का बल, वैराग्य का बल, संयम का बल, आत्मा का बल। साधना में कायर और कमजोर नहीं जाते, साधना व्यवहार नहीं है, साधना व्यापार नहीं है, साधना तो सीधा जुआ है। साधना में तो दाँव लगाना पड़ता है, प्राणों की बाजी लगानी पड़ती है, जीवन लगाना पड़ता है, हम जीवन का हिसाब लगाते हैं, लाभ होगा या हानि होगी, यह व्यापार नहीं है, यह तो पूरा दांव है। साधना का बल चाहिए, बुद्धि भी चाहिए चूंकि क्रिया शक्ति के पहले विचार शक्ति चाहिए। बुद्धि माने विचारशक्ति। हनुमानजी जो कुछ करते हैं उससे पहले विचार करते हैं।

तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई। करौं बिचार करउ का भाई॥

श्रीहनुमानजी पहले विचार करते हैं क्रिया बाद में करते हैं। **पुर रखवारे देखि बहु, कपि मन कीन्ह**

वन स्वयं बन जाता है और वन की रक्षा भी नहीं की जाती है वन वह है जिसमें साधक भी बैठते हैं, जीव, जानवर, ऋषि-मुनि, राक्षस सब जहाँ आश्रय पाते हैं। सिद्धावस्था जिसके चरणों में सबको बैठने का अधिकार हो और जो किसी के बैठने से प्रभावित न होता हो वह वन की अवस्था है वो साधना की पराकाष्ठा है वन। हरा-भरा, गहन, प्रफुल्लित, पक्षियों के कलरव से भरा हुआ, सब प्रकार से वन प्रेम की पराकाष्ठा का प्रतीक है, वन के समान घना, गहन, छायादार ज्ञान चाहिए और सर माने सरोवर, सरोवर के समान शान्त, निर्मल, शीतल, शान्त यह बुद्धि चाहिए-

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै आपहुँ शीतल होय॥

हमारी वाणी ऐसी होती है कि शीतल में भी जलन पैदा कर देती है। सरोवर वो अच्छा माना जाता है जो प्यास को भी शान्त कर दे और हमारे मन को भी शीतल कर दे। बल शैल के शिखर, पर्वत के शिखर का प्रतीक है। हमारे अन्दर अडिग बल चाहिए परन्तु हमको थोड़ा सा बल मिलता है,चाहे धन का बल मिले, पद का बल मिले, वैभव का बल मिले, यश का बल मिले हम डगमगाने-कपकपाने लगते हैं। हम दुरुपयोग करने लगते हैं जैसे हिमालय का शिखर अडिग है, बड़े-बड़े भूचाल, झंझावत, भूकम्प, तूफान उसको हिला नहीं पाते। कोई भी बाहर की परिस्थिति हमारे भीतर के बल को हिला न पाए वो शैल के समान है और ये तीनों ही परोपकारी स्वभाववाले हैं और एक सिद्धान्त और है-

निर्बल को कोई आदर नहीं देता जो भी दुनियाँ में कमजोर देश है इनका कभी सम्मान नहीं हुआ और जो भी कमजोर व कायर हैं समाज में, उसको कोई आदर नहीं मिलता दुत्कार मिलती है, उसको हम फटकार देते हैं। गोस्वामीजी कहते हैं कि प्रभु बुद्धि के लिए चरित्र बल चाहिए जिसका उपयोग हो सके। ऐसा नहीं है कि सबकी बुद्धि खराब है सबकी बुद्धि अच्छी होती लेकिन अच्छी बुद्धि होने के बाद भी हम गलत कार्य क्यों

करते हैं इसका चिन्तन करना चाहिए। चोर भी कहाँ चाहता है कि मेरा बालक चोर बने, शराबी भी कहाँ चाहता है कि मेरा बालक शराबी बने, लेकिन शराबी जानने के बाद भी कि मुझे शराब नहीं पीनी चाहिए फिर भी पीता है कारण क्या है? उसके भीतर संकल्प का बल नहीं है भीतर से वह निर्बल है बुद्धि तो उसकी अच्छी है लेकिन भीतर चरित्र का बल, संकल्प का बल नहीं है जिस कारण वह गलत मार्ग से हट नहीं सकता। मनुष्य तो क्या, सही या गलत तो कुत्ता भी जानता है।

एक महात्मा सुना रहे थे कि आप एक कुत्ते को रोटी का टुकड़ा डाल दें तो जहाँ आप डालते हैं तो कुत्ता रोटी के टुकड़े को वहीं बैठकर खाने लगता है लेकिन जो कुत्ता रोटी चुराकर ले जाता है वो वहाँ नहीं खाता जहाँ से चुराया, दूर छुपकर गली में खाता है। तो जब कुत्ता इस बात को जानता है कि मैं चोरी करके लाया हूँ इसलिए छुपकर खाना चाहिए तो क्या मनुष्य नहीं जानता है कि क्या शुभ है और क्या अशुभ? क्योंकि इसके भीतर संकल्प का बल,आत्मा का बल नहीं है इसलिए अच्छी बुद्धि भी उससे गलत काम कराती है।

बल विवेक दम परिहित घोरे।

बल के साथ विवेक चाहिए और विवेक के साथ आत्मा का बल चाहिए तब जीवन का रथ चलता है, नहीं तो घिसटता है। विवेक मिलता है सत्संग से।

बिनु सतसंग बिबेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।
सतसंगति मुद मंगल मूला। सोइ फल सिधि सब साधन फूला।।

विवेक माने बिल्कुल स्पष्ट ज्ञान, बेबाक किसी प्रकार की कोई धुंधलाहट नहीं, स्पष्ट ज्ञान, क्या करना, क्या नही करना, क्या शुभ है, क्या अशुभ है, क्या करना है क्या नहीं करना इसमें किसी भी प्रकार का कोई संशय नहीं इसको विवेक कहते हैं बिना लाग लपेट के और गोस्वामी जी ने पवनकुमार शब्द प्रयोग किया है–

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन-कुमार।
बल, बुद्धि, विद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार॥

पवनकुमार का सुमिरन किया गया है। बाकी देवताओं के तो पास जाना पड़ता है लेकिन पवन कुमार क्यों बोला इसलिए बोला? क्योंकि पवन स्वयं चलकर तुम्हारे पास आती है। और जैसे पवन स्वयं चलकर तुम्हारे पास आती है ऐसे ही पवन कुमार हैं जो स्वयं चलकर तुम्हारे पास आते हैं। उनके पास जाने की आवश्यकता नहीं बस केवल उनका सुमिरन करो, उनकी याद करो, उनकी पुकार करो-

हे दुख भंजन मारुति नन्दन, सुन लो मेरी पुकार।
पवनसुत विनती बारम्बार, पवनसुत विनती बारम्बार॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता, दुखियों के तुम भाग्य विधाता॥
सियाराम के काज संवारे, मेरा कर उद्धार।
पवन सुत विनती बारम्बार, पवनसुत विनती बारम्बार॥
अपरम्पार है शक्ति तुम्हारी, तुम पर रीझे अवध बिहारी।
भक्तिभाव से ध्याऊं तोहे कर दुखों से पार।
पवन सुत विनती बारम्बार, पवनसुत विनती बारम्बार॥
जपुँ निरन्तर नाम तिहारा, अब नही छोड़ूँ तेरा द्वारा।
रामभक्त मोहे शरण में लीजै, कर भव सागर से पार।
पवन सुत विनती बारम्बार, पवनसुत विनती बारम्बार॥

भक्तों की पुकार पर वे तुरन्त चले आते हैं और उनके कष्ट-कलेशों को पल भर में दूर कर देते हैं।

पवन तो बहुत सुलभ है इसलिए लोग बहुत कम याद करते हैं। दुर्लभ की याद बहुत लोग करते हैं। हीरा

दुर्लभ है बड़ा कीमती। उससे सस्ते गेहूँ आदि अनाज लेकिन उनकी भी कीमत है। उनसे सस्ता जल सुलभ है कम कीमत है और जिसकी कोई कीमत नहीं वो पवन है क्योंकि सर्व सुलभ है बिना माँगे मिलता है। बिजली पानी के लिए तो आन्दोलन करते हैं किसी ने हवा के लिए आन्दोलन किया, हवा नहीं चल रही आन्दोलन करो, प्रदर्शन करो, जिसको बल, बुद्धि और विद्या आ गई उसी के कलेश का हरण होता है।

पाँच क्लेश होते हैं और छह विकार होते हैं। कलेश मानसिक होते हैं, विकार शारीरिक होते हैं। पहले विकार मन में आता है तन में उसका प्रदर्शन बाद में होता है। पहले दोष, दुर्गुण मन में आते हैं। चाट खानी है यह मन में आया, पेट में विकार उसके बाद आता है। मदिरा पीनी है मन में विकार पहले आएगा, शरीर नाली में गिरा है विकार बाद में दिखाई देता है। तो यह कलेश है, विकार है, जो मन को मैला करते हैं, तन को रुलाते हैं वें विकार है और ये दोनों साथ-साथ रहते हैं तन में यदि विकार है तो इसका अर्थ है पहले मन में कोई न कोई विकार अवश्य आया होगा जिसका आपने पालन किया है। परिणाम उसका तन भोग रहा है। इनको यदि कोई दूर कर सकता है तो बल, बुद्धि, विद्या, संकल्प का बल, विचार की शक्ति और अज्ञान के मार्ग से विरक्ति ये तीनों ही आपको अन्याय से, अधर्म से बचा सकते हैं। गोस्वामीजी ने हनुमानजी से विनय की है कि-

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥

श्रीहनुमानचालीसा का शुभारम्भ भी हुआ जय हनुमान् से और समापन भी जय हनुमान् से हो रहा है।

जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥

जय संकल्प का प्रतीक है। हनुमानजी संकल्प के प्रतीक हैं जो संकल्प लेते हैं वो पूर्ण होता है और जय-विजय का प्रतीक है जय-जय का प्रतीक है। श्रीहनुमानजी की सदा जय होती है। कभी भी हनुमानजी परास्त नहीं होते और केवल गोस्वामीजी कहते हैं जो सदैव हनुमानजी की शरण में रहते हैं उनकी भी हमेशा

जय होती है और यह नियम है कि संकल्पवान हमेशा विजयी होता है जो संशय में डूबा है,सन्देह में डूबा है, होगा कि नहीं होगा, वो पराजित होगा। होगा कैसे नहीं हनुमानजी मेरे साथ है इस संकल्प के साथ हम कार्य करेगें तो वह कार्य अवश्य होगा। जय हनुमान् गोस्वामीजी ने हनुमान् शब्द का प्रयोग किया है। हनुमान् का अर्थ है जिन्होंने अपने मान का हनन कर दिया हो जिन्होंने अपने सभी प्रकार के अहं का हनन कर दिया हो, वो हनुमान् है।

इनकी बचपन की कथा है जब इनका जन्म हुआ तो अंजनी माता फल लेने के लिए इनको पालने में छोड़कर जंगल में गयी हैं। उस दिन प्रात:काल आकाश में सूर्य उदित हो रहे थे लाल-लाल रसीला कोई फल प्रकट हुआ है, ऐसा हनुमानजी को लगा और वहां से उछाल मार दी और उन्होंने सूर्य को पकड़कर मुंह में ले लिया। सारी सृष्टि में अंधकार छा गया। बाद में इन्द्र ने आकर अपने वज्र का प्रहार किया जिससे इनकी ठोढ़ी थोड़ी टेढ़ी हो गई लेकिन हनुमानजी की तो थोड़ी सी ठोढ़ी टेढ़ी हुई थी परन्तु हनुमानजी से टकराकर इन्द्र का जो वज्र था उसकी धार सदा-सदा के लिए समाप्त हो गई। तबसे इनका नाम हनुमान् पड़ गया। हनु जिनकी थोड़ी सी ठोढ़ी टेढ़ी है उसको हनुमान् कहते हैं। लेकिन हनुमान् के अनेक अर्थ हैं। मूल में हम जिनकी चर्चा करेंगे जिन्होंने अपने मान का हनन कर लिया है। भगवान् की आप झाँकी देखिए इसमें आप हमेशा लक्ष्मणजी को साथ में नहीं देखेंगे। आप हमेशा भरत, शत्रुघ्न जानकीजी को भी साथ नहीं देखेंगे। लेकिन प्रभु की प्रत्येक झाँकी में हनुमानजी को सदा साथ में देखेंगे। हनुमानजी को भगवान सदैव अपने पास रखते हैं क्योंकि इन्होंने अपने मान को छोड़ दिया। इन्होंने तीन चीजें छोड़ीं और जो तीन चीजें छोड़ देता है भगवान उन्हें हमेशा अपने साथ रखतें है। एक तो हनुमानजी ने अपना नाम छोड़ा आज तक कोई हनुमानजी का नाम ही नहीं बता पाया। ये जो हनुमानजी के नाम हैं वे उनके नाम नहीं हैं, गुण हैं। पवनपुत्र, अंजनीसुत, बजरंगबली, वायुपुत्र, महाबली, रामेष्ट, पिंगाक्ष, सीताशोक विनाषन: लक्ष्मणप्राणदाता, ये सब हनुमानजी के नाम नहीं हैं ये तो उनके गुण हैं।

और हम सब नाम के पीछे हैं। हनुमानजी ने जानबूझकर अपना नाम नहीं रखा। हनुमानजी से जब कोई नाम पूछता है तो हनुमानजी कहते हैं अरे, बन्दर का नाम क्या पूछते हो। नाम बन्दर का मत लो, नाम तो किसी सुन्दर का लो। पूछा सुन्दर कौन है, हनुमानजी ने कहा सुन्दर तो केवल दो ही हैं-

जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम।
बोलो राम राम राम, बोलो श्याम श्याम श्याम॥

जो भी कोई नाम पूछता है, हनुमानजी नाम तो नहीं बताते उसको रामकथा सुनाने लग जाते हैं। विभीषण जी के यहाँ हनुमानजी आए पूरी रामकथा सुना दी, **तब हनुमंत कही सब राम कथा।** तो विभीषण ने कहा महाराज कथा तो बहुत सुन्दर सुनाई आप अपना नाम तो बताइए। हनुमानजी बोले नाम का क्या करोगे? अरे भई जिसने इतनी सुन्दर कथा सुनाई उसका नाम तो मालूम होना चाहिए। हनुमानजी ने कहा नाम तो बता देंगे लेकिन नाम सुनने से पहले नाम का महात्म्य सुन लीजिए। नाम का महात्म्य क्या है बोले-

प्रात लेइ जो नाम हमारा। तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा॥

हनुमानजी ने कहा हमारे नाम का ये महात्म्य है कि अगर प्रात:काल हमारा नाम ले लोगे तो उस दिन आपको भोजन नहीं मिलेगा, बोले नाम बताएं तो विभीषण जी बोले रहने दो जब भोजन ही न मिले तो नाम का फायदा ही क्या। हनुमानजी अपना नाम छुपाते हैं भगवान की कथा को प्रकट करने के लिए। और हमारे जैसे तो पहले अपना नाम छपवाते हैं, कथा उसके बाद आती है। हनुमानजी अपने नाम को छुपाते हैं कथा को पहले प्रकट करते हैं।

तब हनुमन्त कही सब राम कथा।

मुझे क्षमा करना, मैं सिद्धान्त की बात बोल रहा हूँ किसी की आलोचना नहीं कर रहा। किसकी कथा हो

रही है। डोंगरेजी महाराज की कथा हो रही है। किसकी कथा हो रही है बोले मुरारीबापूजी की कथा हो रही है, किसकी कथा हो रही है बोले रमेशभाई की कथा हो रही है, मृदुलजी की, कौशलजी की कथा हो रही है। रामजी की कहीं कथा हो रही है? भगवानकृष्ण की कथा हो रही है? जब देखो व्यक्ति की कथा। हमारे नाम पोस्टर पर कितने बड़े हो रहे हैं तथा पहले छपे हैं। कथा तो बहुत छोटी सी है। उस छोटी सी कथा में अपनी ही बोलते चले जाते हैं। हनुमानजी नाम को छुपाते हैं। कथा को छापते हैं तो हनुमानजी ने अपने नाम को छुपा लिया हम अपना नाम प्रकट करने के लिए लालायित हैं। कई तो पत्थर पर खुदवा के जाएंगे। भले ही हम दुनियां से चले जाएं लेकिन हमारा नाम रहना चाहिए। काम दिखाई दे न दे उसकी चिंता नहीं है। लेकिन नाम दिखाई देना चाहिए, इसकी चिंता है। हनुमानजी का जगत में काम दिखाई देता है लेकिन हनुमानजी का कोई नाम नहीं पता लगा पाया। एक तो हनुमानजी ने अपना नाम मिटाया दूसरे रूप आपको मालूम है कि कुरूप कोई होता है तो बन्दर होता है और इसके पीछे भी कारण होगा कि हनुमानजी चाहते हैं कि लोग मुझे देख कर मुंह फेर लें, मेरे प्रभु का सब लोग दर्शन कर लें। मेरे प्रभु सुन्दर लगें, मैं तो बन्दर ही ठीक हूँ। हम सब अपने नाम, रूप व यश के लिए रोते हैं। आप किसी भी परिवार में जाइए, कोई न कोई यह शिकायत करते मिलेगा कि हम कितना भी कर दें, कितनी भी मेहनत करें, कितना भी काम कर दें, सबके लिए कितना भी कर दें, लेकिन हमें हमेशा अपयश ही मिलता है। हमको केवल बुराई ही बुराई मिलती है। कोई हमारे लिए यश की कोई बात ही नहीं बोलता है। सारा रोना यश का। हर घर में हनुमानजी भगवानजी का यश चाहते हैं। जब लंका में हनुमानजी जानकीजी के पास बैठे थे और जानकी माँ स्वयं रो रहीं थीं तब हनुमानजी ने कहा माँ वैसे तो मैं आपको अभी ले जा सकता था।

अबहि मातु मैं जाउँ लैवाई। प्रभु आयसु नहिं राम दुहाई।।
कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा।।

निसिचर मारि तोहि ले जैहहिं। तिहुं पुर नारदादि जस गैहहिं॥

वैसे तो माँ मैं आपको अभी ले जा सकता हूँ परन्तु मैं चाहता हूँ कि सारा जगत्, तीनों लोक मेरे प्रभु का यशगान करें, और बन्धुओं जो यश का त्याग कर देता है उनका यश हमेशा भगवान् गातें है।

महाबीर विनवउँ हनुमाना। राम जासु जस आपु बखाना॥
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई। बार-बार प्रभु निज मुख गाई॥

भगवान बोलते है कि रघुवंश की इकहत्तर पीढ़ियां भी हनुमान् की सेवा में लग जायेंगी, तो भी हे भरत! रघुवंशी हनुमान के इस ऋण से उऋण नहीं होंगे। भगवान् कहते हैं कि हनुमान् अगर तूने अपना यश त्याग दिया तो मेरा आशीर्वाद है तेरा यश केवल मैं ही नहीं अपितु-

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं॥

हजारों मुखों से शेषनाग भी जिनका यश का गान करते हैं। श्रीहनुमानजी को देखो यश से कितनी दूर हैं, मनुष्य जरा सा भी काम करता है, उसको भी छपवाना चाहता है। हनुमानजी कितना बड़ा काम करके आए तो भी छुपाते रहे। आपने घटना सुनी होगी कि वानरों के बीच में भगवान् बैठे हैं तो भगवान चाहते हैं कि हनुमानजी के गुण वानरों के सामने आएं। भगवान बोले हनुमान् 400 कोस का सागर कोई वानर पार नहीं कर पाया मैंने सुना तुम बड़े आराम से पार करके चले गए। कैसे चले गए? हनुमानजी ने कहा महाराज बन्दर की क्या क्षमता थी। शाखा से शाखा पर जाई, बन्दर तो इस टहनी से उस टहनी पर उछल कूद करता है यह तो प्रभु आपकी कृपा से हुआ। **प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं॥** अवधी भाषा में हनुमान जी बोले- **तोय मुद्रका उस पार किये।** भगवान् से कहा यह तो आपकी मुद्रिका थी जिस के कारण मैं सागर पार कर गया। भगवान् ने कहा अच्छा मेरी मुद्रिका से सागर पार किया परन्तु मुद्रिका तो आप सीता

जानकीजी को दे आए थे। तो ठीक है। लेकिन जब लौट कर आए तो सागर थोड़ा सिकुड़ गया था या गहराई थोड़ी घट गई थी क्या? हनुमानजी बोले सागर तो उतना ही रहा। भगवान् ने पूछा जब तुम मेरी मुद्रिका से सागर पार गए और लौटते समय मुद्रिका तुम्हारे पास थी नहीं तो तुम इस पार कैसे आए। हनुमानजी ने बहुत सुन्दर उत्तर दिया कि- **तोय मुदरी उस पार किये और चूड़ामणि इस पार।**

आपकी कृपा ने तो माँ के चरणों तक पहुंचा दिया और माँ के आशीर्वाद ने आपके चरणों तक पहुंचा दिया।

तोय मुदरी उस पार किय। चूडामणि इस पार॥

भगवान् ने कहा कि अच्छा चलो सागर तो तुमने कृपा से पार कर लिया। यह बताओ कि लंका कैसे जलाई?

केहि विधि दहेउ दुर्ग अति बंका?

हनुमानजी ने कहा कि मेरा नाम गलत लगा है। अखबार वालों ने गलत छापा है। मैंने नहीं जलाई। तो किसने जलाई? श्री हनुमानजी बोले-

सीय विरह लंका जरी, सकल प्रताप तुम्हार॥

हनुमानजी ने कहा कि प्रभु लंका तो जानकीमाँ के विरह के ताप ने जलाई। लंका तो आपके प्रताप ने जलाई है। बताऊं भगवन्, किसने जलाई। एक व्यक्ति ने नहीं जलाई, इसमें बहुत लोगों का हाथ था। भगवान् ने पूछा बहुत लोगों का जलाने में हाथ था। किस-किस का हाथ था? बोले जानकीजी के विरह के ताप ने जलाई, आपके प्रताप ने जलाई, रावण के पाप ने जलाई, ब्राह्मणों के शाप ने जलाई और हमारे बाप ने जलाई चूंकि पवन बहुत तेज चल रही थी।

हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उन्चास॥

श्रीहनुमानजी, यश से बहुत दूर हैं। अरे सामान्य व्यक्ति की बात छोड़ दीजिए रावण कभी किसी की

प्रशंसा नहीं करता पूरी रामायण में अगर रावण ने प्रशंसा की है तो केवल एक हनुमानजी की। लेकिन वह भी हनुमानजी का नाम नहीं बता पाया। वह भी हनुमानजी का नाम नही जानता। जब अंगदजी गए हैं, तब रावण ने कहा कि अंगद तुम किसके साथ खड़े हो जो तुम्हारा स्वामी है वो तो नारी विरह में रो रहा है। उसका छोटा भाई तो रोते-रोते और ज्यादा कमजोर हो गया है। अब कौन लड़ेगा मेरे साथ, अब तुम्हारी सेना में है कौन जो मुझसे लड़ेगा? सुग्रीव कमजोर है, विभीषण की कोई हिम्मत नहीं है, नल और नील केवल शिल्पी हैं उनको युद्ध करना क्या आएगा, जामवंत मंत्री अति बूढ़ा, वो बूढ़ा हो चुका है। हाँ-हाँ-हाँ लेकिन एक वानर तुम्हारी सेना में बहुत ताकतवर है, वह थोड़ी हिम्मत कर सकता है। अंगदजी ने पूछा कौन? वह बोला नाम तो कुछ मुझे मालूम नहीं है लेकिन काम उसका मालूम है। काम? क्या काम करता है? बोले हमारी लंका में आया था, हमारे नगर को जलाकर राख कर गया।

आवा प्रथम नगरु जेहि जारा।।

जो पहली बार नगर में तुमसे पहले आया था उसने लंका को जलाया। अंगदजी मन ही मन मुस्कुरा रहे हैं। बोला, हमारे लड़के को भी मार गया और बोले सारी अशोक वाटिका उजाड़ कर उसने ध्वस्त कर दी। अंगदजी ने पूछा उसका कुछ नाम भी तो होगा बोले नाम हमें पता नहीं कि नाम क्या है। हनुमानजी नाम से बिल्कुल दूर हैं, देखिए मान व अपमान से हनुमानजी बिल्कुल ऊपर उठे हुए हैं। लंका के राक्षस हनुमानजी का कितना अपमान करते हैं।

मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी।।

हनुमानजी का जुलूस निकालते हैं। लातों से, थप्पड़ों से मारने पर भी हनुमानजी मुस्कुरा रहे हैं। हनुमानजी सोच रहे हैं कोई बात नहीं थोड़ा मजा ले लो। हनुमानजी सोचते हैं कि मैंने इनको जितना पीटा है, इसके बदले में यह कुछ भी नहीं है। थोड़ा बहुत मेरे शरीर को खुजा रहे हैं। खुजा लेने दो, रावण ने हनुमानजी को

बंधवाकर लाने को कहा। बांध कर लाओ। हनुमान जी बंध गए। अब आप रावण की भाषा देखो बंधने के बाद भी हनुमानजी शांत खड़े हैं। हनुमानजी आपको बधने में शर्म नहीं लगी किसी ने कहा बोले-

मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा कीन्ह चहहुँ निज प्रभु कर काजा॥

मुझे बंधने में कोई शर्म नहीं है मैं तो अपने प्रभु का कार्य करना चाहता हूँ और प्रभु का कार्य अगर बंधकर भी होता हो तो मुझे बंधकर भी आनन्द का अनुभव होगा। हनुमानजी न अपमान से कभी व्याकुल होते हैं और न सम्मान से कभी फूलते हैं। जिस समय सागर पार करना था और सागर के किनारे बैठे सभी वानर चिंता में डूबे थे तो जामवंतजी हनुमानजी को ललकारते हैं कि हे हनुमानजी! **का चुप साधि रहे बलवाना** और पुरानी-पुरानी घटनाओं को सुनाकर उनके पौरुष को जगाने की कोशिश करते हैं। अरे हनुमानजी जरा याद तो करो-

बाल समय रबि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयौ अंधियारो।
ताही सों त्रास भयौ जग को यह संकट काहू सों जात न टारो॥
देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहीं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥

हे हनुमानजी, तुमने बालपन में कितने-कितने बड़े पौरुष पराक्रम दिखाए थे अब कैसे चुप बैठे हो। **का चुप साधि रहा बलवाना**। हनुमानजी को कोई फर्क नहीं पड़ता, हनुमानजी धरती कुरेद रहे हैं। प्रशंसा से फूले नहीं लेकिन जैसे ही कहा कि-**राम काज लगि तब अवतारा॥**

अरे हनुमानजी, आपका जन्म रामकाज को हुआ है-**सुनतहि भयउ पर्वताकारा॥**

एकदम पर्वताकार हो गए। बोलो जामवंतजी! अगर ऐसा है तो क्या करुं? न प्रशंसा से फूलते हैं, न अपमान से झुँझलाते हैं। हमारी कोई जरा सी प्रशंसा कर दे तो फूल जाते हैं। कोई जरा सी दो बात बोल दे तो

फिर बुझ जाते हैं। आप रावण की भाषा देखें। रावण कैसी भाषा बोलता है। हनुमानजी शंकर जी के अवतार हैं लेकिन रावण बोल क्या रहा है।

कह लंकेश कवन तैं कीसा। केहि कें बल घालेहु बन खीसा॥
की धौं भवन सुनेहि नहिं मोही। देखेउँ अति असंक सठ तोही॥
मारेहि निसिचर केहि अपराधा। कहु सठ तोहि न प्रान कइ बाधा॥

रावण की भाषा कितनी अशिष्ट है। क्या बोलता है? अरे बन्दर तू कौन है किसके बल पर तूने हमारा वन उजाड़ा, तूने राक्षसों को मारा, क्या तूने मेरा नाम नहीं सुना-**कीधौं श्रवण सुनेहि नहिं मोही॥**

क्या तूने मेरा नाम अखबारों व टीवी में नहीं सुना? क्या तू मुझे जानता नहीं? ऐ सठ तुझे अपने प्राणों का भी भय नहीं? अधम निर्लज्ज देखो इसके शब्दों को यह शास्त्रों का पण्डित है। और हमने देखा भी है, बड़े-बड़े शास्त्री लोग भी भाषा जब बोलते हैं बहुत गिरी हुई भाषा बोलते हैं। शास्त्र मस्तिष्क में भरे हुए और मुख में गालियां भरी हुई हैं, अरे मूर्ख, अरे सठ, ऐ अधम, ऐ निर्लज्ज ये भाषा है और ये भाषा किससे बोल रहा है रावण-

महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥

हनुमानजी जैसे महावीर विक्रम बजरंगी उनसे बोल रहा था, ये भाषा, **अतुलित बलधामं हेमशैलाभदेहं** से बोल रहा है। चाहते तो हनुमानजी यहीं मसल सकते थे, लेकिन हनुमानजी अपने मान और अपमान के लिए अपने बल का प्रयोग नहीं करते। जब हनुमानजी ने रावण को उत्तर दिया तो सब बैठे सभासद सोच रहे थे कि जिस भाषा में इसको गालियां दी गयी हैं। अब यह उत्तर किस भाषा में देगा। यह भारत का बन्दर है, यह राम का दूत है, यह भारत की गौरव गाथा है, भारत का व्यक्ति भाषा कभी अशिष्ट नहीं बोलता। हनुमानजी की भाषा भारत की आत्मा का प्रतिनिधित्व करती है। आप हनुमानजी की भाषा सुनिए-

बिनती करउँ जोरि कर रावन। सुनहु मान तजि मोर सिखावन॥
देखहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी। भ्रम तजि भजहु भगत भय हारी॥

श्रीहनुमानजी की विनम्रता देखिए, इनका शील स्वभाव देखिए रावण को हाथ जोड़कर विनय के स्वभाव में बोले है- देखिए। **विनती करूऊँ जोर करि रावण।** स्वामी शब्द बोला है-

सब कें देह परम प्रिय स्वामी। मारहिं मोहि कुमारग गामी॥
जिन्ह मोहि मारा तें मैं मारे। तेहि पर बाँधेउ तनयँ तुम्हारे॥
मोहि न कछु बाँधे कई लाजा। कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा॥

अरे हनुमानजी तो कितने नीचे उतर आए प्रभु कहकर पुकार दिया, **खायहुँ फल प्रभु लागी भूखा।**

अशिष्टता का उत्तर भी हनुमान जी ने शिष्टता से दिया क्योंकि हनुमानजी के भीतर स्वयं के प्रति किसी प्रकार का मान-अपमान का भाव ही नहीं है। अभिमानशून्य और जो अभिमानशून्य होता है वो हमेशा भगवान् को प्रिय होता है। किसी ने गोस्वामीजी से एक बार पूछा कि हनुमानजी की पूरी सेना में सबसे ज्यादा लम्बी पूँछ क्यों है। गोस्वामीजी ने कहा कि हनुमानजी की पूँछ सबसे लम्बी इसलिए है क्योंकि उनकी मूँछ नहीं है। आप देखिए हनुमानजी की मूँछ नहीं है। बिल्कुल क्लीन सेव, दाढ़ी तो है पर मूँछ नहीं। दाढ़ी गम्भीरता का प्रतीक है। मूँछ अहंकार का प्रतीक है। जिनकी मूँछ नहीं है वो भी जरा-जरा सी भी बात पर ऐंठने लगते हैं। हनुमानजी में किसी प्रकार की भी ऐंठ नहीं, एकदम विनम्र इसलिए हनुमानजी की पूँछ। और रावण को हनुमानजी से अगर कुछ भी चिढ़ है तो उनकी पूँछ से है। क्योंकि रावण दुष्ट है और दुष्ट व्यक्ति हमेशा सज्जनों की पूँछ से चिढ़ते हैं। और देखो तमाशा, सारी दुनिया पूँछ के पीछे। क्यों जाएं हमें तो कोई पूछता ही नहीं, पूछ है तो जाएं। जहाँ देखो पूँछ का झगड़ा। हम सब पूँछ के पीछे भाग रहे हैं और पूँछ हनुमानजी के पीछे भाग

रही है। इसलिए रावण को पूँछ से बहुत चिढ़ है। कहा कि बन्दर की पूँछ में आग लगा दो और यह हर युग का नियम रहा है जब भी सज्जनों की पूँछ बढ़ती है तो दुष्टों के हृदय में ईर्ष्या की आग जलती है। और वह ईर्ष्या की आग सज्जनों पूँछ को प्रतिष्ठा को जलाने की कोशिश करती है लेकिन परिणाम क्या हुआ जैसे ही हनुमान जी की पूँछ जलाई-

बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला। रहा न नगर बसन घृत तेला॥

नियम है जब भी समाज के निकृष्ट कोटि के लोग सज्जनों की प्रतिष्ठा की पूँछ जलाने की कोशिश करेंगे तो जलाना तो दूर की बात है वो पूँछ और अधिक बढ़ जाएगी। हनुमानजी की पूंछ का बाल भी बांका नहीं हुआ और उसके पीछे एक और कारण है। हनुमानजी से पूछा किसी ने कि आपकी पूँछ क्यों नहीं जली। बोले, माँ ने रक्षा की थी। चूंकि आग नहीं लगाई थी पावक लगाई थी।

तेल बोरि पट बाँधि पुनि। पावक देहु लगाई॥

और पावक में मेरी माँ बैठी है। आपने पंचवटी की घटना सुनी होगी जिसमें लक्ष्मणजी कन्द, मूल, फल लेने जंगल में गए हैं। भगवान् ने जानकीजी से कहा कि आप अपने तेज को पावक में समाहित कर दीजिए, अब मैं लीला का समापन करने जा रहा हूँ। रावण आएगा आपको स्पर्श नहीं कर पाएगा। आपका ऐसा तेजस्वी शरीर है। मायावी रूप धारण करिए ताकि लीला आगे बढ़े उस समय **तुम्ह पावक महुं करहु निवासा। जो लगि करौं निसाचर नासा॥**

यह भगवान ने आज्ञा दी थी कि तुम पावक में निवास करो और रावण ने भी अग्नि को आज्ञा नहीं दी थी पावक को कहा था-

तेल बोरि पट बाँधि पुनि। पावक देउ लगाइ॥

और जहाँ माँ बैठी हो वहाँ माँ क्रोध में दुष्टों को जलाएगी और वात्सल्य भाव में बालक की रक्षा करेगी,

इसलिए हनुमानजी की पूँछ का बाल भी बांका नहीं हुआ। शास्त्रों में पावक किसे कहते हैं? पावक कहते हैं भगवान के क्रोध को **राम रोष पावक सौं जरहीं॥**

भक्त के अपमान के समय भगवान् को जो रोष आता है उसको पावक कहते हैं। भगवान् सब कुछ सहन कर सकते हैं लेकिन अपने भक्त का अपमान सहन नहीं करते हैं।

राम रोष पावक सौं जरहीं, राम तो कहते हैं कि मैं तो संतों का दास हूँ, संत तो मेरे शीश पर रहते हैं।

मैं तो हूँ संतन को दास। संत मेरे मुकुटमणि॥
पग चापूँ और सेज बिछाऊँ। नौकर बनूँ हजाम।
हाँकू बैल बनूँ गड्वारो।
बिनु तनुख्वा रथवान अलख की लखता बनी॥
मैं तो हूँ संतन को दास। संत मेरे मुकुटमणि॥

श्रीहनुमानजी इतने अभिमान शून्य हैं। अपने बल का उपयोग अपने मान-अपमान के लिए नहीं करते। बल का उपयोग भगवान् प्रभु के कार्य के लिए करते हैं। और चूंकि हनुमान् अभिमानशून्य हैं इसलिए हनुमानजी भगवान् के प्रिय हैं। आप कोई झांकी ऐसी नहीं देखेंगे जो बिना हनुमानजी के हो। इसलिए किसी ने अच्छा गाया है कि **'दुनिया चले न श्रीराम के बिना, राम जी चले ना हनुमान के बिना'** भगवान्, बिना हनुमानजी के एक कदम भी नहीं चलते । ऐसे **"जय हनुमान ज्ञान गुन सागर"** श्रीहनुमानजी ज्ञान और गुण के सागर हैं। सिन्धु हैं, समुद्र हैं, ज्ञानिनाम् अग्रगण्यम् इतना बल व ज्ञान होने के बावजूद भी श्रीहनुमानजी अभिमानशून्य हैं। इसलिए हनुमानजी की सदैव जय होती है। इनको माँ का आशीर्वाद है। **होहुँ तात बल शील निधाना,** देखिए गुण के साथ शील होना आवश्यक है। शील आएगा माँ के आशीर्वाद से। भक्ति की कृपा गुण में शील के

साथ जुड़ी है और भक्ति श्रीहनुमानजी के आशीर्वाद से मिलेगी, अन्यथा तो गुण अभिमानी हो जाता है। हमारे सबके गुण अभिमान लेकर आते हैं और हनुमानजी के गुण भगवान् को लेकर आते हैं। गुण माने योग्यता तथा गुण रस्सी को भी कहते हैं। गुणवान अनेक प्रकार के बन्धनों में बंधे भी देखे जाते हैं। गुण अभिमान के बन्धन में हमको बाँध देते हैं। गुण बहुत धीरे-धीरे शील के साथ आते है। बहुत सुन्दर चौपाई लिखी है-

सिमिटि सिमिटि जल भरहिं तलाबा।
जिमि सद्‌गुन सज्जन पहिँ आवा।।

गुण के साथ शील चाहिए, धर्मशील, विनयशील, दानशील- **विनयशील करुणा गुण सागर जयति बचन रचना अति नागर'** शील माने दयालुता, विनम्रता, सरलता, सहजता। आपने प्रहलादजी की कथा सुनी है। प्रहलादजी ने अपने तपोबल से तीनों लोकों का राज्य अपने वशीभूत कर लिया। इन्द्र घबराकर भगवान् के पास आए और इन्द्र ने कहा महाराज लगता है कि मेरा सिंहासन भी जानेवाला है क्योंकि प्रहलादजी ने अपने बल से तीनों लोकों पर आधिपत्य कर लिया है। मेरा राज्य मुझे कैसे मिले युद्ध मैं उनसे कर नहीं सकता इतने बलवान हैं। भगवान ने कहा कि प्रहलादजी भी दानशील व शीलवान हैं। आप जाइये ब्राह्मण का वेष बनाकर और जो माँगना है उनसे माँग लीजिए, वे मना नहीं करेंगे। ब्राह्मण वेष बनाकर इन्द्र प्रहलादजी के दरबार में आए, प्रहलाद ने अन्तर्दृष्टि से जान लिया कि ब्राह्मणरूप में इन्द्र है। पूछा, अरे ब्राह्मण देवता कैसे आगमन हुआ, क्या चाहते हैं। ब्राह्मण ने एक-एक करके बल, वैभव, सम्पति, ऐश्वर्य, राज्य, शक्ति जो कुछ भी उनको माँगना था माँगते चले गए। तथास्तु-तथास्तु प्रहलाद देते चले गए। जब सब कुछ दे दिया तो इन्द्र ने कहा कि अब मुझे आपका सत्य चाहिए सत्य भी दे दिया, शक्ति भी चाहिए शक्ति भी दे दी। अंत में कहा कि हमें आपका शील भी चाहिए। प्रहलादजी ने कहा हम आपको शील नहीं देंगे। तो ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र ने कहा आपने तो

सब कुछ देने का वचन दिया था तो आप मना क्यों कर रहे हैं? यह आपको शोभा नहीं देता। तो प्रह्लादजी ने मुस्कुराकर कहा कि ब्राह्मण देवता शील मांगना न तो आपके हित में है, न मेरे हित में है। पूछा कैसे? तब प्रह्लाद जी ने हँसकर कहा कि महाराज, मैं आपको जानता हूँ, आप तो इन्द्र हैं और ब्राह्मण वेष में आप मुझसे छल करके माँगने आए हैं। यह जानने के बावजूद भी कि आप छल करके मुझसे सब कुछ माँग रहे हैं, फिर भी दे रहा हूँ यह मेरा शील ही तो है। अगर मैं शील भी आपको दूँगा तो मारपीट के सब कुछ आपसे छीन लूँगा। इसलिए भलाई इसी में है कि शील छोड़ जाइए, सब कुछ ले जाइए। अन्यथा शील मैंने आपको दे दिया तो मैं सब कुछ आपसे छीन लूँगा। ज्ञान के साथ अगर शील है **'होहु तात् गुणशील निधाना'** गुण के साथ शील है तो भगवान् रहेंगे, गुण के साथ अभिमान रहेगा तो मान और अपमान के साथ हमेशा रोते रहेंगे जैसे **सिमिटि सिमिटि जल भरहिं तलाबा। जिमि सदगुन सज्जन पहँ आवा॥**

ऐसे ही सद्गुण अपने आप आते हैं। एक नियम समझिए, जीवन में एक सद्गुण आपके अन्दर आ गया तो एक ही सद्गुण सारे सद्गुणों को बुला लेता है और जीवन में यदि एक भी दुर्गुण आ गया तो सारे दुर्गुणों को बुला लेता है। आ जाओ आ जाओ आपको भी जगह मिल जाएगी। सारे रिश्तेदारों को भी अपने यहाँ बुला लेते हैं।

एक कहावत है कि- गांव के लोग अपनी लड़की की शादी के लिए लड़का देखने गए। लड़का देखा अच्छी नौकरी में था, किसी पड़ौसी से पूछा कि बिटिया की शादी पक्की करना चाहते हैं। चूंकि पड़ौसी ही असलियत जानते हैं और पड़ौसी ही असलियत बताते हैं। पड़ौसी ने कहा लड़का तो अच्छा है, सर्विस भी अच्छी करता है, लेकिन लड़के को पुरानी खाँसी है। आजकल खाँसी, टी.बी. कोई ऐसा रोग नहीं है जो ठीक न हो पाए। आजकल अच्छी-अच्छी औषधि बन गई है यह भी ठीक हो जाएगी। लड़के को टी.बी. है क्या?

बोले नहीं, साहब टी.बी. तो क्या, नई उम्र का बालक है लड़कों के साथ पीने की आदत पड़ गई है। ओह तो इसका मतलब लड़का शराब भी पीता है क्या? नहीं साहब इस मंहगाई के जमाने में कौन शराब पी पाएगा वो तो जब कभी जुए में हाथ लग गया तो थोड़ी सी पी लेता है। अच्छा-अच्छा लड़का जुआरी भी है। नहीं-नहीं साहब जुए के लिए रोज-रोज पैसा कहाँ से लाएगा वो तो कभी-कभी किसी की जेब साफ कर लेता है या किसी की साईकिल या स्कूटर मिल जाता है तो दाव लगा लेता है। अच्छा तो लड़का चोरी भी करता है। तो एक दुर्गुण आया हजार दुर्गुण पीछे चले आए, एक सद्गुण आएगा तो वो हजारों सद्गुणों को बुलाएगा।

जल हमेशा गड्ढे में ही भरता है ऊँचे-ऊँचे पर्वत के शिखर खाली रह जाते हैं। छोटी-छोटी पोखर भर जाती हैं क्योंकि जो अकड़कर खड़ा है उस पर कृपा की वर्षा तो होगी परन्तु सारा जल व्यर्थ में इधर-उधर बह जायेगा क्योंकि जल तो गड्ढे में ही भरता है। जो विनम्र है उसके अन्दर कृपा आकर बैठ जाएगी। इसको गोस्वामीजी ने सज्जन कहा है-

जिमि सरिता सागर महँ जाहीं। जद्यपि ताहि कामना नाहीं।।
तिमि सुख सम्पत्ति बिनहिं बुलाये। धरमसील पहँ जाहि सुहाये।।
सिमिटि-सिमिटि जल भरहिं तलाबा। जिमि सद्गुन सज्जन पहिँ आवा।।
सरिता जल जलनिधि मँहु जाई। होई अचल जिमि जिव हरि पाई।।

सज्जन के पास सारे सद्गुण आया करते हैं बुलाने नहीं पड़ते। सज्जन शब्द मानस का प्रिय शब्द है। मानस में सज्जन की परिभाषा है। हनुमानजी ने विभीषण के द्वार पर यह शब्द प्रयोगं किया **इहाँ-कहाँ सज्जन कर बासा।** हनुमान ने विभीषण को सज्जन के रूप में देखा। यहाँ सज्जन कैसे निवास करता है। सज्जन क्यों कहा क्योंकि विभीषण जब जागे हैं तो भगवान् के नाम का सुमिरन किया है।

राम-राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदय हरष कपि सज्जन चीन्हा।।

एक तो श्रीहनुमानजी ने सज्जन की परिभाषा दी, सज्जन कौन है? जो भगवान् रामचन्द्रजी का सुमिरन करे, हनुमानजी को वही सज्जन दिखाई देता है।

राम-राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदयं हरष कपि सज्जन चीन्हा।।

और ऐसे सज्जन को पहचान कर श्रीहनुमानजी गद्‌गद् हो गए और जो राम नाम का सुमिरन करे वह सज्जन है। दूसरे सज्जन की परिभाषा सागर से आई है। जब चन्द्रमा पूर्णमासी का होता है। तब आपने सुना होगा कि सागर में ज्वार उठता है, सागर उमड़ता है और यह गोस्वामीजी ने संकेत दिया है।

सज्जन सुकृत सिन्धु सम होई। देखि पूर बिधु बाढहिं जोही।

जो दूसरे को बढ़ता हुआ देखकर आनन्द में उमड़े, वह सज्जन है। हम दूसरे को बढ़ता देख कर जलते हैं। सागर उमड़ता है, सागर उछलता है, चन्द्रमा आकाश में बढ़ रहा है और धरती पर सागर उमड़ रहा है। जो किसी को आकाश में बढ़ता हुआ, उड़ता हुआ,उठता हुआ, उमड़ता हुआ देखता है उसमें सज्जनता वास करती है। जिसका हृदय उमड़ता हो, प्रसन्नता से भरता हो वह सज्जन है। हम सबकी दशा कैसी है। अब हम अपने बारे में विचार करें कि हम कितने सज्जन हैं। पड़ौसी का बालक प्रथम श्रेणी में पास हुआ है। सुनकर अपने को कैसा लगता है? हमारा पड़ौसी हमसे ज्यादा महंगी कार खरीद कर ले आया है, देखकर हमको कैसा लगता है? हमारे पड़ौसी का कारोबार हमसे आठ गुना बढ़ गया है। सुनकर हमें कैसा लगता है? सज्जन की परिभाषा बाहर मत ढूंढिये। सज्जन की परिभाषा अपने अन्दर खोजिए। सच यह है कि हम किसी को बढ़ता देख ही नहीं सकते, देखना तो बहुत बड़ी बात, हम सुन नहीं सकते। मनुष्य का स्वभाव देखो न, कोई किसी की बुराई कर रहा हो, बड़े-बड़े व्यक्ति की बुराई कर रहा हो तो आप कभी नहीं टोकेंगे कि नहीं-नहीं, आप नहीं जानते

उनके बारे में हमको मालूम है। इतने सज्जन हैं, उनके बारे में आप कैसे बोल रहे हैं? आप उनकी बुराई को रस लेकर सुनते जाएंगे। बहुत ज्यादा आप बड़प्पन दिखाएंगे तो नमक-मिर्च नहीं लगाएंगे। शान्ति से सुन लेंगे। लेकिन अगर कोई किसी की प्रशंसा कर रहा हो तो आप तुरन्त टोक देंगे। नहीं-नहीं, आप क्या जानते हो उनके बारे में? उनके बारे में तो हम जानते हैं, हमको मालूम है। यह हमारा स्वभाव है। हम बुराई को तत्काल अपनी सहमति देते हैं। किसी में दोष है या नहीं हमको मालूम नहीं परन्तु हम तुरन्त सहमति देते हैं कि ऐसा जरूर होगा। आप ठीक कह रहे हैं, लेकिन अगर कोई किसी की प्रशंसा करे तो हम तत्काल टोकते हैं, रोकते हैं कि नहीं-नहीं, आपको मालूम नहीं। यह भीतर जो ईर्ष्या की जलन है न, यह किसी दूसरे की प्रशंसा सुनने के लिए तैयार नहीं है। किसी को बढ़ता हुआ देखना इसको पसंद ही नहीं। मैं तो एक कथा में बैठा था तो एक सज्जन बहुत सुन्दर उदाहरण दे रहे थे, एक सज्जन ने किसी संत से आशीर्वाद ले लिया तो उन्होंने कह दिया, जाओ सागर की उपासना करो। अगर सागर प्रसन्न हो गए तो तुमको सागर एक चमत्कारी शंख प्रदान कर देंगे जिससे जो चाहो ऐश्वर्य-वैभव ले सकते हो। इसलिए उसने सागर के किनारे जाकर अनुष्ठान किया और सागर ने प्रसन्न होकर इनको एक शंख प्रदान कर दिया और कहा कि जाओ इसको दूध से अभिषेक करके जो चाहोगे वह मिलेगा। इसमें एक शर्त जुड़ी है कि इससे जितना तुम्हें मिलेगा उससे दोगुना तुम्हारे पड़ौसी को मिलेगा, यह इस शंख की विशेषता है। अब यह शंख तो ले आया और सोचने लगा कि इस शंख से मांगूंगा तो पड़ौसी का दोगुना हो जाएगा और पड़ौसी को ही तो चौपट करने के लिए मैंने पूजा की थी। बड़ी मुश्किल से उसने शंख को पूजाघर में रख दिया। पत्नी को यह मालूम था कि शंख की पूजा से जो चाहो वो मिलता है, तो यह व्यक्ति कहीं बाहर गया और पत्नी ने शंख उठाया दूध से अभिषेक किया। पूजा-अर्चना की हाथ जोड़ कर यह मांगा कि हमें एक गाड़ी और एक बंगला मिल जाए। पड़ौसी को दो गाड़ी और दो बंगले मिल गए। शाम को पति आए और देखा कि पड़ौसी के दो बंगले, दो बड़ी-बड़ी गाड़ी। पत्नी से पूछा, तुमने इस

शंख की पूजा की थी क्या? हाँ इतने दिनों से खाली रखा था। अरे पगली, पूजा तो की परन्तु पड़ौसी दोगुना हो गया। मैं नहीं कर सकता था क्या? मैं पड़ौसी के कारण नहीं कर पा रहा था। भले ही हम भूखे मरें परन्तु पड़ौसी को भोजन नहीं मिलना चाहिए। पुरुष ने शंख की पूजा की। शंख ने पूछा बोलो क्या चाहते हो तो बोला ऐसा करो सरकार, मेरे घर के सामने पानी का बहुत बड़ा संकट है एक गहरा कुआं खोद दो तो शंख ने इसके सामने एक गहरा कुआं खोदा और पड़ौसी के सामने दो कुएं खुदवा दिए क्योंकि पड़ौसी को दूने का आशीर्वाद था । तो शंख ने कहा और कोई चाह बोलो। बोला- मेरी एक आंख फोड़ दो, जो होगा सो देखा जाएगा। जब मेरी एक आँख फूटेगीं, तो पड़ौसी की दोनों आँख फूटेगीं। यह मनुष्य की प्रकृति है जो दूसरे को बढ़ता न देख पायें, वो दुर्जन है। यह जो सहानुभूति शब्द है न यह बहुत चालाकी का शब्द है। सहानुभूति आप सभी संकट में दिखाते हैं । किसी की कोठी या फैक्ट्री में आग लग गई या किसी की कोठी को नगरपालिका के बुलडोजर ने ढहा दिया तो आप दिखाने के लिए सहानुभूति के शब्द लेकर घड़ियाली आँसू लेकर चले जाओगे । लेकिन किसी पड़ौसी ने बहुत बड़ा बंगला बनवा लिया तो उस खुशी में लड्डू बांटने नहीं जाओगे। किसी का बालक फेल हो गया तो सहानुभूति देने चले जाओगे लेकिन किसी का बालक पास हो गया तो खुशी में लड्डू लेकर नहीं जाओगे तो सहानुभूति आपकी चतुराई है। आप उसे दुःख में देखना चाहते हैं और दिखावे के मीठे शब्द बोलकर अपने मन को आनन्दित करना चाहते हैं तो क्या यह सज्जनता है? आसमान में चन्द्रमा पूर्ण हो रहा है और नीचे धरती पर समुद्र उमड़ रहा है इसको सज्जनता कहते हैं। जो दूसरे की बढ़ती को देखकर उमड़े। उसको सज्जन कहते हैं। और तीसरी सज्जनता की परिभाषा भगवान् ने दी-

जननी जनक बंधु सुत दारा। तनु धनु भवन सुहृद परिवारा॥
सब कै ममता ताग बटोरी। मम पद मनहि बाँध बरि डोरी॥

अस सज्जन मम उर बस कैसें। लोभी हृदयं बसइ धनु जैसें॥

भगवानजी ने विभीषणजी को कहा है नौ जगह मनुष्य की ममता रहती है। माता, पिता, भाई, पुत्र, स्त्री, शरीर, धन, घर, मित्र और परिवार में जहाँ-जहाँ हमारा मन डूबता है जहाँ-जहाँ हम डूब जाते हैं, इन सब ममता के धागों को बट कर एक रस्सी बना, तब उस ममता की रस्सी को मेरे पैरों से बाँध। चौथी परिभाषा हनुमानजी कहते हैं-सज्जन कौन है, बोलते, उठते, सोते, जगते हरि नाम लेता है, भगवान् का सुमिरन करता है, वो सज्जन है। सागर कहते हैं जो दूसरे को बढ़ते हुए देख उमड़ता हो, वो सज्जन है। जो सबकी ममता मुझसे जोड़ दे, मेरे चरणों में छोड़ दे **"सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणंब्रज।"** जो सबकी ममता को मुझसे जोड़ दे सबका दर्शन मेरे अन्दर करे, वह सज्जन है। भगवान् बोले ऐसे सज्जन से हनुमानजी हठपूर्वक मित्रता करते हैं।

एहि सन हठि करिहउँ पहिचानी। साधु ते होइ न कारज हानी।

ऐसे तो हनुमानजी **जय हनुमान ज्ञान गुन सागर जय कपीस तिहूं लोक उजागर।** हनुमान् वानरों के रक्षक हैं। **राखेहू सकल कपिन के प्राणा** यह कपियों के वास्तव में ईश्वर हैं, रक्षक हैं। **जय कपीस तिहूं लोक उजागर।** श्रीहनुमान का यश तीनों लोकों में है। स्वर्ग में देवता इनका यशोगान करते हैं। मृत्युलोक में राम-रावण संग्राम में सारे ऋषि-मुनि, सारे मानव एवं दानव सभी ने यहाँ तक की दानवराज रावण ने भी हनुमानजी की प्रशंसा की है। पाताललोक में अहिरावण व महिरावण भगवान् का हरण करके ले गए थे तो जाकर देवी की प्रतिमा में विराजमान होकर श्रीहनुमानजी ने भगवान् की रक्षा की है। बड़ा मार्मिक प्रसंग है। हनुमानजी देवी की प्रतिमा में प्रवेश कर गए। अहिरावण, महिरावण ने देवीजी को प्रसन्न करने के लिए 56 भोग लगाए और हनुमानजी युद्ध में बहुत दिनों तक भोजन नहीं कर पाए थे। टोकरी पे टोकरी चढ़ाए जा रहे हैं। हनुमानजी कह रहे हैं ले चले आओ, ले चले आओ और हनुमानजी लड्डू खा-खा कर बहुत प्रसन्न, अहिरावण और महिरावण

देखकर मन ही मन बहुत प्रसन्न कि आज देवी जी बहुत प्रसन्न हैं। हनुमानजी सोच रहे हैं कि बेटा चिंता मत कर। एक साथ इसका फल दूँगा। तो पाताललोक में, नागलोक में अहिरावण, महिरावण, भूलोक में ऋषि व मुनि, मृत्युलोक में देवता, लोकउजागर ऐसे श्रीहनुमानजी जिनका यश सर्वत्र व्याप्त है। आगे की चौपाई-

राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।

श्रीहनुमानजी महाराज भगवान् श्रीराम के दूत हैं रामदूत हैं। जानकीजी के पास में गए तो माँ ने यही प्रश्न किया, तुम हो कौन, अपना पता व परिचय दो। तो हनुमानजी ने अपने परिचय में इतना ही कहा **रामदूतमैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुना निधान की।।** अपने परिचय में हनुमानजी यही बोले माँ मैं भगवान् श्रीरामजी का दूत हूँ। हनुमानजी की वाणी सुनकर माँ ने कहा दूत बन कर क्यों आया है भैया, तू तो पूत बनने के योग्य है। पूत बन कर क्यों नहीं आया? हनुमानजी बोले पूत तो आप बनाओगी तभी तो बनूँगा। मैंने इतना कहा तो जानकीजी आगे जब भी बोलीं हमेशा पूत शब्द का प्रयोग किया हैं **सुत कपि सब तुमहि समाना।** जब-जब बोली हैं जानकीजी, पुत्र बोल कर सम्बोधित किया इसके बाद भगवान् बोले हैं- **सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं।** क्योंकि पुत्र का जो प्रमाण पत्र है वह तो माँ देती है। भगवान् अगर पहले पुत्र कह कर सम्बोधित कर देते तो जगत की व्यवहारिक कठिनाई खड़ी हो जाती, क्योंकि पुत्र तो माँ के द्वारा प्रमाणित होता है। क्योंकि माँ जो बोलेगी, माँ ही तो बोलेगी कि मैंने जन्म दिया है। इससे पहले माँ ने पुत्र कह कर सम्बोधित किया फिर जब भगवान् भी बोलते हैं तो पुत्र कह कर ही बोलते हैं। रावण के पास भी जब हनुमानजी गए तो रावण ने पूछा अरे बन्दर तेरे पास पद कौन सा है। किस पद की हैसियत से तू यहाँ पर आया है क्योंकि समाज में प्रतिष्ठा पद की है और जब से पद को प्रतिष्ठा मिली है तब से समाज में ईर्ष्या व द्वेष बढ़ा है। फिर बुरे से बुरा व्यक्ति पद प्राप्त कर लेता है, और इस कारण प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है। जो बुरे से बुरा व्यक्ति पद पर

बैठा है उसको आप आदर देते हैं। अच्छे से अच्छा व्यक्ति चरित्रवान व्यक्ति अगर छोटा है, किसी पद पर नही है तो हम उसको सम्मान नही देते हैं। हम अपने घर के नौकर को कहाँ सम्मान देते हैं। बेईमान से बेईमान व्यक्ति अगर पद पर विराजमान हो, आप उसको आदर देते हैं। समाज में चरित्रवान ईमानदार को कहाँ सम्मान मिलता है। रावण ने भी पूछा तेरे पास पद कौन सा है और हनुमानजी जीवन भर पद से दूर रहे। देखिए एक बात है, पद से तो दूर रहे पर क्या पद पर विराजमान रहे। उन्होंने जगत का पद नहीं लिया, जगत पिता के पद पर विराजमान रहे। आपने वह घटना सुनी होगी! भगवान् ने एक बार हनुमानजी से बहुत प्रेम के भाव मे बोला भगवान् ने कहा हनुमान आज मन में एक बात आ रही है मानो तो कहें? हनुमानजी बोले बोलिए प्रभु क्या कह रहे हैं? भगवान बोले हनुमान तुमको तो मालूम है कि कोई जगत में हमारा तनिक सा भी कार्य करता है, सहयोग करता है तो हम उसको दस-दस गुना करके वापस करते हैं। अंगद ने हमारा सहयोग किया हमने उसको किष्किन्धा का युवराज बना दिया। सुग्रीव ने हमारा सहयोग किया हमने किष्किन्धा का राजपाद उसको दे दिया। विभीषण ने हमारा सहयोग किया तो हमने लंका का राजपद उसे दे दिया और भले आदमी तुमने तो सारा जीवन हमको दे दिया लेकिन कभी हमने तुम्हें अपने हाथों से कुछ न दिया। यह मुझे मालूम है किन्तु तुम निवृत्तिमार्गी हो, तुमको कुछ नहीं चाहिए लेकिन मेरी प्रसन्नता के लिए कि मुझे अच्छा लगे कि मैंने हनुमान् को कुछ दिया है। आज तुम कुछ मांगो, जब भगवान् ने कहा कि तुम कुछ मांगो, हनुमानजी भी थोड़े मूड़ में आ गए। हनुमानजी ने कहा कि सचमुच कुछ देना चाहते हो या वैसे ही किसी मीठी बात में फँसाना चाहते हो? भगवान् ने कहा माँग तो सही तेरे मन में कुछ मांगने की इच्छा तो आई, बोल क्या चाहिए, हनुमानजी ने कहा भगवन् एक तो हम पद नहीं ले सकते क्योंकि पद लेने का अर्थ है कि मनुष्य को भूत बनना पड़ता है जिसके पास पद आएगा उसको भूत बनना पड़ेगा और पद मेरे पास आ नहीं सकता क्योंकि मेरे पास भूत भी नहीं आ सकता फिर कहते हैं मेरे बारे में सबको मालूम है ना-

भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।

तो हनुमानजी ने कहा कि पद मेरे पास आएगा नहीं, क्योंकि पद के साथ भूत जुड़ा है और भूत मेरे नाम से ही भागता है। भगवान् ने कहा हमारी इच्छा है, हमारी इच्छा के लिए माँगो। हनुमानजी ने कहा कि ऐसा है तो सुनिये आपने सबको एक-एक पद दे रखे हैं किसी को युवराज पद, किसी को राजपद मैं एक पद से तो राजी नहीं हूँगा। भगवान ने कहा माँग तो सही कितने पद चाहिए? जब भगवान् ने पूछा कितने पद चाहिए तो तुरन्त हनुमानजी ने भगवान के दोनों चरण पकड़े और बोले मुझेतो ये दोनों पद चाहिए। बाकी कोई पद किसी को भी दे दीजिए।

जाहि न चाहिय कबहुँ कछु, तुम्ह सन सहज सनेह।
बसहु निरन्तर तासु उर, सो राउर निज गेह।।

भगवान् मुझे तो आपके चरण पद चाहिए और भगवन् बाकी पद देकर आप भूत बनाना क्यों चाहते हैं, मैं तो अभूतपूर्व रहना चाहता हूँ। और सचमुच में श्रीहनुमानजी अभूतपूर्व हैं। क्योंकि जब रावण ने पूछा अरे बन्दर तेरे पास पद कौन सा है तो हनुमानजी ने यही उत्तर दिया।

जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि।।

मैं श्रीराम दूत हूँ। दूत स्वामी का संदेशवाहक होता है। स्वामी का हितकारक होता है। स्वामी का प्रभाव स्थापित करने वाला होता है। शास्त्र में दूत के कई गुण बताए हैं। दूत वही जो अपनी बात बिना संकोच के धड़ल्ले से बोल सके। दूसरे, दूत विलक्षण स्मरण शक्ति वाला होना चाहिए। तीसरे उसकी वाणी अकाट्य हो, वो जो तर्क प्रस्तुत करे सामने वाला उसको काट ना पाए। इतना गुण, इतनी विलक्षण प्रतिभा, इतना विलक्षण गुण व ज्ञान किसी दूसरे वानर में दिखाई नहीं देता। भगवान् के संदेश को देना यह दूत का कार्य है। जानकीजी

के पास जब हनुमानजी पहुंचे हैं तब जानकी जी चिता बनाकर जलने को बैठी हैं। त्रिजटा से अग्नि की माँग करती हैं। कहीं से भी ला कर दे। त्रिजटा ने समझाया, बिटिया धैर्य धारण करो, **निसि न अनल मिल सुनु सुकुमारी!** और समय एक जैसा नहीं रहता। अभी अंधकार है, प्रकाश भी होनेवाला है लेकिन त्रिजटा का भी जानकीजी पर प्रभाव न हुआ जो जानकीजी चिता बना कर जलने के लिए बैठी थीं। श्रीहनुमानजी ने अपनी वाणी से जानकीजी को भगवद् प्राप्ति का भरोसा दिला दिया। माँ चिंता मत कर, चिंता मत कर। माँ ने पूछा क्या कभी प्रभु मुझे मिलेंगे? और यह प्रसंग बड़ा मार्मिक है। जब यह परिचय हो गया कि हनुमान् भगवान् का दूत है और मुद्रिका यही लेकर आया है तो उस मुद्रिका को देखकर और भगवान् के स्वभाव का सुमिरन कर जानकीजी की आँखों से आँसू की झड़ी लग गयी। बहुत मार्मिक स्वर माँ ने कहे हनुमान् मैंने तो सुना है, सुना नहीं जाना है कि प्रभु तो बहुत कोमल हैं-

कोमल चित कृपालु रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई।।

भगवान् का सुमिरन कर जानकी जी बहुत रोईं। **बचनु न आव नयन भरे बारी। अहह नाथ मोहिं निपट बिसारी।।** आँखों से आसुओं की धारा बही, वाणी बोल नहीं पा रही हैं। जब व्यक्ति भाव में होता है, रुदन के भाव में होता है तो केवल आँसू-आँसू हिलकी-हिलकी। शब्द नहीं आते, जानकीजी की भी वही दशा है। बेटा सामने बैठा है। वह भी समर्थ बेटा बैठा है और उसकी माँ हिलकी भर-भर कर रोती हैं। आप कल्पना करिए हनुमानजी पर क्या बीतती होगी? और जानकीजी के शब्द देखिए- **कोमल चित कृपालु रघुराई। कपि केहि हेतु धरी निठुराई।।** भगवान कैसे कठोर हो गए हैं **कपि केहिं हेतु धरी निठुराई।।** मैं कैसी अभागी हो गई हूँ। **अहह नाथ मोहि निपट बिसारी,** प्रभु ने क्या मुझे विसार दिया? क्या कभी मेरा सुमिरन उनको नहीं हुआ? हनुमानजी ने कहा माँ आप यह जो कहती हैं, भगवान् ने आपको बिसार दिया। मुझे लगता है कि आपने

भगवान् की कृपा को बिसार दिया। यह तुम क्या कह रहे हो ? मेरा मन तो हर क्षण, हर पल, प्रतिपल, निज **पद नयन दिए मन राम पद कमल,** प्रभुराम के पद-कमलों में लगा हुआ हैं। मैं तो प्रतिपल प्रतिक्षण उनके नाम का सुमिरण कर उनमें डूबी हूँ। परन्तु मुझे लगता है कि प्रभु ने ही मुझे बिसार दिया है। हनुमानजी ने पूछा आपके पास इसका प्रमाण क्या है कि प्रभु ने आपको बिसार दिया। बोली मेरे पास प्रमाण है, जब जयंत ने मेरे ऊपर चञ्चु प्रहार किया था तो प्रभु इतने आवेश में आ गए, क्रोध में आ गए कि **'सींक धनु सायक संधाना'** कि सींक का धनुष-बाण बनाकर जयंत के पीछे लगा दिया। लेकिन रावण तो मेरा हरण करके लाया है और प्रभु को मालूम है और इसके बावजूद रावण चैन की नींद सो रहा है और प्रभु ने अभी तक बाण नहीं भेजे। हनुमानजी ने कहा माँ आपको कैसे लगता है, माँ, कि बाण आपके पास नहीं आए हैं? मैं कहता हूँ, बाण भेजा है। जानकीजी ने कहा, कहाँ हैं बाण? हनुमानजी ने कहा, जयन्त जी के पीछे तो सींक का ही बाण था, मैं सीधे साक्षात् बाण के रूप में ही तो आया हूँ-

जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। एही भाँति चलेउ हनुमाना॥

हनुमानजी ने कहा प्रभु ने इस वक्त मुझे ही बाण बना कर भेजा है और इसका ज्ञान आपको भी हो चुका था कि प्रभु का बाण आ चुका है। जब आप रावण को फटकार रही थीं तब मैं अशोकवाटिका के वृक्ष के ऊपर बैठा था। आपने रावण को फटकार कर कहा था- **खल सुधि नहिं रघुवीर बान की।**

क्या तुझे भगवान् के बाण की सुधि नहीं। इसका अर्थ है कि आपको ज्ञान हो चुका था कि भगवान् का बाण आ चुका है। बस माँ इतना ही अन्तर है। भगवान् कभी ऐसा नहीं करते कि जीव को अपनी कृपा से अलग करें। प्रभु की कृपा तो जीव पर सदा रहती है। कई बार जीव उसका अनुभव नहीं करता। आपको सामने संकट के रूप में रावण तो दिखाई दे रहा था लेकिन आपके शीश पर भगवान् की कृपा मेरे रूप में विराजमान थी, वो नहीं दिखाई दे रही थी और यह मनुष्य का स्वभाव है। संकट चूंकि हमेशा आँखों के सामने

रहता है इसलिए वह दिखाई देता है, इसलिए मनुष्य हमेशा संकट का रोना रोता है लेकिन कृपा हमेशा सिर पर रहती है। सिर पर जो वस्तु रहती है वह दिखाई नहीं देती लेकिन रहती सिर पर है। भगवान् की कृपा हमेशा जीव के साथ है क्योंकि संकट हमेशा आँखों के सामने है, कृपा दिखाई नहीं देती, कृपा तो भगवान् के भजन से अनुभव होती है। कृपा तो परमात्मा की प्रत्येक जीव पर है लेकिन जो भजन से दूर हुए हैं उनको भगवान् की कृपा का अनुभव नहीं होता। और यह सिद्धान्त एकदम स्वीकार कर लीजिए कि भगवान् जीव को बीच मझधार में संकट में अकेला, असहाय नहीं छोड़ते। अगर कोई प्रारब्ध के वशीभूत उसके जीवन में संकट आ रहा है तो कोई न कोई कृपा का कारण भी उसके साथ आ रहा है। अगर प्रभु ने प्रारब्ध के वशीभूत उसके जीवन का कोई द्वार बंद किया है तो सहायता के रूप में पीछे से कोई खिड़की जरूर खुलती है। अगर कोई अपने परिवार में अकाल मृत्यु हो रही है तो इसका अर्थ है इसके पहले बहू के गर्भ में बालक का आगमन हो चुका है, ऐसा कभी नहीं होता कि मौत हो जाए पर बच्चे का जन्म न हो, भगवान् की कृपा कदम-कदम पर है। हनुमानजी ने कहा, माँ! न प्रभु निष्ठुर हुए हैं, न प्रभु ने आपको बिसारा है मुझे ऐसा लगता है आपने उनके स्वरुप, उनके स्वभाव को बिसारा है। अगर आपको भरोसा नहीं तो आप भगवान् के ही श्रीमुख से सुन लें कि आपके विरह में मेरे प्रभु कितने व्याकुल हैं। उन्हीं की वाणी में सुन लीजिए-

रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर॥

हनुमानजी तो मौन हो गए। अब आप लाइव टेलीकास्ट देखिए, माँ! सीधा दर्शन करो यह संदेश कौन बोल रहा है।

राम कहेउ बियोग तव सीता। मो कहुँ सकल भए बिपरीता॥
नव तरु किसलय मनहुँ कृसानू। काल निसा सम निसि ससि भानू॥

कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा। बारिद तपत तेल जनु बरिसा॥
जे हित रहे करत तेइ पीरा। उरग स्वास सम त्रिबिध समीरा॥
कहेहू तें कछु दुख घटि होई। काहि कहौं यह जान न कोई॥
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा॥
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं॥
प्रभु संदेसु सुनत बैदेही। मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही॥
कह कपि हृदयँ धीर धरु माता। सुमिरि राम सेवक सुखदाता॥
उर आनहु रघुपति प्रभुताई। सुनि मम बचन तजहु बिकलाई॥

और ये जो शब्द बोले हैं वो हनुमानजी नहीं कह सकते हैं कोई बेटा माँ को प्रिय कहकर नहीं सम्बोधित कर सकता। हनुमानजी ने कहा माँ प्रभु की वाणी आप सीधे-सीधे सुनिए। जो अभिमानशून्य होता है वही भगवान् का दूत बनता है। रामदूत का अर्थ है कि वाणी और शब्द तो भक्त के होते हैं लेकिन उसमें संदेश भगवान् का होता है। जिस वाणी में भगवान् का संदेश न हो, जो वाणी भगवान् का सुमिरन न कराती हो, जो शब्द भगवान् के दर्शन की उत्सुकता न जगाते हों वो शब्द सांसारिक हैं, वो शब्द रामदूत के नहीं हो सकते, वो कामदूत के होते हैं। हनुमानजी रामदूत हैं, वाणी हनुमानजी की है लेकिन संदेश उसमें भगवान् का होता है। ये दो अवतारों में है। दो लोग भगवान् के दूत बने हैं। रामावतार में हनुमानजी और कृष्णावतार में वंशी भगवान् के दूत बने। इन दोनों ने दूत का काम किया दूत माने भगवान् का संदेश पहुँचाने वाला। आखिर वंशी के स्वर के द्वारा ही तो वो गोपियों तक अपना संदेश पहुँचाते थे। वंशी बजायी, गोपियों ने सुनी और दौड़कर गोपियाँ भगवान् के पास आती थीं। जो कार्य कृष्णावतार में बंशी करती थी वही कार्य रामावतार में हनुमानजी करते

थे। एक बार गोपियों ने बंशी से पूछा (थोड़ी ईर्ष्या भी हो गयी थी) कि क्यों री बंशी, वैसे तो तू कोरे बांस की है कितने ही छिद्र तेरे भीतर हैं, फिर भी तू हमेशा श्याम सुन्दर के हाथों में, होठों पर रहती हो। हम इतने रूपवान, गुणवान, बुद्धिमान हैं लेकिन हमको कभी इतना प्रेम नहीं करते। ऐसा तेरे अन्दर कौन सा गुण है? तो बंशी ने कहा कि मेरे अन्दर एक ही गुण है। क्या गुण है? बोली मेरे अन्दर कोई गुण नहीं है यही गुण है। आप तो गुणों से भरी हुई हैं और भगवान् के हाथों में वह रहता है जिसमें कोई गुण नहीं है अन्यथा जिसमें गुण है वो गुणों के हाथ में रहता है और बंशी ने कहा क्या आपको मालूम है कि भगवान् के हाथों में आने के लिए उसे कितने पापड़ बेलने पड़े? क्या करना पड़ा? बोले, मैंने अपना तन कटवाया, मन कटवाया, जिसने मुझे कटवाया उससे मैंने पूछा भी नहीं, अपने मन की भी मैंने नहीं कही कि कहाँ ले जाओगे? चारपाई बनाओगे, सीढ़ी बनाओगे, लाठी बनाओगे, अर्थी में लगाओगे। मैंने यह भी नहीं पूछा कि कहाँ लेकर जाओगे, जहाँ ले जाओ सर्वांग समर्पण, न शिकवा, न शिकायत। **तन कटवायो, मन कटवायो, ग्रन्थिन-ग्रन्थिन मैं छिदवायो।** मेरी एक-एक गांठ को गरम-गरम सलाखों से छेदा गया और फिर **जैसो चाहते हैं श्याम मैंने वैसो ही स्वर सुनायो। ऐहि कारण निज अधरन पर मोहि धरत मुरारी,** भगवान् जैसा स्वर चाहते हैं मैं वैसा ही सुनाती हूँ। आप अपना स्वर भगवान् को सुनाती हो और मैं भगवान् का स्वर आपको सुनाती हूँ। हनुमानजी भगवान् का स्वर सुनाते हैं। भगवान का संदेश पहुंचाते हैं बंशी कृष्णावतार में भगवानकृष्ण का संदेश सुनाती हैं। भगवान् के हाथों में रहना है, उनके होठों पर रहना है। भगवानश्रीराम के होठों पर हमेशा हनुमानजी रहते हैं-**राम जासु जस आपु बखाना॥**

अगर हमें भगवानश्रीकृष्ण के होठों पर रहना हो तो अपने जीवन को बंशी बनाना होगा-

जीवन है तेरे हवाले मुरलियावाले॥

हम तो मुरली तेरे हाथ की। चाहे जैसे बजा ले मुरलिया वाले॥

जीवन है तेरे हवाले मुरलिया वाले॥

जो कार्य श्रीहनुमानजी करते थे वही कार्य कृष्णावतार में बंशी करती थी। जानकीजी को जाकर संदेश दिया, रावण को जाकर संदेश दिया। अवध में भरतजी को जाकर भगवान का संदेश दिया श्रीहनुमानजी ने। जब भरतजी ने पूछा कि तुम हो कौन तो श्रीहनुमानजी ने उत्तर दिया–

मारुत सुत मैं कपि हनुमाना। नामु मोर सुनु कृपा निधाना॥
दीनबन्धु रघुपति कर किंकर। सुनत भरत भेंटेउ उठि सादर।
कपि तव दरस सकल दुख बीते। मिले आजु मोहि राम पिरीते॥
एहि संदेस सरिस जग माहीं। करि विचार देखेउँ कछु नाहीं॥

श्रीहनुमानजी जहाँ भी जाते हैं प्रभु दूत बनकर, संदेश लेकर जाते हैं।

रामदूत अतुलित बलधामा, अजंनि पुत्र, पवनसुत नामा।
अतुलित बलधामं स्वर्ण शैलाभदेहं,
दनुजवनकृसानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम।
सकल गुणनिधानं वानराणामधीशं,
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि॥

श्रीहनुमानजी अतुलित बल के धाम हैं, धाम माने क्या हुआ जैसे श्री वृन्दावनधाम है। अयोध्याधाम, चित्रकूटधाम, धाम का अर्थ होता है– जहाँ देव निवास करते हैं। वृन्दावनधाम है जहाँ की सीमा के बाहर प्रभु एक कदम भी निकले नहीं, चित्रकूटधाम है भगवान् ने जिसका कभी त्याग नहीं किया। धाम माने जहाँ बल निवास करता है। हनुमानजी में अपना बल नहीं है। हनुमानजी में भगवान का बल निवास करता है। श्री

हनुमानजी अतुलित बल के धाम हैं। **अतुलित बलधामा** हैं। शस्त्रागार का मालिक मकान नहीं होता जिस कमरे में जिस मकान में शस्त्र रखे हैं, वो मकान मालिक नहीं होता मालिक कोई और होता है। जिसने रखे हैं। जैसे किसी के घर में सोना रखा है। सोने का मालिक मकान नहीं है बल्कि वह है जिसने सोना रखा है तो हनुमान जी कहते हैं कि हम तो केवल धाम हैं बल तो हमारे भगवानजी का है। **अतुलित बल अतुलित प्रभुताई, मैं मतिमन्द जान नही पायी।** यह इन्द्र का लड़का जयंत बोला है । जयंत ने इसका प्रमाण पत्र दिया है। जयंत की घटना भगवान् के बल का दर्शन कराती है। जयंत इन्द्र का लड़का बोला है।

एक बार जयंत भगवान् के बल की परीक्षा लेने आए। गोस्वामीजी ने कहा-**सठ चाहत रघुपति बल देखा**-अतुलित बल को तौलने के लिए आ रहा है। चित्रकूट का चित्र है- एक बगीचे में भगवान् पुष्प चुनने गए, बहुत सुन्दर-सुन्दर पुष्प हैं। भगवान् आज श्रृंगार के भाव में हैं।

एक बार चुनि कुसुम सुहाये। निज कर भूषन राम बनाये।।
सीतहि पहिराये प्रभु सादर। बैठे फटिक सिला पर सुन्दर।।
सुरपति सुत धरि बायस बेषा। सठ चाहत रघुपति बल देखा।।
जिमि पिपीलिका सागर थाहा। महा मंदमति पावन चाहा।।
सीता चरन चोंच हति भागा। मूढ़ मंदमति कारन कागा।।

भगवान् एक बार जानकी जी का फूलों से श्रृंगार कर रहे थे। अब इसमें किसी भी प्रकार की मर्यादा का उल्लंघन का तो प्रश्न ही नहीं है। जब वो स्वयं मर्यादापुरुषोत्तम हैं तो वो मर्यादा का उल्लंघन कैसे करेंगे? पति और पत्नी दो देह और एक प्राण है। पति-पत्नी का श्रृंगार करेगा, पत्नी-पति को श्रृंगार करेगी इसमें कोई मर्यादा के उल्लंघन की तो बात ही नहीं है। जयंत ने जब देखा कल तो स्वर्गलोक में चर्चा हो रही थी कि

आजकल तो चित्रकूट में ब्रह्म का निवास है भगवान् प्रवास पर हैं और ये ब्रह्म हैं? ये तो सामान्य पुरुष की तरह स्त्री के साथ क्रीड़ा कर रहे हैं। भगवान् की लीला को देखकर भ्रम में पड़ गए। और मैंने पीछे भी निवेदन किया जब भी आप भगवान् की लीला का चिन्तन बुद्धि से करेंगे आप गढ्ढे में गिरेंगे। और यह जयंत उसी रास्ते पर जा रहा है। सुमिरन को छोड़कर मरण के रास्ते पर जा रहा है, और भगवान् के बल का परीक्षण करने का कि इनमें बल कितना है-**षठ चाहत रघुपति बल देखा।।**

कौवे का वेश बनाकर आया और जानकीजी के चरणों पर चञ्चु प्रहार करके उड़ गया। एक संत ने बहुत अच्छा यहाँ पर बोला है। वो कहते हैं कि जो किसी के दाम्पत्य के हंसते-खेलते जीवन में चञ्चु प्रहार कर अपनी कटु वाणी से, अपने शब्दों से खटास पैदा करे वह कौवा ही हो सकता है, वह हंस नहीं हो सकता। हंस तो विवेकी होता है वह विवेक का व्यवहार करता है। कौवा हमेशा विष्ठा के ऊपर मुँह मारता है। इसकी चोंच हमेशा विष्ठा पर रहती है। कई लोगों की वाणी ऐसी होती है जब भी बोलेंगे विष्ठा जैसी, दुर्गन्ध जैसी बातें। निकृष्ट बातें, अविवेक कहिए, दुर्देव कहिए, कोई भी कारण हो सकता है। अनेक माता-पिता ऐसे हैं जो अपने बच्चों के दाम्पत्य जीवन को अपने ही चञ्चु प्रहार से तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। अगर कुछ गलतफहमी है बालकों के जीवन में समझाकर, बुझाकर, अपने विवेक से, प्रेम से उस टूटे हुए सूत्र को जोड़ना चाहिए। जो डोर कमजोर हो रही है उसको मजबूत करना चाहिए। परिवार में जो आजकल तलाक हो रहे हैं उसका और कोई बड़ा कारण नहीं है केवल परिवार में वाणी का जो व्यवहार है, दुरुपयोग है वाणी कैसी चाहिए, कब बोलें, कैसे बोलें, कब न बोलें, कहाँ बोलें, कहाँ न बोलें, इसका विवेक न रहने के कारण अच्छे-अच्छे परिवारों के बेटे और बहुओं के दाम्पत्य जीवन में तनाव है, खिंचाव है, उदासी है, उबासी है अथवा टूटने की कगार पर है। जो कार्य जयंत ने किया कई बार हम करने लग जाते हैं। उधर जयंत जैसे ही चञ्चु प्रहार करके उड़ा और जानकीजी के पैरों से रुधिर की धारा बही, प्रभु ने पूछा यह रक्त कैसा? जानकीजी ने कहा प्रभु एक

कौवा चोंच मार के गया। प्रभु के पास उस वक्त धनुष बाण तो था नहीं, सींक के तिनके पड़े थे।

चला रुधिर रघुनायक जाना। सींक धनुष सायक संधाना॥

भगवान् ने सींक का धनुष-बाण बनाकर उसको अभिमन्त्रित किया और छोड़ दिया जयंत के पीछे। आगे-आगे जयंत और पीछे-पीछे भगवान् के काल का बाण दौड़े चले जा रहा था। इन्द्रलोक गया, वरुणलोक गया, कुबेरलोक गया लेकिन किसी ने बात नहीं सुनी-

काहुँ बैठन कहा न ओही। राखि को सकई राम कर द्रोही॥

सबने कह दिया भैया रामद्रोही को कौन शरण देगा, बाप तक ने फटकार दिया। दौड़े जा रहा था तभी एक घटना घटित हो गयी-

नारद देखा बिकल जयन्ता। लागि दया कोमल चित संता॥

नारदजी ने देखा जयंत विकल होकर भाग रहा है। नारदजी ने पुकारा ओ! जयंत! गोस्वामीजी ने यहाँ नाम का उल्लेख किया है पहले नहीं किया था। एक ने गोस्वामीजी से पूछा पहले तो आपने इन्द्र का बेटा कहकर लिखा था अब यहाँ नाम का उल्लेख क्यों किया। गोस्वामीजी ने लिखा अब इसको संत का दर्शन हो गया है और **संत दरस जिमि पातक टरहीं।**

संत दर्शन से पाप कट जाते हैं अब इसको संत का दर्शन हो गया। इसका अर्थ है अब इसके ऊपर भगवान की कृपा हो रही है। एक सिद्धांत है अगर कोई संत मिले, मिलते तो हमें रोज हैं साधु-संत का रोज दर्शन करते हैं लेकिन जीवन वैसा का वैसा रहता है जीवन में कोई पुष्प तो नहीं खिलते, कोई सुगन्ध तो नहीं आती। तो संत मिलन का अर्थ आँखों से मिलना नहीं, आँखों से देखना नही, संत मिलन का अर्थ है कोई

संत हमारे जीवन में प्रवेश करे, किसी संत के भीतर हमने प्रवेश पा लिया। एकांत में भी जिनकी याद सताती हो और मन पवित्र हो जाता है। मन जिनसे बार-बार दर्शन की लालसा करता हो वो संत मिलन है। एक सूत्र समझिए कि अगर किसी संत से हमारा मिलन हो गया है तो इसका अर्थ है भगवान् हमसे मिलना चाह रहे हैं। भगवान् से हमारा मिलन होने जा रहा है। जब तक हमसे भगवान् मिलने की इच्छा नहीं करते तब तक हमारा संत से मिलन नहीं हो सकता। भगवंत की प्रेरणा से ही संत का आगमन हमारे जीवन में हुआ करता है।

आपने देखा होगा कि आपके गांव या मौहल्ले में कोई बड़े सज्जन आनेवाले होते हैं उससे पहले पुलिस आ जाती है और मौहल्ले के लोग पूछने लगते हैं कि कौन आ रहा है? पुलिस क्यों आ रही है? पुलिस आने का अर्थ है कि पीछे-पीछे अधिकारी, मंत्री आ रहे हैं। साधु संत ये भगवान् की पुलिस है, ये भगवान् के संदेशवाहक हैं। अगर हमारे जीवन में भगवान् का कोई सिपाही आ गया तो इसका अर्थ है कि पीछे-पीछे भगवान् भी आने वाले है। बिना भगवत् कृपा के संत का आगमन हमारे जीवन में हो ही नहीं सकता और इसका प्रमाण दिया है सुन्दरकाण्ड में। जब विभीषणजी व हनुमानजी में वार्ता हो रही थी तो विभीषण नाचने लगे। हनुमानजी ने पूछा क्या हुआ, इतने आनन्द में कैसे आ गए? बोले- अब मुझे भरोसा हुआ, बोले कैसा भरोसा? तब विभीषण बोले हैं-

अब मोहि भा भरोस हनुमन्ता। बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता।।

विभीषणजी बोले अब मुझे भरोसा हुआ है। हनुमानजी ने कहा, भरोसा कैसे हो गया? आप जो मिल गये सो, क्योंकि संत भगवंत की कृपा के बिना मिल ही नहीं सकते। संतों की कृपा से भगवंत मिलते हैं और भगवंत की इच्छा से संत मिलते हैं। अगर संत मिलन हुआ है इसका मतलब भगवंत पीछे-पीछे आ रहे हैं। गोस्वामीजी ने जयंत का नाम उल्लेख कर दिया-**नारद देखा विकल जयंता।**

क्योंकि अब थोड़ी देर में भगवंत की कृपा मिलने जा रही है। तो नारदजी ने पूछा क्या बात है? तो जयंत बोला कि भगवान् के काल का बाण मेरे पीछे लगा है। शरीर मेरा झुलस रहा है जलाने को तैयार है। हो क्या गया? बोला भगवानजी का एक अपराध कर दिया मैंने। कहाँ-कहाँ गया बोला पिताजी के पास गया, ब्रह्मलोक गया, शिवलोक गया पर किसी ने मुझे पूछा नहीं सबने फटकारा। तो नारदजी ने कहा अरे बावले अपराध तो भगवानजी का किया है और क्षमा औरों के पास जाकर माँग रहा है वो क्षमा कैसे कर देंगे? यह तो नियम है कि जिसका अपराध किया जाता है, क्षमा उसको ही करने का अधिकार है। न्यायालय भी अपराधी को क्षमा नहीं कर सकता, दण्डित तो कर सकता है लेकिन क्षमा करने का अधिकार न्यायालय को भी नहीं है। अपराध यहाँ कर रहे हैं और क्षमा वहाँ माँग रहे हैं। अपराध पड़ोस में किया है, क्षमा मन्दिर में जाकर माथा टेककर मांगते हैं। नारदजी ने कहा अब तक बाण ने तुमको मारा क्यों नहीं यह विचार किया? तीनों लोकों में तुम दौड़े हो बाण मारना चाहता तो मारता नहीं, मार भी सकता था। इसका अर्थ है कि भगवान् ने काल का बाण तो उसके पीछे लगाया है। प्रभु कहना चाहते हैं कि तीनों लोकों में तुम कहीं भी जाओ, काल के बाण से तुम बच नहीं सकते। लेकिन मेरे चरणों में अगर आना चाहते हो तो किसी संत की वाणी का सहारा लेकर आ सकते हो। कोई संत की वाणी तुम्हें प्रभु के चरणों तक ले आएगी। इसलिए प्रभु ने मुझे भेजा है, बोल क्या चाहता है। मेरे साथ आप चलें ऐसा उसने कहा। नारदजी ने कहा नहीं तुम सीधे जाओ और प्रभु से क्षमा माँगो, नारदजी ने कहा तुम भगवान् के स्वभाव को नहीं जानते हो-

अति कोमल रघुवीर सुभाऊ। यद्यपि अखिल लोक कर राऊ॥

नारदजी ने कहा जयन्त! भगवान् अति कोमल हैं, तुम जाओ। आप चलो। नारदजी ने कहा तेरा तो कोई

बड़ा अपराध ही नहीं, तूने तो केवल चरणों को ही स्पर्श किया है। मैंने तो उनकी घरवाली से विवाह करने की ठानी थी। जब मुझे क्षमा कर सकते हैं तो तुझे क्यों नहीं क्षमा करेंगे? तो जयन्त ने कहा मैं जाऊं तो प्रभु पूछेंगे कि पहले तुमने क्षमा क्यों नहीं माँगी? भाग क्यों गया? तो नारदजी ने बोला कि कह देना पहले मैं आपका प्रभाव देखने चला गया था कि कहाँ-कहाँ तक आपका प्रभाव है, ठीक है यह तो बोल दूँगा, परन्तु प्रभु जी बोलेंगे कि अब क्यों आए हो? तो नारद जी बोले, बोल देना कि आपका प्रभाव देख लिया कि आपका प्रभाव कैसा है। अब आपका स्वभाव देखने आया हूँ कि आपका स्वभाव कैसा है। भगवान् का स्वभाव **अति कोमल रघुवीर स्वभाव-कोमल चित कृपालु रघुराई!** जिनको अपराधी पर भी कभी क्रोध नहीं आया। ऐसे हमारे प्रभु हैं। जिनकी अपराधी पर अपनी कृपा दृष्टि हो और करुणा का हाथ हो तो ऐसे प्रभु श्री राम से जाकर जयन्त ने जब क्षमा माँगी है तो यही बात बोली है।

अतुलित बल अतुलित प्रभुताई। मैं मतिमंद जान नहिं पाई॥

श्रीहनुमानजी अतुलित बल के धाम हैं। हनुमानजी में अपना बल नहीं है। भगवान् का बल विराजमान है। **जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर।** धनुष-बाण लेकर भगवान जिनके हृदय में विराजमान हैं। भगवान् का बल भी उनके साथ विराजमान होगा कि नहीं? और अपना स्वभाव देखिए! हम हमेशा अपने बल पर गर्व करते हैं। और श्रीहनुमानजी हमेशा भगवान् के बल का गर्व करते हैं। **सो सब तब प्रताप रघुराई नाथ ना कछु मोर प्रभुताई।** हनुमानजी जब भी बोलते हैं तो यही बोलते हैं कि प्रभु मेरा क्या है। मैं तो बन्दर हूँ, कामुक पशु हूँ। **कपि चंचल सबही विधि हीना॥** यह तो प्रभु आपकी कृपा हो गयी तो लोग बन्दरों को भी आदर देने लगे। ऐसे अतुलित बलधाम श्रीहनुमानजी अंजनिमाँ के पुत्र हैं। हमारे यहाँ माता का नाम पहले आता है। यह भारत की संस्कृति है। यही भारत का स्वभाव है। आपने आजकल विवाहों के निमंत्रण-पत्र देखे होंगे।

निमंत्रण-पत्र में भी श्रीमती एवं श्री। पहले कभी रहा होगा, श्री एवं श्रीमती लेकिन अब पहले माँ का नाम। माँ का जो स्थान है भारत वर्ष में सर्वोत्तम है इसलिए हमने इस देश की धरती को भी माँ कहा है। भारतमाता और इस देश की नहीं पूरे विश्व की धरती को माता माना है। माँ का प्रतिबिम्ब पृथ्वी माँ है, पालन करती है सबका। और इसलिए हमने भगवान् की भी पूजा की है तो उसको भी हमने माँ कह कर पुकारा है। त्वमेव माता भगवान् का पहले हमने माँ के रूप में दर्शन किया है। पिता कह कर बाद में सम्बोधित किया है। **त्वमेव माता च पिता त्वमेव।** इसका कवि ने कितना सुन्दर वर्णन किया है। सभी भाव से गाइए।

तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हों, तुम्ही हो बन्धू सखा तुम्हीं हो।
तुम्हीं हो साथी, तुम्हीं सहारे, कोई न अपना सिवा तुम्हारे।
जो खिल सके ना वो फूल हम हैं, तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।
कृपा की दृष्टि सदा ही रखना, तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो।

आरती भी गाते हैं तो यही गाते हैं-

मातु-पिता तुम मेरे सरन गहूँ किसकी॥
तुम बिनु और न दूजा आस करूँ जिसकी॥
ॐ जय जगदीश हरे॥

माताओं के द्वारा ही जगत् में महापुरुषों की रचना हुई है। उनके द्वारा ही हमारे देश को महापुरुष मिले हैं। माताएं बच्चों को दूध पिलाते समय, गोद खिलाते समय, भगवान् से यही प्रार्थना करती हैं।

बुद्धोऽसि-शुद्धोऽसि-निरंजनोऽसि॥

मेरा बेटा बुद्ध बने, जाग्रत बने, मेरा बेटा विकार रहित शुद्ध बने और मेरा बेटा माया में लिप्त न हो जाए। निर्लिप्त रहे माया से मुक्त हो। ऐसी माता में आप सुमित्रा माता का दर्शन करो। आखिर लक्ष्मण जी कहाँ से आए, लक्ष्मणजी में जो भी गुण हैं वो सुमित्रा माता की कृपा के कारण हैं। बनवास की घटना देखिए। लक्ष्मण ाजी प्रभु के साथ बनवास जाने के लिए आतुर हैं। प्रभु ने कहा पहले माँ से आज्ञा ले लो। लक्ष्मणजी ने कहा प्रभु आप चले तो नहीं जाएंगे? प्रभु ने कहा, नहीं जाएंगे। लक्ष्मणजी सुमित्रामाताजी के पास गए। सुमित्राजी ने बोला क्या हुआ बेटा, बाजे बज रहे थे। जय-जयकार हो रही थी, एकदम सब शांत हो गया। क्या बात है, मुहूर्त बदल गया क्या? माँ तुमको मालूम है क्या हुआ है? अयोध्या का भाग्य फूट गया है। क्या हुआ है? श्रीराम जी को चौदह वर्ष का वनवास हुआ है, प्रभु माँ जानकीजी के साथ वन को जा रहे हैं और मैं भी। तू फिर यहाँ क्यों आया है। भगवान जी ने कहा, पहले माँ से आज्ञा लाओ- **माँगहुं बिदा मातु सन जाई।।**

माँ, कौन माँ? लक्ष्मणजी ने कहा तू मेरी माँ है न। सुमित्राजी ने कहा, मैं तेरी माँ नहीं हूँ। लक्ष्मणजी ने कहा तू मेरी माँ नहीं तो मेरी माँ कौन है? सुमित्रा जी ने कहा, लखन बेटा! मैं तो तेरी धरोहर की माँ हूँ, केवल गर्भ धारण करने के लिए भगवान ने मुझे माँ बनाया है। तेरी माँ तो कोई और है और उन्हीं से आज्ञा लो और उन्हीं की सेवा में जाओ। तो पूछा वह माँ है कौन? सुमित्राजी ने कहा: बेटा मैं तो देह वाली माँ हूँ और देह वाली माँ कितने दिन तेरा साथ देगी? 70 साल, 80 साल, 90 साल और 100 साल देह वाली माँ तो तुझे एकदिन छोड़ देगी लेकिन जन्मान्तर तक तेरे साथ रहनेवाली उस माँ की सेवा में जाओ, देह वाली माँ में मत डूबो। है कौन? बोली- **तात तुम्हारि मातु बैदेही, पिता राम सब भाँति सनेही।** सुमित्राजी ने असली माँ का दर्शन करा दिया।

अयोध्या कहाँ हैं? अवध जहाँ राम, और सुनो लखन! **जौं पै सीय राम बन जाहीं अवध तुम्हार काज**

कछु नाहीं। अयोध्या में तुम्हारा कोई काम नहीं है। हमको कोई आवश्यकता नहीं है। तुम्हारा जन्म ही राम की सेवा के लिए हुआ है और शायद तुमको यह भ्रम होगा कि भगवन् माँ कैकयी के कारण से वन को जा रहे हैं। इस भूल में मत रहना। लक्ष्मणजी ने पूछा फिर जा क्यों रहे हैं, माँ बोली-

तुम्हरेहिं भाग राम बन जाहीं। दूसर हेतु तात कछु नाहीं।।

दूसरा कोई कारण नहीं है-तुम्हरे भाग राम वन जाहीं। लक्ष्मणजी ने कहा, माँ मेरे कारण क्यों वन जा रहे हैं। माँ ने कहा, तू जानता नहीं है अपने को, मैं तुझे जानती हूँ। तू शेषनाग का अवतार है, धरती तेरे शीश पर है और धरती पर पाप का भार इतना बढ़ गया है कि तू उसे सम्भाल नहीं पा रहा है। इसलिए राम तेरे सर के भार को कम कर रहे हैं। **दूसर हेतु तात कछु नाहीं** और जब भगवान् केवल तेरे कारण जा रहे हैं तो तुझे मेरे दूध की सौगंध है कि चौदह वर्ष की सेवा में स्वप्न में भी तेरे मन में कोई विकार नहीं आना चाहिए। लक्ष्मणजी ने कहा माँ अगर ऐसी बात है तो सुन ले तू जब स्वप्न की शर्त दे रही है तो मैं चौदह वर्ष तक सोऊँगा ही नहीं और जब सोऊँगा ही नहीं तो कोई विकार नहीं आएगा। यह जगत का अद्वितीय भाई है यह भैया और भाभी की सेवा के लिए चौदह वर्ष जागरण का संकल्प ले रहा है। लेकिन अगर छोटा भाई बड़े भाई की सेवा के लिए चौदह वर्ष का संकल्प लेता है तो बड़ा भाई पिता माना जाता है। उसको भी पिता का भाव चाहिए। जैसे पिता अपने पुत्र की चिंता रखता है, ऐसे ही बड़ा भाई अपने छोटे भाई की पुत्रवत् चिंता करे तब वह बड़ा भाई कहलाने लायक है। ऐसी सुमित्रा जैसी माताऐं के जिनके कारण ऐसे भक्त पैदा हुए, सेवक पैदा हुए, महापुरुष पैदा हुए। कल्पना कीजिए **अवध तुम्हार काज कछु नाहीं।**

जाओ भगवान् की सेवा में, यहाँ तुम्हारा कोई काम नहीं है और अब हम अपने ऊपर विचार करें। अनुभव क्या कहता है? लड़का अगर शराबी हो जाए परिवार में चल सकता है। लड़का अगर दुराचारी हो जाए तो भी

चलेगा, जुआरी हो जाए चलेगा, बुरे से बुरा लड़का चलेगा लेकिन लड़का साधु हो जाए, संन्यासी हो जाए, समाजसेवक बन जाये, तो अपना-अपना हृदय टटोलो कैसा लगता है? सारे रिश्तेदारों को इकठ्ठा कर लेते हैं कि, भैया इसे समझाओ। हम चाहते तो हैं कि इस देश में महापुरुष पैदा हों, हम चाहते तो हैं कि राणा और शिवाजी इस देश में बार-बार जन्म लें लेकिन मेरे घर में नहीं पड़ौसी के घर में। क्या इससे धर्म बच सकता है? क्या इससे देश बच सकता है? माँ ने अपने दुधमुहें बच्चों को इस देश की रक्षा के लिए दीवारों में चिनते अपनी आँखों के सामने देखा है। आप कल्पना कर सकते हो कि माँ के ऊपर क्या बीती होगी? तेरह साल का बालक माँ के सामने सिर कटाता है। माँ ने आँख बंद कर लीं, कोई बात नहीं जीवन तो आना और जाना है। देह आती और जाती है। धर्म की रक्षा होनी चाहिए। जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उनकी रक्षा करता है। **धर्मो रक्षति रक्षतः।** इस देश की रक्षा के लिए कितनी माताओं की गोद सूनी हुई। कितनी माताओं के सुहाग मिटे, कितनों की माथे की बिंदी व सिन्दूर गए। कितनों के घर के दीपक बुझे, कितने बालक अनाथ हुए, कितनों की राखी व दूज के त्यौहार मिटे। ये देश, धर्म, संस्कृति तब बची है। ये नेताओं के नारों से नहीं बची, ये माताओं के बलिदान से बची, इस देश की माताओं ने बलिदान किया।

शुद्धोऽसि-बुद्धोऽसि-निरंजनोऽसि॥

उर्मिलाजी का दर्शन करें। हमने संतों के श्रीमुख से सुना है जब लक्ष्मणजी सुमित्रा माँ के भवन से बाहर आ रहे हैं और रास्ते में सोचते आ रहे थे कि उर्मिला से कैसे मिलुं इस चिंता में डूब रहे थे कि उर्मिला को बोल कर न गए तो रो-रो कर प्राण त्याग देगी और बोल कर अनुमति लेकर जाएंगे तो शायद जाने न दे वो मेरे साथ चलने की जिद करेंगी, रोएंगी और कहेंगी कि जब जानकीजी अपने पति के साथ जा सकती हैं तो मैं क्यों नहीं जा सकती? लक्ष्मणजी स्वयं धर्म हैं लेकिन आज धर्म ही द्वंन्द में फँस गया। उर्मिलाजी को

साथ लेकर जाया नहीं जा सकता और बिना बताए जाएँ तो जाएँ कैसे? रोती हुई को छोड़ा नहीं जा सकता। स्त्री के आँसू को ठोकर मारना किसी पुरूष के बस की बात नही। पत्थर दिल हृदय, पत्थर हृदय पुरुष भी बड़े से बड़े पहाड़ को ठुकरा सकता है लेकिन रोती हुई स्त्री को ठुकराना यह किसी पुरुष के बस की बात नहीं है। लक्ष्मणजी चिंता में डूबे हैं अगर रोई तो उन्हें छोड़ा नहीं जा सकता और साथ लेकर जाया नहीं जा सकता। करें तो करें क्या? इस चिंता में डूबे थे कि उर्मिलाजी का भवन आ गया। इधर, उर्मिलाजी को घटना की पहले जानकारी हो चुकी है और इतने आनन्द में डूबी हैं कि मेरे प्रभु, मेरे पति, मेरे सुहाग का इतना बड़ा सौभाग्य कि उन्हें प्रभु की चरणों की सेवा का अवसर मिला है। पति की सोच में डूबी श्रृंगार किए बैठी है, वो वेष धारण किया जो विवाह के समय किया था। कंचन का थाल सजाया, आरती का दीप सजाकर प्रतीक्षा करती है। आएंगे अवश्य, बिना मिले तो जा नहीं सकते? भय में डूबे लक्ष्मणजी आज काल कांप रहा है। आप कल्पना कीजिए इस देश की माताओं के सामने काल हमेशा कांपता है। माताओं को काल नहीं ले जा सकता, काल शरीर को ले जाता है। माँ को काल स्पर्श नहीं कर सकता। संकोच में डूबे लक्ष्मण जी ने धीरे से कुण्डी खटखटाई, देवी द्वार खोलो। जैसे ही उर्मिलाजी ने द्वार खोला तो लक्ष्मणजी ने आँख बंद कर लीं, निगाह से निगाह मिलाने का साहस नहीं, उनको भय लगता है, आँसू आ गए। उर्मिलाजी तो आँसू देखकर कह सकती हैं कि भगवन् यह तो नाचने का समय है,राजतिलक का महोत्सव हो रहा है, और आपकी आँखों में आँसू? उर्मिलाजी समझ गई कि मेरे कारण मेरे पति देव असमंजस में आ गए हैं। उर्मिलाजी ने दोनों हाथों से कंधा पकड़ लिया और कहा आर्यपुत्र घबराओ नही, धीरज धरो-

धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपद काल परिखिअंहि चारी॥

धैर्य की, धर्म की, मित्र की,और नारी की आपत्ति के समय परीक्षा होती है। आपको शायद यह लगता होगा कि मुझे घटना की जानकारी नहीं है। लेकिन मुझे तो पूरी जानकारी है और मुझे यह भी मालूम है कि आप भगवान् की सेवा में 14 वर्ष के लिए जा रहे हैं। और मैं समझ रही हूँ कि आप शायद संकोच में डूबे हैं कि उर्मिला साथ जाने की जिद करेगी। तो ध्यान से सुनिये, मैं साथ जाने की जिद क्या, जाने के बारे में सोच भी नहीं रही। यह तो मेरा सौभाग्य है कि मेरा सुहाग प्रभु के साथ उनकी सेवा में जा रहा है। और सुनिए! मैंने किसी भोगी के घर का अन्न नहीं खाया, मैं योगीराज जनक की बेटी हूँ, योगी की गोद में खेली हुँ। भोगी की गोद में नही। मस्तक ऊपर उठाइये। अपनी साड़ी के पल्ले से उर्मिलाजी ने लक्ष्मण जी के आँसू पोंछे। तब लक्ष्मण जी उर्मिलाजी से लिपटकर इतना रोये हैं कि उनके आँसू थम नहीं रहे हैं। सामान्यत: लक्ष्मणजी जीवन में रोते नहीं हैं। जीवन में केवल तीन बार रोने का उल्लेख है पहली बार आज, दूसरी बार तब जब लंका में जानकीजी की अग्नि परीक्षा हुई थी और उस अग्नि परीक्षा में काठ चिता को लक्ष्मण जी को तैयार करना पड़ा और तीसरी बार वह तब रोये जब जानकीजी को लक्ष्मणजी वन में छोड़ने गये। जब लव-कुश माँ के गर्भ में थे।

सामान्यतया काल रोता नहीं है, रुलाता है। लक्ष्मणजी कहते हैं कि उर्मिला तेरे चरणों में सिर रखकर रोऊं, आज तूने मुझे गिरने, डगमगाने से बचा लिया। उर्मिलाजी दौड़ कर गईं अन्दर से थाल सजाकर लाईं, दीपक जलाए, आरती उतारी, रोली, चावल से टीका किया और जिस समय पाँव छूने को झुकीं तो उर्मिला जी ने आँसूओं को पोंछ लिया। उर्मिला जी को लगता है कि यदि एक भी आँसू पति के चरणों में गिर गया तो वनवास काल में मेरे पति को मेरी याद आएगी। मेरी याद परमात्मा की सेवा में रुकावट आएगी, मैं दु:ख सहन कर सकती हूँ लेकिन पति को दु:ख में नहीं डाल सकती। खड़े होकर विनम्र विनती की कि आर्यपुत्र यह मेरा सौभाग्य है कि आप प्रभु की सेवा में जा रहे हैं। अब मेरी एक प्रार्थना स्वीकार कीजिए। आज जिस दीपक से मैं आपकी आरती उतार रही हूँ जब आप चौदह वर्ष बाद लौटें तब भी मैं उसी दीपक से आपकी आरती

उतारूं। बस इतनी कृपा करना कि यह दीपक हमेशा जलता रहे। चौदह वर्ष तक मैं इस दीपक को बुझने नहीं दूंगी, बस मेरे दीपक को धोखा न देना। ऐसा सुना है कि चौदह वर्ष उर्मिलाजी ने इस दीपक को बुझने नहीं दिया और हमने यह भी सुना है कि जिन परिवारों में अखण्ड दीपक जलते हैं, अधर्म प्रवेश नहीं कर पाता, जब भी प्रवेश करेगा, धर्म ही करेगा। चौदह वर्ष तक जो वेश धारण किया था वह उतारा ही नहीं, श्रृंगार नहीं उतारा, चौदह वर्ष तक अपने महल का द्वार भी बंद नहीं किया और न ही अन्न का सेवन किया, चौदह वर्ष तक उर्मिलाजी सोयी नहीं। शास्त्र कहते हैं कि लक्ष्मणजी के द्वारा मेघनाथ का वध हुआ था किन्तु आत्मा कहती है कि वह उर्मिलाजी की तपस्या के कारण मारा गया। इस महिला के तप ने मेघनाथ का वध किया है। यह रघुवंश की पुत्रवधू है, योगीराज महाराज जनक की कन्या है, रामराज केवल राम के कारण नहीं आया है। रामराज्य जनकजी की बेटियों के कारण आया है। इस रामराज्य के भव्य भवन की नींव में जनकजी की बेटियां बैठी हैं। इनकी पीठ पर ही यह अयोध्या का राज जिसकी आज चारों तरफ जय-जयकार हो रही है, जनक परिवार के कारण आया है। भगवान् राम ने तो केवल उसके ऊपर कलश की स्थापना की है। चलते-चलते उर्मिला ने कहा कि मेरी याद मत करना, मेरा तो नाम ही उर्मिला है। मैं तो आपसे एक क्षण भी दूर नहीं हूँ। यह भी बात आपने सुनी होगी कि जब लक्ष्मणजी को शक्ति लगी और इस परिवार की नारियों को कितना भरोसा है अपने पतिव्रत पर, अपने धर्म पर। जब संजीवनी बूटी लेकर लौट रहे थे हनुमानजी, तो ऐसी घटना आती है कि अयोध्या के ऊपर से उड़ान थी तो भरतजी ने भूलवश, संदेहवश बाण मारकर नीचे गिरा दिया। कौशल्या माँ भी मिलने गईं, सुमित्राजी भी मिलने गईं। सब लोग मिलने गए। हमने सुना है कि उर्मिलाजी भी गईं। कौशल्याजी ने हनुमानजी से कहा कि हनुमान् राघव को जाकर बोलना कि राम की शोभा लक्ष्मण के साथ है अगर मेरा लखन जीवित नहीं हुआ तो राम की अयोध्या में कोई आवश्यकता नहीं है। मेरा संदेश दे देना। सुमित्राजी ने कहा- नहीं, नहीं भैया! माँ की बात मत सुनना, राघव को जा कर कहना कि शोक मुक्त हों,

लक्ष्मण को छोड़ें, मेरा शत्रुघ्न अभी जीवित है दूसरा बेटा। हनुमानजी सोच रहे हैं कि कैसी माँ है एक बच्चा मृत्यु की गोद में है, काल के गाल में है और दूसरे बेटे को भी प्रस्तुत कर रही है। हनुमानजी ने उर्मिलाजी की ओर देखा कि इनके ऊपर क्या बीतती है, देखा तो उर्मिलाजी सबकी बात सुन रही हैं और मंद-मंद मुस्कुराती खड़ी हैं। तो हनुमानजी ने बोला, माँ आप भी कुछ बोलिए, आपके पति के प्राण संकट में हैं। उर्मिलाजी ने कहा मेरे पति के प्राण कभी संकट में नहीं हो सकते। हनुमानजी ने कहा मैं स्वयं संकट में देखकर आया हूँ तभी तो संजीवनी लेने आया हूँ। सूर्योदय की अवधि है। पूरब दिशा में लालिमा आ चुकी है और लंका यहाँ से कोसों दूर है। और आप कहती हैं कि प्राण संकट में नहीं हैं और सूर्य उदित हो गया तो उनके प्राण कैसे बच पाएंगे? उर्मिलाजी ने कहा हनुमानजी आप अपनी चिंता करिए। मेरे पति के प्राणों की चिंता मत करिए। हनुमानजी बोले, सूर्योदय की अवधि है। अगर उससे पहले औषधि नहीं पहुंची तो? तब उर्मिला जी ने कहा, तुमको दो-चार दिन अयोध्या में विश्राम करना हो तो कर लो तब तक मैं सूर्य को उदित ही होने नहीं दूंगी। बोले, आप सूर्य को कैसे रोकोगी? बोलीं कि मैं सूर्यवंश की बहू हूँ, मेरा विवाह सूर्यवंश में हुआ है। सूर्य हमारे कुल के पुरखे हैं और कोई पुरखा यह नहीं चाहेगा कि जब मैं आँख खोलूं तो मेरी आँखों के सामने विधवा बहू खड़ी हो। सूर्य उदित ही नहीं होगा। आपको चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। मेरे पति को कुछ नहीं होगा। आपको कैसे मालूम? तो उर्मिलाजी बोली, मेरा दीपक मुझे बता रहा है। दीपक जल रहा है तो इसका मतलब कि मेरे पति जीवित हैं। और सुनो मैं तो लंका नहीं गयी थी, तुम तो लंका से आए हो? यह बताओ इस समय मेरे पति कहाँ हैं। हनुमानजी बोले भगवान् की गोद में हैं। उर्मिलाजी ने कहा भैया! अगर मेरे पति भोग की गोद में होते तो काल उनको मार देता पर जो भगवान की गोद में लेटा है, उसको काल छू भी नहीं सकता है। वह हमेशा चिरंजीवी रहता है। मेरे पति भगवान् की गोद में लेटे हैं और मैं भगवान् के करुणामयी स्वभाव से परिचित हूँ। मुझे यह मालूम है। जागने का संकल्प भगवान् को यह जानकारी है कि लखन माँ के

चरणों में चौदह वर्ष लेकर आया है, सोयेगा नहीं और प्रभु का स्वभाव बहुत ही कोमल है- **अति कोमल रघुवीर सुभाऊ। जद्यपि अखिल लोक कर राऊ॥** प्रभु को लगता है मेरा छोटा भाई लखन दिनभर इतने बड़े-बड़े राक्षसों से लड़ता है, थककर चूर हो जाता है और फिर सन्ध्या समय माँ के संकल्प को याद करता है और सोता नहीं। इसको विश्राम कैसे दिलायें, भगवान् ने मेघनाथ के बाण के बहाने से पतिदेव को अपनी गोद में विश्राम के लिए लिटाया है। जो राम की शरण में रहता है वह विश्राम के लिए रहता है, वह कभी मरण में नहीं जाता।

जो आनन्द सिंधु सुख रासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी॥
सो सुखधाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक विश्रामा॥

जो भगवान श्रीराम की गोद में होगा वो विश्राम में होगा, आराम में होगा-

सकल लोक दायक विश्रामा।

जब लक्ष्मण ने चौदह वर्ष जागरण का संकल्प ले लिया। तब हमने सुना, नींद लक्ष्मणजी के पास आयी और नींद ने लक्ष्मणजी से कहा कि आज तक हमको कोई नहीं जीत पाया और आज आपने हमको जीत लिया है। हमसे कोई वरदान माँगिये। तो लक्ष्मण जी ने कहा मुझे तो कोई आवश्यकता नहीं है मगर तुम उर्मिलाजी के पास चली जाओ। नींद उर्मिला जी के पास आई। उर्मिला जी से कहा आप हमसे कोई वरदान माँगिए, पूछा किसने भेजा है तो बोली आपके पतिदेव ने भेजा है। बोली उन्होंने हमें जीत लिया है हम उन्हें वरदान देना चाहती थीं तो उन्होंने कहा जाओ, उर्मिला जी के पास जाओ। मांगो वरदान मांगो। तो उर्मिला जी ने कहा अगर वरदान देना चाहती हो तो एक वरदान दो कि चौदह वर्ष जब तक मेरे पति भगवान् के चरणों की सेवा में लगे हैं उनको मेरी याद न आए। पत्नी कहती है परमात्मा की सेवा में उनको भोग की याद न

आए, उनको काम की याद न आए। जो रघुवर की सेवा में बैठे हैं उनको घर की याद न आए। शिवाजी ऐसे ही पैदा नहीं हुए। शिवाजी का निर्माण जीजाबाई माँ के द्वारा हुआ। जिस समय जीजाबाई दूध पिलाती थीं और दूध पिलाती-पिलाती थपकी देती जाती थीं और भगवान् राम और हनुमानजी की कथायें सुनाती थीं। भगवान् की कथाओं को सुनकर धर्म की स्थापना हुई है। धर्म संस्थापनार्थाय हिन्दू पद पादशाही की स्थापना शिवाजी कर पाए। इतना बड़ा औरंगजेब का साम्राज्य सारे भारत में फैलने वाला साम्राज्य महाराष्ट्र में जाकर रुक गया। हमारे यहाँ ऐसी माताएं, बूढ़ी माताएं हुई हैं जिनको कुछ नहीं आता था। वे प्रातःकालीन चाकी पीसा करती थीं तो बालक उनकी गोद में लेटा होता था। चाकी पीसते-पीसते गीत गाया करती थीं।

आजु मोहि रघुबर की सुधि आई। सीय बिना मेरी सूनी रसोई।।
लखन बिना ठकुराई। आजु मोहि रघुवर की सुधि आई।।

ये भारत की माताएं थीं। जिनके कारण इस देश में ब्रह्म को भी अवतार लेना पड़ा। कैसा देश है? क्या देश है?

जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़ियाँ करती है बसेरा।
वो भारत देश है मेरा।।
जहाँ सत्य-अहिंसा और धर्म का पग-पग लगता डेरा।।
वह भारत देश है मेरा।।
ये धरती वो जहाँ ऋषि-मुनि जपते हरिनाम की माला।
जपते हरि नाम की माला।।
यहाँ हर बालक मनमोहन है और राधा हर एक बाला।
राधा हर एक बाला।।

जहाँ सूरज सबसे पहले आकर डाले अपना डेरा।
वो भारत देश है मेरा॥
वन्देमातरम्, वन्देमातरम्। वन्देमातरम् जय भारत वन्देमातरम्।

इस देश में माताओं का वन्दन किया है। चाहे गर्भवती माता या भूगर्भ की माता हो। माताओं के कारण इस देश का धर्म व संस्कृति जीवित है। ऐसी घटना आती है कि जिस समय बिलाव राणा के बेटे के हाथ से घास की रोटी का टुकड़ा छीन कर ले गया उस समय हिमालय जैसा अडिग स्थिर राणा का हृदय कांप गया। यह घटना देख कर चीख पड़े राणा जी। सत्य या झूठ मुझे मालूम नहीं, ऐसा सुना गया कि राणा संधि पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए तैयार हो गए लेकिन राणा की पत्नी ने हाथ पकड़ लिए, नहीं राणा, अगर आप डूबे तो भारत की आत्मा डूब जाएगी। यह प्रारब्ध है हमारा, इसको भोग लेंगे लेकिन परिवार व इतिहास को कलंकित नहीं होने देंगे। राणा की पत्नी ने हाथ पकड़कर रोक दिया। धर्म डूबने जा रहा था उन्होंने धर्म को बचा लिया। जिस समय भारत, मुस्लिम आक्रांताओं की चपेट में धर्म संस्कृति से विरत होने लगा, भय के कारण से यज्ञ, धर्म, जागरण, धार्मिक कथा, प्रवचन डूबने लगे, उस समय सचिमाता ने चैतन्यमहाप्रभु को तिलक करके कहा कि जाओ, इस संसार को हरिनाम का संदेश दो। ऐसी माता ने कहा- जाओ बेटा, धर्म को तुम्हारी आवश्यकता है। ऐसा सुना गया कि जिस समय युद्ध समाप्त हो गया, लंका विजय के बाद प्रभु अवध को लौट रहे थे, पुष्पक विमान गन्धमादन पर्वत के ऊपर से उड़ रहा था तो हनुमानजी ने कहा प्रभु यहां मेरी माँ निवास करती हैं। बहुत दिन हो गए, माँ के दर्शन नहीं हुए, आज्ञा हो तो मैं दर्शन कर लूँ। भगवान् बोले हनुमान् जिस माँ ने तुम्हारे जैसे पुत्र को जन्म दिया हो उनका दर्शन करने का मन तो हमारा भी बहुत है, चलो हम भी दर्शन करेंगे। विमान नीचे उतर आया, दौड़ कर हनुमानजी ने माँ को प्रणाम किया। प्रभु ने भी जाकर

प्रणाम किया और बोले माँ आपके दर्शन पाकर मेरे नेत्र धन्य हो गए, माँ आपने ऐसे पुत्र को जन्म दिया। तो अंजनी माँ ने हनुमानजी से पूछा, पुत्र! कुम्भकरण को किसने मारा? हनुमानजी बोले, माँ प्रभु ने मारा। अच्छा, मेघनाथ को? बोले, उनको लखनजी ने मारा। अच्छा रावण को किसने मारा? बोले रावण को भगवान् ने मारा। इतना बोलना था कि अंजनीमाँ क्रोध में आ गयीं और बोलीं आगे से मुझे मुँह नहीं दिखाना। चले जाओ, क्यों मैंने तुम्हें इसलिए दूध पिलाया था कि भगवान् को श्रम करना पड़े? राक्षसों का वध करने के लिए? तुमने मेरे दूध को लजा दिया। अंजनी माँ के दूध में इतनी ताकत थी उसी समय गन्धमादन चोटी पर जब दूध की धारा फेंकी तो गन्धमादन के खण्ड-खण्ड हो गए। इतना ताकतवर दूध मैंने तुम्हें पिलाया और प्रभु को श्रम करना पड़ा। मुझे शक्ल दिखाने की आवश्यकता नहीं है। प्रभु हाथ जोड़कर बोले, माँ क्रोध मत करो। हमने नहीं मारा कोई राक्षस। यह तो हनुमान् मार-मार कर अधमरा कर देते थे। हमको यश देने के लिए कहते थे, प्रभु, आप इसको मुक्ति दे दीजिए। मारने का काम तो हनुमान ने किया है हमको तो केवल यश दिलाने के लिए कहते थे। प्रभु! अब आप इनको मुक्त कर दीजिए। मारने का काम तो श्री हनुमान् ने किया है हमको ते यश देने के लिए कहा कि प्रभु ने मारा। ऐसी माँ के गर्भ से हनुमानजी का जन्म, अंजनीपुत्र और पिता का नाम बाद में जुड़ा है। पवनसुतनामा और पवन के पुत्र भी कहे गए। चूंकि मैंने ऐसा सुना है कि अंजनी माँ यही तपस्या करती थीं, बहुत ही अच्छा बलवान योग्य पुत्र मुझे मिले, ऐसी आकांक्षा से तप कर रहीं थीं। उस समय श्रृंगार करके टहल रही थीं, टहलते-टहलते अंजनीमाँ को लगा कि कोई मुझे पीछे से छू रहा है। माता ने कहा कौन मुझ पतिव्रता को छू रहा है। दिखाई कोई दे नहीं रहा था, फिर बोली, मैं श्राप दूंगी, नहीं तो सामने आओ, सामने से तो कोई नहीं आया परन्तु पीछे से आवाज आई, मैं पवनदेव हूँ। इस समय साक्षात् शंकरजी तुम्हारे पुत्र रूप में जन्म लेना चाहते हैं। मैंने शंकरजी के तेज को तुम्हारे शरीर में स्थापित कर दिया है, उससे तुम्हारे पतिवृत्य को नुकसान नहीं होगा। उससे तुम्हें बहुत तेजस्वी शंकरजी का अवतार मिलेगा। ऐसा कहकर पवनजी वहाँ से

चले गए। इसलिए अंजनीपुत्र के साथ ही हनुमानजी पवन पुत्र भी कहलाए जाने लगे। **अंजनी पुत्र पवन सुत नामा।** पवनसुत का दूसरा अर्थ मैंने आपको बताया ही था कि पवन स्वयं नहीं दिखाई देते हैं। पवन का कार्य दिखाई देता है। उनका अनुमान होता है उनका कार्य रूप तो दिखाई देता है लेकिन उनका कर्ता रूप दिखाई नहीं देता। प्रभु ने जब धनुष तोड़ा- **लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े, काहु न लखा देख सबु ठाढ़े।।** भगवान् का भी कार्य दिखाई देता है परन्तु उनका कर्ता रुप दिखाई नहीं देता है। ऐसे ही पवन का कार्य दिखाई देता है कर्ता नहीं दिखाई देता है। अपना नाम नहीं वह स्वयं पीछे हट जाते हैं। वह कहते हैं कि जब किसी पुष्प की सुगंध आती है तब आप कहते हैं कि पुष्प की कितनी सुन्दर सुगन्ध आ रही है न कि पवन की सुगन्ध आ रही है। कहते हैं चमेली की बहुत ही मनमोहक सुन्दर सुगन्ध आ रही है, चम्पा की कितनी सुन्दर सुगन्ध आ रही है, चन्दन की कितनी सुन्दर सुगन्ध आ रही है। कभी नहीं कहेंगे कि पवन कितनी सुगन्धित है। पवन सुत का दूसरा भी अर्थ है, पवन के तीन गुण हैं शीतल, मंद और सुगन्ध। पवन जब शीतल हल्का चलता है तो शीतलता प्रदान करता है, मंद-मंद चलता है तो मर्यादा की रक्षा करता है। जब पवन तेज होता है तो माताओं की मर्यादा भंग होती है, उनके वस्त्र इधर-उधर होते हैं। इसलिए हनुमानजी ने भी बोला है एक मैं मंदमति। शीतल और मंद पवन अगर सुगन्धित होती है तो भी आनन्द देती है। लू चलती है तो सब लोग बचना चाहते हैं। जब ठण्डी शीतल वायु चलती है तो बोलते हैं कि कितनी शीतल वायु है, कितनी सुगन्ध आ रही है। हमारे अन्दर जो मन्दता भर दे, खुशबू भर दे, यही पवन का गुण है। आगे की चौपाई-

महावीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।

श्रीहनुमानजी महावीर हैं। देखो दुनियाँ में वीर बहुत हैं। अर्जुन हैं, भीम हैं, भीष्म हैं, अश्वथामा हैं, कर्ण हैं, द्रोणाचार्य जी हैं, मेघनाद हैं, रावण हैं, कुम्भकरण हैं और बाली यह सब वीर हैं। श्रीहनुमानजी महावीर हैं।

मानस में रावण को बली कहा गया है लेकिन हनुमानजी को महाबली। हमने ऐसा पढ़ा है जिसमें पांच लक्षण हों वह वीर होता है। पांच लक्षण- त्यागवीर, दानवीर, विद्यावीर, ज्ञानवीर, पौरुषवीर, जिसमें हों उस पांच लक्षण वाले महापुरुष को वीर कहते हैं और जो पाँच लक्षणों वाले वीर को भी वशीभूत कर ले उसको महावीर कहते हैं।

सुमिरि पवन सुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू।।

श्रीरामनाम की महिमा से श्रीहनुमानजी ने श्रीराम को अपने वशीभूत कर लिया भगवान् को भगवान् का नाम ही वशीभूत कर सकता है। जो जगत को वश में कर ले वह वीर और जो जगतपिता को वशीभूत कर ले, वह महावीर है। देखो! अध्यात्म जगत में महावीर किसे कहते हैं? अध्यात्म के आचार्य कहते हैं कि जो दूसरों का अहंकार तोड़ दे वह वीर है और जो अपना अहंकार, अभिमान छोड़ दे, वह महावीर है। हम दूसरे का अहंकार तो बहुत जल्दी तोड़ देते है, लेकिन अपने अहंकार का तो हम पोषण करते है। जो अपने अहंकार को अभिमान को छोड़ दे, जो सारे मान का हनन् करे वह महावीर है। आपने कभी विचार किया है कि हनुमानजी में कितना बल होगा? हनुमानजी का बल देखिए, हमने ऐसा सुना है कि साठ हजार हाथियों का बल एक दिगपाल में होता है। साठ हजार दिगपालों में जितना बल होता है उतना बल एक ऐरावत में होता है। साठ हजार ऐरावत में जितना बल होता है उतना एक इन्द्र में होता है। साठ हजार इन्द्रों में जितना बल होता है उतना बल हनुमानजी की कनिष्ठिका अंगुली में होता है। अब आप लगा लीजिए कि हनुमानजी में कितना बल होगा।

महाबीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।

सारे देवताओं के आशीर्वाद श्रीहनुमान को प्राप्त हैं। कोई अस्त्र-शस्त्र इन पर प्रभाव नहीं डाल सकता। ब्रह्मास्त्र भी इनके ऊपर अपना प्रभाव नहीं डाल सकता। जिस समय इन्द्र ने बज्र प्रहार किया था और पवनदेव हनुमानजी को लेकर एक गुफा में जाकर छुप गए थे तब सब देवताओं ने पवनदेव से आकर क्षमा मांगी थी

तो सभी देवताओं ने अपना-अपना आशीर्वाद प्रदान किया था। मेघनाथ को जब हनुमानजी ने मुक्का मारा था तो क्या दशा हो गयी होगी। गोस्वामी जी ने लिखा है कि-

मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई। ताही एक छन मुरुछा आई।।
बार-बार पचार हनुमाना। निकट न आव मरम सो जाना।।

मेघनाथ को एक जोर का मुक्का मारा और हनुमान आराम से पेड़ पर जाकर तमाशा देखने लगे। मेघनाथ घबराकर छुप गया। मेघनाथ का सामना करने का साहस बहुत कम लोगों में होता था लेकिन युद्ध के समय जब यह हनुमानजी की किलकारी सुन लेता था तो रथ लेकर भाग जाता था। मेघनाथ सबके साथ युद्ध करने का साहस रखता था लेकिन हनुमानजी को देखकर थर-थर काँपने लगता था। कारण भी है। मेघनाथ काम है, श्रीहनुमान् ब्रह्मचर्य है। श्रीहनुमानजी संयम हैं, जितेन्द्रिय हैं। जितेन्द्रिय, कोई संयमी ही काम को भयभीत कर सकता है। रावण को भी हनुमानजी ने मुक्का मारा है।

एक बार जब हनुमानजी के मुक्के की रावण ने बहुत प्रशंसा सुनी तो रावण ने कहा, चलो मैं चलता हूँ और रावण हनुमानजी के पास आया और बोला हमारा-तुम्हारा मुष्टि प्रहार युद्ध हो जाए, तो हनुमानजी ने कहा काहे के चक्कर में पड़ा है। बड़ा बूढ़ा आदमी आराम कर, बोला नहीं हमसे मुक्का युद्ध करो। हनुमानजी ने कहा बाल-बच्चों से मिलकर आए हो या नहीं? बोला बातें मत कर। तो हनुमानजी ने कहा ठीक है, मार मुक्का। तो रावण ने कहा, बड़ा वीर बनता है हम पहले क्यों मारें? तू मार। हनुमानजी ने कहा पहले मार मैं इसलिए कह रहा हूँ कि यदि मार लेगा तो तेरे भी मन को संतोष हो जाएगा कि मैंने भी मुक्का मार लिया। अगर मैंने मार दिया तो मारने लायक तू रहेगा ही नहीं। तो पहले थोड़ा तमाशा देख ले। बोले नहीं तू मार, हनुमानजी ने कहा नहीं, प्रहार तो पहले तुझे ही करना पड़ेगा और रावण ने एक मुक्का पहले श्रीहनुमानजी

को मारा। रावण तो रावण है जिसके चलने से धरती थर्राती हो, पर्वत डगमगा जाते हों ऐसे रावण के मारने से हनुमानजी घुटने पकड़कर बैठ गए। देखो मोह का प्रहार है, मोह का प्रहार हनुमानजी को गिरा तो नहीं पाया लेकिन घुटने टिकवा दिए। मोह जब अपना प्रहार करता है तो अच्छे-अच्छों के घुटने टिकवा देता है तो प्रभु का नाम लेकर हनुमान् सावधान हो गए। अब हनुमानजी ने कहा, रावण! सावधान! और गोस्वामी जी ने लिखा है कि रावण को हनुमानजी ने इतने जोर का मुक्का मारा कि-

मुठिका एक ताहि कपि मारा। परेउ सैल जनु बज्र प्रहारा।।

एक मुक्का जब रावण को लगा तो जैसे पर्वत पर बज्र प्रहार हो गया हो। इतना भयानक प्रहार कि मूर्छित होकर रावण जमीन पर गिर पड़ा। लेकिन मोह का नाता बहुत विचित्र होता है। मोह आसानी से नहीं मरता है। मोह तो केवल भगवान् ही मार सकते हैं और किसी के बस की बात नहीं। हनुमानजी जैसे संत के मुक्के ने मूर्छित तो कर दिया लेकिन मार नहीं पाया। मूर्छा से जाग गया और मूर्छा दूर होने के बाद, जगने के बाद रावण हनुमानजी से क्या बोला-

मुरूछा गै बहोरि सो जागा। कपि बल बिपुल सराहन लागा।।

हे वानर! मैंने बहुत बड़े-बड़े वीर देखे लेकिन तेरे जैसा महावीर मैंने नहीं देखा। जिसने अपने मुक्के से मुझे मूर्छित कर दिया वो सचमुच महावीर है। जब हनुमानजी की रावण ने सराहना की, जब दुश्मन हमारी सराहना करने लगे तब समझना चाहिए कि हाँ वो गुण हमारे अन्दर है। प्रशंसक तो प्रशंसा करेंगे ही। प्रशंसक तो सदैव झूठी प्रशंसा करते हैं। निन्दक हमेशा सही प्रशंसा करते हैं तो जब रावण ने हनुमानजी की प्रशंसा की तो हनुमानजी को प्रसन्न होना चाहिए था लेकिन हनुमानजी संकोच में आ गए और धिक्कारने लगे स्वयं को-

धिग-धिग मम पौरुष धिग मोही। जों तें जिअत रहेसि सुरद्रोही।।

हनुमानजी को खुश होना चाहिए था पर हनुमानजी अपने पौरुष को धिक्कारने लगे। मेरे पौरुष को धिक्कार है। हनुमानजी ने बोला- मेरे मुक्के के बाद भी तू जीवित रह गया। मुक्के के बाद तुझे मरना चाहिए था लेकिन मोह इतना प्रबल होता है कि महावीर के मुक्के के बाद भी नहीं मरता। हनुमानजी संत हैं, संत का मुक्का क्या है। संत का मुक्का है संत की वाणी, संत का जो प्रहार है यह हमारे विचारों पर, आचरण और मान्यताओं पर चोट करता है। यही मुक्का हनुमानजी ने लंकिनी को मारा था। लंकिनी सुधर गयी थी, मुक्का खाकर वह भी मूर्छित हो गयी थी।

ताहि एक क्षण मूरुछा आयी।

लेकिन जागने के बाद क्या बोली-

तात मोर अति पुन्य बहूता। देखेउँ नयन राम कर दूता।।
जब रावनहिं ब्रह्म बर दीन्हा। चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा।।
बिकल होसि तैं कपि के मारे। तब जानेसु निसिचर संघारे।।

लंकिनी मुक्का खाकर सुधर गयी। संत के प्रहार से, वाणी से, प्रवचन से भी यदि जीवन में सुधार न आए वह मोह है। रावण को हनुमानजी की प्रशंसा नहीं करनी चाहिए थी। कष्ट हुआ हनुमानजी को, कि प्रशंसा भगवान की करनी चाहिए थी। कोई और होता तो प्रसन्न हो जाता लेकिन हनुमानजी को कितना कष्ट हुआ। ऐसे श्रीहनुमानजी **महावीरविक्रमबजरंगी** हनुमान जी को विक्रम कहकर सम्बोधित किया गया है। विक्रम का अर्थ जिनके बल का कोई अतिक्रमण न कर सके उसको विक्रम कहते हैं। जैसे भगवान् भी विक्रम हैं बली के यज्ञ में भगवान का विक्रम प्रकट हुआ था। भगवान् के बल को कोई अतिक्रमण नहीं कर पाया। तीनों लोकों को प्रभु ने नाप दिया, भगवान् का विक्रम वहाँ प्रकट हुआ था। हनुमानजी का विक्रम यहाँ प्रकट है।

आपने एक घटना सुनी होगी। श्रीहनुमानजी जा रहे थे, देवताओं ने सापों की माँ सुरसा को भेजा। सुरसा ने मुंह फाड़कर कहा कि मैं तुझे खाऊंगी, हनुमानजी ने कहा, माँ, ऐसे तो इस शरीर का कोई उपयोग नहीं है लेकिन मैं रामकाज के लिए जा रहा हूँ तो प्रभु का संदेश माँ को दे आऊँ और माँ का संदेश प्रभु को। इसके बाद तू खा लेना जैसा तेरा मन करे। सुरसा ने कहा नहीं मैं तो आए शिकार को छोड़ती नहीं हूँ। हनुमानजी ने कहा नहीं मानती तो खा ले। खाना चाहती हो तो खा लो। सुरसा ने हनुमानजी को निगलने के लिए एक योजन का मुँह फाड़ा। हनुमानजी ने जयश्रीराम बोला और दो योजन के हो गए क्योंकि हनुमानजी को भगवान का आशीर्वाद है **तैं मम प्रिय लक्ष्मण ते दूना।** लक्ष्मणजी साक्षात् नाग हैं और यह नागों की माँ है। शेषनाग हैं लक्ष्मण। हनुमानजी दूने हो गए सुरसा ने दो योजन मुँह फाड़ा हनुमानजी चार योजन हो गए। सुरसा ने चार योजन मुँह फाड़ा हनुमानजी आठ योजन हो गए। सुरसा ने आठ योजन मुँह फाड़ा हनुमान जी सोलह योजन हो गए। सुरसा ने सोलह योजन मुँह फाड़ा **तुरत पवनसुत बत्तीस भयऊ,** यानि बत्तीस योजन हो गए। सुरसा ने बत्तीस योजन मुँह फाड़ा हनुमानजी चौंसठ योजन हो गए और गोस्वामी जी ने लिखा है-

जस-जस सुरसा बदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रुप देखावा॥
सत योजन तेहिं आनन कीन्हा। अति लघु रुप पवनसुत लीन्हा॥
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा। मांगा बिदा ताहि सिरु नावा॥

जैसे-जैसे सुरसा बढ़ती गयी हनुमानजी दो गुने होते चले गए। सटक भी नहीं पाई और फिर क्या हुआ श्रीहनुमानजी अति लघु रूप हो गये। अंकगणित में सबसे छोटा अंक एक माना जाता है और जिसकी कोई कीमत नहीं होती उसे शून्य कहते हैं। हनुमानजी शून्य हो गए। हनुमानजी विराटतम भी हो जाते हैं और अति लघु भी हो जाते हैं। या तो इतने बड़े हो जाओ कि किसी के मुँह में नहीं आओ या तो इतने छोटे हो जाओ

कि किसी की आँख को दिखाई न दो यह विक्रम है। किसी भी प्रकार से बड़े होने में भी और लघु होने पर भी जिनका कोई अतिक्रमण न होता हो वह श्रीहनुमानजी हैं। वही बड़े कार्य कर सकते हैं। अंत में हनुमानजी सुरसा का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और वह उनको आशीर्वाद देकर चले जाती हैं।

राम काज सबु करिहहु, तुम्ह बल बुद्धि निधान॥
आसिष देइ गई सो, हरषि चलेउ हनुमान॥

विक्रम का अर्थ है मन का संयम जिसने भी अपने मन को साध लिया वह विक्रम है। जिसने मन में संयम कर लिया वह विक्रमी है जो कभी उत्तेजित नहीं होते हैं उस विक्रमी हनुमानजी को कभी उत्तेजना नहीं आती। उनकी कितनी ही प्रशंसा करिए, रावण जैसा महाबली प्रशंसा कर रहा है, हनुमानजी तनिक भी फूले नहीं। कितनी अशिष्ट भाषा रावण ने हनुमानजी से बोला है अरे मूरख! अरे अधम! अरे निर्लज्ज! अरे सठ! यानि आप कल्पना कर सकते हैं कि इतने बड़े महापुरुष से रावण कितनी अशिष्टता से कहता है। महावीर विक्रम बजरंगी उनको यह अधम कहता है, निर्लज्ज कहता है, सठ कहता है, मूर्ख कहता है लेकिन सब बातों को सुनकर भी हनुमानजी उत्तेजित नहीं होते। रावण की कितनी भी अशिष्ट भाषा आयी लेकिन वह भाषा हनुमानजी को उत्तेजित नहीं कर सकी, क्यों? क्योंकि, श्रीहनुमानजी अपने सम्मान के लिए बल का उपयोग नहीं करते। अपने बल का उपयोग जब भी हनुमानजी करते हैं तो भगवान् के कार्य के लिए करते हैं। उन्होंने तो बोल दिया, अरे रावण मुझे कोई शर्म संकोच नहीं-

मोहि न कछु बाँधे कइ लाजा। कीन्ह चहउँ निज प्रभु करि काजा॥

हनुमानजी ने कहा कि रावण मुझे बँधन में बँधने में कोई लाज नही हैं। और देखिए! भरी सभा में रावण अशिष्ट बात बोल रहा है। आपने कभी अनुभव किया है कि घरों में झगड़ा किस बात का है। मित्रों में झगड़ा

किस बात का है। सब एक शिकायत करते हैं कि पिताजी को समझाइए यह चार लोगों के बीच में फटकारते हैं, अकेले में आप कुछ कह दीजिए मगर चार लोगों में तो मत कहो। यानि कितना हमारा सम्मान, हमारी नाक पर रहता है। बाप ने अगर किसी के सामने बेटे को कुछ कह दिया तो इसी पर तूफान मच गया। रावण पूरी भरी सभा में सब देवता जन खड़े हैं और रावण कितनी अशिष्ट भाषा बोल रहा है और हनुमानजी क्या कह रहे हैं-

विनती करउँ जोरि कर रावन। सुनहु मान तजि मोर सिखावन॥

हनुमानजी जब भी बोलते हाथ जोड़ कर हे प्रभु! **खायऊँ फल प्रभु लागि भूखा।** यह हनुमानजी की कायरता नहीं है। आप इसे हनुमानजी की कायरता समझने की भी भूल मत करना। यह हनुमानजी की विनम्रता है। यह उनकी महानता है। दुष्ट को उसी की भाषा में मत बोलो अन्यथा दुष्टता और बढ़ेगी। दुष्ट के सामने भी शिष्टता का ही प्रयोग हो। हनुमानजी कभी उत्तेजित नहीं होते क्योंकि मान-सम्मान का कोई भाव ही हनुमानजी में नहीं है, वह तो मान-अपमान से कभी भी प्रभावित नहीं होते। हमारा जो भी बल है वह केवल हमारे अहम् की तृप्ति के लिए है। कुछ भी बात हो जाए आप तुरन्त अकड़ जाएंगे। अरे पैसे में क्या रखा है किस काम आएगा। ऐसा किसलिए है, समझता क्या है अपने को, छठी का दूध याद दिला दूँगा। अरे भई यह मत सोचो कि पैसा किस काम आएगा। विचार करो पैसा किस काम आ रहा है? पैसा किसी को रुला रहा है या हमारा पैसा किसी रोते हुए को हँसा रहा है। पैसा किसी को गिरा रहा है या गिरे हुए को सहारा देकर उठा रहा है। हमारा पैसा किसी के प्राणों का हरण करने जा रहा है या किसी के प्राणों की रक्षा करने जा रहा है। हमारा पैसा किसी की रोजी-रोटी छीनने में लगा है या किसी की रोजी-रोटी की व्यवस्था में लगा है। यह मत देखो कि पैसा किस काम आएगा यह देखो कि पैसा किस काम आ रहा है और किस काम आना चाहिए यही विक्रम है। हनुमानजी रावण की अशिष्ट भाषा में भी मौन यानि एक बार तो रावण ने यहाँ तक कह दिया कि

अरे मूर्ख तेरी मृत्यु निकट आई देख तो सही तेरे बराबर में कौन खड़ा है। तो हनुमानजी ने मुड़कर देखा, बोले तुझे इससे डर नहीं लग रहा है कि मौत तेरे पास खड़ी है। बोले डर तो नहीं लग रहा है बोले क्यों? तो फिर हनुमानजी ने कहा खड़ी तो मेरे पास है पर देख तुझे रही है, इसलिए मुझे डर नहीं लग रहा है। पूछा तेरे पास आकर क्यों खड़ी है, मेरे पास क्यों नहीं आयी? तो बोले पूछने आयी है कि रावण का अभी काम करना है या कुछ दिन बाद करना है। थोड़ी बहुत हनुमानजी मजाक करते थे अन्यथा हनुमानजी तो मौन ही रहते हैं। हमारे संतों का कहना है कि–

मूरख कामुक बाँबिया, निकसत बचन भुजंग।
ताकी औषधि मौन है, विष नहिं व्यापत अंग।।

अगर सामने वाला अशिष्ट है तो आप मौन हो जाइए। अगर एक गाली देगा तो सैकड़ों की संख्या में वापस आएंगी और अगर मौन हो गए तो एक की एक ही रहती है। हनुमानजी शांत मौन खड़े हैं, उत्तेजित नहीं होते हैं। मैंने सुना है बड़ी उपहास की कथा है। सही या गलत मुझे नहीं पता लेकिन मैंने सुनी है।

एक बार अकबर ने बीरबल से कहा कि बीरबल हम तुम्हारे पिताजी से मिलना चाहते हैं। हम देखना चाहते हैं कि जिन्होंने इतने योग्य पुरुष को जन्म दिया है वह पिता कैसे होंगे। हम उनकी भी योग्यता देखना चाहते हैं। बीरबल ने कहा वह गांव के बूढ़े व्यक्ति; वह कहां राजदरबार में आएंगे? रहने दीजिए। अकबर बोले, नहीं, हम तुम्हारे पिता जी से मिलना चाहते हैं और देखना चाहते हैं कि जिससे तुम्हारी प्रखर बुद्धि है हम उनकी भी परीक्षा लेना चाहते हैं। अब यह बड़ा मुश्किल हो गया बीरबल को। मालूम है कि वह बिल्कुल गाँव के हैं उनको कुछ आता जाता नहीं और राजा जिद कर रहा है। अगर पिता जी उनका उत्तर दे न पाए तो बादशाह पिताजी का अपमान करेंगे जो मैं सह नहीं सकता। न ही राजा से बिगाड़ सकता हूँ। तो क्या करूं?

बीरबल घर आए और पिताजी से कहा कि पिता जी एक धर्म संकट आ गया है। बोले कल आपको राजदरबार चलना है और सम्राट आपकी योग्यता की परीक्षा लेंगे। वह कितने भी प्रश्न आपसे पूछें बस इतना करना कि आप मौन रहना, बाकी मैं सम्भाल लूंगा। पिता जी को समझा-बुझाकर दरबार में ले आये। दरबार लगा और बादशाह का आगमन हुआ। पिताजी को बादशाह ने प्रणाम किया और कहा कि आपने जैसे योग्य पुत्र को जन्म दिया है। हमारी इच्छा थी कि आपका दर्शन करें, आपकी योग्यता का भी दर्शन करें। तो अकबर ने बीरबल के पिताजी से प्रश्न पूछना प्रारम्भ किया। बीरबल ने पिताजी को देखकर इशारा कर दिया मौन, तो बीरबल के पिताजी कुछ बोले नहीं। दूसरा प्रश्न किया फिर मौन, तीसरा प्रश्न किया फिर मौन। अब भरी सभा में बादशाह का उत्तर न दे, न सिर हिलाए, बिल्कुल जड़वत् से बैठे हैं तो बादशाह का अहंकार जाग गया कि मैं बोल रहा हूँ मगर यह बूढ़ा मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे रहा है। अकबर बोला, बीरबल एक बात बताओ, अगर किसी मूर्ख से पाला पड़ जाए तो क्या करना चाहिए? यह अकबर ने बीरबल से प्रश्न किया उनके पिताजी के लिए। बीरबल ने कहा सरकार उस समय मौन ही रहना चाहिए और कुछ नहीं। बीरबल के पिता को मूर्ख बोल रहा है। मौन ही होना चाहिए तो। जो किसी प्रकार से उत्तेजित न हो वही विक्रम है, वही बजरंगी है। बजरंग के दो अर्थ हैं एक तो श्री हनुमानजी का हर अंग बज्र जैसा है। पूरी सेना में हनुमान जी ही एक ऐसे थे जिनको कोई परास्त नहीं कर पाया और ना ही कोई अस्त्र प्रहार नहीं कर पाया। सभी मूर्छित हुए भगवान् तक मूर्छित हो गए। मेघनाथ के नागपास ने भगवान् तक को बांध लिया लेकिन हनुमानजी को नहीं। और जो बन्धन आया है अशोक वाटिका में वह हनुमानजी की इच्छा से आया है क्योंकि बँधकर ही वह जाना चाहते हैं और हनुमानजी यह जगत को दिखाना चाहते थे कि कितना ही बड़ा प्रकृति या परिस्थिति का बंधन आ जाए, भगवान् की कृपा का हमेशा भरोसा करो क्योंकि वह एक दिन पहले भगवान् की कृपा का दर्शन कर चुके थे। जिस समय अशोक वाटिका में जानकीजी के फटकारने के लिए रावण ने अपनी तलवार निकाली उसी

समय मन्दोदरी ने हाथ पकड़ लिया, खबरदार। तभी हनुमानजी समझ गए थे कि भगवान् की लीला, जब राम बचाए तो मारे कौन और जब भगवान् मारे तो बचाए कौन। तभी हनुमानजी समझ गए कि मन्दोदरी के रूप में राम ने आकर रावण की तलवार को रोका है वरना वह तलवार से मार सकता था। हनुमानजी को लगा कि कितना भी बड़ा बंधन हो अगर हनुमानजी को मुक्त करना हो तो वह कर देंगे और आज की भरी सभा में रावण ने आदेश कर दिया कि इस वानर को मार डालो और जैसे ही राक्षस तलवार लेकर दौड़े तो उसी समय विभीषण का आगमन हो गया नहीं सरकार! नीति कहती है कि **नीति बिरोध न मारिए दूता!** नीति कहती है कि दूत को मारना नहीं चाहिए, भरी सभा में काल के सामने विभीषण के रूप में भगवान् की कृपा हमारी रक्षा के लिए आती है चूंकि हम भगवान् का भजन नहीं करते इसलिए हमें भगवान् की कृपा की अनुभूति नहीं हो पाती है। हर कदम पर **तू जहाँ-जहाँ चलेगा मेरा साया साथ होगा, गीत कहाँ गाया गया? मुझे मालूम नहीं लेकिन यह** अच्छा लगता है गा लीजिए- **तू जहाँ-जहाँ चलेगा, मेरा साया साथ होगा॥** तो भगवान् की कृपा को कभी बिसारिए मत। संसार पर भी भरोसा मत करिए श्रीभरत जी बोले **मोहे रघुवीर भरोस।** हनुमानजी अगर बंधन में भी बँधे हैं तो जगत् को समझाने के लिए बधें हैं कि कितना भी भयानक बंधन क्यों न हो काल भी शीश पर आकर क्यों न खड़ा हो तो काल के दरबार में भगवान् विभीषण रूप में खड़े हो सकते हैं, **नीति विरोध ना मारिय दूता।** ऐसे श्रीहनुमानजी महावीर विक्रम बजरंगी हनुमानजी से कौन युद्ध कर सकता है, सब बचकर भागते हैं। एक बार रावण ने चतुरंगिनी सेना भेजी और भगवान बड़े चिन्तित हो गए कि इनसे कौन मुकाबला करे तो हनुमानजी ने कहा क्यों चिंता करते हैं, और कोई नहीं चतुरंगिनी सेना से लड़ने के लिए सेवक हनुमान हैं न। हनुमानजी के हाथ में कोई शस्त्र नहीं है, कोई गदा नहीं है, गदा भी जाने कहाँ छिपी थी। सामान्य काल में हनुमानजी के हाथों में गदा दिखाई देती है लेकिन युद्ध में आप कहीं गदा का वर्णन नहीं सुनेंगे। तो हनुमानजी चतुरंगिनी सेना से भिड़ गए और भगवान् इस तमाशे को लक्ष्मण के

साथ खड़े-खड़े देख रहे थे। हाथियों से हाथी मारे, घोड़े से घोड़े संघारे। करें क्या हनुमानजी बोले हाथियों पर हाथियों को पटक दें और घोड़ों को घोड़ों पर पटक दें, रथों को रथों पर पटक दें। सामने वाले को वैसे पछाड़े और पीछे थे उनको पूँछ में लपेट-लपेट कर पटक रहे थे। सीधे लंका में फेंक देते थे। बार-बार इस लड़ाई को देख रहे हैं और कह रहे हैं कि लखन देखो लड़ाई, हनुमान् की युद्ध की कला देखो। हनुमानजी क्या सुन्दर लड़ रहे है। तो जब पूरी चतुरंगिनी सेना मारी गयी तो सायंकाल के समय रावण रोजाना पत्रकारों से वार्ता करता था। आज के क्या समाचार हैं तो रावण का जो प्रवक्ता था बोले- आज तो तहस-नहस करके आया चतुरंगिनी सेना, पत्रकार सब चेहरा लटकाये बैठे। उन्होंने कहा क्या समाचार है तो उन्होंने कहा कि समाचार गम्भीर है। क्या गम्भीर है, बोले सब मारे गए, अच्छा सब वानर मारे गए। उन्होंने कहा वानर नहीं मारे गए आपकी पूरी सेना मारी गई। बोले पूरी सेना, बोले हाथियों से हाथी मार डाले, घोड़ों से घोड़े मार डाले, रथियों से रथी मार डाले बोले और जो शेष बचे थे उन्हें वानर ने पूँछ में बाँध कर फेंक कर मार डाले। रावण हनुमानजी की पूँछ से बहुत चिढ़ता था। लंका में जब हनुमानजी जानकीजी के पास आए थे तब रावण को हनुमानजी की पूंछ ने बहुत परेशान किया था। रावण खरांटे लेकर सो रहा था, मुंह फाड़ कर सो रहा था तब हनुमानजी ने अपनी पूँछ को इस की नाक में घुसाया था। इस तरह रावण दे छींक, दे छींक रावण फिर खर्राटे ले तो फिर हनुमानजी नाक में पूँछ घुसा दें। सोते-सोते भी रावण बड़बड़ाता था अरे इस वानर की पूँछ को पकड़ो, अरे इस वानर की पूंछ को पकड़ो, सारी लंका में पूँछ ही पूँछ। रावण को यह लगा कि कैसे इस वानर को मारा जाए तो रावण ने अपनी साठ हजार सैनिकों की अमर सेना जो अमृत पीए हुए थी जो कि मरती नहीं थी बोले इसको भेजो, जाओ और जब अमर सेना को आदेश हुए तो भगवान् भी घबरा गए कि इस सेना को कैसे मारा जाए, यह तो अमर है इनको मारा नहीं जा सकता। जिसको किसी भी प्रकार से भगवान् भी मार न पाए वही तो अमर है। और अमर है ऐसा दुर्गुण जिसे न तो संत सुधार पाए न भगवंत सुधार पाए वही तो अमर है। जो मरने को

ही तैयार नहीं है जो बुराई मरने को भी तैयार नहीं है उसको कौन मारे? भगवान् तो घबरा गए हनुमानजी ने कहा भगवन् चिंता मत करो हम हैं न! भगवान बोले- तुम राक्षसों को मार सकते हो यह तो अमर सेना है। अमर को तो अमर मार सकता है। हनुमानजी ने कहा हम भी अमर हैं चिंता मत करो। तुम अमर कैसे हो। बोले हमको माँ ने आशीर्वाद दिया है।

अजर अमर गुण निधि सुत होऊ। करहिं बहुत रघुनायक छोहू।।

हम आज देखते हैं कि ये कैसे नहीं मरते हनुमानजी को तो मालूम है कि इनको कितना ही मारो कुछ भी करो ये मरते तो हैं नहीं तब क्या करें? हनुमानजी ने कहा ऐसी बुराई जो मिटने को तैयार नहीं, मरने को तैयार नहीं, बदलने को तैयार नही, उसको आँखों से दूर कर दो, उसे दृष्टि से हटा लो। बुराई अगर सही नहीं हो रही है तो उसकी उपेक्षा करो, उसको अपनी दृष्टि से दूर कर दो, उसका चिंतन बंद कर दो, अपने आप मर जाएगी। बुरे लोग जीवित क्यों हैं। हमारे द्वारा बुरे लोगों को जीवन प्रदान हो रहा है। मेरा कथन अन्यथा मत लीजिए और उसके लिए मैं किसी और वजह से कह रहा हूँ कि आज समाज में बुराई कितने बड़े पैमाने पर दिख रही है। सच में बुराई दिखाई नहीं दे रही है बल्कि दिखाई जा रही है अखबार के माध्यम से, चैनलों के माध्यम से। इतना बड़ा देश है जिसमें लगभग एक सौ पच्चीस करोड़ जनता रह रही है। इसमें कुछ न कुछ तो गलत होगा ही, कुछ लोग लड़ेंगे, कुछ अश्लीलता होगी लेकिन खोज-खोज कर, ढूँढ-ढूँढ कर, बीन-बीन कर लाई जा रही है और दिखाई दे रही है। एक चैनल सुबह से वही बुराई चालू करता है। वही नहीं और बताओ क्या हो रहा है? और बताओ कैसा लग रहा है? लोग कैसा कह रहे हैं? तुम्हारे लिए रो रहे हैं। लोग तुम्हारे चैनलों को रो रहे हैं तो बुराई को दिखाइए मत, बुराई को प्रसारित मत करिए, बुराई का प्रदर्शन मत करिए, शुभ का, दर्शन कराइए बुराई को अंधेरे में छुपा दीजिए तो बुराई छुप जाएगी, नष्ट हो जाएगी। बुराई को अगर प्रकट करोगे तो ऐसा लगेगा कि सर्वत्र बुराई ही बुराई है। यह जो अमर सेना है, ऐसी बुराई है जो न मरने को

तैयार है न सुधरने को ही तैयार है। तो हनुमानजी ने सोचा कि इनको आँखों से दूर कर दूँ। लड़ना तो इनसे बेकार है, सुधार की कोई गुंजाईश नहीं है तो जो खेल में परास्त होता है तो दुश्मनी भी नहीं बनती। इनको खेल में मारो, दूर फेंको इनको। हनुमानजी ने अपनी पूँछ बढ़ाई और साठ हजार अमर सेना को अपनी पूँछ में लपेटा और पहले तो घुमाया कसके और जब घुमाते-घुमाते चक्कर आ गया और यह मूर्छित होने लगे तो हनुमानजी ने इतनी जोर से इन्हें ऊपर फैंका कि जो पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति है उसके ऊपर अंतरिक्ष में चले गए। जैसे अंतरिक्ष में यान घूमते रहते हैं। अंतरिक्ष में ऊपर जाओ, हनुमानजी ने कहा, जाओ ऐसे ही चक्कर काटते रहो, वहीं बैठे टीवी देखते रहो, आपस में बात करते रहो, अखबार पढ़ते रहो। मारने की आवश्यकता नहीं पड़ी। आँखों से दूर कर दिया। रावण तो बड़ा प्रसन्न बैठा कॉफी पी रहा था, हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। सन्ध्या के समय अखबार वाले फिर आ गए। सारे चैनलों के कैमरे सेट हो गए। रावण आया काफी का कप हाथ में लेकर, बोले क्या समाचार है? पत्रकार बोले- गए-गए। कौन गए? बोले सब गए। बोले क्या सेना सारी लौट गयी, लंका से तपस्वी सारे लौट गऐ? बोले नहीं तपस्वी वानर तो सब जमे हुए हैं फिर कौन गया? बोले आपकी अमर सेना गयी। बोले कि क्या मर गयी? बोले, नहीं अमर सेना मर नहीं सकती, लंका छोड़कर गयी और केवल लंका छोड़कर नहीं, धरती छोड़कर आकाश को चली गयी, हमने तो जो देखा था। हमको तो पता नहीं, कहाँ गयी। हमको तो मालूम ही नहीं है, धरती की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के ऊपर चले गए हैं। कैसे गए? बोले पूँछ में लपेट कर। अरे क्या बकते हैं? बार-बार पूँछ, काटो पूँछ। सरकार पूँछ कैसे कटेगी? जिस पूँछ को आप नहीं जला पाए तो चैनल वाले कैसे काट सकते हैं। यह तो पूँछ बढ़ती है, जितनी पूँछ हम काटेंगे उतनी ही बढ़ेगी। उस वानर की विशेषता ही यह है, तब रावण ने सोचा पहले पूँछ का ही सत्यानाश किया जाए। पहले इस पूँछ को ही हटाओ। रावण ने अपनी जासूसी से पता लगवाया कि वानर कभी अकेले में भी रहता है क्या? तो पता लगा कि संध्या समय समुद्र के किनारे संध्या वन्दन करते देखा जाता है। देखो इस देश के

वानर युद्ध के समय भी सन्ध्या करते थे, मगर आज का ब्राह्मण भी संध्या नहीं करता। कैसी विचित्र बात है कि वानर सन्ध्या करता है, युद्ध के समय करता है। हम घर में भी नहीं करते। तो रावण ने सुना सन्ध्या के समय समुद्र के किनारे सन्ध्या कर रहा है तो धीरे से रावण आया चोरी से, रावण को चोरी करने की बड़ी आदत है, बहुत बड़ा चोर है। छुपके-छुपके चला आ रहा है। हनुमानजी ध्यान में ही बैठे थे। इसने आते ही हनुमानजी की पूँछ पकड़ ली। इसको पूँछ से तो चिढ़ थी ही पूँछ को झटका मारता है। कई बार तो गिर पड़ा। जरा सी पूँछ खींची तो धम्म से गिरा तो हनुमानजी इधर-उधर देखें तो इधर-उधर हो जाता, सामने नहीं आता। बार-बार हनुमानजी की पूँछ खींचता है परन्तु पूँछ उखड़ नहीं पा रही है। बहुत देर हो गई, रावण न सामने आने को तैयार, न पूँछ छोड़ने को तैयार है तो हनुमानजी ने जय श्रीराम बोला और हनुमानजी ने आकाश की और उछाल मार दी। अब हनुमानजी आकाश में उड़े जा रहे हैं। पूँछ रावण के हाथ, रावण डर के मारे बोला, भोलेनाथ, हे शंकर भगवान्, रक्षा करो। अभी तक रावण हनुमानजी की पूँछ उखाड़ता था पर अब डर रहा है कि कहीं पूँछ न उखड़ जाए। हे भगवान् कहीं पूँछ उखड़ी और मैं धम्म से नीचे गिर जाऊं। जो रावण अब तक पूँछ उखाड़ने की कोशिश कर रहा था, अब कह रहा है कि हे भगवान्, इस पूँछ से बचाओ पूँछ मत उखाड़ो। पूँछ की रक्षा करो, पूँछ की रक्षा करो। गोस्वामीजी ने बहुत सुन्दर वर्णन किया है-

गहिसि पूँछ कपि सहित उड़ाना। पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना।।

जैसे ही रावण ने पूँछ पकड़ी हनुमानजी ने उड़ान भर दी फिर आकाश में हनुमानजी ने जो धुनाई की है। धीरे से रावण ने कहा काहे को मारे डाल रहा है। छोड़ मुझे छोड़। तब हनुमानजी ने रावण को लंका में फेंका है। ऐसे हैं श्रीहनुमानजी। आगे की चौपाई-

महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी।

श्रीहनुमानजी केवल महावीर बजरंगी ही नहीं हैं। अपितु कुमति निवार सुमति के संगी भी हैं। श्रीहनुमानजी दुर्बुद्धि को दूर करते हैं। दुर्बुद्धि हटाते हैं, सुबुद्धि देते हैं। हनुमानजी सद्बुद्धि देते हैं क्योंकि हनुमानजी **ज्ञानिनाम्ऽग्रगण्यम् अतुलितबलधामम्** हैं। वेद में गायत्री को ही महामंत्र की संज्ञा दी। क्यों? क्योंकि पूरे के पूरे गायत्री मंत्र में सूर्य की उपासना है। सूर्य ज्ञान का प्रतीक है, प्रकाश का प्रतीक है। **तमसो मा ज्योतिर्गमय।** चूंकि पूरे के पूरे गायत्री मंत्र में शुद्ध बुद्धि की माँग की गयी है। **"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्"** हे सूर्य नारायण, हे सविता, हमको शुद्ध बुद्धि प्रदान करो। हमें बुद्धि निर्मल चाहिए। भगवान बोलते है-

निर्मल मन जन सो मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।

भगवान् कहते हैं मुझे निर्मल बुद्धि चाहिए और निर्मल बुद्धि गायत्री माँ के द्वारा ही मिल सकती है। वेद भगवान् सूर्य नारायण धियो यो नःप्रचोदयात। देखिए भगवान् क्या कह रहे हैं। मुझे क्या पसंद नहीं है। **मोहि कपट छलछिद्र न भावा।** कपट, छल और छिद्र यह तीनों भगवान् को भाते नहीं हैं। ये तीनों भगवान् को पसन्द आते नहीं हैं। दुर्बुद्धि ही छल कराती है। बुद्धि ही कपट कराती है, बुद्धि ही अनेक प्रकार के विकारों के छिद्र करती है। यह तीनों ही बुद्धि के दोष हैं। छिद्र माने दोष, जब तक बुद्धि ही शुद्ध नहीं होगी तब तक मन शुद्ध नहीं होगा और जब तक मन शुद्ध नहीं होगा तब तक जीवन की क्रिया शुद्ध नहीं होगी। आचरण शुद्ध नहीं होगा और आचरण शुद्ध नहीं होगा तो सुमिरन भी शुद्ध नहीं होगा। यह पूरी की पूरी ही जीवन यात्रा है इसलिए मन की शान्ति की माँग मत करो, मन की शुद्धि की माँग करो। मन शुद्ध चाहिए। हमने माँ से भी निर्मल बुद्धि की ही प्रार्थना है- भक्ति महारानी ही बुद्धि शुद्ध करती हैं।

जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की।।

ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपा निरमल मति पावउँ॥

बुद्धि निर्मल होती है भगवान् की भक्ति से, भगवान् के भजन से। और भगवान् का भजन क्या है केवल माला जप लेना कुछ पाठ कर लेना यह भजन नहीं है यह तो भजन में प्रवेश करने के साधन हैं। भजन कहते हैं सेवा को, सेवा कहते हैं भगवान् में डूब जाने को। भगवान् को प्रसन्न रखने की क्रिया का नाम ही सेवा है। उन्हीं को उठाना, उन्हीं को बिठाना, उन्हीं के गीत गाना, उन्हीं को रिझाना, यह भगवान की सेवा है, भजन सेवा है। सेवा से बुद्धि शुद्ध होती है, बुद्धि निर्मल होती है और निर्मल बुद्धि ही भगवान् को भाती है। **मोहि कपट छल छिद्र न भावा॥** देखो कुमति-सुमति सबके अंदर रहती है। गोस्वामीजी ने लिखा है-

सुमति-कुमति सब कें उर रहहीं। नाथ पुरान निगम अस कहहीं॥
जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना। जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना॥

यह तो हर जीवों के अन्दर है। मैं हमेशा बोलता आया हूँ कि जितने दुर्गुण किसी दुष्ट में होते हैं, उतने ही दुर्गुण किसी शिष्ट में भी होते हैं। और जितने सद्गुण किसी शिष्ट में होते हैं, उतने ही सद्गुण किसी दुष्ट में भी होते हैं। भगवान् के यहाँ से बंटवारे में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है। जितना साधु को देता है उतना ही असाधु को भी देता है। अन्तर इतना है साधु सुमति का सदुपयोग करता है। असाधु कुमति का उपयोग करता है। बस अंतर इतना ही है कि साधु ने सुमति का कमरा खोला हुआ है और असाधु ने कुमति का कमरा खोल रखा है। साधु सुमति के कमरे को खोल रखता है और चाभी यमुनाजी में फेंक देता है और असाधु सुमति के कमरे का ताला बंद कर चाबी लगा कर फेंक देता है और कुमति का कमरा सदैव खुला रखता है। देखिए अब विभीषण का दर्शन करिए। विभीषण सामान्य जीव नहीं है, धर्मात्मा, धर्मरुचि कहा गया है, **नाम धर्म रुचि सुक्र समाना।** विभीषण के महल में भगवान् का एक अलग से मन्दिर बना हुआ था जिसमें

श्रीराम के धनुषबाण के चिन्ह अंकित थे और उसमें तुलसी का पौधा लगा हुआ था। विभीषण तुलसी महारानी की पूजा करता है। सन्ध्या समय आरती करता है लेकिन तो भी कितने शोक में डूबा है, कितनी निराशा में डूबा है, कुमति ने कितना इसको घेर लिया है। जब हनुमानजी ने पूछा तुम रहते कैसे हो तो देखो कि कितना कुमति में डूबा हुआ है-

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी॥

विभीषणजी इतने बड़े भक्त होने के बाद भी निराशा और हताशा में डूबे हुए हैं। उनको ऐसा लगता ही नहीं है कि कभी प्रभु की कृपा उनके ऊपर भी होगी। हनुमानजी ने कहा अरे भाई भगवान् जी इतने सरल हैं कि-

कहहु कवन मैं परम कुलीना। कपि चंचल सबही बिधि हीना॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा। तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा॥

हनुमानजी ने कहा देखो हम तो वानर हैं। **कपि चंचल सबही विधि हीना।** अरे, हमारा जन्म कौन कुलीन परिवार में हुआ। पशुयोनि में हमारा जन्म है। अरे कीन्ही कृपा, हमारे ऊपर भी प्रभु की कृपा होती है तो आपके ऊपर क्यों नहीं हो सकती है। भगवान् के स्वभाव का स्मरण कर श्री हनुमान जी बोले-

अस मैं अधम सखा सुनु मोहू पर रघुबीर।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर॥

हनुमानजी के आँसू आ गए। प्रभु इतने दयालु हैं और पूरा भगवान् के स्वभाव का भरोसा प्रकट कर दिया सुनते ही विभीषण भी भरोसे की बात करने लगे हैं। बोले- अब मुझे भी भरोसा हो रहा है।

अब मोहि भा भरोस हनुमंता। बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता॥

विशाद में डूबे हुए विभीषण को भरोसा दिला दिया-

कुमति निवार सुमति के संगी।।

भ्रम के वशीभूत मोह के जाल में जो विभीषण फंसे थे, हनुमान् जी की बातें सुनकर भगवान् की ओर जाने लगे। भले ही लात खानी पड़ी। लात तो इसलिए खानी पड़ी चूंकि विभीषण ने हनुमानजी की बात को इकदम नहीं माना। और जो संत की बात नहीं मानेगा उसको तो संसार की लात खानी ही पड़ेगी। लेकिन रावण की लात भी विभीषण को भगवान् के चरणों तक ले आयी क्योंकि हनुमानजी की बात याद रही। ऐसे ही सुग्रीव था। बाली का वध करके भगवान् ने सुग्रीव का राजतिलक करवा दिया और भगवान् ने कहा कि सुग्रीव जाओ- **अंगद सहित करेउ पुर राजू। संतन हृदय धरेउ मम काजू।** राज्य का पालन करना, संचालन करना लेकिन हृदय में मेरे काम का सुमिरन रखना, मेरे कार्य को भूल नहीं जाना लेकिन जीव का ऐसा स्वभाव होता है जब तक जीव पर संकट रहता है तब तक भगवान् का सुमिरन करता है। संकट टलते ही सबसे पहले अगर किसी को बिसारता है तो भगवान् को बिसारता है। जब तक दु:ख नहीं आता है। संकट आया तो मन्दिरों में भीड़ आएगी लेकिन आनन्द के दिनों में सब टीबी पर बैठते हैं। सुग्रीव का भी यही हाल है, चार मास वर्षाकाल बीत गया। भगवान् ने आकाश की ओर देखकर कहा लखन देखो तो सही-

वरषा गत निर्मल रितु आई। सुधि न तात सीता कै पाई।।
सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी। पावा राज कोसपुर नारी।।
जेहिं सायक मारा मैं बाली। तेहिं सर हतौं मूढ़ कहँ काली।।

भगवान् बहुत भाव में बोले वर्षा ऋतु चली गयी, शरद ऋतु का आगमन हो गया। लखन अभी सीता की कोई सुधि नहीं। देखो तो भैया! सुग्रीव को राज मिल गया, पत्नी मिल गयी, सब कुछ मिल गया **राज्य,**

खजाना, नगर और नारी इसलिए हमारे कार्य को ही भूल गया। भगवान् थोड़े रोष में भी आए। भगवान् ने कहा कि अगर कल तक यह नहीं सुधरा तो इसको कल मार डालेंगे। लक्ष्मणजी ने कहा महाराज कल कभी नहीं आता। राजतिलक भी पिताजी ने कल के लिए घोषित किया था मगर कर नहीं पाए। कल किसी का आता नहीं। जो करना है अभी करो। ऐसा करो प्रभु बड़े भाई का काम आपने किया था। बहुत दिनों से खाली बैठा हूँ छोटे की जिम्मेदारी मुझे दे दीजिए। भगवान् ने कहा, नहीं लखन! हमने मित्र बनाया है, मित्र को मारा नहीं जाता। मित्र को सुधारा जाता है। **भय देखाई ले आवहु, तात सखा सुग्रीव,** जाओ काल का भय दिखाकर उसको मेरी ओर ले आओ। हनुमानजी ने भगवान् के रोष की ओर लक्ष्मण के संकल्प की बात सुनी। हनुमानजी को लगा कि लखनलाल साक्षात् काल है। कहीं उन्नीस-बीस न हो जाए? दूसरे रास्ते से गये देखा सुग्रीव रानियों के बीच ताश खेल रहा था, रानियों के बीच में हनुमानजी ने कहा अरे सुग्रीव! यह क्या हो रहा है?

इहाँ पवन सुत हृदयँ बिचारा। रामकाज सुग्रीवँ बिसारा॥
निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा। चारिहुँ बिधि तेहिं कहि समुझावा॥
सुनि सुग्रीव परम भय माना। बिषय मोर हरि लीन्हेउ ग्याना॥

संत का काम है सोते हुए जीव को जगा देना। चारों विचार साम, दाम, दण्ड, भेद दिखाकर। क्योंकि भगवान् ने कहा था कि **"भय देखाई ले आवहुँ"** क्योंकि हनुमानजी ने कहा सुग्रीव जिस बाण से भगवान् ने बाली को मारा था वह बाण बाद में कहाँ चला गया? बोले वह तो लौटकर तरकश में चला गया था प्रभु के। तो हनुमानजी ने कहा कि तुमको मालूम नहीं है कि तरकश में लौट कर क्यों गया था? बोले मुझे तो नहीं मालूम शायद उसका कोई नियम होगा? बोले नहीं, तरकश में बाण प्रभु ने तुम्हारे सामने इसलिये लौटाया था कि जिस बाण से मैं बाली को मार सकता हूँ गलती करने पर वह तुम्हारे को भी मार सकता है। भविष्य की

रक्षा के लिए भगवान् ने उसको सुरक्षित रखा था और जैसे ही सुग्रीव भयभीत हुआ कहा महाराज मेरे विषयों ने मेरे ज्ञान का हरण कर लिया और श्रीहनुमानजी **ज्ञानिनामग्रगण्यम्, कुमति निवार सुमति के संगी।**

भोग में लिप्त सुग्रीव को हनुमानजी पकड़कर भगवान् के चरणों में ले गए। यह हनुमानजी का काम है। जानकीजी चिता बना कर बैठी हैं, जलने की तैयारी है। श्रीहनुमानजी भगवान् की कृपा का भरोसा दिलाते हैं। माँ रोओ मत, जलो मत, भगवान् की कृपा आने ही वाली है। तो संसारी बुद्धि को ईश्वर में लगा देना इसी का नाम सुमति है। मान व अपमान से ऊपर उठकर भगवान् के कार्य में बुद्धि को लगा देना यही सुमति है और इसलिए हमने वेदों से, शास्त्रों से, सन्तों से, आचार्यों से, ऋषियों से बुद्धि की ही माँग की है कि हमको बुद्धि प्रदान करें। **बुद्धिनाशात् प्रणस्यति:-** बुद्धि अगर बिगड़ती है तो व्यक्ति का नाश होता है। विभीषण बोल चुके हैं रावण की सभा में, **'जहाँ सुमति तह सम्पति नाना, सुमति-कुमति सबके उर रहहीं।'** "हमारे एक बड़े कथावाचक स्वामीराजेश्वरानन्दमहाराज, मैं उनके प्रवचन सुन रहा था उन्होंने बहुत अच्छी व्याख्या की। सुमति और कुमति यह दोनों बहनें हैं लेकिन लोग सुमति को पसन्द करते हैं कुमति को कोई पसन्द नहीं करता। हालांकि जगह कुमति को ही देते हैं लेकिन पसन्द सब सुमति को ही करते हैं। एक बार सुमति व कुमति दोनों ब्रह्मा के पास गईं और कुमति ने ब्रह्मा से शिकायत की। भगवान् आपने ही हम दोनों का निर्माण किया है किन्तु इसको तो सभी पसन्द करते हैं किन्तु मुझे तो कोई पसन्द नहीं करता, क्यों? क्या मैं बुरी लगती हूँ? ब्रह्माजी ने कहा नहीं-नहीं कौन कहता है कि तुम बुरी लगती हो?" तो हमको कोई क्यों नही चाहता है? मैं जहाँ जाती हूँ वहीं फटकार मिलती है। क्या दोष है हमारे में? ब्रह्माजी ने कहा मुझे तो कोई दोष नहीं दिखाई पड़ रहा है। अरे अगर कोई दोष नहीं तो मुझे फटकार क्यों मिलती है? ब्रह्मा जी ने कहा अच्छा ऐसा करो चलकर दिखाओ तब पता चलेगा, सुमति चलकर गयी और आयी ब्रह्माजी ने कहा बहुत अच्छी लगती है बैठो, कुमति से कहा तुम चलकर दिखाओ कुमति

चलकर आई तो ब्रह्माजी ने कहा तुम भी बहुत सुन्दर लगती हो। बोली- कुमति भी अच्छी लगती है, सुमति भी अच्छी लगती है यह कोई न्याय हुआ? निर्णय दीजिए अच्छी कौन लगती है? ब्रह्मा जी ने कहा कि तुम दोना ही अच्छी लगती हो किन्तु सुमति तुम आती हुई अच्छी लगती हो और कुमति तुम जाती हुई अच्छी लगती हो। तुम अगर चली जाओ तो बहुत अच्छी लगती हो। उत्तानपाद नाम के एक बड़े श्रेष्ठ राजा हुए हमारे देश में जिनके घर में ध्रुवजी का अवतार हुआ। दो रानियां उत्तानपाद का मतलब दोनों पैर ऊपर की ओर बुद्धि गड्ढे की ओर पैर ऊपर की ओर। भोग में डूबी हुई बुद्धि उत्तानपाद ही है हमारी बड़ी बुद्धि खोपड़ी के नीचे की ओर है और हर उत्तानपाद की दो पत्नियाँ हुआ करती हैं सुनीति और सुरुचि। सुरुचि माने भोग, वासना, वैभव, पदार्थ, सुरुचि को राजा बहुत प्रेम करते हैं। राजभवन में राज करती थी। सुरुचि को कौन पसन्द नहीं करेगा। अपनी कोठी, बंगले, भोग, वासना, ऐश्वर्य, वैभव किसे प्रिय नहीं होगी। सुनीति माने नीति, नीति माने धर्म, नीति यानि सत्य, सुनीति यानि समर्पण, त्याग, वैराग्य। आपने सुना है कि सुनीति को जंगल में निवास करना पड़ा था। फूस की झोपड़ी में सवा सेर जौ में गुजारा करना पड़ता था। भैया! नीति, धर्म और सत्य को तो झोपड़ी में ही निवास करना पड़ेगा और सवा सेर जौ में ही गुजारा करना पड़ेगा। सुरुचि के गर्भ से उत्तम पैदा हुए। एक बेटे का जन्म हुआ नाम रखा गया उत्तम और सुनीति के गर्भ से ध्रुवजी का आगमन हुआ और यह भी सत्य है कि सुरुचि भोग है, वासना है। वासना के भोग के गर्भ से उत्तम का ही जन्म होगा। उत्तम का सन्धि-विच्छेद कीजिए। उत् यानि गहन, तम माने अन्धकार, भोग और वासना से तो गहन अंधकार ही आयेगा। नीति के गर्भ से, सत्य के गर्भ से, मर्यादा के गर्भ से तो ध्रुव का अवतार होगा और ये दोनों निवास करती हैं। सुमति भी जीवन में है और कुमति भी जीवन में हैं। दोनों ही जीवन में हैं हम किसका स्वागत करें? इसलिए सुमति बनी रहे इसके लिए हनुमानजी का सुमिरन करें। कुमति से सब कोई दूर रहें।

हनुमानजी से कहा आप बताइए सुमति किसे कहते हैं। हनुमानजी ने कहा मेरी परिभाषा तो और दूसरी है। क्या है, हनुमानजी ने कहा ऐसी मति, मति माने बुद्धि जो हमेशा सुमिरन में लगी रहे उसको सुमति कहते हैं और जिसकी बुद्धि हमेशा सुमिरन में लगी रहे मैं उसके साथ हमेशा रहता हूँ। इसलिए हनुमानजी बड़े सरल हैं। आप जब भी हनुमानजी को बुलाइए वह तुरन्त आएंगे। क्योंकि वह सुमति के संगी हैं। **कुमति निवार सुमति के संगी** कभी भी कीर्तन हो घर में हनुमानजी को बुलाइए। निश्चित ही वह आकर बैठ जाएंगे। हमारे लोग गाते हैं-

कीर्तन की है रात, बाबा आज थानैं आणों है॥
थानैं कौल निभाणों है॥ कीर्तन की है रात....
दरबार यो थारो, ऐसो सजो प्यारो, थे कृपा आज करो॥
भगतां ने दरस दिखा, हृदय में प्रेम जगा, चरणां को दास करो॥
सेवा में थारी, बाबा आज बिछ जाणों है॥
थानें कौल निभाणों है। कीर्तन की है रात॥
कीर्तन की है मन में, अब मेहर करो बाबा-थे, क्यूँ अब देर करो।
वादो थारो बाबा, कीर्तन में आणे को, कृपा अब ढेर करो॥
भजना सू थानै, बाबा आज रिझाणौ है।
थानैं कौल निभाणों है॥ कीर्तन की है रात....
जो कुछ बण्यो म्हास्यूँ, अर्पण प्रभु थाणें, प्रभु जी स्वीकार करो।
नादान स्यूं गलती-होती ही आई है-प्रभु मत ध्यान धरो॥
भगतां स्यूं नातो, बाबा बोहत पुराणों है।

थाने कौल निभाणों है,
कीर्तन की है रात, बाबा आज थानैं आणों है॥

सुमति जिनकी मति सदा सुमिरन में लगी रहे। **सदा राम नाम ही जपे और करे राम को ध्यान, तिनकी रक्षा करत नित गदा धरे हनुमान्।**

श्रीहनुमानजी सुमति के रक्षक हैं उसका सदैव साथ देते है। **कुमति निवार सुमति के संगी।** कुमति कहते किसे हैं, कुमति की पहचान क्या है? गौस्वामी जी ने मानस में कुमति की पहचान बताई है-

तब उर कुमति बसी बिपरीता। हित अनहित मानहु रिपु प्रीता॥

यह कुमति का संकेत है जब शत्रु हमको मित्र और मित्र हमको शत्रु लगने लगता है। तब समझना चाहिए कि भीतर कुमति आ चुकी है। हित करने वाले हमको विरोधी लगने लगते हैं और विरोध करने वाले हमको हितैशी दिखाई देते हैं, तब हमें समझना चाहिए कि कुमति आ चुकी है। जब भगवान् के स्वरुप में बुद्धि संदेह करने लगती है और सद्गुरु के उपदेश में भी हमें कुतर्क दिखने लगता है तब समझना चाहिए कुमति आने लग गई है। यह कुमति केवल किसी सामान्य के भीतर ही नहीं आयी है। सती माता के भी भीतर आ चुकी है। आपने प्रसंग सुना होगा कि कुम्भज ऋषि के आश्रम से भगवान् शिव और माता सती दोनों कथा सुन कर लौट रहे थे। दण्डकारण्य में शिव प्रभु राम का रोते हुए का दर्शन करते हैं। भगवान् को शंकरजी ने दूर से प्रणाम कर दिया और कहा **जय "सच्चिदानन्द जगपावन"** सती को संदेह हो गया है। भगवान् के स्वरूप में संदेह यह कुमति है। पूछा आपने किसको प्रणाम किया, शंकर जी ने सती से कहा कि आपने प्रणाम नहीं किया क्या? बोली नहीं, मैंने तो नहीं किया। शिव बोले- प्रणाम करो न। सती ने कहा मैं ऐसे-वैसे को प्रणाम नहीं करती हूँ। कि चाहे जिसको प्रणाम कर लूँ। शंकरजी ने कहा देवी जो चाहे जो यह नहीं है। साक्षात् ब्रह्म

हैं, अनन्त कोटि ब्रहमाण्ड के नायक हैं। चराचर जगत के स्वामी हैं। पराब्रह्म परब्रह्म भगवान् श्रीराम हैं। इस समय मानवरूप में लीला कर रहे हैं। प्रणाम करो इन्हें, सती ने कहा आपकी तो मति मारी गयी है। देखो यह तो कुमति है जो सुमति को कह रही है। तेरी तो मति मारी गयी है। क्यों मति कैसे मारी गयी? सती ने कहा ब्रह्म तो व्यापक होता है और व्यापक को तो कभी वियोग नहीं होता है। अगर यें ब्रह्म है तो इनको मालूम नहीं है कि इनकी धर्मपत्नी को कौन चुरा कर ले गया? एक कामी पुरुष की तरह रुदन कर रहे हैं। शंकरजी ने कहा यह लीला तो एक पार्ट है। इस समय प्रभु लीला में हैं इसलिए लीलाधारी को प्रणाम करो, बोली, नहीं मैं नहीं करूँगी। बोली, मैं पढ़े लिखे बाप की बेटी हूँ चाहे जिस किसी को प्रणाम नहीं करती। बन्धुओं इसी को कुमति कहते हैं। जो न भगवान् को प्रणाम करे और जो न बड़ों को प्रणाम करे उसको कुमति कहते हैं। गुरुदेव के वचनों में भी जो सन्देह करे तो समझना चाहिए कुमति आ गयी। शंकर जी केवल पति ही नही है अपितु शंकर जी ईश्वर भी हैं और सद्गुरु भी हैं। सद्गुरु समझा रहा है लेकिन सती मानने को तैयार नहीं है। इसलिए गोस्वामी जी को कहना पड़ा कि

गुरु के बचन प्रतीति न जेही। सपनेहुँ सुगम न सुख सिद्धि तेही॥

जिसको गुरुदेव के वचनों के प्रति प्रतीति नही, भरोसा नहीं। जाग्रत की तो बात ही छोड़ दीजिए। स्वप्न में भी उनको सुख और सिद्धि की प्राप्ति नहीं हो सकती और इसके विपरीत -

जेहि गुरु चरन रेणुसिर धरहीं। ते जनु सकल बिभव बस करहीं॥

यह गुरु कृपा की महिमा है जिनको गुरुदेव के चरणों में भरोसा है वे सारे वैभव के मालिक बनते हैं। सारे वैभव उसके वशीभूत होकर आ जाते हैं। गुरुदेव के चरणों की रज को अपने सिर पर धारण करना यह इसका अर्थ है किन्तु मुझे तो यह अर्थ सही नहीं लगता क्योंकि रावण ने तो सिर्फ चरणों की रज को ही नहीं

बल्कि सारे गुरुजी को आश्रम सहित अपने सिर पर उठा लिया था परन्तु रावण का अंत क्या हुआ, सर्वनाश। इसमें अहंकार जैसा हो सकता है। कि थोड़े झुके और चरण रज उठाई और शीश पर रखी। देखने में ठीक लगता है, गुरुभक्ति भी दिखाई देती है लेकिन मैं इसका दूसरा भाव लेता हूँ। गुरुदेव के चरणों की रज को अपने शीश पर धारण करे इस चौपाई का सिर्फ इतना ही अर्थ नहीं है।

जो गुरुदेव के चरणों की रज में अपने शीश को धरते हैं, वैभव उनके वशीभूत होता है। यानि जिनका शीश सदैव गुरुदेव के सम्मुख झुका रहता है, पूर्ण समर्पण में ही सुमति है और जो गुरुदेव के, भगवान के वचनों पर,स्वरुप पर संदेह करते हैं उसको कुमति कहा जाता है लेकिन हमारा स्वभाव है हम संसार पर तो भरोसा करते हैं। आपको कितने लोग मिलेंगे जो कहेंगे कि भगवान कहाँ हैं? किसने देखा है? कौन कहता है? यह सब कपोल कल्पित बातें हैं, ऊपर-ऊपर की बातें हैं किसी के पास कोई प्रमाण नहीं। ईश्वर का प्रमाण नहीं माँगा जाता है बल्कि ईश्वर को प्रणाम किया जाता है। शिव कह रहे हैं कि देवी, ईश्वर है कि नहीं इस बात का प्रमाण मत मांगो। मैं कह रहा हूँ। कुमति इतनी विचित्र है कि विष पर भरोसा कर रही है और विश्वास पर सन्देह कर रही है। भगवान् शिव विश्वास हैं, कुतर्क विष है। विष पर भरोसा है। कुमति कहती है अपनी आँख से तो देखे नहीं और आँखवाले की माने नहीं अपनी तो दो कौड़ी की समझ नहीं और जिसको समझ है उसकी सुने नहीं। सती कहाँ सुन रही है शंकर जी उदाहरण दे रहे हैं कि देवी-

जासु कथा कुम्भज रिषि गाई। भगति जासु मैं मुनिहिं सुनाई॥
सोई मम इष्टदेव रघुबीरा। सेवत जाहि सदा मुनि धीरा॥

भगवान् शिव कितना समझाकर बोल रहे हैं। अरे इन्हीं भगवान श्रीराम की कथा हम कुम्भज ऋषि से सुनकर लौट रहे हैं। उनकी भक्ति का वरदान मैं कुम्भज ऋषि को दे कर आ रहा हूँ और प्रमाण दे दिया भगवान् ने-

मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं।
कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं।।
सोई रामु व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी।
अवतरेउ अपने भगत हित निजतन्त्र नित रघुकुल मनी।।

अरे देवी ऋषि-मुनि, योगी, ध्यानी और सिद्ध-सन्त निरन्तर निर्मल मन से जिनका ध्यान करते है तथा वेद पुराण 'नेति-नेति' कहकर जिनकी कीर्ति गाते है, उन्हीं सर्वव्यापक, समस्त ब्रहमाण्डों के स्वामी, मायापति, नित्य ब्रहमरुप भगवान् श्रीराम ने अपने भक्तों के हित के लिए रघुकुलमणि के रुप में अवतार लिया है । मैं निवेदन कर रहा हूँ कि इनको प्रणाम करो। सती ने कहा आप हमेशा भांग के नशे में रहते हैं। मैं पढ़े-लिखे बाप की बेटी हूँ। मैं बिना ठोक बजाए प्रणाम नहीं कर सकती। क्या करना चाहती हो? बोले पहले यह ब्रह्म हैं या नहीं मैं इनकी परीक्षा करना चाहती हूँ। शंकरजी ने कहा देवी भगवान् परीक्षा से नहीं बल्कि जिज्ञासा से मिलते हैं। वेद कहता है-

अथातो ब्रह्म जिज्ञासा। अथातो भक्ति जिज्ञासा।।

ब्रह्म जिज्ञासा का विषय है, चर्चा का विषय नहीं है, शोध का विषय नहीं है। किसी सद्‌गुरु के चरणों में विनम्र भाव से जिज्ञासा प्रकट करें तब कुछ प्राप्त होगा। यह परीक्षा का विषय नहीं है। बुद्धि परीक्षा लेती है और भक्ति परीक्षा देती है। और जो भगवान तथा अपने गुरु की परीक्षा ले वही कुमति है। कई लोग गुरु की भी परीक्षा लेते हैं कि इनको कुछ आता है या नहीं, कुछ सिद्धि है कि नहीं। आज पति की बात भी पत्नी नहीं मान रही है और ईश्वर की बात भी नहीं मान रही। दुनिया की हर स्त्री अपने पति को बेवकूफ समझती है, ऐसा पूज्य मुरारीबापूजी कहते हैं। हो सकता है कि विनोद व्यंग में कहते हों। उनका अपना अनुभव है

लेकिन देखने में थोड़ा-थोड़ा आता तो है। सबकी बात मानेगी किन्तु पति को वो मूर्ख ही कहेगी। तो जो बुद्धि अभिमान से भरी है वो कुमति है और जो बुद्धि भगवान् से भरी है वो सुमति है। अभिमान से भरी हुई बुद्धि अपवित्र हो जाती है और भगवान् से यदि बुद्धि भर जाए तो वो पवित्र हो जाती है। जो हमको अंधेरे की ओर ले जाए वो कुमति है। मंथरा तो इससे और आगे है वह मंदमती है तथा कैकेयी कुमति है। और परिणाम क्या देती है अगर कुमति आ जाये, सुमति यदि कुमति बन जाए? कैकेयी जब तक सुमति थी तब तक कनक भवन में वास करती थी और जब कैकेयी कुमति हो गयी तो यही कुमति कैकेयी को कनक भवन से निकालकर कोपभवन में छोड़ आयी। सुमति प्रकाश की ओर चलती है- **"तमसो मा ज्योतिर्गमय"**।

कुमति अन्धेरे की ओर, कोप भवन माने जहाँ अंधेरे में ठोकर खानी हो अंधकार। सुमति थी तो श्रृंगारयुक्त थी। कुमति आ गयी तो श्रृंगारमुक्त हो गयी। विधवा हो गयी, सदा-सदा के लिए शरीर के अंगों से श्रृंगार उतर गया। सुमति थी तो जय-जयकार, कुमति आ गयी तो हा-हाकार मच गया। बेटा भी माँ कहने को तैयार नहीं। सुमति वह है जो हमको उत्सव से आनन्द से भर दे। कुमति और सुमति दोनों बाहर से एक लगते हैं।

'मन मैला, 'तन उजला, बगुला जैसा वेश। इससे तो कागा भले भीतर बाहर एक।। मूर्ख हमेशा भगवान् की परीक्षा लेते हैं। दो मूर्ख एक बार भगवान की रचना में दोष ढूंढने निकले देखो। इनमें भगवान् में गुण ढूंढने की इच्छा नहीं हुई यह कुमति है। यह भगवान् में भी दोष ढूंढने लगे। दोष तो प्रभु में होता ही नहीं लेकिन उसमें भी दोष खोज लें। गांव के बाहर निकले तो तरबूज की बेल देखी। बड़े-बड़े पांच से दस किलो के तरबूज। मूर्ख ने कहा देखो यह भगवान् की मती मारी गयी है। ऐसी पतली-पतली बेल, इस पर दस से पन्द्रह किलो के भारी तरबूज लटका दिए हैं। अरे जैसी कोमल बेल है छोटे-छोटे फल लगने चाहिए थे। भगवान् को अकल ही नहीं। मिलेंगे तो समझाऊंगा। थोड़े और आगे बढ़े, एक देसी आम का पेड़ था। अचार वाले

छोटे-छोटे हरे-हरे आम। गर्मी थी तो छाया के नीचे लेट गए झपकी लग गयी। उधर एक हवा का झोंका आया और कच्चा आम गिरा और सीधे नाक पर आ गिरा तो नाक की हड्डी बोली चट्ट। एकदम चीखकर बोले क्या हुआ, बोले हो गया फैंसला। क्या फैंसला, बोले हम ही पागल हैं। भगवान् ने जो कुछ भी किया है ठीक ही किया। अगर इतने बड़े आम के पेड़ पर तरबूज लगा दिया होता तो सीधे मरघट ही जाना पड़ता। तो जो भगवान् में दोष ढूंढ ले उसको कुमति कहते हैं। जिसको सर्वत्र भगवान् दिखाई दे उसे सुमति कहते हैं और जो भीतर रहता है वही बाहर दिखाई देता है। श्री हनुमानजी के हृदय में राम हैं तो सर्वत्र राम ही राम दिखाई देते हैं। चन्द्रमा के प्रसंग में जब प्रभु ने यह पूछा था कि चन्द्रमा में कालिख क्यों है तो सबने अपने-अपने हिसाब से उत्तर दिया। किसी ने कहा कि रति का सारा भात निचोड़ दिया गया, किसी ने कहा कि अमृत निचोड़ दिया गया है, किसी ने कहा कि गुरु का कलंक लगा है। किसी ने कुछ, किसी ने कुछ, हनुमान जी से पूछा तो हनुमान जी ने कहा प्रभु कोई बड़ी बात नहीं है। चन्द्रमा आपका दास है आपका सुमिरन चौबीस घण्टे करता है तो आपकी मूरत इसके हृदय में बस गयी है इसलिए वही श्यामलता का प्रभाव है उसी के कारण से वह श्यामल रूप धरे है। हनुमान जी की सुमति सर्वत्र भगवान के सुमिरन में लगी है। सुमति माने जो भगवान की सेवा में लगी है, जो परोपकार में लगी है, धर्म में लगी है। सुमति माने जो अति शुभ में लगी है वही सुमति है। हनुमानजी सुमति के साथ में लगे हैं। आगे की चौपाई-

कंचन वरन विराज सुवेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा॥

श्री हनुमान जी का जो रूप है वो कंचन जैसा है। गोस्वामी जी ने लिखा है-**कनक वरण तप तेज बिराजा॥**

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।
वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।।

सोना जब तपता है तो कंचन बनता है। हनुमान जी के भीतर तप भरा है इसलिए तेज उनका कंचनरूप धारण किए है-

कनक वरण तप तेज बिराजा।।

तेज, तप से आया है। लंका सोने की थी। हनुमानजी ने कहा, रावण यह लंका असली सोने की है या नकली, इसे तपा कर देखना चाहिए। इसलिए हनुमान जी ने पूरी लंका को आग में तपाया यह देखने के लिए कि सोना असली है या नकली। नकली सोना जल गया और असली सोना यानि हनुमान जी का बाल भी बांका नहीं हुआ क्यों? क्योंकि माँ जानकी जी रक्षा में बैठी थीं। जानकी जी पावक रूप हैं।

पावक जरत देखि हनुमंता। भयउ परम लघु रूप तुरन्ता।।

और भक्ति देवी तो भक्तों के लिए शीतल है, दुष्टों के लिए ज्वाला, तो जीवन में जो तेज है वह तप से ही प्रकट होता है। हनुमानजी जैसा कौन तपस्वी होगा? लंका वैभव का प्रतीक है, लोगों के तो घरों में सोना है लेकिन लंका के सारे घर ही सोने के थे कितना वैभव होगा? लेकिन दुर्भाग्य से इस वैभव का स्वामी अभिमानी था। हनुमानजी के स्वामी भगवान् हैं और तमाशा देखिए जो रावण पूरे जगत को जला रहा था, आज उसी का महल जल रहा है। जो दूसरों को जलाता है, भले ही उसका सोने का घर क्यों न हो एक न एक दिन वह भी जलकर राख हो जाता है। अभिमानी के प्रकृति भी विरुद्ध हो जाया करती है। रावण का जब महल जल रहा था रावण ने मेघनाथ से कहा जरा इन्द्र को बुलाओ कहो वर्षा करें। इन्द्र वर्षा के लिए बादल लेकर तो आया लेकिन हमने सुना है कि बादलों में पानी नहीं पैट्रोल भरकर लाया। प्रकृति भी विरुद्ध हो गयी, आज अगर यह

घटना हो जाए तो फिर अच्छा हो जाए। पैट्रोल भी सस्ता हो जाए, वर्षा से यदि पैट्रोल बरसे तो।

दूसरा एक तो हनुमानजी लाल वर्ण के हैं ऊपर से सिन्दूर, आपने देखा होगा। वह भी घटना आपने सुनी होगी कि प्रातःकाल जब हनुमानजी प्रभु की सेवा में जा रहे थे तो माँ को प्रणाम करने उनके भवन में आ गए तो माँ उस समय श्रृंगार कर रही थीं, अपनी माँग में सिन्दूर भर रही थी। अब यह तो भोलेनाथ हैं इनको तो कुछ मालूम नहीं पूछा माँ यह क्या कर रही हो? माँ ने सोचा अगर कहूँगी कि सुहाग चिन्ह लगा रही हूँ तो पूछेगा यह सुहाग क्या होता है? इसको तो कुछ मालूम नहीं प्रश्न पर प्रश्न खड़ा करेगा। माँ ने कहा कि यह प्रभु को अच्छा लगता है। तो हनुमानजी ने सोचा यदि प्रभु सिन्दूर की एक रेखा से प्रसन्न हो सकते हैं तो मैं तो पूरे शरीर को ही लाल कर दूँगा और गए बाजार। दुकान से पूरी बोरी निकालकर लाल-लाल पोत लिया और आ बैठे राजदरबार में। जो देखे वह ही हँसे। भगवान् ने देखा तो अपनी हँसी रोक नहीं पाए बोले यह क्या पोत लिया। बोले प्रभु आपको सिन्दूर अच्छा लगता है इसलिए पोत लिया। माँ ने कहा था कि आपको सिन्दूर अच्छा लगता है इसलिए लगा लिया। माँ तो केवल एक रेखा बना रही थी मैंने सोचा यदि आप प्रसन्न होते हैं तो मैंने पूरा शरीर ही लाल पोत डाला। हनुमानजी के भोले भाव को देखकर प्रभु ने उन्हें हृदय से लगा लिया। संयोग से उस दिन मंगलवार था। भगवान् ने कहा हनुमान् आज मैं घोषणा करता हूँ कि मंगलवार के दिन जो भी तुम्हारे शरीर पर सिन्दूर का चोला चढ़ाएगा मैं उससे सदैव प्रसन्न रहूँगा। तभी से मंगलवार के दिन हनुमानजी पर सिन्दूर का चोला चढ़ाने की परम्परा चली आ रही है।

हनुमानजी के लिए सुवेश शब्द आया है। आज कुवेश हो रहा है। किसी भी राष्ट्र की संस्कृति को नष्ट करना हो या किसी भी राष्ट्र की धर्म, संस्कृति, समाज को नष्ट करना हो तो कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। उसकी तीन चीजें बिगाड़ दीजिए। उसकी भाषा, भोजन और वेश बिगाड़ दीजिए। दुर्भाग्य से आज

तीनों पर ही आक्रमण है। भारतीय भोजन हमारे जीवन से जा रहा है, भारतीय भाषा को हम आदर देने को तैयार नहीं हैं, भारतीय वेश का तो भगवान् ही मालिक है। कोई-कोई लगता है कि यह अभारतीय है। ऐसा लगता है कि सारे शेखचिल्ली पता नहीं किसी अन्य देश से उठाकर भारत में ला दिए गए हैं। वेश भी कैसा चला है वेश के पीछे भी कोई अर्थ होता है। आज का वेश देखो मूर्खों जैसा वेश, पहले बस अड्डों पर ऐसे पागल घूमा करते थे चीर बांधकर। आज बड़े-बड़े पेंट पहनने वालों को देखो या तो पैर से डेढ़ फीट ऊपर लटक रही या फिर डेढ़ फीट नीचे घिसट रही है। घरों में किसी को भी अलग से पोंछा लगवाने की जरूरत नहीं। आप उनके पैर गीले कर दो आंगन में घुमाओ, पोंछा स्वयं लग जाएगा। पेंट में छह से आठ जेब भीतर से खाली हैं फिर जेबें छह हैं। अरे भाई यह विदेश में मजदूरों का वेश है उनको टावर पर ऊंची जगह पर काम करना होता है। बार-बार नीचे न उतरना पड़े किसी जेब में रिञ्च, किसी में पेंचकस, किसी में प्लास। पागलपन लगता है, संकोच लगता है यह भारत है, भारत के लोग हैं यह हिन्दू हैं न जिनको भाषा का गौरव है। भोजन का ज्ञान है न वेश का स्वाभिमान है। वेश ऐसा चाहिए जो मन में गौरव बढ़ाए, भक्ति का गौरव बढ़ाए आनन्द का भाव बढ़ाए।

श्री हनुमानजी का वेश देखिए-

कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा॥

बन्धुओं, सुवेश चाहिए हम नकल में शेखचिल्ली बनते हैं। आज भागमभाग का युग है। मशीनों का युग है। धोती पहन कर कल-कारखानों में मशीनों पर काम नहीं किया जा सकता है। उसके लिए उपयुक्त वेश चाहिए लेकिन फिर भी हमारे हृदय में अपने वेश के प्रति गौरव का भाव होना चाहिए। हमारे हृदय में अपने वेश के प्रति हीन भाव आ चुका है और अगर मेरी बात जचती हो तो कम से कम वर्ष में चार बार हमें अपने

देश की वेशभूषा पहननी चाहिए। पहले विजय दशमी के दिन जो हमारा शस्त्र और शास्त्र की पूजा का दिन होता है। जब हमारा पूजा का दिन होता है उस दिन भारतीय वेश जो भी जिसका वेश हो पहनकर पूजा करनी चाहिए। दूसरा दीपावली की जब पूजा करें तो अपनी वेशभूषा को पहनकर पूजा करें। तीसरे जब जन्म दिन या विवाह की तिथि मनाएं उस दिन भारतीय वेश पहने और चौथा जब बहन से राखी बंधवाएं तो भारतीय वेश धारण करें और भोजन भी अपने देश का ही अपने शरीर को रुचिकर लगता है और स्वास्थ्यकर भी होता है। अब तो आयुर्वेद ने भी घोषित कर दिया है जितना सिन्थेटिक फूड आ रहा है, फास्टफूड के नाम से यह सब शरीर में विकृति पैदा कर रहा है। स्वाद के लिए कभी-कभी ठीक है लेकिन अपना ही भोजन अपने शरीर की रक्षा करता है और तीसरा अपनी भाषा के प्रति भी हीन भाव नहीं बल्कि गौरव का भाव चाहिए। मैं यह जानता हूँ कि आज व्यवसाय की भाषा अंग्रेजी है विश्व व्यापार की भाषा, सम्पर्क की भाषा आज अंग्रेजी होती जा रही है लेकिन व्यवसाय के बाद आज जब हम अपने परिवार में रहें तो हिन्दी में बात करें। हिन्दी माने जो आपके अपने क्षेत्र की, अपने प्रैदेश की, सारे देश की, हर क्षेत्र की भाषा है उसमें बात करें। प्रेम का भी यदि इजहार करें या अपने मन के भाव व्यक्त करना है तो अपनी भाषा में ही व्यक्त किए जा सकते हैं। आप बन्दरों का वेश देखिए, गोस्वामीजी ने लिखा है कि **हनुमदादि सब बानर वीरा, धरे मनोहर मनुज शरीरा।**

बन्दर कितने सुन्दर लग रहे हैं, वेश धारण किए हुए। वेश ऐसा चाहिए जो मन में हीनता पैदा न करे, अहंकार पैदा न करे, कामुकता पैदा न करे, जिसको देखकर कामुकता ना आये, दूसरे के मन में भी वासना न जगे। बहनों से मेरा निवेदन है कि थोड़ा वेश सुधारें। क्योंकि बहुत नाजुक विषय है इस पर बोलना। मैं इस पर ज्यादा तो नहीं बोलूंगा किन्तु संकेत में निवेदन कर रहा हूँ। इसको अन्यथा न लें, आज हमारा वेश कामुकता की ओर जा रहा है। आज हमारे वेश अपने मन में, देखनेवाले के मन में कामोत्तेजना जगा रहे हैं, वासना पैदा

कर रहा है। वेश ऐसा चाहिए जिसको देखकर शीश झुके, उपासना करने का मन करे। श्रीहनुमानजी ने जो वेश बनाया उनका वेश गणवेश जैसा लगता है। सेवक का वेश सेवा के अनुसार होना चाहिए। कई बार सेवक ऐसा वेश पहनता है मालिक से भी बढ़िया वेश पहनता है कि मालिक को आज्ञा देने में भी शर्म आती है कहने में कि अरे जरा एक गिलास पानी लाना। तो वेश भी ऐसा चाहिए कि स्वामी को सेवा की आज्ञा देने में संकोच न हो। क्योंकि हनुमानजी हमेशा सेवा में रहना चाहते हैं इसलिए हमेशा सेवक के वेश में रहते हैं। वेश का बहुत परिणाम होता है आप कैसा वेश पहनकर गए हैं इससे आपका आदर और मान घटता और बढ़ता है-

किएहु कुबेसु साधु सनमानू। जिमि जग जाममंत हनुमानू॥

तात भरत तुम सब विधि साधु। साधुवेश माने सरल वेश, सहज वेश, सुन्दर वेश, सौम्य वेश, शालीन वेश, वेश ऐसा चाहिए जो हमारे माता-पिता को प्रसन्न करे, अश्लील वेश नहीं होना चाहिए। भगवान को प्रसन्न करें ऐसा वेश-

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर॥
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर॥

श्रीहनुमानजी सदैव लाल वेश धारण करते हैं क्योंकि लाल रंग अनुराग का प्रतीक है और अनुराग की लालिमा सदैव भीतर से रहती है। **'कानन कुण्डल:'** पुराने वैज्ञानिक, पहले के राजे-महाराजे, ऋषि-मुनियों के वेश देखोगे तो उनके सम्पूर्ण अंगों में आभूषण दिखाई देंगे। यह आभूषण केवल शरीर के श्रृंगार के लिए नहीं पहने जाते थे। यह तो विद्युत तरंगों को भीतर पैदा करने के लिए और उनको ठीक से संचालित करने के लिए, भीतर भी विद्युत धारा प्रवाहित हो इसलिए हर अंग में आभूषण विद्यमान होते हैं जिनको एक्यूप्रेशर का ज्ञान है, शरीर को कहाँ दबाने से शरीर की कौन सी क्रिया तीव्र या मंद हो जाती है, यह हमारे आभूषण निर्धारित करते हैं। कानों में जो नस होती है आपने देखा है कि व्यक्ति जब भी गलती करता है तो कान पकड़ता है,

जब भी व्यक्ति को उसकी गल्तियों का अहसास कराया जाता है तो उसके कानों को पकड़वाया जाता है। कान में एक नस ऐसी है जिसे यदि हमेशा खींचा जाए तो जो स्मरण हो जाता है, वह विस्मरण नहीं होता है। स्मरणशक्ति इससे बढ़ती है। इसलिए आपने देखा होगा कि पुरुषों से अधिक माताओं की स्मरणशक्ति होती है। आज परीक्षाओं में हम देखें तो लड़कियां परीक्षा में लड़कों से ज्यादा अंक ला रही हैं। लड़कियां पढ़ाई की ओर ज्यादा बढ़ रही हैं क्योंकि हमेशा कानों में उनके कुछ न कुछ रहता है। इसलिए उनकी स्मरणशक्ति हमेशा तीव्रता की ओर रहती है। एक तो कुण्डल का यह अर्थ है और दूसरा कुण्डल का अर्थ है कि श्रीहनुमानजी के दोनों कानों में कुण्डल थे माने एक कान से कथा सुनते है और दूसरे कान से कीर्तन सुनते हैं और यही कानों के कुण्डल है कान और किसी काम के लिए बनाए ही नहीं गए। गोस्वामीजी ने भी यही बोला है-

जिन हरिकथा सुनी नहिं काना। श्रवण रन्ध्र अहिभवन समाना।।

जिनके कान भगवान् श्रीहरि की कथा नहीं सुनते हैं वो कान नहीं हैं वो तो अहिभवन हैं, जहाँ साँप निवास करते हैं। अगर कानों से कथा नहीं सुनोगे तो व्यथा सुननी पड़ेगी। या तो कथा में फंसो या व्यथा में फंसो। जो कथा नहीं सुनते वह व्यथा में फंस जाते हैं। फिर उनकी नाक कट जाती है। आपने सुना है कि सुपर्णखा की नाक काट दी थी लक्ष्मणजी ने, क्यों? क्योंकि सुपर्णखा ने भगवान् की कथा नहीं सुनी थी। भगवान् कह रहे थे कि मैं विवाहित हूँ, देवी शोभा नहीं देता तुम्हें ऐसा करना। आप इतने बड़े परिवार की बेटी हो, इतने बड़े महापुरुष की बहन हो यह आपको शोभा नहीं देता। लेकिन भगवान की भी कथा नहीं सुनी। तब संत लक्ष्मणजी ने भी समझाया, संत की वाणी भी नहीं सुनी। जो कान संत व भगवन्त की कथा नहीं सुनते उनकी तो फिर नाक ही कटेगी। नाक काटना यह प्रतीकात्मक है। जो कथा नहीं सुनेगा उसको नाक कटवानी ही पड़ती है। सुपर्णखा की केवल नाक नहीं कटी बल्कि पूरे परिवार की नाक कटी। जो भगवान् की कथा नहीं

सुनेगा वो जगत् व्यथा में जाएगा और जो व्यथा में जाएगा उसकी तथा उसके परिवार की किसी न किसी दिन अवश्य नाक कटेगी, कोई बचा नहीं पाता। इसलिए हनुमानजी के सदैव कानन कुण्डल कुन्चित केसा-कानों में कुण्डल सुशोभित है। आगे की चौपाई-

हाथ बज्र औ ध्वजा विराजै। काँधे मूंज जनेऊ साजै॥

श्रीहनुमानजी के हाथ में वज्र है, वह सम्पूर्ण ही वज्र हैं।

बज्र देह दानव दलन, जय-जय-जय कपि सूर॥

वज्र के दो अर्थ हैं एक तो श्रीहनुमानजी के हाथ में जो रेखाएं हैं वे वज्र के समान हैं। दूसरा वज्र माने काल। कहते हैं न कि वज्रापात हो गया। काल श्रीहनुमानजी के हाथ में है। हम सब काल के हाथ में हैं और काल श्रीहनुमानजी के हाथ में है। काल को हनुमानजी ने मुक्त किया था। आपने सुना होगा कि काल रावण की पाटी से बंधा रहता था। हनुमानजी ने रात में जाकर काल को मुक्त करा दिया तभी तो रावण ने कहा था- **मृत्यु निकट आई खल तोही।**

जब रात्रि में हनुमानजी ने इस काल को स्वतन्त्र कर दिया (पाटी से खोल दिया) तो काल रावण के दरबार में आकर हनुमानजी के बगल में खड़ा हो गया। रावण ने देखा काल तो मेरी पाटी से बंधा था यह यहाँ पर कैसे खड़ा हो गया। रावण ने हनुमानजी से कहा रे वानर देखते नहीं कि **मृत्यु निकट आई खल तोहि।** हनुमानजी को तो मालूम था कि काल तो हनुमानजी को धन्यवाद देने आया था। इस कारण रावण के बच्चे ने मुझे पाटी से बाँध दिया। बोले हनुमान् क्या करना है। रावण ने जब कहा तुझे दिखाई नहीं देता कि मृत्यु तेरे निकट आ गयी है, तो हनुमानजी ने कहा कि हाँ दिखाई दे रहा है परन्तु तू डर नहीं रहा है? मौत मेरे बगल में खड़ी है, मुझे डरने की आवश्यकता नहीं। बगल में तो मेरे खड़ी है लेकिन देख तेरी ओर रही है और मुझसे

पूछ रही है कि अभी रावण का कुछ करना है? तो काल हमेशा हनुमानजी के हाथ में रहता है। हनुमानजी ने कहा कि यह मौत मेरे लिए नहीं आई है, यह तेरे लिए आई है। गदा भी काल का स्वरूप है। एक हाथ में गदा और दूसरे हाथ में ध्वज है। बायें हाथ की गदा दुष्टों का संहार करती है। एक हाथ से हनुमानजी दुष्टों का संहार करते हैं और दूसरे हाथ से भक्तों को सम्भाला करते हैं। हनुमानजी के दोनों हाथों की यह विशेषता है। हनुमानजी की गदा दुष्टों को मारती है, संतों को सम्भालती है। काल हनुमानजी की मुठ्ठी में है, काल से कोई बच नहीं सकता। जिसने जन्म लिया है उसका मरण भी निश्चित है जिसका जन्म है उसका मरण भी है। लेकिन भक्तों की कभी मौत नहीं होती। भक्त तो केवल शरीर छोड़ते हैं। मैं एक कहानी सुना रहा हूँ बुलकबुखारा करके एक स्थान है। संध्या के समय वहाँ के कोई एक जमींदार थे, बाजार में कुछ खरीदने गए थे। कोई काली छाया उनके पीछे-पीछे चल रही थी। मुड़कर देखा तो बड़ी भयानक काली छाया उन्होंने देखी और पूछा कि तुम कौन हो? बोली मैं काल हूँ, मैं मौत हूँ। जमींदार बोले तो मेरे पीछे क्यों लगी हो? तो छाया बोली तुम्हारा समय आ गया है। कल सांय पांच बजे मुझे तुमको लेने आना है। इसलिए मैं तुमको सचेत करने आई हूँ कि ठीक समय पर जगह पर मिलना। इधर-उधर न चले जाना ताकि मुझे खोजना न पड़े। काल एकदम नहीं आता, काल पहले सचेत करने आता है कि मैं अब लेने आनेवाला हूँ। अटैची तैयार कर लो जैसे ट्रेन में बैठने से पहले घोषणा होती है कि इतने बजे ट्रेन आनेवाली है तो आप अपनी अटैची, थैला लेकर सावधान हो जाते हैं। ऐसे ही काल भी पहले सचेत करने आता है। अब पहले यदि एक हार्टअटैक हो गया था, डायबिटिज आती है, ब्लडप्रेशर हो गया, सांस चढ़ने लगी, यह सब क्या है? काल के संकेत हैं कि कृपया सावधान हो जाओ। अपनी अटैची लगाना शुरू कर दो। अब गाड़ी स्टेशन पर आने वाली है और आपको अब गाड़ी में बैठना है। यह जो शरीर में रोग हैं यह संकेत हैं, ये लक्षण हैं। काल अपना संकेत देकर आता है वह कभी धोखा नहीं देता। कृपया सावधान हो जाएं, अटैची लगाना शुरू कर दीजिए। अब गाड़ी स्टेशन पर आने वाली

है। अब आपको गाड़ी में बैठना है। पहले यह जो शरीर में रोग हैं, ये संकेत हैं, ये लक्षण हैं। काल आपको संकेत देकर आता है वह कभी धोखा नहीं देता। काल ही ऐसा है जो कभी किसी को धोखा नहीं देता और काल को सब धोखा देना चाहते हैं। तो उस नवाब को कहा कि कल ठीक जगह रहना, मैं कहीं इधर-उधर न भटकती रह जाऊँ। छाया तो गायब हो गयी अब यह बड़े नवाब के पास पहुंचे और बोला कि कल पांच बजे मेरी मौत आएगी। कहा है कि इस जगह पर ही रहना। नवाब बोले तुम्हें यहीं तो खोजने आएगी। मेरे पास एक अरबी घोड़ा है। तुम इस पर सवारी करके दौड़ लगाकर चले जाओ। तुम इस राज्य की सीमा को छोड़कर दूसरे राज्य की सीमा में चले जाओ। वह इस राज्य में खोजेगी, तुम उससे बच जाओगे। यह उस घोड़े पर सवार हुआ और दौड़ लगाई। दौड़ते-दौड़ते अपना राज्य छूटा, दूसरा राज्य छूटा तो किसी तीसरे राज्य में पांच बजे के करीब एक बाग में पहुँचा। घोड़ा पसीने से लथपथ, पसीना पोंछा, घोड़े की पीठ थपथपाई और घोड़े को एक पेड़ से बाँधा और उसको धन्यवाद दे रहा है कि वह आज तेरी कृपा से यहाँ तक आ गया। इतना ही बोला था कि वह काली छाया पीछे से आकर खड़ी हो गयी। काली छाया ने, मौत ने कहा कि धन्यवाद तो घोड़े को मैं भी देना चाहती हूँ। बोले तू यहाँ, बोली हाँ, तू क्यों धन्यवाद देना चाहती है। मौत ने कहा जब मैंने कल तुझे पाँच बजे बुलख के बाजार में देखा तो मैं चिन्तित हो गयी थी कि तुझे मरना तो इतनी दूर है। कल सायंकाल तक तू कैसे वहाँ पहुंचेगा क्योंकि तेरी मौत यहाँ लिखी थी। मैं घोड़े को धन्यवाद देना चाहती हूँ कि घोड़ा ठीक समय पर तुझे यहाँ ले आया और अब चलो।

काल तो निश्चित है लेकिन काल भी जिनके हाथ में बँधा है ऐसे हैं श्रीहनुमानजी। हनुमत वज्र, हनुमानजी के हाथों में काल का अर्थ यह है कि मृत्यु तो शरीर की होगी लेकिन जो भगवान् के नाम में, कीर्तन में, कथा में, यश में डूबे होंगे मौत उनकी बिगड़ती नहीं है बल्कि सुधर जाती है। भगवान् के नाम, संकीर्तन में जो अपनी देह छोड़ते हैं काल उनको नहीं मारता वो कालजयी हो जाते हैं। आपने महाभारत में सुना होगा कि महाभारत में

प्रत्येक वीर यह चाहता है कि हम भगवान् श्रीकृष्ण के हाथ से मरें, प्रत्येक की इच्छा है कि हमको सुदर्शन मारे, भगवान् के हाथ का जो शस्त्र है उसका नाम है सुदर्शन। सुदर्शन सबसे संहारक शस्त्र है। यानि एटमबम जितना भयानक जो कभी खाली नहीं जाता। हमने एटमबम को सुदर्शन नहीं कहा। भगवान श्रीकृष्ण के हाथ की मौत को हमने सुदर्शन कहा है। कल्पना करिए जिनके हाथ की मृत्यु भी सुदर्शन होती हो उनके हाथ का जीवन कितना सुन्दर रहता होगा? महाभारत का हर योद्धा यह चाहता है कि भगवानकृष्ण हमको मारें, भगवान् के हाथ की मौत माने भगवान् के सुमिरन के साथ मौत। भगवान् ने जब रावण को मारा तो मंदोदरी ने भगवान् को उलाहना नहीं दिया। उलाहना तो अपने पति को दिया है। भगवान् को तो धन्यवाद दिया है-

जान्यो मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं।
जेहि नमत शिव ब्रह्मादि सुरप्रिय भजेहु नहिं करुनामयं॥
आजन्म ते परद्रोह रत। पापौघमय तव तनु अयं।
तुम्हहू दियो निज धाम। राम नमामि ब्रह्म निरामयं॥

भगवान् के हाथ की मौत का अर्थ है कि हम भगवान् के सुमिरण में उनके भजन में, उनकी सेवा में मृत्यु का वरण करें। श्रीहनुमानजी के हाथ में काल है हम सब काल-चक्र में फंसे हैं। श्रीहनुमानजी ने कालचक्र को मारा है। श्रीहनुमानजी ने कालनेमि को मारा, नेमि माने चक्र। सारा जगत काल चक्र में फंसा है लेकिन कालचक्र को भी श्रीहनुमानजी ठीक करते हैं। इसलिए कालचक्र से बचना है तो हनुमानजी की शरण में आइए। क्योंकि हनुमानजी के हृदय में-

हे भक्तो इनके हृदय में सियाराम की जोड़ी बैठी है।
यह राम दिवाना क्या कहना गुण गाये जमाना क्या कहना।।
दुनिया में देव हजारों है बजरंग बली का क्या कहना।
इनकी शक्ति का क्या कहना इनकी भक्ति का क्या कहना।।
दुनिया में देव हजारों हैं बजरंग बली का क्या कहना।।

काल मुठ्ठी में कैसे आ गया? उसका कारण है क्योंकि दूसरे हाथ में भगवान् के यश की ध्वजा रहती है। जो भगवान् के यश की ध्वजा फहराते हैं, काल उनकी मुठ्ठी में रहता है। इसलिए मैं निवेदन कर रहा था कि भक्तों की कभी मौत नहीं होती। आखिर मीराबाई कहाँ मरी? तुलसीदास जी कहाँ मरे? नरसी कहाँ मरे? आज तक घर-घर में जीवित हैं। सबकी साँसों में, वाणी में जीवित हैं। बड़े-बड़े राजे-महाराजे मरकर चले गए कोई नाम भी नहीं जानता। **राज राजा रहे ना वो रानी रही सिर्फ कहने को केवल कहानी रही। ना बुढ़ापा रहा ना जवानी रही जिंदगी में हजारों के मेले लगे हँस जब जब उड़े तब अकेले उड़े। कोठी-बंगले खड़े के खड़े रह गए। हीरे-पन्ने जड़े के जड़े रह गए।** बचा कौन? जो राम नाम की भक्ति में डूब गए सो बचे। तो जिनके हाथ में भगवान् के नाम की यश की ध्वजा आ गयी, काल उसके दूसरे हाथ की मुठ्ठी में बंद हो जाता है ऐसे श्रीहनुमानजी-

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै।।

कन्धे पर यज्ञोपवीत तप का प्रतीक है। यज्ञोपवीत हमारे यहाँ मर्यादा का प्रतीक माना गया है। आचरण की मर्यादा इसके लिए यज्ञोपवीत संस्कार जनेऊ हमारे कंधे पर रहता हैं। यह हमको हमारे ऊपर के भार व ऋण का स्मरण कराता है। माता-पिता की सेवा हमको करनी है इसकी याद दिलाता है। भगवान ने स्वयं कहा है-

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा।।

प्रभु तो जब तक यज्ञोपवीत संस्कार भी नहीं हुआ था तब से ही उसका पालन करते हैं। व्यवहार के आचरण की मर्यादा का पालन मेरे प्रभु बिल्कुल बाल्यकाल से करते थे। **मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः, आचार्य देवो भवः**,ये छात्रों को दिए गए सूत्र हैं ये तीनों प्रकार के ऋणों का सुमिरन कराते हैं। समाज का, माता-पिता का और देवताओं का ऋण हमारे ऊपर है। माता-पिता ने जन्म दिया, लालन-पालन किया है, समाज ने हमको शिक्षा दी है, हमको सहयोग दिया, सुरक्षा दी और देवताओं के आशीर्वाद ने हमको जीवन दिया है। यश, वैभव, सुख, सम्पन्नता दी है। तीनों के ऋण का सुमिरन चौबीस घण्टे कन्धे पर यह भार प्रतिदिन हमको सुमिरन कराता है। शास्त्रों में वर्णन है।

कोई ढूँढ रहा प्रभु को वन में। कोई घर में बैठा भजन करे।।
कोई योग करे, कोई ध्यान धरे। कोई गंगा-यमुना स्नान करे।।
जिन मातु-पिता की सेवा की। तिन्ह तीरथ धाम कियो न कियो।।

उनको किसी तीर्थ यात्रा पर जाने की आवश्यकता नहीं, जिस पुत्र के सद्व्यवहार से, सद्चरित्र से, समर्पण से, सद्भाव से, सद्गुणों से, सत्कर्म से, और सेवा से माता-पिता का हृदय आनन्द से, प्रसन्नता से भर जाता हो, नेत्र डबडबा जाते हों, ऐसे पुत्र को किसी तीर्थ पर जाने की आवश्यकता नहीं। दुनिया के सारे तीर्थ उस पुत्र की देहली पर आकर निवास करने लगते हैं। अरे माता-पिता की सेवा के बल से पुण्डरीक के दरवाजे पर भगवान् बिठ्ठल नाथ आकर खड़े हो गए और आज तक खड़े हैं। जो माता-पिता की सेवा करते हैं भगवान् उनके द्वार पर पहरेदार बनकर खड़े हो जाते हैं। परिवार में कोई संकट नहीं आ सकता। आशीर्वाद कहीं मांगने जाने की जरूरत नहीं, आशीर्वाद तीन जगह से मिलते हैं- माँ के चरणों से, पिता के चरणों से और गुरुदेव

के चरणों से, इसलिए मैं निवेदन कर रहा हूँ कि माता-पिता को दु:ख न दें। कृपया इतनी कृपा करें। जो पुत्र अपनी पत्नी और बच्चों के सामने अपनी माँ को अपशब्द बोलता है, मुँह बिगाड़कर, आँख निकालकर जब अपनी माँ को बोलता है, उस समय माँ को प्रसवकाल याद आता है वह सोचती है इसके लिए मैंने इतना कष्ट सहा था और माँ के कष्ट को देखकर भगवान् उन्हें क्षमा नहीं कर पाता। भगवान् अगर किसी अपराध को क्षमा करने में संकोच करते हैं तो वह माता-पिता के साथ किया गया दुर्व्यवहार है। सेवा मत करो, मत चादर बदलो, मत कपड़े बिछाओ, मत बिस्तर लगाओ, मत उनके झूठे बर्तन उठाओ, वह वृद्धाश्रम में रहने को मजबूर हों कृपया ऐसी परिस्थिति मत बनाओ। हमारे देश में तो वृद्ध माता-पिता, देवी और देवताओं की तरह पूजे जाते हैं। और जिस देश में वृद्धाश्रम में माता-पिता को अपना जीवन बिताना पड़े, कुड़कुड़ कर यदि मृत्यु के लिए वरण करना पड़े तो उससे बड़ा उस पुत्र के लिए पाप नहीं हो सकता है। किन मनौतियों के साथ उसका जन्म हुआ था, उसका लालन-पालन किया था इसलिए कि वृद्धावस्था में वह हमको वृद्धाश्रम में रहने को मजबूर करेगा, यह सबसे बड़ा पाप है। भगवान् स्वयं माँ की याद में रोया करते थे। मथुरा में रात्रि में महल की छत पर गोकुल की ओर मुँह करके प्रभु बहुत रोते थे। यशोदा माँ की याद सताती है। ऊधव को जब गोकुल भेजा तब ऊधव से कहा बाकी को तो ये पत्र जाकर देना लेकिन मेरी माँ से अकेले में कहना कि-

भैया-मैया कूँ सुनइयो तेरौ लाला दु:ख पावै।
कोई न मुख धौवे तत्ते जल। अँचरन पौंछि सम्हारे॥
माखन रोटी नाम न जानै कनुआ कहि मोहि कोउ न बुलावै।
मैया को सुनइयो-भैया मैया कूँ सुनइयो तेरौ लाला दु:ख पावै॥

अरे भगवान् भी रोते हैं माँ के लिए। ये जीवित देव हैं, बाद में तो केवल चित्र देख-देखकर रोओगे।

आप जरा अपने बारे में विचार करो। आपमें से कितने लोग ऐसे हैं जो अपनी माँ की चारपाई में बैठकर उसकी कुशल क्षेम पूछते हो। माँ कैसी हो, तबियत कैसी है? कुछ खाया-पिया कि नहीं? आए और अपने बच्चों में मटर गस्ती करने लगे। बूढ़ी माँ, बूढ़े पिता बाहर के कमरे में इंतजार कर रहे हैं कि शायद बेटा आए, शायद हमारी ओर देखे। जिन्होंने इतने लाड प्यार से पाला वह आज सिर्फ देखने को तरसते हैं, इससे बड़ा पाप क्या होगा? तो ये त्रिसूत्र हमें याद दिलाता है जिन्होंने हमें जन्म दिया उनकी सेवा करो, जिस समाज ने हमको सामर्थ्य दी है, सुरक्षा दी है, सहायता दी है, सब प्रकार का सहयोग दिया है, उस समाज के प्रति भी मेरा कोई दायित्व है। यह नहीं कि मेरा पूरा जीवन केवल हम दो हमारे दो के लिए है। केवल अपनी कोठी के आँगन को, लॉन को बड़ा करने के लिए है। केवल अपना बैंक बैलेन्स कैसे बढ़े इस प्रयत्न के लिए है। अरे, जिस समाज में जन्मा हूँ, जिस समाज के कारण से आज मेरी पहचान है, मेरी सुरक्षा है, जिस समाज की रक्षा के लिए कितने लोगों ने बलिदान दिए हैं, कितने कितने बड़े-बड़े संघर्ष हुए, उस समाज को जीवित रखना, सुरक्षित रखना, सम्पन्न करना क्या उसके लिए मेरा कोई दायित्व नहीं बनता? मैं चौबीस घण्टे केवल अपने परिवार और सुख-वैभव में लगा रहा हूँ। घण्टे आधा घण्टे इस समाज की रक्षा, सुरक्षा, प्रतिष्ठा, समृद्धि, धर्म, मर्यादा के लिए मेरा कोई समय निकलता है। मैं इस समाज की सेवा के लिए कोई काम कर सकता हूँ क्या? जो समाज-सेवा के कार्यों में लगे हैं मैं उनकी कोई मदद कर सकता हूँ, जो गरीब मलिन लोगों की सेवा में लगे हैं क्या मैं उनके लिए कुछ कर सकता हूँ? उनके बीच जाकर उनको पढ़ा सकता हूँ। अनेक प्रकार की सेवा के कार्य हो सकते हैं, अनेक प्रकार की सामाजिक संस्थाएं समाज सेवा के कार्य में लगी हैं। क्या उनके कन्धों के साथ मेरा भी कंधा जुड़ सकता है कि नहीं। उनके कदमों के साथ दो-चार कदम बढ़ाकर मैं भी चल सकता हूँ कि नहीं। मेरे भी हाथ समाज सेवा में लग सकते हैं कि नहीं। समाज के प्रति मेरा भी दायित्व है और देवऋण, ऋषिऋण, जिन्होंने ज्ञान दिया, विज्ञान दिया, जीवन दिया, सुख दिया, वैभव, सब कुछ जिन्होंने

दिया है, देवताओं माने परमार्थ, पुण्य, सद्कर्म धर्म, संस्कृति, सब कुछ ये दैवीय कार्य हैं इनके मालिक देवता हैं इनकी रक्षा के लिए, इनके संवर्धन के लिए, संरक्षण के लिए, धर्म के उद्घोष के लिए, गायों की रक्षा के लिए, संस्कृति की सुरक्षा के लिए, राष्ट्र के गौरव के लिए ये सब दैवीय कार्य हैं। इनके लिए मैं कुछ करता हूँ क्या? कभी मेरे आँगन में देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बच्चों के साथ बैठकर छोटा सा यज्ञ करता हूँ क्या? क्या मैं वातावरण के प्रदूषण को कम करने के लिए कुछ सुगन्धित पुष्पों के पौधें लगा सकता हूँ? कुछ दान, पुण्य, धर्म, सतकर्म कुछ करता हूँ क्या? यह सब दैवीय कार्य हैं तो ये सब ऋण हमारे ऊपर हैं श्रीहनुमानजी–

काँधे मूँज जनेऊ साजै॥

एक मूँज घास है, खुरखुरी भी है, तीखी भी है। पहले तपस्वी मूँज का ही जनेऊ धारण करते थे। शायद इसलिए करते थे कि हमेशा हमारे कन्धे को खुजलाती रहे हमको विस्मरण न हो जाए। समाज ऋण, देव ऋण, ऋषि ऋण, पितृ ऋण ये विस्मृत न हो जाएं इसलिए हमारी गर्दन को हर समय खुजलाती रहे। हनुमानजी मूँज का जनेऊ इसलिए धारण करते हैं और दूसरा ब्रह्मचर्य का प्रतीक है, तपस्वी का प्रतीक है। हनुमानजी ब्रह्मचर्य के प्रतीक हैं। ब्रह्मचारी के दो अर्थ हैं एक तो ब्रह्मचारी माने जिसने शुक्र को स्खलन नहीं होने दिया। यह ब्रहमचर्य का एक श्रेष्ठ स्वरुप है। ऐसे बहुत से पहलवान हैं जिन्होंने अपने शुक्र का स्खलन नहीं होने दिया लेकिन वह कोई ब्रह्मचारी नहीं माने जाते। ब्रह्मचर्य का अर्थ है जिसकी चर्या ब्रह्म जैसी हो। जो चौबीस घण्टे, प्रतिपल, प्रतिक्षण ब्रह्म की चर्या में डूबा है? हम ब्रहम की चर्चा तो करते हैं, लेकिन हम ब्रह्म की चर्या में नहीं डूबते। आप वैष्णवों को पतित होते बहुत कम सुनेंगे। ज्ञानी का पतन होता है। भक्त का पतन नहीं होता है। भगवान ने गीता में भी घोषणा की है कि मेरे भक्त का पतन नहीं होता इसलिए वैष्णवों का भी पतन नहीं होता, क्यों? क्योंकि

वैष्णव साधु सदैव भगवान् की सेवा में रहते हैं और जो चौबीस घण्टे सेवा में रत रहेगा वह विकृत नहीं हो सकता। उसका कभी पतन नहीं हो सकता। प्रात:काल से वैष्णव सेवा में प्रभु की कथा, जागरण, मंगला आरती करना है, स्नान कराना, श्रृंगार करना, फिर प्रात:काल की आरती करनी, भोग लगाना, शयन कराना, उत्थापन कराना, फिर संध्या आरती करनी है। यानि प्रात:काल से लेकर एक क्षण भी इधर-उधर नहीं चौबीस घण्टे मन भगवान् की सेवा में और सेवा से मन पवित्र होता है, शुद्ध होता है। शुद्ध, पवित्र मन में कभी विकार प्रवेश ही नहीं कर पाते हैं। इसी को ब्रह्मचर्या कहा है। इसी को भजन कहा है भजन क्रिया नहीं, भजन कोई ड्यूटी नहीं है। भजन एक जीवन जीने की शैली है। भजन जीवन की चर्या है। उठते-बैठते, सोते-जागते, चलते-फिरते भजन करना माने भगवान् में डूबे रहना, भजन करना माने भगवान् में जगना, उठना, बैठना, नहाना, खाना, चलना, पीना भगवान् के अतिरिक्त कुछ और है ही नहीं। हर श्वांस में उसी की धड़कन, उसी की यादें। अभी भगवान् हमको याद करने पड़ते हैं। भगवान् सुमिरन में बने रहे। किसी ने बहुत अच्छा गाया है-

हर धड़कन में प्यास है तेरी, श्वांसों में तेरी खुशबू है।
इस धरती से उस अम्बर तक, मेरी नजर में तू ही तू है।।
प्यार ये टूटे ना, तू मुझसे रूठे ना, साथ ये छूटे कभी ना।
तेरे बिना भी क्या जीना। साथी रे तेरे बिना भी क्या जीना।
फूलों में कलियों में, सपनों की गलियों में ।
तेरे बिना कुछ कहीं ना, तेरे बिना भी क्या जीना।।
तेरे बिना भी क्या जीना, साथी रे।
तेरे बिना भी क्या जीना।।

हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे हरे।
हरे राम, हरे राम, राम-राम हरे हरे॥

जिसके बिना जीना व्यर्थ लगे, चौबीस घण्टे मन डुबाना न पड़े, डूब जाए जैसे बृज की गोपियां। आपने किसी गोपी को अलग से बैठे भजन करते नहीं देखा होगा। चौबीस घण्टे भजन में ही डूबी, **मुरारी पादार्पित चित्तवृत्ति** उनकी चित्तवृत्ति भगवान के श्रीचरणों में ही डूब चुकी हैं। सुबह उठकर झाड़ू लगा रही हैं। श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारी हे नाथ नारायण वासुदेव, गाय के नीचे से दूध निकाल रही है।

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे। हे नाथ नारायण वासुदेवाय॥

रोटी बना रही हैं श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, बालक को दूध पिला रही है श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेवा, पति की सेवा कर रही है श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेवा, घर के हर कार्य को करते समय श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेवा, गोपी की दशा क्या हो गयी, बल्लभाचार्यजी ने वर्णन किया है-

विक्रेतु कामा किल गोपकन्या। मुरारि पादार्पित चित्त वृत्ति॥
दध्याधिकं मोह वशाद् वोचत्। गोविन्द दामोदर माधवेति॥

चौबीस घण्टे प्रतिपल प्रतिक्षण व्रज की गोपियाँ श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारी। भजन अलग से नहीं किया जाता भजन में डूबना, भजन में रमना,भजन में खो जाना, भजन करना, माने भगवान् में डूब जाना, भगवान् में बंध जाना,भगवान में रम जाना, भगवान से जुड़ जाना, भगवान् में विलीन हो जाना, भगवान् में खो जाना, उठते, बैठते, जागते, खाते-पीते जैसे श्वांस लेनी नहीं पड़ती, श्वांस चलती रहती है वैसे ही सुमिरन करना न पड़े। सुमिरन चलता रहे। करना पड़ रहा है, इसका मतलब है कि अभी दूरी है चूंकि याद दूसरे की करनी

पड़ती है। अपना बेटा तो श्वाँसों में रहता है, अपना बेटा यादों में रहता है तो श्रीहनुमानजी भजन करते नहीं हैं बल्कि भजन में रहते हैं। भजन करना और भजन में होना, श्वांस लेना और श्वांस चलना दोनों में अन्तर है। श्वांस लेनी पड़ती है इसका मतलब है जुकाम है और जुकाम में सर में दर्द होता है और इसलिए जो भजन करते हैं कई बार थकान लगती है, ऊब लगती है मन नहीं करता है कि भजन करें क्योंकि भजन करना पड़ रहा है। वह मुसीबत है। जो हो रहा है वह आनन्द है तो भजन हो यह ब्रह्मचर्य है। श्रीहनुमानजी सदैव ब्रह्मचारी के वेश में रहते हैं। उनका बैठना, उठना, चलना सभी ब्रह्मचारी की तरह है। जिनके रोम-रोम में राम बसे हैं ऐसे श्रीहनुमानजी और आचरण की दृष्टि से भी देखेंगे तो श्रीहनुमानजी ब्रह्मचारी हैं। आगे की चौपाई देखिये-

संकर सुवन केसरी नन्दन। तेज प्रताप महा जग बन्दन॥

केसरीनन्दन, यह तो जगत प्रसिद्ध है कि हनुमानजी केसरी नामक वानर के पुत्र हैं लेकिन शंकरसुवन श्रीहनुमानजी शंकरजी के भी अंश हैं, अवतार हैं। कई लोग तो बोलते हैं **शंकर स्वयं केसरी नन्दन,** शंकरजी स्वयं ही हनुमानजी के रूप में आए हैं। पाठ तो हमेशा यही करना चाहिए जो लिखा है। शंकरसुवन केसरीनन्दन तेज प्रताप महा जग बन्दन सत्य यही है। शंकरजी स्वयं ही हनुमानजी का रूप लेकर पधारे हैं-

रुद्र देह तजि नेह वश। हर ते भये हनुमान॥

श्रीहनुमानजी शंकर जी के अवतार हैं। एक बार शंकरजी से भगवान् ने पूछा था कि हे महादेव मैं रावण को मारने के लिए जा रहा हूँ। उसके साथ मेरा भयानक युद्ध होगा आप बताइए उस युद्ध में आप हमारी क्या सहायता करेंगे? हर देवता हमारी सहायता के लिए वानर रूप लेकर आ रहा है।

वानर तनु धरि-धरि महि-हरि पद सेवहु जाहु॥

आप बताइए शंकरजी! आप उस समय हमारी क्या सहायता करेंगे? तो शंकरजी ने कहा कि मेरा एक रुद्र

आपकी सहायता में, सेवा में रहेगा और वही 11वां रुद्र हनुमानजी के रूप में शंकर सुवन उनका आगमन हुआ है-

रुद्र देह तजि नेह वश। हर ते भये हनुमान॥

यह विचारणीय प्रश्न है शंकरजी ने बन्दर रूप क्यों बनाया तो यह कथा बड़ी प्रिय है। शंकरजी को यह मालूम है कि भगवान् को बन्दर का रूप बहुत प्रिय है और भगवान् जिसके ऊपर कृपा करते हैं उसको बन्दर रूप देते हैं और भगवान् अपने प्रियजन के ऊपर बहुत कृपालु रहते हैं। नारदजी की घटना आपने सुनी होगी। नारदजी ने जब भगवान् से कहा था कि प्रभु जिसमें मेरा हित हो वही आप करें। प्रभु ने क्या उत्तर दिया।

भगवान् बोले-

जेहि विधि होइहि परम हित, नारद सुनहु तुम्हार।
सोई हम करब न आन कछु, बचन न मृषा हमार॥

नारद तुम हमारे परम प्रिय हो। तुम हित की बात करने आए हो, हम तुम्हारा परमहित करेंगे लेकिन मुख से तो बोलो क्या चाहिए? बोले **आपन रूप प्रभु देहु मोही। आन भाँति नहिं पावौं ओही॥** प्रभु मुझे सुन्दर रूप दीजिए, नारद जी ने प्रभु से सुन्दर रूप माँगा और भगवान् ने क्या कर दिया-

मुनि हित कारन कृपा निधाना। दीन्ह कुरुप न जाइ बखाना॥

नारदजी ने भगवान् से सुन्दर रूप मांगा, भगवान ने नारदजी को बन्दर रूप दे दिया। यह भगवान् ने कृपा की है कृपा करके भक्त को बचा लिया। मरकट बदन भयंकर देही। नारदजी ने एक बार पूछा, भगवान् से भगवन्! यदि आपको मेरा विवाह नहीं कराना था तो सीधे-सीधे मना कर देते। भगवान् ने कहा कि नारद, तुम उस समय सुनने के लिए तैयार नहीं थे। तुम तर्क दे सकते थे। अपनी शादी कर चुके और बेटे की शादी के लिए मना कर दिया। तुम मेरी बात सुनते नहीं। ठीक है महाराज, तो फिर आपने बन्दर रूप क्यों बना दिया?

बहुत सारे कुरूप रूप थे कोई और रूप ही बना देते। भगवान् ने कहा नारदजी मैंने तुम्हें बन्दर इसलिए बनाया था कि एक दिन बन्दर बनाकर मैने तुम्हें जीवन भर बन्दर बनने से बचा लिया। अगर कहीं तुम शादी कर लेते तो जीवन भर शादी करके तुम्हें घरवाली के सामने बन्दर बनकर नाचना पड़ता। और गोस्वामी जी संकेत देते हैं-**नारी विवश नर सकल गुसाईं, नाचहि नट मरकट की नाईं।** जैसे नट के सामने बन्दर नाचता है वैसे शादी के बाद पुरुष अपनी पत्नी के सामने नाचता है। नारद मैं भी भुगत रहा हूँ, नाचना पड़ा कि नहीं, आखिर नाचते-नाचते लंका तक गए कि नहीं। सबको नाचना पड़ता है तो मैंने सोचा नारद मेरा सबसे प्रिय है इसका हित इसी में है कि इसको बन्दर के नाच से बचाऊँ। एक दिन का बन्दर बनाकर मैंने जीवन भर के बन्दर बनने से बचा लिया। देखो सब नाचते हैं। हरियाणा में आपने सुना होगा कि पत्नी को वीरवाणी कहते हैं। वीरवाणी का मतलब क्या है पुरुष वीर है और उसकी वाणी क्या है घरवाली, वह जैसा बोलेगी वैसे करना है, वह जो कहेगी सो इसे करना है। बड़े-बड़े तगड़े, देहधारी, योद्धा बीवी के सामने घिघियाते हैं क्योंकि वाणी तो उसकी है पत्नी की वाणी वीरवाणी। घर में यदि शान्ति चाहते हो तो घर में घुसे कि वाणी बंद कर लो और घर में श्रोता बनकर जाओ और वक्ता बनना है तो बाहर बनो, जो बोलना है, घर के बाहर बोलो। घर में जाइए श्रोता बनकर, सिर झुकाकर बैठ जाइए जैसे आप कथा में जाते हैं कथा अच्छी लगे न लगे, समझ में आए न आए उनको तीन घण्टे बैठकर सुनना ही नहीं है बल्कि झूठी-सच्ची तालियां भी बजानी हैं। कथावाचक समझते हैं कि हमारी कथा बड़ी पसंद आ रही है वह ताली बजा रहे हैं। हम समझते हैं प्रशंसा कर रहा है तो जैसे श्रोता बेचारा तीन घण्टे प्रशंसा कर रहा है। कृपया जितनी देर घर पर रहो श्रद्धालु बनकर और बीच में वाह-वाह कहिये। क्या बात कही है यह बात तो कभी हमने सोची ही नहीं। शंकरजी ने सोचा भगवान् जब हित करते हैं तो हित नहीं, परमहित करते हैं तो बन्दर बना देते हैं और बन्दर रूप भगवान् को परम प्रिय है। शंकरजी का मानना है कि जगत तो नचाएगा या तो रामजी के बन्दर बनो या काम के बन्दर बनो। हनुमानजी राम के

बन्दर हैं और हम सब काम के बन्दर हैं। हमको चौबीस घण्टे काम नचाता है, श्री हनुमानजी को देखिए-

छम-छम नाचे देखो वीर हनुमाना।
कहते हैं लोग इसे राम का दिवाना।
छम-छम नाचे देखो वीर हनुमाना॥
पाँव में घुँघरू बाँध के नाचे,
राम जी का नाम इसे बड़ा प्यारा लागे।
राम जी ने देखो इसे खूब पहिचाना,
छम-छम नाचे देखो वीर हनुमाना॥
जहाँ-जहाँ कीर्तन होता श्रीराम का,
लगता है पहरा वहाँ वीर हनुमान का।
रामजी के चरणों में है इनका ठिकाना,
छम-छम नाचे देखो वीर हनुमाना॥
नाच-नाच श्रीराम को रिझाये,
आनन्द में रात दिन-नाचता ही जाये।
भक्तों में भक्त बड़ा दुनिया ने माना,
छम-छम नाचे देखो वीर हनुमाना॥

शंकरजी ने सोचा कि क्यों न मैं राम के इशारे में नाचूं अन्यथा काम के इशारे में नाचना होगा। शंकरजी स्वयं हनुमानजी के रूप में पधारे हैं-

संकर सुवन केसरीनन्दन। तेज प्रताप महा जगबंदन।।

हनुमानजी के तेज के प्रताप का तो कोई वर्णन नहीं कर सकता। आपने सुना होगा कि बाल्यकाल में जब विद्या अध्यन की बात आयी तो हनुमानजी सूर्यनारायण के पास आए। सूर्य ने कहा, कहाँ बालक आ रहे हो, मेरे पास मत आओ जल जाओगे, झुलस जाओगे। तो हनुमानजी बोले, आपसे मुझे शिक्षा लेनी है, ज्ञान लेना है। तो सूर्यनारायण ने कहा कि मेरा तेज इतना अधिक है कि तुम सह नहीं पाओगे। बोले, चिन्ता मत कीजिए तुम्हारा तेज मैं पी लेता हूँ और जगत मेरे तेज से प्रकाशित होगा तो वही तेज सूर्यदेव का हनुमानजी ने लिया है मुँह में। हनुमानजी के तेज से जगत प्रकाशित हुआ है। बड़ी सुन्दर कथा है, सूर्य को लगा क्या छोटा बन्दर का बालक हमसे ज्ञान लेगा। सूर्य ने कहा मैं तुमको शिक्षा नहीं दे सकता। बोले क्यों, बोले मेरी गति बहुत तेज है, तुम दौड़ नहीं सकते मेरे साथ। बोले तुम उल्टे दौड़ोगे तो गुरु की ओर पीठ करके दौड़ोगे, गुरु के तो सन्मुख रहा जाता है। हनुमानजी ने कहा कि चिंता मत कीजिए मैं आपकी ओर दृष्टि करके ही दौडूंगा, आपके घोड़े के रथों की गति से भी ज्यादा मेरी गति होगी और हनुमानजी की गति के सामने सूर्यनारायण के घोड़े भी थक गए। कथा ऐसी आती है कि चार दिन में जितना भी ज्ञान सूर्य के पास था सम्पूर्ण ज्ञान हनुमान् ने ले लिया। सूर्य के पास चार दिन बाद कुछ ज्ञान देने को बचा ही नहीं, सूर्यनारायण ने भगवान् से प्रार्थना की कि प्रभु यह कौन बालक आपने मेरे पास भेज दिया। मेरा सारा ज्ञान समाप्त हो गया। यह जो उत्तर देता है मेरे प्रश्नों के, उसके बारे में मैं स्वयं नहीं जानता। तो हनुमानजी के ज्ञान को भगवान् ने कुण्ठित कर दिया और जब हनुमानजी का ज्ञान कुण्ठित हो गया तो हनुमानजी ने भगवानराम का आह्वान किया। राम प्रकट हुए, हनुमानजी से रामजी ने कहा कि तुम्हारे ज्ञान को कुंठित करने वाला ऐसा जगत में न पैदा हुआ है न होगा लेकिन मैं भी साक्षात् ज्ञान हूँ, ब्रहम हूँ लेकिन मैं भी जब गुरुदेव से शिक्षा लेने गया था तो मैं भी उतने ही

प्रश्नों की, ज्ञान की चर्चा करता था जितना मेरे गुरुदेव आसानी से जानते हैं और बता सकते हैं। गुरुओं की कभी परीक्षा नहीं लेनी चाहिए तुम्हारे ज्ञान को कौन कुण्ठित करेगा। जाओ, गुरुओं की महिमा की रक्षा करना तुम्हारा धर्म है, कर्त्तव्य है। फिर श्रीहुनमानजी गए वह तेज, वह प्रताप जगत् जिसका वन्दन कर रहा है। आगे की चौपाई का दर्शन करें-

बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम-काज करिबे को आतुर॥

हनुमानजी विद्यावान हैं, गुणी हैं और अति चतुर हैं। **विद्यावान गुणी अति चातुर,** चातुर एक सामान्य शब्द आप सुनते हैं, बड़े विद्वान हैं, विद्यावान शब्द आपने यदा-कदा सुना होगा क्योंकि हनुमानजी के अतिरिक्त यह किसी के लिए प्रयोग नहीं हुआ, विद्यावान सुरक्षित शब्द है। विद्वान अलग होता है। विद्यावान अलग होता है। दोनों में जमीन-आसमान का अन्तर होता है। रावण विद्वान है, वेदों का पण्डित है, शास्त्रों का ज्ञाता है, ऋषि का पुत्र है, चारों वेदों का नित्य पाठ-परायण करता है और कराता है।

वेद पढ़ें विधि सम्भु सभीत। पुजावन रावन के घर आवें॥

ब्रह्मा जी सशरीर रावण के आँगन में बैठकर वेदों का पाठ करते थे। रावण स्वयं वेदज्ञ है। कल्पना कीजिए जिसके दस सिर हैं, दस सिर का मतलब है उसके भीतर दस गुनी प्रतिभा, योग्यता, विद्वता भरी है। दस शास्त्र जिसके कण्ठ में आ गए हों चार वेद और छह शास्त्र- **छहो शास्त्र सब ग्रन्थन को रस,** तो कितना प्रतिभाशाली रावण होगा, कल्पना करो। यहाँ तो कई बार एक खोपड़ी वाले भी पूरी दुनिया को घुमा रहे हैं। रावण के तो दस सिर थे। पूरे ब्रह्माण्ड को रावण घुमा देता था। कितना योग्य रहा होगा, पर जीवन मे आचरण में नहीं। चर्चा में तो ज्ञान है पर दिनचर्या में ज्ञान नहीं। जीभ पर तो ज्ञान बहुत है लेकिन जीवन में शून्य है। उच्चारण तो शास्त्रयुक्त करता है शुद्ध करता है लेकिन आचरण सदैव शास्त्र के विरुद्ध करता है। रावण भाषण

बहुत अच्छा देता है यह आवश्यक नहीं जिनके भाषण बहुत अच्छे हो उनका आचरण भी बहुत अच्छा हो। अनुभव ऐसा कहता है कि मंच पर जिनके भाषण बहुत अच्छे होते हैं मन उनके उतने ही खराब होते हैं। हो सकता है कि मेरी बात गलत हो, लेकिन अनुभव मुझे जो आया है वह ही मैंने बोला। आपका अनुभव इसके विपरीत होगा। आप अपने अनुभव का निर्णय करें। कई लोग मंच पर बहुत अच्छे लच्छेदार शब्द बोलते हैं लेकिन इतना ही जीवन उनका अंधेरे में उलझा होता है। आपने नाटक में सुना होगा कि एक बार हरिश्चन्द्र नाम का एक नाटक खेला गया। हरिश्चन्द्र का अभिनय एक सज्जन ने बहुत अच्छा निभाया, दर्शकों ने बहुत तालियां बजाई एक दर्शक थे उन्होंने हरिश्चन्द्र नामक अभिनय जिसने निभाया था उनका घर पूछ लिया कि वह कहाँ निवास करते हैं। तो हरिश्चन्द्र से मिलने के लिए यह व्यक्ति उनके घर गया, यह सज्जन बैठे बाहर अखबार पढ़ रहे थे। इसने जाकर प्रणाम किया उन्होंने पूछा कि आप कौन हैं, कहाँ से आए हैं, उन्होंने कहा कि मैं दर्शक हूँ, रात मैंने हरिश्चन्द्र जी का नाटक देखा था। मेरा मन किया कि मैं प्रकट जाकर उनका दर्शन कर आऊं। थोड़ी देर उनके चरणों में बैठूं तो मैं हरिश्चन्द्र जी से मिलने आया हूँ। हरिश्चन्द्र, जो अखबार पढ़ रहे थे मुस्कुराकर बोले कि हरिश्चन्द्र जी तो रात को ही अपने घर चले गए इस समय तो लल्लू राम बैठे हुए हैं। इनकी कोई सेवा हो तो बताओ। तो कई बार जैसा व्यक्ति मंच पर दिखाई देता है मंच के बाहर बिल्कुल विपरीत। रावण उसी श्रेणी में है, उसी कक्षा का विद्यार्थी है जिसको नाटक तो बहुत अच्छा आता है, वेश तो बहुत ज्ञानियों का बनाया है लेकिन जिसका स्वभाव बहुत विकृत है। रावण बहुत अच्छा भाषण देता है। रावण ने हनुमानजी से पूछा क्यों रे बन्दर, मैंने सुना है कि तू बहुत ज्ञानी है। हमने जो भाषण दिया है बता तुमको कैसा लगा। हनुमानजी ने कहा- रावण, पहले एक बात सुन लो। मुझे भाषण कैसा लगा इसे तो थोड़ी देर बाद में बताऊँगा, पहले मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो। रावण ने पूछा क्या प्रश्न है तुम्हारा? तो हनुमानजी ने कहा रावण, एक बात बताओ, कोई स्त्री नख से, सिर से स्वर्णआभूषणों से लदी हो, सजी हो लेकिन अगर उसने

वस्त्र धारण न किए हों तो कैसी लगेगी? रावण ने कहा क्या मतलब है तुम्हारा? तब हनुमानजी ने कहा रावण जो तुमने भाषण दिया है तुम्हारी वाणी उसी प्रकार की नग्न स्त्री के समान है-

राम नाम बिनु गिरा न सोहा। देखु बिचार त्यागि मद मोहा॥
बसन हीन नहिं सोह सुरारी। सब भूषन भूषित बर नारी॥
राम बिमुख संपत्ति प्रभुताई। जाइ रही पाई बिनु पाई॥
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं। बरषि गएँ पुनि तबहिं सुखाहीं॥

हनुमान जी ने कहा, रावण, भाषण तो तूने बहुत विद्वतापूर्ण दिया है, वाणी तो तेरी बहुत अच्छी है, लेकिन इसमें राम-नाम कहीं भी नहीं दिखाई दिया। जिसमें राम नहीं हो वह वाणी नहीं है विकार है, वह भाषण नहीं है वह तो बकवास है। ऐसी बकवास तू कितनी भी कर, कोई सुनने को तैयार नहीं होगा। तो रावण ने पूछा हम करें क्या, कोई उपाय है तुम्हारे पास? बोले हाँ, एक काम करो, बोले-

राम चरण पंकज उर धरहू। लंका अचल राज तुम्ह करहू॥

हनुमानजी ने कहा कि विद्वता तो तेरी ठीक है किन्तु तेरा हृदय खोखला है। इसमें भगवानराम के चरणों को स्थापित कर। रामनाम से तो रावण को बड़ी चिढ़ थी। एकदम क्रोध में आ गया बोला, अरे बड़ा ज्ञानी बनता है, एक बात बता। मैंने सुना है लोग तुझे **ज्ञानीनामग्रगण्यम** कहते हैं। हनुमानजी ने कहा लोग क्या कहते हैं यह तो मुझे मालूम नहीं, तू बोल, तू क्या कहना चाहता है? रावण ने कहा तू ज्ञान का मुझे उपदेश कर रहा है और तू बड़ा ज्ञानी है इतना बड़ा ज्ञानी होने के बाद तू मेरे सामने बंधन में खड़ा है। आखिर तेरा ज्ञान तुझे बंधन से मुक्त क्यों नहीं कर पा रहा है, यह बता तू बंधन में बँध कैसे गया जो तू मुझे भाषण दे रहा है। हनुमान् ने कहा रावण यह तूने बंधन में नहीं बाँधा। मेरी एक छोटी-सी भूल ने मुझे बंधन में बंधवा दिया। रात

मैंने तेरी लंका के घरों में प्रवेश करके देखा था तो इन आँखों ने लंका में होते हुए पाप को देख लिया और चूंकि मैंने गलती से ही पाप देख लिया तो उसके कारण आज पाप के बंधन में बंधना पड़ गया। तू तो इतना बड़ा ज्ञानी है और पाप में डूबा हुआ है अपनी दशा देख कि तेरी क्या दशा हो गयी है मैं तो बंधन से अभी ही मुक्त हो जाऊँगा पर तू अपने बारे में विचार कर। हनुमानजी ने रावण को माध्यम बनाया होगा लेकिन यह बात हमारे सबके लिए बोली जा रही है। हनुमानजी कहते हैं कि मैं पाप देखने नहीं गया था मैं तो जानकीजी का दर्शन करने गया था-

मंदिर-मंदिर प्रति करि सोधा। देखे जहँ तहँ अगनित जोधा।।
गयउ दसानन मंदिर माँहीं। अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं।।
सयन किये देखा कपि तेही। मंदिर महुँ न दीखि बैदेही।।

मैं तो जानकी माता की खोज में आया था लेकिन भूलवश मैंने पाप को देख लिया और यदि भूलवश भी पाप को देख लिया तब मेरे जैसे भी ज्ञानी को भी बंधना पड़ता है। जो पाप को भूलवश देखते नहीं बल्कि पाप में डूब जाते हैं वह कितने बड़े बंधन में बंधेंगे, उनके बारे में विचार करो। तो हनुमानजी ने रावण से कहा रावण तू अपना विचार कर, मेरी चिंता मत कर। हमने ऐसा सुना था जब अंगदजी रावण की सभा में गए थे तो रावण को अंगदजी घूर-घूर कर देख रहे थे तो रावण ने पूछा कि अरे बन्दर, ऐसे क्यों मुझको घूर कर देख रहा है। अंगदजी ने कहा मैं सर्कस के अजूबें को देख रहा हूँ। रावण ने कहा क्या मतलब है? अंगदजी ने कहा हनुमानजी ने मुझसे चलते समय कहा था कि लंका में बीस आँख और कानवाला अँधा और बहरा जन्तु रहता है तो उसे जरूर देखकर आना तो मैं उसे ही देख रहा हूँ लक्षण मिला रहा हूँ कि वही है या कोई और है।

बीसहुँ लोचन अंध। धिग तव जन्म कुजाति जड़॥

बीस आँखें, कल्पना करो कितनी बड़ी होंगी रावण की दृष्टि, कितनी विशाल रही होगी लेकिन इसकी दृष्टि नहीं इसको कुदृष्टि थी। यह माँ के साथ भी दुर्व्यवहार करता है। माँ के साथ भी भोग भोगने की आकाँक्षा रखता है। जिसकी खोपड़ी में शास्त्र भरे हों वह आचरण कैसा कर रहा है। कुदृष्टि का अर्थ है जो शुभ में भी अशुभ ढूँढ ले और बहरा तो पूरा का पूरा है। रावण किसी की सुनता है क्या? किस ने नहीं समझाया रावण को? भरी सभा में इसको भाषण दिया जा रहा है

तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला॥
ब्रह्म अनामय अज भगवंता। ब्यापक अजित अनादि अनंता॥
गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपा सिन्धु मानुष तनुधारी॥
जन रंजन भंजन खलु ब्राता। बेद धर्म रच्छक सुनु भ्राता॥
ताहि बयरु तजि नाइअ माथा। प्रनतारति भंजन रघुनाथा॥

विभीषण ने कितने तर्क दिए हैं: तात राम नहीं नर भूपाला वे अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड के नायक हैं। माल्यवान इसके मंत्री भी हैं इसके नाना भी हैं लेकिन रावण उनकी भी बात नहीं सुन रहा है। कदम-कदम पर मंदोदरी समझाती है कितने प्रमाण देकर। अरे तुम उनको साधारण मनुष्य समझ रहे हो जिसके दूत ने लंका को जलाकर राख कर दिया। अशोकवाटिका को उजाड़ दिया। आपके बेटे को मार दिया जिसने चार सौ कोस अथाह सागर पर पुल बाँध दिया, उसको आप मनुष्य समझते हैं और उनकी नारी का हरण करते हैं। आपकी मति मारी गयी है। हमारे बृज में गाते हैं। मन्दोदरि कह रही है-

रघुवर की सिया हरि लाये रे। मति मारी गयी रे भरतार।।
तीन लोक के नाथ राम से बैर बढ़ायौ सैंया।
खण्ड-खण्ड लंका के करि दें, राम लखन दोऊ भैया।। मति मारी०
सिन्धु पार करि कैसे आवें, ये तुमको अभिमान।
सूख जाँय पाताल लोक, जब छोड़ें अग्नि बाण।। मति मारी०
शक्ति का अवतार सिया हैं, नहिं साधारण नारी।
कहाँ गयौ बल गर्व तेरौ, जब वानर लंका जारी।। मति मारी०
सीता कूँ ले जाओ नाथ, रघुवर की शरण पधारौ।
शरणागत के रक्षक हैं, बचि जाइगौ वंश तिहारौ।। मति मारी०

इससे बड़ा कोई उपदेश होता है, भला, पर रावण की मति मारी गयी है और रावण की बीस आँखें भी अंधी। रावण कुछ भी न सुनने को तैयार है न मानने को तैयार, बड़ा विचित्र जानवर है। हनुमानजी ने कहा रावण बाकी तेरा सब ठीक-ठाक है लेकिन तेरे अन्दर प्राण नहीं हैं, प्राण तो राम होते हैं। कहते हैं यदि किसी की मौत हो जाए तो कहते हैं, उसके राम निकल गए। आपने देखा होगा कि मुर्दे को जब जलाने ले जाते हैं तो उस समय यही बोला जाता है राम-राम सत्य है, राम नाम सत्य है, सत्य बोलो गत है, सत्य बोलो गत है या सत्य बोलो मुक्ति है।

क्यों असत्य तो देह है इसको जलाने ले जा रहे हैं जो सत्य था वह निकल गया। राम नाम जो अमृत था वह तो निकल गया। अब तो यह मृत है इसका तो दाह संस्कार ही किया जा सकता है। रावण राम का नाम तो नहीं ले सकता, मृत जो होगा वह राम का नाम क्या लेगा। आपने कभी कबीरदास के बारे में सुना है,

एक बार कबीरदास जी काशी में गंगास्नान करने जा रहे थे। काशी में मुर्दे बहुत लाए जाते हैं। काशी मुक्ति की भूमि है इसलिए मुर्दों की भूमि हो गयी है। काशी में मैंने सुना है कि सब लोग मरने के लिए बैठे हुए हैं। एक मुर्दे को लेकर लोग जा रहे थे-

राम नाम सत्य है, सत्य बोलो मुक्ति है॥

कबीरदासजी ने एक आदमी से पूछा, भैया, यह क्या तमाशा जा रहा है। उस आदमी ने कहा बाबा, यह तमाशा नहीं है। एक दिन तुम्हारा भी होगा, चिन्ता न करो। अरे बताओ तो सही। बोले कि इस आदमी की मौत हो गई। उसको जलाइवे ले जा रहे संस्कार करवे। अच्छा-अच्छा तो यह क्यों बोल रहे हैं राम-नाम सत्य हैं उस आदमी ने कहा बाबा जब मरने के बाद जलावें ले जाए तो यही कहा जाता है क्योंकि सत्य से ही मुक्ति है। तो कबीरदासजी ने कहा फिर तुम क्यों बोल रहे हो यह स्वयं क्यों नहीं बोल रहा है। यही बोले न मुक्ति तो इसे ही चाहिए। इस आदमी ने कहा कि बाबा बड़े अजीब हैं आप इतने बूढ़े महात्मा दिखाई दे रहे हो और तुमको यह भी नहीं मालूम कि कोई मुर्दा कैसे बोल सकता है। कबीरदासजी ने कहा कि क्यों नहीं बोल सकता अगर इसे मुक्ति चाहिए तो इसे बोलना ही पड़ेगा, जिसे प्यास लगी है पानी उसी को माँगना पड़ेगा कि मुझे एक गिलास जल चाहिए। उस आदमी ने कहा कि यह नहीं बोल सकता क्योंकि यह मरा हुआ है। तब कबीरदास को समझ में आया कि जो मरा हुआ होता है वह राम-राम नहीं बोल सकता। राम का उल्टा ही मरा है जो राम नहीं बोलता वह मरा हुआ ही है। इसलिए जिंदा रहना चाहते हो तो हर समय बोलिए-

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्णा हरे कृष्णा कृष्णा कृष्णा हरे हरे॥

सत्य तो भगवान श्रीराम का नाम है। विभीषण स्वयं बोले हैं राम सत्य संकल्प प्रभु! राम निकलने के

बाद तो केवल शव ही बचता है और शव का जितना जल्दी दाह संस्कार करो उतना ही अच्छा है। लोग कहते हैं कि अरे मिट्टी क्यों खराब कर रहे हो। इसे जल्दी ठिकाने लगाओ। ऐसा किसी की मौत के बाद लोग कहते हैं। हनुमानजी ने जब लंका जला दी तो एक बार वानरों ने पूछा, हनुमानजी किसी को जलाना तो आतातायी का कार्य माना जाता है और आपने सारी लंका को जला दिया तो हनुमानजी ने कहा देखो अगर कोई अनाथ शव, लावारिस शव, लाशें पड़ी हों और उनका संस्कार करने वाला कोई न हो तो जो व्यक्ति, ऐसी संस्था जो इनका संस्कार करती हो उसको अच्छा कहेंगे या बुरा? बोले, उसको तो अच्छा कहेंगे, धन्यवाद देंगे। तो भैया मैंने तो लावारिस लाशों को ही जलाया है। मैंने एक-एक को टटोल कर देखा लेकिन किसी **मन्दिर महँ न दीख वैदेही** मुझे लंका के अन्दर कहीं भक्ति का दर्शन नहीं हुआ और मेरा यह सिद्धान्त है-

जिन्ह हरिकथा सुनी नहिं काना। श्रवन रन्ध्र अहिभवन समाना।।
जिन्ह हरिभगति हृदयँ नहिं आनी। जीवत शव समान तेइ प्रानी।।

श्रीहनुमानजी ने कहा कि वहाँ लाशें सड़ रही थीं जिनके हृदय में भक्ति नहीं, हरि नाम नहीं, वे लाशों के समान हैं। मैंने सोचा इतनी लाशें सड़ रही हैं इनका जल्दी से जल्दी दाह संस्कार कैसे किया जाए तो इन्द्र ने मेरी सहायता कर दी। चूंकि जब बड़ी संख्या में शव होते हैं तो सरकार के लोग पैट्रोल से उनका दाह संस्कार करते हैं। इन्द्र ने मेरी थोड़ी ज्यादा सेवा कर दी, उन्होंने एक साथ सबका काम कर दिया। रावण के दस सिर हैं वह विद्वान है। कई लोग रावण के सिर का भी बड़ा वर्णन करते हैं। दस सिर हो सकते हैं क्या? हर विद्व ान के दस सिर होते हैं। विद्वान माने जिसमें बुद्धि है। कितने रूप दिखाता है मन्दिर में जाएगा, अलग प्रकार से दिखाई देता है, ऑफिस में जाएगा तो अलग प्रकार से दिखाई देगा, पत्नी के साथ अलग प्रकार से दिखाई देगा, क्लब में अलग प्रकार से दिखाई देगा, दुकान में अलग प्रकार से दिखाई देगा। तो विद्वान का अर्थ ही

है जिसके दस सिर हों और हम अगर जानना चाहते हैं कि हमारे कितने सर हैं तो आप टटोलकर देखेंगे कि हमारे कितने सिर हैं तो आपको दिखाई दे जाएंगे कि मेरे कितने सिर हैं।

हम दिन भर सिर बदलते हैं, हम पूरे दिन चेहरा बदलने में लगे रहते हैं। आप अपने बारे में विचार करें, अपने चेहरों को देखिए। हमसे कोई कर्जा लेने आता है तो हमारा चेहरा अलग प्रकार का होता है। हम किसी से कर्जा लेने जाते हैं तो वहाँ हमारा चेहरा किसी और प्रकार का हो जाता है। हमारे लड़के को कोई लड़कीवाला देखने आता है तो हमारा चेहरा और प्रकार का हो जाता है और जब हम सब अपनी बेटी के लिए लड़का देखने जाते हैं तो हमारा वही चेहरा और हो जाता है। कितने अवसरों पर हमारे चेहरे बदलते हैं, यही रावण के दस सिर का अर्थ हो सकता है। विद्वान का अर्थ है जो बुद्धि से जीता है। विद्यावान का अर्थ है जो हृदय से जीता है, जो तर्क से जिए, जो शास्त्र से जिए वह विद्वान है और जो शास्त्र को जिए, वह विद्यावान है। मैं शास्त्र की निन्दा नहीं कर रहा लेकिन आपको शास्त्र कितना आता है यह बहुत महत्व की बात नहीं है। आप शास्त्रों को जीते कितना हैं यह महत्व की बात है। आप शास्त्र को जानते कितना यह आवश्यक नहीं। आप जो दिखाई दे रहे हैं सचमुच में आप वह नहीं हैं। आप जो जी रहे हैं आप वह हैं और विद्वान हमसे तालमेल बिठाता है, बुद्धि इसमें तालमेल बिठाती है। बुद्धि जीती कुछ है दिखाती कुछ है बुद्धि है तो कुछ, प्रकट कुछ और करती है। जिसके भीतर और बाहर अलग-अलग है, वह विद्वान है वह दोनों में तालमेल बिठाता है और अगर हम इस सत्य को स्वीकार कर लें कि जैसा मैं हूँ वैसा दिखाई नहीं दे रहा और जैसा मैं दिखाई दे रहा हूँ वैसा मैं हूँ नहीं। जिस दिन आप यह स्वीकार कर लेंगे उसी दिन आपके जीवन में परिवर्तन हो जाएगा लेकिन हम जीते कुछ हैं, दिखाते कुछ हैं। दो प्रकार का पाखण्ड है जिसको दम्भ का जीवन बोलते हैं। हमारा जो सत्य है वह जिया जा रहा है और जो असत्य है वह दिखाया जा रहा है। सच्चा क्रोध हमारे भीतर बैठा

है और झूठी करुणा हम बाहर दिखा रहे हैं। सच्ची ईर्ष्या हमको भीतर जला रही है और झूठी प्रशंसा हमारी बाहर आ रही है। सच्चा काम हमारे भीतर हिलोरें मार रहा है। झूठा सदाचार हम बाहर दिखाने की कोशिश कर रहे हैं। तो जो जिया जा रहा है वह सत्य है, जो दिखाया जा रहा है वह झूठा है। रावण कितना विद्वान रहा होगा। रावण की असलियत किसी को पता न लग जाए इसकी सावधानी कितनी रावण ने की थी। रावण ने जितने भवन लंका में बनाए थे बाहर से मन्दिर जैसे दिखाई देते थे। हनुमानजी जैसा ज्ञानी महापुरुष भी एक बार आश्चर्यचकित हो गया था। इतने मन्दिर, निश्चित रूप से भक्ति देवी का यहाँ निवास होगा और मन्दिरों में प्रवेश करने लगे तो दिखाई कुछ नहीं दिया-

मन्दिर-मन्दिर प्रति कर शोधा। देखे जहँ तहँ अगनित जोधा।।
गयउ दशानन मंदिर माहीं।। अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं।।
शयन किये देखा कपि तेही। मंदिर महँ न दीख बैदेही।।

मन्दिर में शोध किया, अनुसंधान किया, परीक्षण किया लेकिन कहीं भी मन्दिर दिखाई नही दिया, तो शास्त्रों को जानने की आवश्यकता नहीं है। जीने की आवश्यकता है। जीवन के प्रश्न तो हमें स्वयं हल करने पड़ेंगे न, आपने उत्तर देख कर लिख लिया तो सवाल सही नहीं हो जाएगा। सवाल को हल करना पड़ता है। शास्त्र को देखकर जियोगे तो पाखण्डी बनोगे। जीवन जैसा जीते हो उसे शास्त्र से प्रमाणित करो, जीवन शास्त्र के अनुकूल है या प्रतिकूल, कितने बड़े-बड़े शास्त्र के ज्ञाता, गीता जिनको कंठस्थ है लेकिन कभी वाणी पर गीत नहीं आया, गाली ही आयी। शास्त्र कहता है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः मंत्र का चौबीस घण्टे उच्चारण करनेवाला **सर्वे भवन्तु सुखिनः** की कामना करने वाला भाई से भी बंटवारे के मुकदमे लड़ता है।

ॐ द्यौः शान्तिनन्तरिक्षँ ॐ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिब्रह्म शान्तिः सर्वं ॐ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

वनस्पति तक की शान्ति की कामना करनेवाला चौबीस घण्टे पड़ौसी से गाली-गलौच करता है। शास्त्र जानने का विषय नहीं, शास्त्र जीने का विषय है। आपको कितना आता है यह विषय नहीं है। महाभारत में गुरु द्रोणाचार्य को ऐसा भ्रम था कौरव और पाण्डव जो बालक हैं इनमें अगर पढ़ाई में सबसे ज्यादा योग्य निकलेगा तो वह युधिष्ठिर होगा, ऐसा इनका अनुमान था। लेकिन जब बच्चों को पढ़ाना शुरू किया तो वह युधिष्ठिर सबसे फिसड्डी था। सब बालक पाठ करके आगे बढ़े और युधिष्ठिर एक ही पाठ पर अटके हैं, गुरु जी ने एक दिन कहा, बेटा, आगे बढ़ोगे या नहीं? सब बालक आगे बढ़ गए और तुम एक ही पर अटके हो। युधिष्ठिर ने कहा गुरु जी, जब एक पाठ याद हो जाए तब न दूसरे पर आगे बढ़ूँ। पाठ था सदा सत्य बोलो। बाकी बच्चों ने रट लिया **सत्यंवदधर्मंचर** सदा सत्य बोलो, धर्म के मार्ग पर चलो, दीनों पर दया करो, गुरुओं की सेवा करो, माता-पिता की सेवा करो, सबने रट लिया। युधिष्ठिर ने बोला, गुरु जी, जब सत्य बोलना आ जाए तब तो न, आगे का पाठ पढ़ूं। द्रोणाचार्यजी ने सोचा, जब सत्य को जीना आ गया तो फिर जीवन में दूसरे पाठ की आवश्यकता ही क्या। बाकी विद्यार्थियों ने सिद्धान्त रट लिए। धर्मराज युधिष्ठिर ने सत्य को रटा नहीं, सत्य को जिया, सत्य को जाना नहीं, जिया। महाभारत के युद्ध के बाद जब पाँचों पाण्डव स्वर्गारोहण की यात्रा पर चले हैं तो वसुधारा पार करके जब हिमालय में प्रवेश हुआ सब एक-एक कर पाण्डव बर्फ में गिरने लगे,

पहले द्रोपदी गिरी, नकुल गिरे, सहदेव गिरे, भीम गिरे, अर्जुन गिरे और स्वर्ग के द्वार तक चलते-चलते केवल युधिष्ठिर बचे या उनके साथ एक कुत्ता जो यात्रा कर रहा था वह पहुँचा। शास्त्रकार टिप्पणी देते हैं स्वर्ग के द्वार पर वह पहुँचा जिसने सत्य को जिया या वह पहुँचा जिसने सत्य का साथ दिया। भले ही वह कुत्ता ही था फिर भी वह स्वर्ग पहुंचा। स्वर्ग के द्वारपालों ने द्वार खोलकर स्वागत किया, आइए धर्मराज, आपका स्वागत है। युधिष्ठिर ने कुत्ते से कहा, चलो भाई अन्दर प्रवेश करो। द्वारपालों ने कहा, नहीं सरकार! केवल आप ही प्रवेश कर सकते हैं। कुत्ते के प्रवेश की अनुमति हमारे पास नहीं है। धर्मराज ने कहा आप अपना द्वार बंद कीजिए, जहाँ यह कुत्ता जाएगा, हम वहीं जाएंगे। द्वारपालों ने कहा- महाराज आप कुत्ते के लिए जिद कर रहे हैं। मनुष्यों को तो यहाँ प्रवेश नहीं मिलता। इस पर धर्मराज ने कहा अरे भाई जिन भाइयों ने मेरा अंत समय तक साथ नहीं दिया, मेरी पत्नी मेरा साथ नहीं दे पायी, जिसने अंत समय तक मेरा साथ दिया अगर मैं उसका साथ नहीं दे पाया तो मैं तो कुत्ते से भी गया गुजरा हो गया। आप द्वार बंद कर लें हम वापस लौट जाएंगे। इतना कहना था कि पूरा स्वर्ग ठहाका मार कर हँसने लगा। धर्मराज को आश्चर्य हुआ कि आखिर मेरी बात पर इतना हंसे क्यों और पीछे मुड़कर देखा तो कुत्ते की जगह भगवान् नारायण मुस्कुराते हुए खड़े हैं। बोले, धर्मराज, स्वर्ग में प्रवेश करो, स्वर्ग तुम्हारे स्वागत को तैयार है। मैं तो केवल यह जानने के लिए तुम्हारे साथ था कि तुमने सिद्धान्त को जिया है या जाना है। सत्य जानने का विषय नहीं है, बहुत लोग शास्त्रों के ज्ञाता हैं किन्तु वे विद्वान हैं, विद्यावान नहीं हैं। विद्यावान वे हैं जिसके मष्तिस्क का ज्ञान उसके आचरण में उतर चुका है। जिसके उच्चारण का ज्ञान आचरण में आ गया है। जीवन की चर्चा से निकलकर जीवन चर्या में आ चुका हैं। जिसके हृदय में ज्ञान बैठा है वो विद्यावान है, जिसकी बुद्धि में ज्ञान बैठा है वह विद्वान है। रावण विद्वान है, रावण के दस सिर हैं, दस गुनी विद्वता, दस गुनी ताकत, दस गुनी क्षमता, दस गुनी बुद्धिमता, दस गुनी चालाकी और दस गुनी चतुराई, लेकिन आचरण कैसा करता है। पाँच सिर इधर और पाँच सिर उधर इसका

अर्थ क्या है? रावण का जो सत्य है वह बाकी लोगों के लिए तो है, अड़ोस-पड़ोस के लिए है, इधर-उधर के लिए है लेकिन वह ज्ञान अपने भीतर नीचे की ओर नहीं उतर रहा। चारों ओर प्रकाशित हो बिखर रहा है और हम सबका लगभग-लगभग यही हाल है। सब लोगों के लिए हम ज्ञान बघारेंगे। बालकों से लेकर समाज परिवार सभी को उपदेश देंगे लेकिन हम स्वयं सड़ी हुई कीचड़ में ही सड़ते रहेंगे। जानकीजी ने भी हनुमानजी से यही कहा था, बेटा फल खाने जा रहे हो, एक काम करना। क्या करूं? माँ बोलीं: **रघुपति चरण हृदय धरी तात मघुर फल खाहु,** भगवान् के श्री चरण हृदय में चाहिए। भगवान् के चरणों की चर्चा हमारी वाणी में तो रहती है। भगवान् नाम वाणी पर तो बैठा है पर हृदय में भोग है, वासना है। उपासना हमारी देह में है लेकिन हृदय में तो वासना की गंध भरी है। इसलिए आज हनुमानजी ने रावण को कहा, रावण तुम्हारा सब कुछ ठीक है अगर एक काम और कर दो क्या-

राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राजु तुम्ह करहू॥

भगवान् के श्रीचरणों को, अपने हृदय में धारण करो फिर इस लंका के अचल अधिपति रहोगे। तो विद्वान वह है जो दूसरे में दोष देखता है और उसकी चर्चा करता है। विद्यावान वह है जो अपने भीतर दोष ढूंढता है। साधु अपने भीतर दोष ढूँढता है। सांसारिक दूसरे के अन्दर दोष ढूँढता है यही अन्तर है और कोई नहीं। श्रीभरतजी जब भी देखे-

मोहि समान को पाप निवासू। जेहि लगि सीय राम बनवासू॥

साधु जब देखेगा अपने भीतर देखेगा, बुद्धिमान, विद्वान दूसरे के दोषों का वर्णन करेंगे। देखो एक सिद्धान्त है: जब अपने दोष न देखने हों तो दूसरे के दोष देखने में व्यस्त रहना चाहिए। अपने दोष को देखने की फुर्सत कहाँ है हमको? जितने भी मंचों पर भाषण देते हैं उनके भाषण सुनिए, भ्रष्टाचार बहुत बढ़ रहा है। अब यह

नहीं समझ में आ रहा कि भ्रष्टाचार कर कौन रहा है। हर व्यक्ति बोल रहा है कि भ्रष्टाचार बहुत है। मुझे तो ऐसा लगता है कि मंचों पर बोलनेवाले भी यदि भ्रष्टाचार छोड़ दें तो इस देश में रामराज आ जाएगा। जो भ्रष्टाचार करता ही नहीं है उसको बोलने की भी आवश्यकता नहीं है। बोलता वही है जो भ्रष्ट है। मैं औरों के भ्रष्टाचार पर बोलता रहूँगा तब तक कोई मेरे भ्रष्टाचार को देखने की कोशिश नहीं करेगा। जो दूसरे को उपेदश देता है वह कभी उपदेश जीता नहीं, उसी को रावण कहते हैं। रावण ऐसा ही विद्वान है। श्रीहनुमानजी विद्यावान हैं शास्त्र को ढो नहीं रहे हैं, जी रहे हैं। शास्त्र उनके रग-रग में जीवन की चर्या में समाया हुआ है। जो शास्त्र को जीता है वही गुणी है। गोस्वामीजी ने गुणी की मानस में परिभाषा दी है-

सोई गुणज्ञ सोई बड़भागी। जो रघुबीर चरण अनुरागी॥

गुणी कौन है? जो रघुवीर के चरणों में अनुराग करते हैं वे गुणी हैं जो भगवान् का भजन करते हैं-

पर मन पर धन हरण को वैश्या परम प्रवीन।
तुलसी सोई चतुरता रामभक्ति जो लीन॥

चतुरता के कई अर्थ हैं। असली चतुरता तो यही है कि सब कुछ छोड़कर अपना भजन करो उसको चतुर कहते हैं। कहते हैं न, बहुत चतुर आदमी है केवल अपने काम पर इसकी निगाह है। तो चतुर का यही अर्थ है कि सारे संसार के झंझटों में भी जिसकी निगाह केवल अपने भजन पर हो। गोस्वामीजी ने कहा है कि-

कठिन काल मल कोस। जोग न यज्ञ ज्ञान तप॥
परिहरि सकल भरोस। रामहि भजहि ते चतुरनर॥

इस कठिन काल में भी सारे झंझटों से निकलकर जो अपना भजन करता है वही चतुर है। हमारी चतुराई केवल स्वार्थसिद्धि में लगी है इसलिए वह निन्दनीय हो गयी। चतुराई शब्द तो वन्दनीय है। चतुर का अर्थ है

जो चतुरविद् पुरुषार्थ में डूबा हुआ है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों के लिए जो डूबा है वही चतुर है। हम जगत् में बहुत चतुर हैं, भगवान् बहुत सीधे हैं। दुनियां से काम करने के लिए इतनी चतुराई दिखाएंगे 'येन केन प्रकारेण' हमारा काम बन जाए लेकिन भगवान् के भजन के लिए उसमें सुविधा ढूढेंगे। समय का रोना रोयेंगे, परिस्थिति का रोना रोयेंगे। भजन तो करना चाहते हैं। भजन की परिस्थिति नहीं है। सुविधा नही है, समय नही है, शरीर की क्षमता नहीं है, तबियत ठीक नहीं रहती, यही बिगड़ी हुई तबियत दिनभर रुपए कमा सकती है, क्लब में नाच सकती है, दुनियां में मटरगश्ती कर सकती है लेकिन भगवान् का भजन नहीं कर सकती तो हम जगत में चतुर हैं एक संत सुनाते हैं मनुष्य कैसा चतुर होता है-

एक व्यक्ति हनुमानजी के मन्दिर गया, कोई सन्तान नहीं थी। तो हनुमानजी से आराधना की। हे हनुमानजी! आप **दुर्गम काज जगत के जेते सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते**- सब दुर्गम आपकी कृपा से सुगम होता है। कृपा करें मुझे एक सुन्दर सा बेटा अगर मिले तो मैं आपको हीरों का हार चढ़ाऊं। पुजारी ने कहा कोई चिंता मत कीजिए, हम आपकी ओर से अनुष्ठान करेंगे। पुजारी को भी लोभ था हीरे का हार चढ़ेगा तो अपने को ही मिलेगा। चालीस दिन का पाठ किया। संयोग से, सौभाग्य से इनको पुत्र पैदा हो गया। बेटे का नाम रखा हीरालाल। छोटे बच्चों को हीरालाल कोई न बोल। सभी बोलें ओ हीरा-हीरा बोले, पुजारी को पता लगा कि सेठजी को पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। बड़े खुश हुए कि अब तो जरूर हीरे का हार चढ़ेगा। तीन महीने का बालक हो गया, पत्नी ने कहा चलो जी मन्दिर में पूजा कर आएं, मनौती तो पूरी हो गयी। बोले रुक, अभी थोड़ा बालक और बड़ा होने दे। दो साल का हो गया। पति ने कहा पाँच वर्ष का हो जाएगा तो मुण्डन के बाद चलेंगे। बालक पाँच वर्ष का हो गया तो पत्नी ने फिर कहा, हमने हनुमानजी के वहाँ जो बोला हुआ है वह पूरा करना है, देवता के सामने मनौती जो रखी जाती है वह पूरी की जाती है अन्यथा अनिष्ट हो सकता है। चलिए न अपने यहाँ कमी किस बात की है। इसी बालक के नाम पर एक हीरे का हार चढ़ाने को कहा है तो वह चढ़ा दें।

आदमी तो आदमी है जब तक काम पूरा नहीं होता प्रार्थना के और भाव होते हैं, काम पूरा होते ही प्रार्थना के और भाव हो जाते हैं। पत्नी ने बहुत आग्रह किया इसलिए पत्नी को धर्मपत्नी कहा जाता है। पति का धर्म से क्या सम्बन्ध? एक दिन तय हो गया, अच्छा चलो हीरे का हार चढ़ाएं। पुजारी को भी समाचार मिल गया, सेठजी आ रहे हैं हीरे का हार चढ़ाने। मन्दिर धोया, चोला चढ़ाया, अगरबत्ती जलाई, पुष्पमाला चढ़ाई, पत्नी से बोला आज तो हमारे द्वार खुलने वाले हैं। आनन्द होगा, हीरे का हार, चाहे अंगूठी, या नथ जो भी बनवाना चाहो। सो अब आगे पूजा-सब हो गयी, माथा टेक दिया बार-बार पत्नी भी देखे, पुजारी भी देखे, सेठजी के हीरों का हार, पत्नी ने कहा हीरे का हार चढ़ाओ। लड़के के गले में सुन्दर फूलों का हार पहनाकर ले गए थे और वह उतार कर हनुमानजी के चरणों में चढ़ा दिया। बोले यह लो हीरे का हार। बोले क्या मतलब? बोले हीरा ही तो है लड़का और इसी का हार तो मैं चढ़ा रहा हूँ। गले की माला चढ़ाकर चले गए। भजन में चतुराई, जीवन में चतुराई, दूसरे का पैसा कैसे अपनी जेब में आए इसी चतुराई में हम डूबे हैं। जो मन के विकारों को छोड़कर भजन में लगा दे वही मन चतुर है। हम लोग उसी को चतुर मानते हैं जो जैसे-तैसे पैसा कमा ले। देखो वह कितना चतुर व समझदार है कहाँ से कहाँ पहुंच गया। हनुमान् गुणी चातुर का अर्थ है सब कुछ छूट सकता है किन्तु प्रभु की सेवा, प्रभु का सिमरन नहीं छूट सकता और रावण को समझाया है हनुमानजी ने बड़ी चतुराई से। रावण किसी की बात सुनने को तैयार नहीं, पत्नी की, परिवार की, सुनने को तैयार नहीं, मानस में तो संकेत है, कुम्भकरण ने समझाया, मेघनाथ ने समझाया, उनकी भी सुनने को तैयार नहीं। हनुमानजी ने चारों प्रकार से रावण को समझाया, साम, दाम, दण्ड, भेद।

साम माने समझाकर, हाथ जोड़कर **विनती करहुँ जोरि कर रावण, सुनहु मान तजि मोर सिखावन।।** मन्दोदरी ने समझाया, विभीषण ने समझाया माल्यवंत, मारीच, कालनेमि, हनुमानजी व अंगद जी आदि सभी ने समझाया। दाम यानि लोभ से समझाया। अरे रावण-

राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राजु तुम्ह करहू॥

नहीं माना। दण्ड से, भय से समझाया अगर तुम नहीं मानोगे तो-

संकर सहस विष्णु अज तोही। सकहिं न राखि राम कर द्रोही॥

फिर तुमको ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी नहीं बचा पाएंगे, तुम रामद्रोह छोड़ दो और भेद से कपट से भी समझा दिया। हनुमानजी ने सारी लंका जलाकर राख कर दी केवल **एक विभीषन, कर गृह नाहीं**। रावण और विभीषण में भेद डाल दिया और परिणाम यह हुआ कि अंत में विभीषण रावण को छोड़कर राम की शरण में आ गया। वैसे इसमें बुराई नहीं है। अज्ञानतावश, मानसिक कमजोरी के कारण अगर कोई दुर्जन के चंगुल में सज्जन फँस गया तो येन-केन प्रकारेण दुर्जन के चंगुल से निकालकर परमात्मा के सम्पर्क में ले आना कपट नहीं है बल्कि नीति है तो दुर्जन से सज्जन को हनुमानजी ने दूर कर दिया। रावण को जब यह पता लगा कि पूरी लंका जल गयी केवल विभीषण का घर बचा है तो रावण का माथा उसी समय ठनक गया था कि यह विभीषण लगता है इस वानर से अन्दर ही अन्दर मिला हुआ है। इसी ने उसे मृत्युदण्ड से बचाया है। **नीति विरोध न मारिय दूता॥** इसी ने बोला था **आन दण्ड कछु करिअ गोसाँई॥** और उसी आग को रावण हृदय में लिए बैठा रहा। अंत में रावण ने विभीषण पर लात का प्रहार कर दिया। जा, उसी तपस्वी की शरण में जा। तो साम, दाम, दण्ड, भेद चारों नीतियों का जो जीवन में पालन करता हो वह चतुर नहीं, अति चतुर है और **रामकाज करिबे को आतुर॥** हनुमानजी राम काज करिबे को आतुर। हम सब कामकाज करिबे को आतुर। जब देखो यही सुनने को मिलता है, बड़े जरूरी काम से जा रहा हूँ। कहाँ गए थे? बड़े जरूरी काम से। कहाँ जा रहे हो, बड़े जरूरी काम से। भई न रात, न दिन, न सुबह, न शाम चौबीस घण्टे काम ही काम। श्रीहनुमानजी रामकाम में और हम कामकाज में। श्रीहनुमानजी रामकाज करिबे को आतुर और हम कामकाज करिबे को

आतुर। देखो रामकाज और कामकाज ये कोई विरोधाभाषी नहीं इन दोनों में कोई विरोध नहीं है। दोनों बिल्कुल एक हैं कई बार हम लोग कहते हैं काम काज में डूबे हैं, राम काज कैसे कर पाएंगे इनको अलग-अलग मत समझिए। भजन करने में सब कुछ छोड़कर बैठ जाने को भजन नहीं कहा है। यह तो आलस्य है कुछ काम नहीं है तो कहते हैं कि हम भजन कर रहे हैं। हम कई साधुओं को देखते हैं कि वे आराम कर रहे हैं कहते हैं हम तो अनुष्ठान कर रहे हैं। बढ़िया माल खाना हमारा अनुष्ठान चल रहा है। हमारा व्रत चल रहा है। यह चतुराई है, यह चालाकी है। भजन माने पलायनवाद नहीं, आलस्य नहीं है। सब कुछ छोड़ कर किसी कमरे में कैद हो जाना भजन नहीं है। भजन का अर्थ है सब कुछ भगवान् से जोड़ देना। यही रामकाज है, सुग्रीव का राजतिलक करने के बाद सुग्रीव से भगवान् ने यह नहीं कहा था सुग्रीव माला लेकर बैठ जाना। अपितु क्या कहा था? सग्रीव!

अंगद सहित करेहु तुम्ह राजू। संतत हृदयँ धरेहु मम काजू॥

भगवान् ने कहा कि हे सुग्रीवजी शरीर से कामकाज करना और हृदय से रामकाज का सुमिरन करना, लेकिन सुग्रीव कामकाज में डूब गया। **रामकाज सुग्रीव बिसारा॥** हम सबकी यही स्थिति है। हम काम-काज में इतने डूब जाते हैं कि राम काज को बिसार देते हैं। शरीर का काम है कामकाज और मन का काम है रामकाज। लेकिन हम भजन के लिए फुर्सत देखते हैं। अरे भाई साधना तो संकल्प से होती है। साधना सुविधा से नहीं होती, संकल्प से होती है। क्योंकि संकल्प से सोई हुई शक्तियां जगती हैं। संकल्प चाहिए इतना मुझे करना है। आपने देखा होगा कि सुविधा से नहरें निकला करती हैं। उनका सर्वे होता है, उनका नक्शा बनता है, उनकी खुदाई होती है, उनकी पटरियां बनाई जाती हैं। लेकिन सुविधा से निकली नहर सौ-दो सौ-तीन सौ किमी जाकर खत्म हो जाती है। नदियां संकल्प से निकलती हैं, नदी का संकल्प है कि मुझे महासागर से मिलना है। उसको यह भी मालूम नहीं है कि महासागर किस दिशा में है मार्ग कौन सा है, नक्शा व एटलस लेकर नहीं

चलती नदी। छोड़ दिया हिमालय, बाबुल का घर छोड़ दिया, चली प्रियतम से मिलने के लिए। भरोसा है, यही उसका संकल्प है कि मुझे मिलना है। परिणाम क्या होता है बड़े-बड़े हिमालय के शिखरों को चूरण करती हुई, बड़े-बड़े रेगिस्तानों को व टीलों को ढहाती हुई बड़ी-बड़ी झीलों को भरती हुई एक दिन नदी महासागर से मिल जाती है। जीवन में संकल्प था कि मार्ग में आने वाली विघ्न बाधाओं के कारण भी रुक नहीं पाई और यह भी नियम है कि संकल्पवान के मार्ग में बाधाएं नहीं आतीं, विघ्न नहीं आते तब तक कार्य में तेजी नहीं आती। नदियों के मार्ग में पहाड़ जैसे विघ्न, बाधाएं न आएं तो नदियों के वेग कम हो जाएं उनको टक्कर मार कर, तोड़कर जब आगे बढ़ती है तो उनमें वेग बढ़ता है। तो साधना का संकल्प चाहिए और संकल्प पूरा होता है नियम से। संकल्प माने नियम। इसलिए इन साधुओं की भाषा सुनो और नित्य नियम पर चलो। जब सारी सृष्टि नियम से चलती है, सूर्य नियम से, चन्द्र नियम से, प्रकृति नियम से, वर्षा नियम से, हर चीज के नियम हैं तो साधना का क्या कोई नियम नहीं होना चाहिए? साधना का भी नियम चाहिए। नियम से ही निष्ठा पैदा होती है, निष्ठा से रुचि बनने लगती है, रुचि से आसक्ति होने लगती है, आसक्ति से भाव बनने लगता है, भाव ही परमात्मा के प्रेम में परिवर्तन करता है यह पूरी की पूरी यात्रा है, पूरी की पूरी सीढ़ी है। इसलिए कोई न कोई नियम ये जो संत लोग, साधु लोग, साधक लोग नियम बना देते हैं कि जब तक इतना पाठ नहीं कर लेंगे तो मौन रहेंगे, तब तक चाय, जलपान कुछ भी स्पर्श नहीं करेंगे। तो कोई न कोई नियम होना चाहिए और कोई नियम पालन तब होता है जब नियम छोटा होता है। जितना नियम छोटा होगा उतना ही आनन्द से उसका पालन होगा। सो रहे हों खर्राटे लेकर तो नियम कौन पूरा करेगा? अपने को ही पालन करना पड़ेगा तो जीवन में नियम चाहिए, साधना का संकल्प चाहिए। फिर उसके लिए सातत्य का स्वभाव भी चाहिए जो नियम लिया है अखण्ड, सतत् चाहिए। साधना का नियम, साधना अगर एक दिन भी छूट गयी तो वहीं से शुरू करनी पड़ती है जहाँ से प्रारम्भ की थी। साधना हम कुछ दिन तो करते हैं, कुछ दिन छोड़ देते हैं और फिर वही

उठक-बैठक दो दिन चले, तीन दिन वापस हो गए। ऐसा नहीं हो। और जो संकल्प जीवन में लिया है उसकी सुरक्षा भी चाहिए। हमने पौधा तो बहुत अच्छा लगाया लेकिन बाड़ लगाना भूल गए, बच्चों ने तोड़ दिया, गाय, भैंस व बकरी कुतर गयी। जल नहीं दिया सूख गया, फिर माथा पकड़कर रोते रहे। अरे राम-राम इतना महंगा पौधा लगाया था, सूख गया। सुरक्षा चाहिए पर उसकी सुरक्षा नहीं कर पाते। कैसा स्वभाव हो गया जैसे हम अपने घर में प्रतिदिन झाड़ू लगाते हैं, बुहारी लगाई, कूड़ा निकाला और कूड़ा बाहर फैंक दिया तो कूड़ा तो घर के बाहर निकल गया पर खिड़की-दरवाजा बंद करना भूल गए तो हवा का झौंका आया और वही कूड़ा फिर घर में आ गया फिर बुहारी लगाई फिर कूड़ा बाहर फेंका फिर खिड़की-दरवाजा बंद करना भूल गए फिर झौंका आया फिर कूड़ा अन्दर। पूरी जिन्दगी हमारी बुहारी लगाते कूड़ा फेंकने में निकल जाएगी और अंत समय हमारे एक हाथ में बुहारी और एक हाथ में कूड़ा ही रहेगा। दिन में हम चार सीढ़ी चढ़ते हैं और रात को पाँच सीढ़ी नीचे उतर जाते हैं। दिन में गीता पाठ कर लिया, रात्रि को मनोहर कहानी पढ़ ली। प्रातःकाल मन्दिर हो आए और सायंकाल मदिरालय हो आए। सुबह सत्संग कर लिया सायंकाल सिनेमा देख लिया। दिन में चढ़े, रात में गढ्ढे में उतर गए तो जीवन पूरा का पूरा घसीटन बन गया। दो नाव में सवारी, भोग भी चाहते हैं, भगवान् भी चाहते हैं। स्वामी रामतीर्थजी के जीवन की बड़ी मार्मिक घटना है। देखो सीखना हो तो छोटे से भी सीखा जा सकता है और न सीखना हो तो गुरु की वाणी भी ठुकराई जा सकती है। उसमें भी कुतर्क किया जा सकता है। सती सीखने को तैयार नहीं, शंकर जी की वाणी में हजार तर्क कर दिए कि कैसे भगवान् हैं? यह भगवान् नहीं हो सकते हैं ऐसा है वैसा है। और जिसको सीखना है वह चपरासी से भी सीख सकता है। जिसको नहीं सीखना है वह सद्गुरु से भी क्या सीखेगा? जब स्वामी रामतीर्थ के मन में वैराग्य जागा तो उस समय वह लाहौर विश्वविद्यालय में प्राध्यापक थे। एक इनकी बिटिया थी तो घर छोड़ें तो बिटिया का क्या होगा, बंगले का क्या होगा, परिवार का क्या होगा, पत्नी का क्या होगा? भीतर से हिलोरे हैं, मन उहा पोह में

था, प्रात:काल बंगले में टहल रहे थे। कई बार आपने देखा होगा कि बड़े लोग किसी चिंता में डूबे टहलते हैं तो निगाह नीचे को, अपनी धुन में इधर-उधर टहल रहे थे। मेहतरानी बुहारी लगाने आयी थी उस समय थोड़ा छुआछूत भी ज्यादा था तो अब इधर झाड़ू लगाए या उधर-उधर झाड़ू लगाए तो बड़ी मुश्किल कि झाड़ू कैसे लगाए। चूंकि उनके ऊपर धूल जाती है। जब बहुत देर हो गयी। यह इधर आएं तो मेहतरानी उधर बचे, बाबूजी कैसे बचें। मेहतरानी बोली बाबूजी एक तरफ हो जाओ, मेहतरानी ने तो अपने हिसाब से कहा कि आप एक तरफ हो जाओ तो मैं झाड़ू लगाऊं। मेहतरानी ने तो वैसे ही स्वाभाविक बोल दिया कि बाबूजी एक तरफ हो जाओ तो एकदम हृदय में चोट कर गई मेहतरानी की बात और उसी समय फिर बंगले में अन्दर नहीं गए। बंगले को आँख उठाकर देखा भी नहीं। बंगले के बाहर निकल गए क्योंकि मेहतरानी ने मार्गदर्शन दे दिया। बाबूजी एक तरफ चलो चाहे इधर चलो चाहे उधर चलो तो जीवन का निर्णय, उसकी सुरक्षा, उसका संकल्प, ,उसका सातत्य तब जीवन में साधना होती है। एक निर्णय करो कि हमको किधर जाना है। स्वर्ग जाना है तो फिर स्वर्ग की चिन्ता, स्वर्ग का ही वातावरण, स्वर्ग का ही सुमिरन फिर नरक जो होगा सो होगा हमको नहीं मालूम। नरक भोगना हो तो पूरा भोगो। स्वर्ग अगले जन्म में देखेंगे लेकिन दोनों पैर रहेंगे तो घसीटन हो जाएगी। जैसे जिस गाड़ी में आगे-पीछे दोनों ओर बैल जोड़ दो चलेगी क्या गाड़ी? वहीं की वहीं रहेगी। दूसरी घटना यदि हमारे वृन्दावन में आप आए होंगे तो रंगजी के मन्दिर के पास दूसरा मन्दिर है लाला बाबू का। इनके जीवन की भी बड़ी विचित्र घटना है। यह कोलकाता के राजा थे। सायंकाल लॉन में बाहर बैठे थे। धोबी और धोबिन कपड़ा धोकर आए। अन्दर धोबी कपड़े की गठरी लेकर गया तो गठरी खुलवा कर गिनवानी पड़ती है। देर हो गयी। उस समय हावड़ा का पुल नहीं बना था, नाव भी बहुत कम थीं। बहुत देर हो गयी तो धोबिन ने बड़ी जोर से बाहर से बोला **दिन गैलो पोरे चौल।**

लाला राजा बाबू ने पूछा तुम इनसे क्या कहती हो? तो वो घबरा गयी। राजा साहब, मैंने तो कोई ऐसी

बात बोली नहीं, बोलो-बोलो अभी क्या बोल रही थी। बोली मैंने तो ऐसा कुछ भी नहीं बोला, बोले अभी-अभी तुम क्या बोल रही थी। बोली हमारा जो मानुष है वह अन्दर गया है। बहुत देर हो गयी अभी तक आया नहीं इसलिए कह रही थी कि **दिन गैलो पोरे चौल।**

दिन जानेवाला है पार जाना है कैसे चलोगे। रात हो गई। इतना सुनना था लालाबाबू उसी वक्त ट्रेन पकड़कर वृन्दावन आ गये। दिन जा रहा है पार कब उतरोगे जीवन जा रहा है। कब पार उतरोगे। हम कामकाज को तो आतुर हैं पर रामकाज को आतुर नहीं साधना में संकल्प चाहिये, सातप्य चाहिए और सुरक्षा चाहिये। रामकाज करिवे को आतुर। राम का काज क्या है?

निसिचर हीन करउँ महि। भुज उठाइ प्रण कीन्ह॥

राम का एक ही कार्य है राक्षसों का विनाश करना, राक्षसी प्रवृत्ति का नाश करना और इसी रामकाज में हनुमानजी लगे हुए हैं। पूँछ में लपेट-लपेट कर राक्षसों को मारना यह हनुमानजी का एकमेव जीवन का कार्य था, भगवान् का भजन करना हनुमानजी का एकमेव जीवन का कार्य था। आगे की चौपाई देखे-

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, प्रभु माने जो भी भगवान् हो भगवानराम, भगवान कृष्ण, भोलेनाथजी जो भगवान् की श्रेणी में हो वे प्रभु हैं। हनुमानजी की रुचि है जहाँ-जहाँ भगवान् की कथा होती है-जहाँ-जहाँ कीर्तन होता है। वहाँ-वहाँ श्री हनुमान जी बैठकर सुनते है।

यत्र-यत्र रघुनाथ कीर्तनम्। तत्र-तत्र कृत मस्तकाञ्जलिम्।
वाष्पवारि परिपूर्ण लोचनम्। मारुतिं नमत राक्षसान्तकाम्॥

हमने सुना है एक बार श्रीमद्बल्लभाचार्य महाराजजी चित्रकूट आए, श्रीमद्भागवत सप्ताह पारायण करने,

तो हनुमानजी का आह्वान किया और यजमान बनाया, हनुमानजी प्रकट हो गए। बल्लभाचार्यजी ने कहा कि हम आपको श्रीमद्भागवत सुनाना चाहते हैं। हनुमानजी ने कहा मैं आपके श्रीमुख से एक बार श्रीरामकथा सुनना चाहता हूँ। बल्लभाचार्य ने बैठकर श्रीराम-कथा सुनाई। हनुमानजी ने कहा आपने इतनी सुन्दर कथा सुनाई, मैं यजमान बना हूँ और जब तक यजमान कथावाचक को दक्षिणा न दे उसे पुण्य भी नहीं मिलता, बोलिए आपको क्या दक्षिणा दूँ? महाराज ने कहा एक ही दक्षिणा दे दीजिए। बोले क्या? बोले मन्दाकिनी के तट पर बैठकर आप एकबार मेरे मुख से श्रीमद्भागवत सुन लीजिए बस मेरी यही दक्षिणा है। फिर हनुमानजी ने श्रीमद्भागवत सुनी-

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया॥

देखो कथा जरूर सुनो। मैं हमेशा कथा सुनने का आग्रह करता हूँ चूंकि जो हम सुनते हैं वह हमारी सम्पदा बन जाती है, जो हम सुनते हैं वह हमारे भीतर बैठ जाता है और जब तक आप किसी के बारे में सुनोगे नहीं, तब तक आप उसे के बारे में जानोगे नहीं तो आप उससे मिलोगे कैसे? हम सब भगवान् से मिलना चाहते हैं लेकिन भगवान् को जानें, तब न मिलें। अपरिचित से कैसे मिलें? भगवान् को यदि जानना है तो भगवान् की कथा सुनें। गोस्वामीजी ने सिद्धान्त लिखा है-

जानें बिनु न होई परतीती। बिनु परतीती होइ नहिं प्रीती॥
प्रीति बिना नहिं भगति दृढ़ाई। जिमि खगपति जल कै चिकनाई॥

पहले सुनो **श्रवणम् कीर्तनम्!** श्रीमद्भागवत की नवधा भक्ति में श्रवण को पहला स्थान दिया है।

जिन्ह के श्रवण समुद्र समाना। कथा तुम्हारी सुभग सरि नाना॥
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे। तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गृह रुरे॥

वाल्मीकिजी ने भी कहा है कि भगवान् की कथा सुनना प्रभु मिलन का साधन है। जिनको भी भगवान्

का साक्षात्कार हुआ है, कथा के द्वारा ही हुआ है। गोस्वामीजी को मिले हैं तो कथा से ही मिले हैं। हमको आपको भी मिलेंगे तो कथा से ही मिलेंगे। विभीषण इसके उदाहरण हैं। विभीषण जी जब भगवान के पास गए तो भगवान ने पूछा कि मेरे पास आना तो इतना सरल नहीं है तुम यहाँ तक आ कैसे गए तो विभीषणजी बोले कि प्रभु आपकी मंगलमय मधुर कथा को सुनकर-

श्रवन सुजसु सुनि आयउँ, प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि-त्राहि आरति, हरण-सरन सुखद रघुबीर॥

आपकी कथा सुनकर आया हूँ। कथा किसने सुनाई बोले तब **हनुमंत कही सब रामकथा।** जब हनुमंत आए थे न, तभी उन्होंने आपकी कथा सुनाई। ठीक है कथा तो सुनाई थी लेकिन कथा यहाँ तक कैसे ले आयी आपको। विभीषणजी ने कहा, महाराज इतनी सुन्दर आपकी कथा सुनाई थी कि कथा सुनकर मेरे मन में भाव आ गया कि जिनकी कथा इतनी सुन्दर है वह स्वयं कितने सुन्दर होंगे, जरा चलकर एकबार श्यामसुन्दर के दर्शन कर लें। कथा मुझे आपके चरणों तक ले आयी इसलिए गोस्वामीजी ने कहा है-**जानें बिनु न होय परतीती। बिनु परतीति होय नहिं प्रीती॥ प्रीति बिना नहिं भगति दृढ़ाई। जिमि खग पति जल कै चिकनाई॥** कथा का श्रवण करें और मैंने कई बार आपको यह सिद्धांत सुनाया है। यह सिद्धान्त समझिए हमारे मुख से जो अन्दर जाता है वह हमारे मलद्वार से बाहर निकल जाता है और जो हमारे कानों के द्वारा भीतर जाता है वह हमारे मुख के द्वारा बाहर निकलता है। कान में औषधि डाली तो मुख में आ जाती है अब कान के द्वारा यदि क्रोध की बातें भीतर ले जाओगे तो मुख दिन भर गाली-गलौज करेगा। कान के द्वारा आप विषय भोगों की चर्चा भीतर ले जाओगे, मुख दिनभर विषय भोगों की चर्चा करेगा और कान के द्वारा आप भगवान् की मंगलमय कथा भीतर ले जाओगे मुख दिनभर भगवान् की भक्ति की भजन की, कथा की चर्चा करेगा। निर्णय हम करें कि कानों से

कथा ले जानी है या कचरा ले जाना है। अनुभव यह कह रहा है कि कथा कम जाती है, सामान्यत: कचरा ही जाता है। मुख दिनभर कचरे में ही लगा रहता है। तो जहाँ कचरा होता है वहाँ गन्दगी, मक्खी, मच्छर व सुअर जमा हो जाते हैं। वहाँ कोई खड़ा होना पसंद नहीं करता है। लोग नाक बंद करके वहाँ से दौड़ते हैं। कचरे घर के पास कोई खड़ा होना पंसद नहीं करता। जीवन को कचराघर मत बनाइए। भगवान के सत्संग की कथा का भवन बनाइए। जहाँ नित्य नियमित कथा गाई जाए ऐसा हमारा मन-मन्दिर चाहिए, सत्संग-भवन हमारे भीतर चाहिए। दूसरा सिद्धान्त, जो कुछ हम सुनते हैं वह हमारे मन में बैठ जाता है और जो हमारे मन में बैठा होता है फिर माथे की आँखें हमेशा उन्हीं की खोज करती हैं। गोस्वामीजी ने लिखा है कि-

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।

भगवान् की जब कथा सुनेंगे तो राम लखन सीता मन में बस जाएंगे क्योंकि जो कान सुनते हैं वह हमारे मन की सम्पदा हो जाते हैं। जिसने भी कथा सुनी उसने यही माँग की-

अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम।
मम् हिय गगन इंदु इव बसहु सदा निहकाम।।

प्रभु आप जानकीजी तथा अनुज सहित मेरे हृदय में निवास करें और चाप-बाण धर इसी रूप में मेरे हृदय में निवास करें। शरभंग ऋषि ने क्या माँगा-

सीता अनुज समेत प्रभु नील जलद तनु स्याम।
मम हियँ बसहु निरंतर सगुनरूप श्रीराम।।

और श्री हनुमानजी के हृदय में **राम, लखन, सीता मन बसिया**। व्यक्ति जब अपना यश सुनता है तो भीड़ में रहना चाहता है और सुने लोग क्या कहते हैं? नारदजी ने अपना थोड़ा सा यश सुना तो भीड़भाड़

में शादी समारोहों में घूमने लगे। साधु को सामान्यत: शादी समारोह में नहीं जाना चाहिए। अपनी शादी से तो बच ही जाए, दूसरे की शादी समारोह से भी बचा रहे तो अच्छा है। अगर वहाँ से बचा रहेगा तो बहुत सी चीजों से बच जाएगा क्योंकि वह श्रृंगारिक प्रसंग है, कामुक प्रसंग है। तो ठाकुरजी का श्रृंगार, बिहारीजी फूल बंगले में सजे हैं। दर्शन करोगे तो मन पवित्र होता है लेकिन विवाह का श्रृंगार देखोगे तो मन कामुकता से भरता है। कुछ न कुछ अपने मन में भी होने लगता है और हमारी आपकी हैसियत क्या नारद जैसे साधक लोग विश्वमोहिनी के समारोह में चले गए तो क्या बोलने लगे-

जप-तप कछु न होइ तेहि काला। हे बिधि मिलइ कवन बिधि बाला।।
करौं जाइ सोइ जतन बिचारी। जेहि प्रकार मोहि बरै कुमारी।।

दूसरे का स्वयंवर देखा तो अपने स्वयंवर की इच्छा होने लगी। साधु-संन्यासी जितना शादी समारोह से दूर रहेंगे उतना ही बचे रहेंगे। अन्यथा न साधु रह पाते हैं न गृहस्थी रह पाते हैं बीच की खचेड़न हो जाते हैं। वेश साधु का, स्वरूप साधु का और स्वभाव कुछ और चिन्तन करने लगता है। न इधर के रहे न उधर के। मनुष्य जब अपना यश सुनता है तो भीड़ की तरफ भागता है, और मनुष्य जब भगवान् का यश सुनता है तो एकांत पसंद करता है, क्योंकि उसका मन भगवान से लग जाता है। हनुमानजी की एक विशेषता है कि वह रामजी के बिना तो रह सकते हैं लेकिन रामकथा के बिना नहीं रह सकते इसलिए इस कथा के लोभ से वह साकेत नहीं गए। जब भगवान् अपनी लीला पूर्ण कर साकेत को जाने लगे तो प्रभु ने हनुमानजी से पूछा कि क्या बात है। तैयारी नहीं की, चलोगे नहीं क्या हमारे साथ। बोले नहीं। क्यों तुम तो हमेशा हमारे साथ रहते हो। बोले हाँ प्रभु, लेकिन अब हम यहीं रहेंगे। क्यों क्या बात है, हमारे साथ क्यों नहीं चलना। हनुमानजी ने कहा प्रभु, वहाँ आप तो मिलागे पर आपकी कथा नहीं मिलेगी और मैं आपकी कथा के बिना नहीं रह सकता। इसलिए सिद्धान्त बन गया कि जब तक पृथ्वी पर रामकथा चलेगी, तब तक हनुमानजी पृथ्वी पर ही निवास करेंगे-

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमाँश्च विभीषण।
कृप: परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविन:।।

जब तक कथा जीवित रहेगी तब तक श्रीहनुमानजी रहेंगे। हम भी इसी लोभ से गाते रहते हैं। परिणाम क्या होता है कथा का, हमको मालूम नहीं, लोभ यही है जब तक कथा कहते रहेंगे श्रीहनुमानजी हमारे बीच में रहेगें। ध्रुवजी ने भी भगवान् से यही प्रार्थना की थी। ध्रुवजी ने कहा था कि प्रभु मुझे पिता की गोद न मिलने के कारण मेरे मन में इच्छा थी कि मुझे एक बार पिता की गोद मिले तो मुझे आपकी गोद मिली। यह मेरे बालकपन की जिद थी लेकिन भगवन् अब मुझे एक वरदान दे दीजिए। भगवान् ने पूछा क्या चाहिए, तो ध्रुव जी ने बड़ी अनोखी चीज माँगी। भगवान् ने नारद, ब्रह्मा, विष्णु सनकादिक सभी को बुला लिया और कहा कि देखो इस बालक की माँग तो देखो। भगवन्, यही इच्छा है कि संतों के चरणों में बैठकर सदा आपकी कथा सुनता रहूँ, बस इतना वरदान दे दो। भगवान् ने पूछा कि कथा को चाहते हो हमको क्यों नहीं चाहते हो। ध्रुवजी ने कहा प्रभु नाराज मत होईये, आपसे तो बड़ी जल्दी ऊब हो जाती है। आपका दर्शन थोड़ी देर का तो अच्छा लगता है, उसके बाद आपसे ऊब होने लगती है लेकिन आपकी कथा से कभी तृप्ति नहीं होती है-

भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे। तिन्ह केहिय तुम्ह कहुँ ग्रह रुरे।।

मन करता है कि सुनते रहें, सुनते रहें कान कभी थकते नहीं हैं। बिहारीजी का बहुत सुन्दर श्रृंगार है फूल बंगले में-

फूलों में सज रहे हैं श्री वृन्दावन बिहारी।।
और संग में सज रही हैं वृषभानु की दुलारी।।
फूलों में सज रहे हैं...

कितनी देर दर्शन करोगे, कितनी देर खड़े रहोगे, थक जाओगे पुजारी जी हटा देंगे। व्यवस्थापक बाहर कर

देंगे, लेकिन भगवान् की कथा में तीन-तीन घण्टे बैठे हैं जो तीन मिनट कहीं नहीं बैठ सकते वह तीन घण्टे कथा में बैठे हैं क्यों? क्योंकि कथा का आकर्षण है। यह आवश्यक नहीं कि जहाँ भगवान राम हों वहाँ भगवान् की कथा हो ही। लेकिन यह निश्चित है कि जहाँ भगवान् की कथा होती है, वहाँ भगवान् अवश्य होंगे। नारदजी ने एक बार पूछा था कि प्रभु यदि अचानक आपसे मिलना हो तो कोई अपना ठिकाना बताइए। साकेत, बैकुण्ठ, योगी का हृदय, क्षीर सागर कहाँ मिलोगे? भगवान् ने कहा इनमें से एक भी जगह नहीं मिल पाऊंगा तो-

नाहं वसामि बैकुण्ठे, योगिनाम् हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारदः॥

बोले, जहाँ मेरे भक्त मेरी कथा का गुणगान करेंगे वहाँ मैं बैठा कथा सुनता मिलूंगा। भगवान् स्वयं कथा में विराजमान हैं। भारत में कितने तीर्थ हैं, कितना बड़ा देश है। पूरा जीवन आप दौड़ते रहिए तो भी सब तीर्थों का दर्शन नहीं कर पाएंगे लेकिन एक जगह यदि सारे तीर्थों का दर्शन करना हो तो कहीं मत जाइए। रामकथा में आइए आपको सब तीर्थों का दर्शन हो जाएगा। जब क्रूज की यात्रा तय हुई तो सभी ने कहा कि महाराज किसी तीर्थ में चलो। हमने कहा एक, दो, तीन, चार कितने तीर्थों में जा पाएंगे। हमने कहा चिंता मत करो एक-एक तीर्थ में भी जाने की आवश्यकता नहीं हम सारे तीर्थों को एक जगह बुला लेंगे-

तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं॥
तत्रैव गंगा यमुना च वेणी गोदावरी सिन्धु सरस्वती च।
सर्वानि तीर्थानि वसन्ति तत्र यात्राच्युतोदार कथा प्रसंगः॥

जहाँ भगवान् की कथा होगी वहाँ सारे तीर्थ तत्रैव गंगा, यमुना आदि सभी नदियों से भरे समुद्र के क्रूज में भी सारे तीर्थ यहाँ विराजमान हैं। क्योंकि यहाँ भगवान् की मधुर मंगलमय कथा हो रही है इसलिए भगवान्

की कथा श्रवण करें, सारे तीर्थों का फल मिल जाएगा। जो भगवान् के साथ रहता है वह भगवान् के चरणों में रहता है। हनुमानजी जब भगवान् के साथ रहते हैं तो आपको प्रभु के चरणों में ही मिलेंगे। जो भगवान् की कथा में रहता है वह भगवान् के मन में रहता है। इसलिए भगवान् स्वयं बोले कि जो मेरे मन में रहता है उनके प्रति मेरा व्यवहार कैसा रहता है-

अस सज्जन मम उर बस कैसे। लोभी हृदय बसहिं धन जैसे॥

जो मेरी कथा में रहते हैं वह सब सज्जन हैं और सज्जन मेरे हृदय में निवास करते हैं और मैं उनको अपने हृदय में ऐसे छुपाकर रखता हूँ जैसे लोभी अपने हृदय में धन को अपने पास छुपाकर रखता है। आगे का दर्शन-

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा॥

हनुमानजी जब जानकीजी के पास आए, माँ के पास आए, तो बहुत छोटे, सूक्ष्म बनकर। भक्ति तो स्वयं विराट है लेकिन मिलती दैन्य को ही है। चैतन्य महाप्रभु की उद्घोषणा बिल्कुल नीच, छोटा, तिनके जैसा लघु अति दैन्य दिखाई न दे, भक्ति वह कर सकता है जो कभी किसी को दिखाई न दे। भजन करते जो दिखाई देता है लेकिन लोग देखें कि हम भजन कर रहे हैं तो लोगों को चिन्ता ज्यादा रहती है। भगवान् हमको देख पा रहे हैं या नहीं यह चिन्ता हट जाती है। फिर चर्चा लोगों में होती है कि बड़े भजनानन्दी हैं। चर्चा भगवान् में नहीं होती, जानकीजी माँ हैं, भक्ति हैं, शान्ति हैं, शुद्धि हैं। कई प्रकार से आप इसका दर्शन करेंगे। भक्तिदेवी के सामने हमेशा छोटे बनकर रहो। जितने छोटे बन जाएंगे, उतने ही भक्ति के निकट पहुँच जाएंगे। मनुष्य का अहंकार मनुष्य से बुरे कार्य करा देता है। कौन हमको रोक सकता है, किसी की हैसियत ही क्या है। ऐसे में ही होता है। जब तक व्यक्ति अपने को छोटा मानता है तब तक अपने को दुर्गुणों से बचा सकता है। जब व्यक्ति अपने को बड़ा अहंकारी और सर्वज्ञ मान लेता है वह फिर गढ्ढों में गिरना प्रारम्भ कर

लेता है। जो अपने को छोटा मान ले वह शांत रहेगा। जो बड़ा मानेगा वह अशांत रहेगा। कोई बैठने को न कहे इसी से माथा ठनक जाएगा, पारा चढ़ जाएगा। कुर्सियां पड़ी हैं वह खड़ा क्योंकि वह इंतजार कर रहा है कि कोई कहेगा हाथ जोड़कर कि आइए बैठिए। जिसने अपने को छोटा कर लिया वह शुद्ध भी रहेगा और शान्त भी। भक्ति तो बिल्कुल किसी को पता न लगे। किसी के सामने नहीं रोया जाता है जो सामने रोया जाता है वह दिखावा है। एकांत में भगवान् के लिए आँसू बहाना तो हनुमानजी छोटे बन गए। जानकीजी माँ हैं माँ के सामने कभी बड़े मत बनो और माँ के सामने कभी बड़े होकर मत जाओ, बिल्कुल छोटे बने रहो क्योंकि माँ के सामने तुम सदा छोटे ही रहोगे। माँ ने ही तो बालक बनाया है तुमको। अरे इस देश की माताओं की ही तो ताकत है जिन्होंने ब्रह्म को भी बालक बना दिया। यह अधिकार भगवान् ने किसी को नहीं दिया केवल भारत की माता को दिया है। अनन्त कोटि ब्रहमाण्ड का नायक विराट भी सूक्ष्म बन गया। माँ ने कहा कि भगवान् से छोटे हो जाइए भगवान् छोटे होते चले गए-

कीजै शिशु लीला अतिप्रिय शीला॥

शिशु लीला माने रोओ, ब्रह्म को भी जो रूलाने की ताकत रखती है वह भारत की माँ है। माँ के सामने कभी बड़े मत बनो और माँ कभी आपको बड़ा समझेगी भी नहीं। आप कितने भी बड़े हो जाइए, माँ आपको लल्ला ही कहेगी। माँ कभी भी आपको जी कहकर नहीं बुलाएगी। चाहे आप जितने भी जी हो जाएं संसार में, माँ आपको आपका बचपन का नाम लेकर, बिट्टू, गुड्डू कहकर ही बुलाएगी और इसी में आनन्द है। अगर माँ भी तुमको जी कहकर आदर देकर बुलाए तो इसका अर्थ है कि माँ से दूरी बढ़ गयी, फिर ममत्व गया। व्यवहार जग गया तो माँ के सामने कभी बड़े मत बनो। डोंगरे जी महाराज सुनाया करते थे कि एक परिवार में हम गए, बेटा करीब इण्टर में पढ़ता होगा। डोंगरेजी महाराज बोले हमने उनसे पूछा बेटा अपनी माँ के पैर छूते

हो कि नहीं, माँ के पैरों में प्रणाम करते हो कि नहीं। बोला, छोटा था तब तो करता था अब नहीं, क्यों? माँ कुछ समझती नहीं। डोंगरेजी महाराज बोले मुझे इतना क्रोध आया। मैंने कहा माँ क्या तुझे कलेक्टर समझेगी। माँ तुझे क्या समझेगी और तू माँ के सामने है क्या? डोंगरे जी बहुत कष्ट भरी वाणी में बोला करते थे कि जिस माँ की गोद में तूने आँख खोली है उसी माँ को तू आँख दिखाता है। तुझे शर्म नहीं आती है। समर्थ गुरु स्वामीरामदासजी सिद्धसंत हुए हैं। इनकी सिद्धियों की, चमत्कार की बड़ी चर्चा महाराष्ट्र में होने लगी। अनेक वर्ष पहले घर छोड़ कर चले गए। बेटे की याद में माँ रोते-रोते अँधी हो गयी। माँ तो माँ है। शंकराचार्य जैसे विरक्त संत भी माँ की अन्त्येष्टि करने आये, माँ भगवान् से भी बड़ी हुआ करती है जो भगवान् को भी बना दे उस माँ से कौन बड़ा हो सकता है? रामदासजी की भी इच्छा हुई कि चलो माँ के दर्शन कर आएं। उस समय रामदास जी महाराज की सिद्धि-प्रसिद्धि बहुत हो चुकी थी तो द्वार पर आकर उन्होंने माँ को आवाज दी माँ भिक्षाम देहि, दोनों दम्पत्ति अन्दर बैठे थे तो पिता ने कहा कोई साधु है क्या? माँ ने कहा साधु नहीं, मुझे लगता है कि मेरा रामू आ गया है। पिता ने कहा बावली हो रही है? रामू को चालीस साल हो गए घर से गए हुए। हमने दूसरी बार उसका नाम भी नहीं जाना, सुना है, कहाँ इधर आएगा? माँ हूँ न मैं, उसकी आवाज पहचानती हूँ। अन्धी माँ भी अपने बेटे की आवाज पहचानती है, रामू है। माँ रामू-रामू करके दौड़कर आयी और स्वामी रामदासजी ने प्रणाम किया, माँ के चरणों से लिपटे। माँ ने यह नहीं कहा कि मैंने सुना है तू बहुत सिद्ध हो गया है। ऐसा नहीं कहा। माँ ने कहा, रामू मैंने सुना है कि तू बड़ा जादूगर हो गया है। तेरी जादूगरी की चर्चा बहुत सुनने को मिलती है। अरे बेटा, मेरे ऊपर भी जादू कर दे मेरी आँखें अंधी हो गई हैं। मैं तुझे देख सकूं मेरे ऊपर भी जादू कर दे और ऐसी कथा आती है कि स्वामी जी ने फिर दोनों हाथों से माँ की आँखों को स्पर्श किया और माँ की ज्योति वापस आ गयी। तो बेटा कितना बड़ा भी सिद्ध होगा पर माँ के लिए तो वह जादूगर ही है। माँ तो भगवान् की भी पिटाई कर सकती है और बंधन में बांध सकती है।

इसलिए अगर छोटे बनने की, विनम्रता की कला आ गयी तो राक्षसों की नगरी में भी हमको संत और भक्ति के दर्शन हो सकते हैं। आखिर राक्षसों की नगरी है लंका, लेकिन हनुमानजी को संत मिले कि नहीं। आखिर विभीषण कौन है, लंकिनी कौन है, त्रिजटा कौन है? क्या इनको संत नहीं मानेंगे। हनुमानजी को लंका में भी संत मिल गए और हमको वृन्दावन में भी दिखाई नहीं दिए। हम पूरा जीवन इसी तर्क-वितर्क में हैं कि कौन सिद्ध है, शुद्ध है, बड़े हैं, प्रसिद्ध हैं किनका दर्शन करें?

अरे कदम-कदम पर आगे पीछे संतों में बैठे हो, फिर कहते हैं कोई संत हो तो बताइए। जब तुम्हारी आँखें ही अंधी हैं तो तुमको दिखेगा कैसे? संतों को मत देखो, अपने भीतर की श्रद्धा को देखो, तुम्हारे भीतर श्रद्धा की खिड़की है तो संत के दर्शन होंगे। खिड़की बंद हो गयी तो सूर्य का क्या दोष, सूर्य तो उदित है। दरवाजा ही बंद है तो इसके लिए क्या करें। हमारा अहंकार संत मिलन नहीं होने देता, हमारा झूठा बड़प्पन संतों के दर्शन नहीं होने देता। चार शब्द अंग्रेजी के आ गए, पागल हो गए बस अब हमारे बराबर कोई योग्य नहीं क्योंकि हम अपनी गिटपिट-गिटपिट से उस सरल साधु के हृदय को तोलना व नापना चाहते हैं। तुम्हारा क्या लेना-देना, तुम आदर दो, न दो, मानो तो, न मानो तो, उस पर क्या अन्तर पड़ने वाला है लेकिन तुम जीवन भर अभागे रह जाओगे क्योंकि तुमको कृपा नहीं मिलेगी। तुम केवल अकड़ और क्रोध लेकर इस दुनिया से चले जाओगे। यदि अकड़कर रहोगे तो भार हमेशा सिर पर ढोओगे, शीश झुकाओ तो भार नीचे गिर जाएगा। जब हनुमानजी का जानकीमाँ से वार्तालाप होने लगा तो माँ से कहा कि माँ चिंता मत करो, धैर्य धारण करो भगवान् आएंगे और आपको आदर सहित यहाँ से ले जाएंगे। माँ ने मन में सोचा कि बंदर बोलता अधिक है। जरा सा बंदर है और बातें बहुत बड़ी-बड़ी करता है। माँ ने पूछा क्यों हनुमान-

हैं सुत कपि सब तुम्हहिं समाना। जातुधान अति भट बलवाना॥

माँ ने पूछा क्या भगवान् के पास जितने भी बन्दर हैं सब तुम्हारे जैसे ही हैं क्या? हनुमानजी ने कहा नहीं माँ हमारे जैसा कोई नहीं है। उन सबमें हम ही बड़े हैं बाकी तो सब छोटे छोटे हैं। माँ ने कहा तो फिर हो गया काम, हमारी मुक्ति भी हो गई और तुम्हारे प्रभु ने लंका भी जीत ली? हनुमानजी ने पूछा माँ ऐसा क्यों बोलती हो, क्या आपके मन में कुछ संदेह है, बोली हाँ-

मोरें हृदय परम सन्देहा। सुनि कपि प्रगट कीन्हि निज देहा॥

यहाँ सभी राक्षस बहुत बड़े-बड़े हैं और तुम सब छोटे-छोटे इसलिए मेरे मन में संदेह है। हनुमानजी ने माँ को जयश्रीराम कहा और-

कनक भूधराकार सरीरा। समर भयंकर अतिबल बीरा॥

एकदम हनुमानजी अति विराट हो गए, माँ ने आँखें बंद कर लीं। बस-बस **सीता मन भरोस तब भयऊ, पुनि लघुरुप पवनसुत लयऊ॥** पुन: लघु रूप जानकीजी प्रसन्न हो गईं। माँ ने कहा कि जब तू इतना विराट, इतना बड़ा है तो तू मेरे पास छोटा क्यों आया। हनुमानजी ने कहा माँ-बेटा कितना भी बड़ा हो जाए माँ को हमेशा छोटा ही दिखाई देता है। **सूक्ष्म रुप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रुप धरि लंक जरावा॥** श्रीहनुमानजी माँ के सामने गए सूक्ष्म रूप धारण कर और जब बुराई के सामने गए तो विराट रूप धर कर। हम बुराई के सामने कई बार छोटे हो जाते हैं। बड़ों के सामने छोटे बनो, श्रेष्ठ के सामने लघु बनो, लेकिन बुराई के सामने छोटे हो जाओगे तो बुराई सटक लेगी आपको। बुराई के सामने अपने को इतना बड़ा कर लो कि वह आपके ऊपर प्रहार तो क्या देख भी न सके आपकी ओर, जब हनुमानजी लंका जला रहे थे तो उस समय कैसा दृश्य था-

बालधी बिसाल बिकराल, ज्वाल-ज्वाल मानौं,
लंक लीलिबे को काल रसना पसारी है॥
कैंधौ ब्योमबीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु।
बीररस बीर तरवारि सो उघारी है॥
'तुलसी' सुरेस-चापु कैंधौ दामिनी कलापु,
कैंधों चली मेरु ते कृषानु-सरि भारी है॥
देखें जातुधान जातुधानीं अकुलानी कहैं,
काननु उजार्‌यो अब नगरु पजारि है॥

पूरे आकाश में अग्नि की लपटें खड़ी हो गयीं, बुराई के सामने जब संघर्ष करना हो तो इतने प्रबल हो जाइए कि बुराई का साहस ही न हो। हनुमानजी को जब आग लगाने की आज्ञा हो गयी तो हनुमानजी भी प्रसन्न हो गए। मैं समझ गया कि शारदा प्रसन्न हो गयीं। क्योंकि रावण की जिह्वा पर आकर बैठ गयी। जब त्रिजटा ने कहा था कि **सपने वानर लंका जारी** मैं सोच रहा था कि कहाँ से व्यवस्था करूंगा। वाह माँ शारदा बड़ी तूने कृपा की, प्रभु के कारण तूने बड़ा हाथ बंटाया। आगे भी ऐसे ही दर्शन है-

भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे॥

असुरों का संहार भीम रूप धर कर माने बहुत भारी रूप धरकर। भीम कोई नाम नहीं है, भीम तो गुण है। स्वप्न में भी रावण को हनुमानजी याद आ जाते हैं तो एकदम रावण कांपने लगता है। जिस समय अंगदजी आए हैं पूरी लंका में शोर हो गया-

भयउ कोलाहल नगर मझारी। आवा कपि लंका जेहिं जारी।
अब धौं काह करिहि करतारा। अति सभीत सब करहिं बिचारा।।

पूरी लंका में कोलाहल मच गया कि वही बंदर आ गया जो लंका जलाकर गया था और यह अंगदजी थे, लेकिन अंगदजी में भी हनुमानजी आकर बस गए थे। रावण स्वप्न में भी बड़बड़ाता था। अरे इस बंदर को पकड़ो, इस बंदर की पूँछ काटो, अरे इस बंदर की पूँछ जलाओ। रावण को सोते-जागते, दिन में, रात में हर समय हनुमानजी का ही स्मरण होने लगा था। हनुमानजी का भक्त हो गया था तभी तो वह स्वप्न व जागृत में दिखाई देता था। चूंकि हनुमानजी ने इसकी नाक में बार-बार अपनी पूँछ दी थी। जब हनुमानजी जानकीजी की खोज कर रहे थे-

मंदिर-मंदिर प्रति करि सोधा। देखे जहँ तहँ अगनित जोधा।।
गयउ दसानन मंदिर माहीं। अति विचित्र कहि जात सो नाहीं।।
सयन कियें देखा कपि तेही। मन्दिर महँ न दीखि बैदेही।।

रावण खर्राटे लेकर सो रहा था तो हनुमानजी अंधेरे में खड़े हो गए और पूँछ लम्बी की और इसकी नाक में घुमा दी छींक पे छींक। पूरी रात परेशान हो इसकी याद आ गयी। हर समय हनुमानजी की पूँछ के कारण परेशान। हनुमानजी की युद्ध कला भी अलग प्रकार की थी। आपने पूरे युद्ध में हनुमानजी को गदा लेकर नहीं देखा होगा। चार प्रकार की सेना जब रावण की आया करती थी तो उसी की सेना को उसी से भिड़ाभिड़ा कर मार देते थे, हाथी से हाथी....

हाथिन सों हाथी मारे, घोरेसों सँघारे घोरे,
रथिन सों रथ बिदरनि बलवानकी।

चंचल चपेट, चोट चकोट चकोट चाहें,
हहरानी फोजेंभहरानी जातुधानकी।।
बार-बार सेवक-सराहना करत रामु,
'तुलसी' सराहै रीति साहेब सुजान की।
लाँबी लूम लसत,लपेटि पटकत भट,
देखौ-देखौ लखन! लरनि हनुमान की।।

रामजी लखन से कहते थे कि लखन जरा युद्ध बंद कर दे और देख तो सही हनुमान् कैसा लड़ रहा है। हाथी को हाथी से मारा, घोड़ों को घोड़ों से, रथों को रथों से पटककर और पैदल सिपाहियों को पूँछ पर लपेट कर धरती पर पटक देते थे। लंका का मेन गेट लोगों की लाशों से हनुमानजी पाट देते थे-

देखो-देखो लखन लरनि हनुमान की।।

रावण रोज शाम पत्रकार वार्ता बुलाता था। पूछा करता था क्या समाचार है तो पत्रकार समाचार देते थे सत्यानाश हो गया। बस थोड़ा बहुत और बचा है। जब रावण को लगा कि इसने मेरी सेना को मार डाला। तब रावण ने अमर सेना को भेजा। रावण के पास अमर सेना थी जिसे किसी के द्वारा नहीं मारा जा सकता था। भगवान् के पास अमर सेना का समाचार मिला, प्रभु चिंता में डूब गए अमर को कैसे मारा जा सकता है। हनुमानजी ने कहा, सरकार चिन्ता मत कीजिए मैं जाता हूँ लड़ने। अरे भैया, तुझे मालूम नहीं अमरसेना को कोई नहीं मार सकता। बोले, चिंता मत कीजिए अगर सेना अमर है तो हम भी अमर हैं। तुम कैसे अमर हो बोलो माँ ने आशीर्वाद दिया है-

अजर अमर गुणनिधि सुत होहू। करहिं बहुत रघुनायक छोहू॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता॥

तो भगवान् ने कहा ठीक है, अमरता का आशीर्वाद तो है लेकिन तुम युद्ध कैसे करोगे? बोले, महाराज आप चिंता मत कीजिए। आप टीवी खोलकर बैठ जाइए लाइव टैलीकास्ट आप यहीं बैठकर देख लीजिए। हनुमानजी गए, जब अमर सेना आई तो हनुमानजी जानते थे कि ये मारे नहीं जा सकते हैं। बुराई छोड़ी नहीं जा सकती है तो उसको कोई कैसे सुधार सकता है। तो हनुमानजी ने अमर सैनिकों को अपनी पूँछ में लपेटा और इतनी ताकत से ऊपर फेंका कि पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण की सीमा से भी ऊपर उड़ा दिया। एक कक्षा ऐसी होती है जहाँ पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण समाप्त होता है तथा ऊपर का गुरुत्वाकर्षण भी समाप्त होता है। इसके बीच में एक स्पेस होता है जिसमें वे विमान (राकेट) घूमा करते हैं। बोले, जाओ चक्कर काटते रहो, अब मरनेवाले तो हो नहीं, अब न तुमको सुधारा जा सकता है न ही बदला जा सकता है। सायंकाल जब रावण ने बुलाया पत्रकारों को, रावण ने कहा क्या बात है, समाचार बताइए, बोले पहुँच गए। कहाँ? बोले, सब ऊपर गए और जब पूरी घटना सुनी रावण ने तो रावण एकदम जल गया इस बंदर की तो पूँछ ही उखाड़ दी जाए। अरे मूर्ख, संतों की पूँछ नहीं उखाड़ी जाती बल्कि चरण पकड़े जाते हैं। संतों की यदि प्रतिष्ठा उखाड़ने की कोशिश करोगे तो खुद ही उखड़ जाओगे, शास्त्र भी कहता है-

संतन के संग लागि रे तेरी अच्छी बनेगी।
अच्छी बनेगी तेरी किस्मत जगेगी होय तैरौ बड़भाग रे॥
तेरी अच्छी बनेगी....॥

रावण मूर्ख है, संतों की प्रतिष्ठा की पूँछ उखाड़ना चाहता है। रावण ने पता लगाना चाहा कि यह बंदर कभी अकेले में बैठता है क्या? बोले, सायंकाल यह बन्दर सन्ध्या करता है सागर किनारे। रावण, हनुमान जी

की पूँछ उखाड़ने के लिए चुपचाप छोटा सा रूप बनाकर गया। हनुमानजी ध्यान में बैठे थे तो रावण ने जाकर पीछे से हनुमानजी की पूँछ पकड़कर उखाड़ने लगा हनुमानजी ने देखा कि यह मेरी पूँछ पकड़े है। बोले, कौन है छोड़ दे और रावण ने जोर से पूँछ खींच दी। पूँछ तो उखड़ी नहीं मगर हनुमानजी समझ गए कि रावण है। पूँछ सहित रावण के साथ हनुमानजी आकाश में उड़ गए, **गहिसि पूँछ कपि सहित उड़ाना।** जो रावण पूँछ उखाड़ना चाहता था, अब आकाश में उड़ते-उड़ते शंकर जी से प्रार्थना करने लगा कि हे शंकर भगवान्, कहीं पूँछ न उखड़ जाए। क्योंकि मालूम है कि यदि पूँछ उखड़ गयी तो मैं भी गया। जिसे उखाड़ने की कोशिश कर रहा था उसी को बचाने की प्रार्थना कर रहा था- **भीम रुप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे॥**

निसिचर हीन करहुँ महि, भुज उठाइ पन कीन्ह॥

धरती से निशिचरों को हीन कर देना, मारे तो नहीं पर धरती से हीन तो कर ही दिया आकाश में उड़ाकर। आगे का दर्शन बहुत सुन्दर है-

लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥

मेघनाथ के बाण ने लक्ष्मणजी को मूर्छित कर दिया। काम के बाण ने लक्ष्य प्रेरित मन को भी मूर्छित कर दिया। जिनका मन हमेशा लक्ष्य में रहता है वो लक्ष्य मन है। लक्ष्य क्या है-

बारेहु ते निज हित पति जानी। लछिमन राम चरण रति मानी॥

संत ने अपनी गोद में उठाकर लक्ष्मणजी को प्रभु की गोद में लिटा दिया और यही संत का कार्य था। सम्पाती और जटायु दोनों को ही संत और भगवन्त ने उठाया है। गिरे को या तो संत उठाते हैं या भगवन्त् ही उठाते हैं। लक्ष्मणजी को संत की भी गोद मिली और भगवान्त की भी गोद मिली। भगवंत की गोद, संत की कृपा से ही मिलती है। लक्ष्मणजी को जब प्रभु ने मूर्च्छित देखा तो वह रोने लगे, प्रभु जब बहुत रोये-

सुत वित नारी भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस बिचारि जियं जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।।

तो हनुमानजी ने कहा, प्रभु रोइए मत सेवक जीवित है न, स्वामी को चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। विभीषणजी ने कहा, वैद्य को लाओ यहाँ से-

धरि लघु रूप गयउ हनुमंता। आनेउ भवन समेत तुरन्ता।।

हनुमानजी जब भी कभी बड़ा कार्य करते हैं तो लघु रूप धरते हैं क्योंकि छोटे रहकर ही बड़ा कार्य किया जा सकता है। बुरे संसार में भी भले लोग मिल जाते हैं। लंका में हैं, नाम है सुषेन, सुख के पास जाओगे तो सुखी बनोगे। पूरे घर सहित वैद्य को उठा लाए। क्यों? संत का स्वभाव है एक नहीं पूरे परिवार को भगवान् के साथ जोड़ना है। वैद्य ने कहा कि संजीवनी चाहिए। कहाँ मिलेगी? बोले धौलागिरी पर्वत पर। संजीवनी क्या है?

रघुपति भगति सजीवन मूरी। अनूपान श्रद्धा मति पूरी।।
रामकथा कलि कामद गाई। सुजन संजीवन मूरि सुहाई।।

भगवान की कथा ही संजीवनी है मिलती कहाँ है बोले पर्वत पर और पर्वत क्या है-

पावन पर्बत बेद पुराना। राम कथा रुचिराकर नाना।
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी। ग्यान बिराग नयन उरगारी।।
भाव सहित खोजइ जो प्रानी। पाव भगति मनि सब सुख खानी।।

श्रीरामभक्ति की संजीवनी कहाँ मिलती है? पर्वतों पर, पर्वत क्या है? शास्त्र में वेद और पुराण ये ही पावन पर्वत है। चार वेद, अट्ठारह पुराण, बाइस ऐसे पर्वत हैं भारत में जिनकी पूजा होती है, जिनके चरणों

(गुफाओं) में बैठकर संत लोग तप करते हैं और आराधना करते हैं। वेद शास्त्र पुराण सीधे-सीधे पढ़ेंगे तो कुछ समझ में नहीं आएगा। जैसे शास्त्रों को पढ़कर शास्त्रों का मर्म समझ में नहीं आता, ऐसे ही पर्वत पर जो औषधि दिखाई देती है जब तक वैद्य इसमें से रस निचोड़ेगा नहीं तब तक वह औषधि भी अपने को लाभ नहीं करती है। गुरुजन उन्हीं शास्त्रों से संजीवनी निकालकर देते हैं। मधुर-मधुर भगवान् की कथाएं निकालकर देते हैं। इसलिए शास्त्रों को गुरुओं के चरणों में बैठकर पढ़ें, तब कुछ मिलेगा, अन्यथा तो शास्त्रों से हम निराश हो जाएंगे। गोस्वामीजी कहते हैं कि लक्ष्मणजी को कौन मूर्छित कर सकता है? यह तो हमको शिक्षा देने के लिए लीला की गयी है कि बड़े से बड़ा व्यक्ति भी यदि काम से जब मूर्छित हो जाता है तब मूर्छा कैसे दूर होती है। उस मूर्छा को फिर भगवान् भी दूर नहीं कर सकते। रोते-रोते प्रभु थक गए, लक्ष्मणजी कोई साधारण नहीं हैं वह तो सदैव जाग्रत हैं व सदैव प्रभु के चरणों की सेवा में हैं। ऐसा जीव जो पल प्रतिपल जाग्रत है, विवेकी है, भगवान् की भक्ति की सेवा में रत है, ऐसे व्यक्ति को भी काम मूर्छित कर देता है। काम ने कभी किसी को छोड़ा नहीं। कई लोग यह अहंकार करते हैं कि हमने काम को जीत लिया है। चिता पर पहुँचते-पहुँचते भी काम अपना आक्रमण कर देता है। चिता पर लेटी हुई हड्डियों में भी काम प्रकट हो जाया करता है। इसलिए इसका कभी अहंकार न करें। जाग्रत जीव अगर काम के बाण से मूर्छित हो जाए तो उसकी मूर्छा फिर भगवान् भी दूर नहीं कर सकते। उसकी मूर्छा तो फिर कोई प्रबल वैराग्यवान संत, हनुमंत जैसा ही, पर्वत से संजीवनी रूपी राम कथा लाकर जब उसे पिलाएगा, राम कथा सुनायेगा, तभी काम की, जीवन की मूर्छा से मुक्त हो सकता है। तभी वह संजीवनी का आनन्द ले सकता है, तभी वह चैतन्य हो सकता है। श्रीहनुमानजी इसी कार्य को करते हैं, भगवान् ने हनुमानजी को हृदय से लगा लिया और कहा कि मैंने सब कुछ सबको दिया पर हृदय कभी किसी को नहीं दिया है। हृदय मैं तुझको देता हूँ-

मूर्छित लक्ष्मणजी को श्रीहनुमानजी जगाते हैं। संत ने अपनी गोद में उठाकर लक्ष्मण को भगवन्त की गोद में लिटा दिया। संजीवनी क्या है, रघुपति भक्ति यहीं संजीवनी है। श्रीभरतजी को भी जब कौशल्या माँ ने कहा था कि गुरुदेव की आज्ञा को पथ्य के रूप में स्वीकार करना जो गुरुदेव की आज्ञा थी। भोग प्राप्त करना, राज्य प्राप्त करना। भरतजी ने कहा माँ पथ्य तो तब लिया जाता है जब बुखार उतर जाता है और यह तो औषधि नहीं हुई। माँ ने पूछा औषधि कहाँ है तो बोले चित्रकूट एक औषधि है। भोग की मूर्छा की औषधि तो पर्वत पर है। संजीवनी बूटी द्रोणागिरी पर्वत पर ही मिलती है शास्त्र में पर्वत है-

पावन पर्बत वेद पुराना। राम कथा रुचिराकर नाना।
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी। ग्यान बिराग नयन उरगारी।।
भाव सहित खोजइ जो प्रानी। पाव भगति मनि सब सुखखानी।।

रामकथा ही संजीवनी बूटी है जो शुद्ध-धवल द्रोणागिरी पर्वत पर मिलती है, पर्वत क्या है? वेद और पुराण यही पर्वत है वेद और पुराण रुपी पर्वत यह ही राम कथा रुपी संजीवनी है, जो काम से मूर्छित जीव को जागृत कर सकती है। काम तो व्यक्ति को मार डालता है आज जिसको राम नहीं जगा पा रहे उसको संत के श्रीमुख से गायी गयी रामकथा जगा रही थी। हनुमानजी संत हैं और रामकथा रची है वेदों में, पुराणों में, संजीवनी पर्वतों के शिखरों पर मिलती है। बाईस पर्वत ऐसे हैं जिनकी परिक्रमा की जाती है,गिरराज, चित्रकूट, कैलाश आदि यें पर्वत वेद और पुराणों के प्रतीक हैं। ये पर्वत स्थूल नहीं हैं ये जीते-जागते शास्त्र हैं, ज्ञान हैं। इनमें ज्ञान व भक्ति के भण्डार छुपे हैं। औषधि को सीधे नहीं लेना चाहिए बल्कि वैद्य की सलाह से लें और शास्त्रों को भी सीधे न पढ़ें बल्कि गुरुओं के चरणों में बैठकर पढ़ो। शास्त्र के मर्म को मर्मी जानता है। **शास्त्री मर्मी सुमति कुदारी,** इन कथाओं के पर्वतों के, वेद के, पुराण के मर्म को समझने वाले इनके भीतर की

कथाओं को समझने वाले जो सुमति जन हैं, सुमति लेकर जाओगे, श्रद्धा लेकर जाओगे तो कुछ मिलेगा, भाव लेकर जाओगे तो कुछ मिलेगा। नहीं तो, पहाड़ खोदोगे तो कंकड़, पत्थर तो मिलेंगे पर मणियां नहीं मिलेंगी क्योंकि इनको भी ज्ञान व वैराग्य के नेत्रों से खोजना पड़ता है। तर्क और कुतर्क की बातों से कुछ नहीं मिलेगा। कोई न कोई सद्गुरु वहाँ से यह कथा लाते हैं। वेदों में, पुराणों में जो कथा भरी हैं, उनमें से शास्त्रज्ञ, वेदज्ञ, आचार्य, सद्गुरु, संत उन मार्मिक कथाओं को निकालकर उनके मर्म को निचोड़कर आपको देते हैं जो आपकी मूर्छा को दूर करते हैं। जैसे पुराणों को पढ़कर लोग कहते हैं कि कुछ नहीं है केवल कपोलकल्पित कथाएं भरी हैं। ऐसा नहीं है यह गूढ़ ज्ञान को रसीला बनाने के लिए कथानक के साथ जोड़ा गया है लेकिन हमने कथानक को तो पकड़ लिया पर कथानक के मर्म को नहीं पकड़ा। मर्म को कोई मर्मी ही जानता है। जब सद्गुरु के चरणों में बैठोगे हनुमानजी गुरु की भूमिका में हैं पर्वत पर गुरु आकर पर्वत से मर्म निकालकर ले जा रहा है। कथाओं, वेदों, पुराणों के जो असली मर्म हैं वही तो संजीवनी हैं। अन्यथा तो भगवान् को सिन्धु कहा गया है। सागर में अथाह जल है लेकिन आप एक बूँद पी सकते हैं क्या? राम सिन्धु लेकिन सज्जन कौन है घन हैं, बादल हैं। यही बादल जब सागर से वाष्पन के बाद बरसते हैं तो ही जल बिसलेरी से भी ज्यादा मीठा हो जाता है। डिस्टिल वाटर बन जाता है। हमारे रोगों को वही दूर करता है। सीधे-सीधे यदि सागर का जल पियोगे तो खारा लगेगा लेकिन वही बादलों के द्वारा यदि पान करोगे तो मिठास आएगी। तो शास्त्र को, वेद को यदि सीधा-सीधा पढ़ोगे तो खारा, कसैला, कड़ुवा लगेगा लेकिन वही किसी संत के श्रीमुख से सुनोगे तो कथाएं आपको मीठी व रसीली लगेंगी, मन करेगा और सुनें। चन्दन के पेड़ को यदि सूंघोगे तो सुगन्ध नहीं मिलेगी, उसको घिसोगे तो सुगन्ध मिलेगी-

राम सिन्धु घन सज्जन धीरा। चन्दन तरु हरि संत समीरा॥
मोरें मन प्रभु अस बिस्वासा। राम ते अधिक राम कर दासा॥

संत ही तो भगवान् कथा की सुगन्ध को सारे विश्व में फैलाते हैं। इसलिए गोस्वामीजी ने कहा है कि मेरे मन में तो भरोसा हो गया है कि **राम ते अधिक राम कर दासा।** भगवान् का नाम मात्र जीव को जगा सकता है। आज उसको स्वयं भगवान राम का रुदन नहीं जगा पा रहा है। शायद राम इस जगत में अपने से ज्यादा अपने दास की महिमा स्थापित करना चाहते हैं इसलिए उन्होंने ये लीला की। वरना लक्ष्मणजी को कौन मूर्छित कर सकता था? क्या कोई काल को मूर्छित कर सकता है? यह नाटक है कभी बुद्धि से मत सोचो कि लक्ष्मण तो मूर्छित हो गए यह मूर्छा तो हमारे और आपके मार्गदर्शन के लिए थी। यह समझाने के लिए कि काम के आवेश से जब इतना जाग्रत जीव भी मूर्छित हो सकता है। हमारी और आपकी तो हैसियत ही क्या है। यह लीला तो हमारे एक संत सुना रहे थे। एक तांगे में बैठकर लोग जा रहे थे। एक बूढ़ी माँ और उनका एक नाती भी था। यात्रा में गढ्ढा आया तो घोड़ा भी गिर गया और ताँगा भी उलट गया। लोग भी गिर गए, यह जो बुढ़िया थी धड़ाम से गिरी और मूर्छित हो गयी। बुढ़िया मूर्छित हो गयी तो थोड़ी भगदड़ मची, कोई पानी लाए, कोई हवा करे, बड़ी देर तक बुढ़िया की मूर्छा नहीं जागी। बुढ़िया का नाती जोर-जोर से चिल्ला रहा था और बोल रहा था अम्मा कैसे नहीं जागेगी। जब-जब अम्मा मूर्छित हो जाती थी पापा जलेबी लाकर खिलाते थे उस भीड़ में बालक की किसी ने नहीं सुनी तो बहुत देर बाद लेटे-लेटे बुढ़िया बोली अरे सब अपनी-अपनी बकवास में लगे हो उस बालक की कोई नहीं सुन रहा है जो बच्चा कह रहा है वह तो सुनो, तो यह मूर्छा का नाटक था। यह तो हमारे लिए था और जब श्रीहनुमान जी की लायी संजीवनी से लक्ष्मणजी की मूर्छा दूर हो गयी तो सब लोग भगवान् की जय-जयकार करने लगे तो भगवान् ने कहा नहीं मेरी जय-जयकार मत करो यह तो हनुमानजी की जयकार करो-

वीर हनुमाना, अति बलवाना, राम नाम रसियो रे।
प्रभु मन बसियो रे॥
जो कोई आवे, अरजी लगावे, सबकी सुनियो रे।
प्रभु मन बसियो रे, वीर हनुमाना॥
बजरंगबाला, फेरूँ तेरी माला,
संकट हरियो रे प्रभु मन बसियो रे, वीर हनुमाना॥
रामजी का प्यारा, सिया का दुलारा,
विपदा हरियो रे, प्रभु मन बसियो रे, वीर हनुमाना॥
ना कोई संगी, हाथ की तंगी,
जल्दी करियो रे, प्रभु मन बसियो रे, वीर हनुमाना॥
अरजी हमारी, मरजी तुम्हारी,
कृपा करियो रे, प्रभु मन बसियो रे, वीर हनुमाना॥

भगवान् स्वयं श्रीहनुमानजी की जय-जयकार कर रहे हैं-

लाय सजीवन लखन जियाये। श्री रघुबीर हरषि उर लाये॥
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥

भगवान् ने हनुमानजी को अपने हृदय से लगा लिया। भगवान् अपने मुख से बार बार हमेशा हनुमान् की प्रशंसा करते हैं। शंकरजी स्वयं बोले-

गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई। बार बार प्रभु निज मुख गाई।।

शंकरजी के नेत्र डबडबा गए, हे गिरिजा, हे पार्वती, हे भवानी हनुमानजी की प्रशंसा बार-बार स्वयं भगवान् अपने मुख से करते हैं। जब भी कोई हनुमानजी की प्रशंसा करता है प्रभु उसे रोक लेते हैं। नहीं, आपको मालूम नहीं, हनुमानजी के बारे में सुनना है तो मैं सुनाऊंगा, मुझे जितना मालूम है। भरतजी को कहा भगवान् ने, भैय्या इस वानर को एक बार निगाह भरकर देख लो। रघुवंश की इकहत्तर पीढ़ियां भी हनुमान् की सेवा में लग जाएं तो भी रघुवंश कभी हनुमानजी के ऋण से उऋण नहीं हो पाएगा। भरत भाई -**कपि से उऋण हम नाहीं।** भरत, रघुवंश में आज जो दीपावली उत्सव दिखाई दे रहा है, यह मेरे हनुमान् की कृपा से है। अगर मेरे हनुमान् ने संजीवनी लाकर नहीं दी होती तो मेरा लखन जीवित नहीं होता तो पूरा रघुवंश डूब गया होता। रघुवंश अगर आज है तो हनुमानजी की कृपा से और भगवान् स्वयं बोले-

सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखेउँ करि बिचार मन माहीं।।
प्रति उपकार करौं का तोरा। सनमुख होइ न सकत मन मोरा।।

आप कर्जदार की कमजोरी और मजबूरी जानते हैं। साहूकार के सामने कर्ज लेनेवाला हमेशा झुका रहता है। भगवान् कहते हैं कि मुझे झुके रहने में भी कोई संकोच नहीं। तेरे इतने बड़े उपकार मेरे ऊपर हैं कि चाहने के बाद भी मैं तेरे ऋण से उऋण नहीं हो सकता। राम ने कहा कि हनुमान्, तू मुझे मेरे भरत भैय्या के समान प्रिय है। भरतजी के भाई समान हनुमानजी को कहा इसके कई अर्थ हैं। एक तो उपासना की दृष्टि से और एक सांसारिक दृष्टि से भी, दोनों दृष्टियों से श्रीहनुमानजी, भरतजी के भाई हैं। सांसारिक दृष्टि से भी अगर विचार करें आपने वह कथा तो सुनी होगी। हनुमानजी भी रघुवंशी हैं। जिस प्रसाद से इन चारों भाईयों का जन्म हुआ, उसी यज्ञ के प्रसाद से श्रीहनुमानजी का भी जन्म हुआ। प्रसाद के रूप अलग-अलग, श्रीहनुमानजी

भी रघुवंशी हैं। इसलिए गोस्वामीजी ने कहा था कि **बरनउँ रघुबर विमल जसु** मैं किसी बन्दर के यश का वर्णन नहीं कर रहा हूँ बल्कि रघुवर के यश का वर्णन कर रहा हूँ। क्योंकि आप रघुवंशी हैं, रघुवर माने रघुकुलश्रेष्ठ हैं। जिनको भगवान् स्वयं रघुवर श्रेष्ठ कह रहे हैं। **सुन सुत तोहि उरिन मैं नाहीं।** उनकी श्रेष्ठता का कौन वर्णन करें। जिस प्रसाद से श्रीभरतजी का जन्म हुआ है उसी प्रसाद से श्रीहनुमानजी का भी। हमने संतों के श्रीमुख से सुना है कि पायस प्रसाद लेकर दशरथजी राजभवन में आए हैं। कैकेयीजी सबसे सुन्दर भी थीं और दशरथजी को सबसे प्रिय भी थीं तो कैकेयीजी को मालूम था कि प्रसाद मुझे दिया जाएगा और कैकेयीजी को विवाह के समय के वरदान की भी जानकारी थी कि मेरे पिताजी ने मेरा विवाह इस शर्त पर किया है कि मेरे गर्भ से उत्पन्न पुत्र ही राज्य का उत्तराधिकारी बनेगा। संतानों की उत्पत्ति के लिए पहले मुझे ही दिया जाएगा, लेकिन हुआ इसके उल्टा। सबसे पहले दशरथ जी ने प्रसाद का आधा भाग कौशल्या जी को दिया और आधे का आधा कैकेयी जी को दिया। कैकेयी जी का माथा ठनक गया। कैकेयी जी क्रिया शक्ति हैं न और क्रिया बहुत जल्दी ठनकती है। क्रिया में अहंकार होता है। अहंकार हमेशा ठनकता है। प्रसाद पाकर प्रसन्न होना चाहिए। माथा ठनका लिया। प्रसाद तो कृपा से मिलता है। कैकेयी कुनमुना रही थी और कुनकुना रही थी। ऊपर चील उड़ रही थी, वह हाथ से प्रसाद लेकर उड़ गयी। जो मिला था वह भी चला गया। नियम यह है कि जो मिला है वह प्रभु का प्रसाद है। शीश पर धारण करो और उसे स्वीकार करो। परमात्मा के दिए गए प्रसाद पर भी नुक्ताचीनी करोगे तो जो दिया है वह भी चला जाएगा। अब तो हा-हाकार मच गया। यहाँ से प्रसाद लेकर चील जब आकाश में उड़ रही थी तो अचानक पवन का तेज झौंका आया चूंकि पवन तो कृपा करने ही वाले थे और चील के मुख से वह प्रसाद गिरा और प्रसाद सीधे अंजनाजी की गोद में जा गिरा, देखो कृपा के लिए कोई पात्रता की आवश्यकता नहीं। कृपा प्रतीक्षा से आती है, कृपा स्वयंमेव आती है। दया मांगनी

पड़ती है। कृपा प्रसाद के रूप में आती है। अंजनाजी स्थिर बैठी थीं। कैकेयीजी चंचल थीं, आया प्रसाद चला गया। अंजनाजी शांत स्थिर बैठी थीं कृपा का प्रसाद अपने आप गोदी में आ गया। प्रतीक्षा करिए, धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करिए। प्रभु की प्रतीक्षा का प्रसाद स्वयंमेव आएगा, पंथ स्वयं आएगा। अहिल्याजी बैठी थी स्थिर चित्त धैर्यपूर्वक, भगवान् स्वयं अहिल्याजी के द्वार पर आ गए। शबरी धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा में बैठी है भगवान् शबरीजी के द्वार पर आ रहे हैं। विदुर-विदुरानीजी धैर्यपूर्वक अपनी कुटिया में बैठे कीर्तन कर रहे हैं प्रतीक्षा कर रहे हैं। भगवान् स्वयं आकर द्वार खटखटाते हैं। प्रसाद प्रतीक्षा से, प्रभु कृपा से मिलता है और उस प्रसाद का सेवन अंजनीमाँ ने किया है। तो जिस प्रसाद से श्रीभरतजी का जन्म हुआ। उसी प्रसाद से श्रीहनुमानजी का भी जन्म हुआ। इसलिए भगवान ने कहा है कि **तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई।** कई बार कथाओं में हमसे एक प्रश्न और करते हैं कि भगवान् जब लक्ष्मणजी की मूर्छा के समय रो रहे थे। तो रोते-रोते प्रभु बोल रहे थे। कि **मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।** देखो मरण के रुदन में पुरानी-पुरानी घटनाएं मनुष्य याद करके रोता है। आपने माताओं को रोते देखा होगा वह किसी ऐसे अवसर पर जब रोती हैं तो बोलती जाती हैं। पुरानी-पुरानी घटनाएं उनको याद आती रहती हैं। रोती जाती हैं तो रुदन में हृदय निर्मल होता है और निर्मल हृदय में से पुरानी बातें याद आती जाती हैं। भगवान् कह रहे हैं **मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।** सहोदर का अर्थ है एक ही गर्भ से पैदा होना तो यहां कई बार प्रश्न किया कि लक्ष्मणजी तो सहोदर नहीं थे। भगवान् सहोदर क्यों बोल रहे हैं। तो भगवान् यहाँ भी पुरानी बात को याद कर रहे हैं। आपको मालूम होगा कि जिस समय प्रलयकाल होता है उस समय सारी सृष्टि जलमग्न होती है, तो सृष्टि का निर्माण उस समय संकल्प से होता है तो सबसे पहले उस प्रलयकाल में एक स्वर्ण का अण्डा आता है। आदिनारायण और शेषनारायण उस स्वर्ण अण्डे से प्रकट होते हैं। वेद में इसका मंत्र है-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे। भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्॥
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमाम्। कस्मैदेवाय हविषा विधेम्॥

ॐ हिरण्यगर्भ से आदिनारायण और शेषनारायण दोनों एक साथ प्रकट होते हैं इसलिए लक्ष्मणजी शेषनारायण के रूप में भगवान् के सहोदर हैं, इसलिए **निज जननी के एक कुमारा** यह जो बोला गया। यहाँ पर शंका हुई यह तो दो भाई है। दो भाई एक कैसे? परशुरामजी वाली कथा याद होगी। धरती के एकमेव पुत्र थे शेषनाग, प्रकृति के एकमेव पुत्र हैं शेषजी। तो तुम माँ के अकेले पुत्र हो इसलिए भी जाग जाओ और सहोदर हो क्योंकि प्रकृति से मेरा प्राकट्य है और प्रकृति से ही तुम्हारा प्राकट्य है। इस नाते से भी तुम मेरे सहोदर हो। तो आज जिस प्रसाद से भरतजी का जन्म हुआ है उसी प्रसाद से हनुमानजी का जन्म हुआ है। **तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई।** यह देह के नाते और अगर उपासना के नाते देखें तो जिस उपासना के भाव में श्रीभरतजी रहते हैं हमेशा श्रीभरतजी की आँखों में आँसू मिलेगें। उनकी झांकी का दर्शन करोगे तो डबडबाते मिलेंगे, कंपकंपाते होंठ, झुका हुआ सिर व्यग्रता, विनम्रता की मूर्ति बिल्कुल रोते हुए उनकी कभी आंखें देखो सूखी नहीं मिलेगी जैसे मीरा के नेत्र भी कभी सूखे नहीं मिलेंगे, चैतन्य महाप्रभु के नेत्र भी कभी सूखे नहीं मिलेंगे। ऐसे ही श्रीभरतजी के भी नेत्र कभी सूखे नहीं मिलेंगे।-

पुलकगात हिय सिय रघुवीरु। नाम जीह जपि लोचन नीरु॥

हृदय में श्रीराम और जानकीजी हैं और लक्ष्मण के हृदय में **जासुहृदय आगार,बसहिं राम सर चाप धर।** दैन्यता के उपासक हनुमानजी और भरतजी जिनको अपने अन्दर कोई गुण दिखाई ही नहीं देता। दास भाव के उपासक हनुमानजी साधु हैं, भरतजी भी साधु हैं। भरतजी तो केवल साधु हैं मगर हनुमानजी साधु संत के रखवाले हैं, **तात भरत तुम सब विधि साधु......** और हनुमानजी साधु-संत के रक्षक हैं **साधु संत के तुम रखवारे** और यह दो ही महापुरुष ऐसे हैं जिनकी चर्चा भगवान् करते हैं। भरतजी का हर समय-

भरत सरिस को राम सनेही। जगु जप राम रामु जप जेही॥

चौबीस घण्टे प्रतिपल,प्रतिक्षण यदि भगवान् किसी का सुमिरन करते हैं तो भरतजी का और जब भगवान् किसी की चर्चा करते हैं तो हनुमानजी की।

तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई।

भगवान् ने कहा देख हनुमान् सारा जगत तो मुझे प्रभु कहकर पुकारेगा लेकिन आज मेरी घोषणा है कि सारा जगत तुमको महाप्रभु कहकर पुकारेगा। भगवानश्रीराम प्रभु हैं और हनुमानजी महाप्रभु है-

काज किये बड़ देवन के तुम। वीर महाप्रभु देखि बिचारौ॥
कौन सो संकट मोर गरीब को। जो तुमसे नहिं जात है टारो॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु। जो कछु संकट होय हमारो॥
को नहिं जानत है जगमें कपि। संकटमोचन नाम तिहारो॥

इतना बड़ा स्थान, इतनी बड़ाई हनुमानजी को मिली कि सब लोग गद्गद् हो गए। भगवान् जिसकी प्रशंसा करें उसकी तो बात ही कुछ और है। लेकिन श्रीहनुमानजी प्रशंसा से फूलते नहीं हैं। हमारी तो कोई यदि ईर्ष्या में भी प्रशंसा कर दे या हमको मूर्ख बनाने के लिए भी प्रशंसा कर दे तो भी हम फूल जाते हैं। भगवान् जिनकी प्रशंसा कर रहे हैं, हनुमानजी को प्रसन्न होना चाहिए था लेकिन हनुमानजी एकदम भगवान् के चरणों में गिर पड़े, प्रभु रक्षा करो। भगवान् ने कहा, क्या बात है। मैं प्रशंसा कर रहा हूँ, तुम कहते हो मेरी रक्षा करो। क्या बात है राक्षसों से अकेले भिड़ रहे थे लंका में, तब तो तुमने मुझे नहीं पुकारा मेरी रक्षा करो और मेरे चरणों में कहते हो कि मेरी रक्षा करो। हनुमानजी ने कहा बड़े-बड़े राक्षसों से अकेला भिड़ सकता हूँ, मुझे बिल्कुल भय नहीं लगता लेकिन प्रशंसा के राक्षस से बहुत भय लगता है। क्योंकि इसी मुख से आपने एक बार नारदजी

की प्रशंसा की थी। नारदजी की प्रशंसा की तो वह बन्दर बन गए और मैं तो पहले से ही बन्दर हूँ। मुझे आप अब और क्या बनाना चाहते हो? यह हनुमानजी की दैन्यता है-

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं।।

हजारों बदन (सारा जगत) या स्वयं शेषनाग जिनका यशोगान करते हैं। हनुमानजी ने अपने यश का त्याग कर दिया और भगवान् कहते हैं मैं तो तेरे यश का गुणगान करूँगा ही, मैं शेषनाग से भी तेरा गुणगान कराऊँगा। हनुमानजी की प्रशंसा लक्ष्मणजी बहुत करते हैं। हालांकि लक्ष्मणजी को ईर्ष्या होनी चाहिए थी जब प्रभु ने यह बोला था कि **तुम मम प्रिय लक्ष्मण तै दूना।** लेकिन उनको ईर्ष्या नहीं हुई क्योंकि वह उनके साथ थे। लक्ष्मणजी गद्गद् हो उठे कि भगवान् का कोई इतना प्रिय भी हो सकता है काश मैं भी इतना प्रिय होता। ईर्ष्या न हुई बल्कि आनन्द हुआ लक्ष्मणजी ने कहा हनुमान् तुम सचमुच हमसे ज्यादा भाग्यशाली हो। बोले क्योंकि मैं तो जानकीमाँ के साथ तेरह वर्ष से लगातार साथ-साथ था, तो भी मैं माँ का विश्वास नहीं जीत पाया। माँ को मेरे ऊपर सन्देह हो गया तभी तो माँ ने भी विश्वास ठुकरा दिया। जब मैंने कहा था कि प्रभु पर कभी संकट नहीं आ सकता। लेकिन तुम माँ के पास थोड़ी देर को ही गए थे लेकिन माँ को तुमने भरोसा दिला दिया-

कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास।।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिन्धु कर दास।।

जानकीजी समझ गयीं, मनसा, वाचा, कर्मणा यह भगवान् का दास है। इसलिए लक्ष्मणजी ने कहा हनुमान् मैं यह घोषणा करता हूँ कि भगवान् का काम मेरे बिना तो चल सकता है लेकिन भगवान् का काम तुम्हारे बिना नहीं चल सकता-

दुनिया चले न श्रीराम के बिना। रामजी चलें न हनुमान के बिना॥
जब से रामायण पढ़ ली है-एक बात मैने समझ ली है ।
रावण मरे ना श्रीराम के बिना-लंका जले ना हनुमान के बिना॥
दुनिया चले न श्रीराम के बिना॥१॥
लक्ष्मण का बचना मुश्किल था-कौन बूटी लाने के काबिल था।
लक्ष्मण बचे ना श्रीराम के बिना-बूटी मिले ना हनुमान के बिना॥
दुनियाँ चले ना श्रीराम के बिना॥२॥
सीता हरण की कहानी सुनो-एक बार मेरी जबानी सुनो।
सीता मिले ना श्रीराम के बिना-पता चले ना हनुमान के बिना॥
दुनिया चले न श्रीराम के बिना॥३॥
रामजी चले ना हनुमान के बिना॥

भगवान् को बहुत अच्छा लगा कि लखन प्रशंसा कर रहे हैं, क्योंकि साथ रहनेवालों में कभी-कभी साथी के लिए ईर्ष्या पैदा हो जाती है। आज मेरे लखन के हृदय में भी हनुमान् के लिए अत्यधिक स्नेह है। ऐसा कहकर प्रभु ने हनुमान् को पुनः कण्ठ से लगा लिया। कण्ठ से लगाने का अर्थ है कि हनुमान् तुम हमेशा मेरे कण्ठ में रहोगे। तुम्हारी कण्ठ और जिह्वा पर मैं हूँ और मेरे कण्ठ और जिह्वा पर भी हमेशा तुम ही रहोगे। मेरे कण्ठ से जब भी निकलेगा तुम्हारा ही नाम निकलेगा-

सनाकदिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥

ब्रह्माजी, नारदमहाराज, शेषजी, शारदा जितने भी मुनि हैं सब तुम्हारी प्रशंसा कर रहे हैं। सनकादिक ऋषि

प्रशंसा करते हैं चूंकि श्रीहनुमानजी कथा के रसिक हैं और सनकादिक ऋषि भी जहाँ-जहाँ जाते हैं बालक रूप लेकर बैठते हैं, कथा श्रवण करते हैं। हमसे भी ज्यादा कथा के रसीक श्रोता श्रीहनुमानजी। इस कारण से वे हनुमान् की प्रशंसा करते हैं। जिस समय मेघनाथ ने हनुमानजी पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया तो हनुमानजी को वरदान था वें ब्रह्मास्त्र की महिमा को तोड़ सकते थे लेकिन हनुमानजी जानते हैं कि मैं मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का सेवक हूँ और यदि मैं मर्यादा तोड़ूंगा तो यह शोभा नहीं देता, दूसरा, बुजुर्गों की मर्यादा को बनाए रखना इससे बड़ा कोई धर्म कार्य नहीं होता इसलिए हनुमानजी जानबूझ ब्रह्मास्त्र के प्रयोग से मूर्छित होकर गिरने का नाटक करते हैं। हनुमानजी को कौन मूर्छित कर सकता है? जो मूर्छित की मूर्छा दूर करने का क्षमता रखते हैं उनको कौन मूर्छित कर सकेगा। लेकिन केवल ब्रह्माजी की मर्यादा के लिए हनुमानजी ने नाटक किया। जामवंतजी ब्रह्माजी के अंशावतार हैं। जामवंत जी जब भी प्रशंसा करते हैं हनुमानजी की ही करते हैं।

रामकाज कीन्हेहु हनुमाना। राखे सकल कपिन्ह के प्राना।।

हे भगवान्,यह तो हमारी क्षमता नहीं थी, यह तो हनुमानजी की कृपा है कि आज हम आपके चरणों में बैठे हैं। भगवान् जब भी विश्राम के क्षणों में होते हैं तो जामवंतजी आकर भगवान् को हनुमान् की ही कथा सुनाया करते हैं।

एक बार मेघनाथ ने पूरी सेना को मूर्छित कर दिया। सन्ध्या के समय विभीषणजी को साथ लेकर श्री हनुमानजी अपनी सेना को देखने गए कि कौन मारा गया, कौन मूर्छित है और कौन घायल है, किसकी क्या दशा है। प्रांगण में कुछ मरे पड़े हैं, कुछ मूर्छित हैं। अंधेरे का समय देखा जामवंत मूर्छित पड़े हैं तो जाकर विभीषणजी ने पूछा कि जामवंतजी आप कैसे हैं। बोले मैं तो जैसा हूँ ठीक हूँ। पहले यह बताओ कि हनुमान् कैसे हैं? हनुमान् कहाँ हैं? तो विभीषणजी ने कहा आपने भगवानराम के बारे में नहीं पूछा लक्ष्मणजी के बारे में नहीं पूछा और बाकी किसी के बारे में नहीं पूछा। आपने श्रीहनुमानजी के बारे में ही क्यों पूछा? जामवंत

जी ने कहा यदि हनुमानजी जीवित हैं तो हम सब जीवत है और अगर हनुमान जीवित नहीं होंगे तो हमारे सबके जीवित होने के बाद भी हम सब मरे हुए के समान हैं। हमारा किसी का कोई अस्तित्व ही नहीं है। तो हनुमानजी ने कहा कि मैं आपके चरणों में ही बैठा हूँ। तब जामवंतजी ने कहा इस समय मुझे दिखाई कुछ नहीं दे रहा है। अब जैसे हो वैसे संजीवनी बूटी लेकर आओ और पूरी सेना को जीवित करो। **सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा, नारद-सारद सहित अहीसा।** चूंकि नारदजी कीर्तन के प्रेमी हैं और कीर्तन राग-रागनियों के द्वारा ही रुचिकर लगता है और श्रीहनुमानजी राग-रागनियों के मालिक हैं। नारदजी प्रशंसा करते हैं। एक बार पूरी सेना की मुर्छा को हनुमानजी ने राग मालकोष गाकर सुनाया मूर्छा दूर कर जीवित कर दिया था। यह हनुमानजी के राग गायन की विशेषता थी। शारदा प्रसन्न हो गयीं क्योंकि राग और रागनियों के रूप में शास्त्र शुद्ध हो गया। **जम, कुबेर, दिकपाल जहाँ ते, कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।** यमराज जी भी यश गाते हैं। रावण के यहाँ यम नाम का दरवाजा था। उसके भीतर रावण ने यमराज को कैद कर रखा था। श्री हनुमानजी ने यमराज को भी मुक्त किया। उस दरवाजे को तोड़ कर प्रवेश कर गए और वहाँ से मृत्यु को मुक्त किया। जहाँ जाने से यमराज भी डरता था। श्रीहनुमानजी ने दरवाजे को तोड़ कर मृत्यु को मुक्त कर दिया। कुबेर का तो आपको मालूम है कि रावण ने सारा राज्य ही छीन लिया था। यह लंका पहले कुबेर के पास थी। पुष्पक विमान कुबेर के पास था। सारा राज्य, सारा वैभव सब कुछ रावण ने छीन लिया था। पुनः सारा का सारा वापस कराना यह हनुमानजी के वश की बात थी। अब कुबेरजी क्या कहते हैं और बाकी की तो बात छोड़ दीजिए। दिगपाल चूंकि रावण के यहाँ चाकरी करते थे। **दिगपालन में नीर भरावा।।** सभी विद्वान, सभी कवि जहाँ तक हो सकता है यह श्री हनुमानजी की प्रशंसा करते हैं। अरे और तो और रावण स्वयं हनुमानजी की प्रशंसा करता है। **है कपि एक महाबलशाली।।** रावण सामान्यता किसी की प्रशंसा नहीं करता, जो दिगपालों से भी पानी भराता था, वह भी हनुमानजी की प्रशंसा कर रहा है। आगे का दर्शन-

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।

शास्त्र में सुग्रीव को जीव कहा गया है और जीव के ऊपर सबसे बड़ा उपकार कौन सा है? जीव के ऊपर सबसे बड़ा उपकार कहा गया है कि जीवात्मा को परमात्मा से मिला देना। इससे बड़ा और कोई उपकार नहीं है और यह कार्य केवल श्री हनुमान जी ही करा सकते हैं। श्रीहनुमानजी ने सुग्रीव को रामजी से भी मिला दिया और राजा भी बनवा दिया। भगवान भी मिले सुग्रीव को और भोग भी मिला। यह हनुमानजी की विशेषता है। और **देवता चित्त न धरई, हनुमत सेई सर्बसुख** करई। सब प्रकार के सुखों को प्रदान करने वाली भगवत प्राप्ति भी और भोगों के ऐश्वर्य की प्राप्ति, दोनों एक साथ में विरोधाभासी थे, उन दोनों को प्राप्त करा देना यह हनुमानजी के बस की ही बात थी। पहले राम, बाद में राज्य और यह सिद्धान्त है कि पहले अगर राम मिल जाएंगे तो राज्य के भोग का जीव दुरुपयोग नहीं कर सकता। सुग्रीव करने लगा था, राम के मिलने के बाद भी जीवात्मा कभी-कभी भोग में राम को बिसार देता है। उसे भी हनुमानजी ठीक कर देते हैं। जब सुग्रीव भोग में डूब गए, तब भी हनुमानजी की भूमिका गुरु के रूप में थी-

इहाँ पवनसुत हृदय बिचारा। रामकाज सुग्रीव बिसारा।।
निकट जाइ चरनन्ह सिर नावा। चारिउ विधि तेहि कहि समुझावा।।

हनुमानजी सब प्रकार से समझाकर जीवात्मा को हरि चरणों में ले आना, यही सबसे बड़ा उपकार है। भोग, वासना में डूबा हुआ जीव भगवान् के चरणों में पहुँच जाए इससे बड़ा और क्या उपकार हो सकता है। पहले हमारे पास धन, वैभव जाये, तब तीर्थों में जाएंगे, तब संतों की सेवा करेंगे, तब मन्दिरों का दर्शन करेंगे, तब भजन, पाठ करेंगे और इसी में सारा जीवन डूब जाता है। न इधर के रहते हैं, न उधर के। राम संग यदि

पहले मिले तो धन भी कमाया जा सकता है और धन का सदुपयोग भी किया जा सकता है। अगर सीधे धन कमाया तो धन ही डुबा देता है। अर्थ ही अनर्थ कराता है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस बहुत अच्छा उदाहरण देते थे कि देखो भाई जगत में रहते हो, रहना तो जगत में है, जगत को छोड़ा तो नहीं जा सकता पर कैसे रहना- जैसे कटहल के साथ व्यवहार करते हो ऐसे रहना। कटहल का साग बनानेवाले थोड़ी चतुराई करते हैं। पहले हाथों में तेल लगाते हैं फिर कटहल को काटते हैं। अगर तेल नहीं लगाया तो इसका दूध हाथों पर चिपक जाता है और वह आसानी से छूटता भी नहीं। और यदि तेल लगा लें तो फिर कटहल से कोई इनफेक्शन नहीं होता। संसार कटहल की तरह है इसको काटकर हल किया जाता है। हम लोग चाटकर हल करना चाहते हैं। संसार के प्रत्येक स्वाद को चाटते हैं फिर समस्याओं का हल करना चाहते हैं पर इसको काटकर हल करना चाहिए और इसका जो दूध है वह अपने हाथों पर न चिपके इसके लिए पहले श्रद्धा का तेल लगा लो अगर श्रद्धा, प्रेम, स्नेह का तेल लगा लोगे तो फिर कटहल रूपी संसार का प्रभाव आएगा ही नहीं। पहले भगवान् से मिलिए, भोगों की ओर बाद में जाइए। हम भोगों को पहले मिलते हैं, भगवान् की ओर बुढ़ापे में जाना चाहते हैं। विश्वामित्र जब आए हैं राम-लक्ष्मण को मांगने-

अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर वध मैं होब सनाथा॥

तो दशरथजी ने कहा, मुझे ले चलो, मेरी सेना ले चलो, राम को देते नहीं बनता तो विश्वामित्र ने कहा, राजन् भगवान् पर मुरझाया हुआ पुष्प नहीं चढ़ाया जाता। भगवान् पर खिला हुआ पुष्प चढ़ाया जाता है। हमारे जीवन की रचना बदल गई, हम खिली हुई जवानी को भोगों को समर्पित करते हैं और मुरझाए हुए बुढ़ापे को भगवान् की ओर ले जाते हैं। जिसने जवानी में भजन कर लिया, बुढ़ापे में वह भजन काम आता है जिसने जवानी में शक्ति अर्जित कर ली उसको बुढ़ापे में कराहना नहीं पड़ता, इसलिए पहले राम फिर आराम।

कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥

ऐसे हनुमानजी जो कृपा सुग्रीव के ऊपर करते हैं वह हमारे ऊपर भी करें-

तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना। लंकेस्वर भये सब जग जाना॥

विभीषण बहुत दुःखी थे अरे व्यक्ति कितना हीनभाव से भर गया होगा। बीमार व्यक्ति भी अगर कोई जा रहा है और आप अगर उससे मिले आपने उससे पूछा कि आप कैसे हैं तो वह बोलेगा ठीक हैं। घर में कलह है, क्लेश है, दुःख है पर आप पूछेंगे कि घर में कैसा चल रहा है तो वह कहेगा सब ठीक चल रहा है। एक सामान्य व्यक्ति भी अपने रोने का दुःखड़ा रोना नहीं रोता। लेकिन विभीषण जैसा व्यक्ति, हनुमानजी ने जब पूछा कि कैसे हो विभीषण, बोलता है: अरे भाई क्या बताएं-

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी। जिमि दसनन्हि महुँ जीभ बिचारी॥

ये रावण की कैबिनेट के सबसे बड़े मंत्री थे। स्वर्ण भवन में रहनेवाले और यह भी अपने को बेचारगी की श्रेणी में ले आए, इतना हीन भाव से भरा हुआ। हनुमानजी ने कहा तुम्हारे ऊपर प्रभु की बड़ी कृपा है। विभीषण बोले दाँतों के बीच में जीभ अरे यही कृपा है क्या? हुनमानजी ने कहा कि जिसको तुमने कष्ट समझा है वह कष्ट नहीं है, वह परमात्मा की कृपा है। अरे पुष्प तो कांटों में ही खिला करते हैं, अगर कांटे न हों तो पुष्प की भी शोभा नहीं होगी और न ही वे सुरक्षित रहेंगे। लेकिन तुमने कांटे तो देख लिए पर कांटों के बीच में हंसता-मुस्कुराता सुगन्ध से भरा हुआ पुष्प नहीं देखा। जीवन में यदि कष्ट नहीं आएगा तो आनन्द का स्वाद भी आपको ठीक से नहीं मिलेगा। अगर रात नहीं होगी तो विश्राम कैसे करोगे। आप सोचें कि चौबीस घण्टे दिन ही होता तो मनुष्य की दशा क्या हो जाएगी, पागल हो जाएगा। यह तो भगवान की कृपा है। जिसे तुम कष्ट समझ रहे हो, हीनभाव में डूबे हुए विभीषणजी को मंत्र दे दिया, जीवन बेचारगी का नहीं चाहिए,

विचारवान होना चाहिए। इसलिए हनुमानजी जो भी करते हैं पहले विचार करते हैं। आज हनुमानजी यह एहसास विभीषण को करा रहे हैं कि तुम मोह के भाई नहीं हो तुम तो महात्मा के भाई हो। मेरे भाई हो चलो माँ का दर्शन करें लेकिन इतना हीनभाव था कि विभीषण नहीं गया। युक्ति बता दी, **युक्ति विभिषण सकल सुनाई॥** व्यक्ति अपने बुरे दिनों के लिए भी युक्तियां बता देता है। बुरे दिन हैं, समय खराब है, कर्म खराब रहे होंगे। भोगना तो पड़ेगा ही क्या करें, मनुष्य अपने दुःख, दर्द के लिए भी युक्तियां निकाल लेते हैं, उसका उपाय नहीं सोचते। बाद में जब रावण ने लात का प्रहार किया, तब विभीषण को प्रभु की याद आई, तब उस समय सोचने लगे कि हनुमानजी की बात ठीक थी, मैंने ही भूल की। संत अलार्म का कार्य करते हैं। हमने रात को आठ बजे अलार्म भरा, सुबह चार बजे उठने के लिए भरा है। प्रातः चार बजे बोलेगा अलार्म, जब भरा जाता है तब नहीं बोलता है। भरा कभी जाता है और बोलता कभी है। लेकिन बोलता जरूर है। ऐसा नहीं होता कि भरने के बाद वह बोले नहीं। सत्संग का भी यही अर्थ होता है। सत्संग हम आज सुनते हैं हजारों लोग कथा सुन रहे हैं, इन पर कोई परिणाम तो होता नहीं। अरे भई, परिणाम एकदम नहीं होता आज हमने कथा के माध्यम से उनके भीतर सत्संग का अलार्म भर दिया। कभी न कभी, किसी न किसी घटना पर, किसी न किसी स्थिति पर, अवसर पर इनको हमारी याद आ जाएगी कि एक बार कौशलजी महाराज ने कथा में यह कहा था कि अलार्म आज भरा है हो सकता है दो साल बाद, चार साल, दस साल, बीस साल या अन्तिम समय में वह अलार्म बज जाए। अलार्म भरा है तो बजेगा अवश्य। इसलिए जो आज सुन रहे हैं वह आपके भीतर भर गया है। कभी न कभी अवश्य बजेगा। हनुमानजी विभिषण को मंत्र का अलार्म भर आए थे। विभीषण उस समय नहीं गए। हो सकता है, युक्ति से उन्होंने अलार्म के ऊपर हाथ धर दिया हो, इसी को युक्ति कहते हैं। लेकिन जब जोर का थपका मारते हैं तो अलार्म बजने लगता है। तो भरी सभा में रावण ने विभीषण की घड़ी को लात मारी उसी समय याद आ गयी–

रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि।
मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि।।

मैं रावण की सभा को छोड़कर राम की शरण में जाऊंगा-

तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना। लंकेस्वर भये सब जग जाना।।

हनुमानजी के मंत्र ने पापेश्वर की लात खाने वाले को भी लंकेश्वर बना दिया। ये श्रीहनुमानजी की कृपा है। ये हनुमानजी की महिमा है। आगे का दर्शन हम सबके काम का है-

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं।।

इस क्रूज की कथा में इसी चौपाई के मर्म को ही समझने के लिए हमने यह प्रसंग उठाया है। प्रभु सागर के किनारे पर विराजमान हैं। गम्भीर, गहरा समुद्र हिलोरे मार रहा है। भगवान् चिंता में डूबे हैं कि सागर कैसे पार हो, भगवान् ने सुग्रीवजी से, विभीषणजी से प्रश्न किया-

सुनु कपीस लंकापति बीरा। केहि बिधि तरिअ जलधि गम्भीरा।।
संकुल मकर उरग झष जाती। अति अगाध दुस्तर सब भाँती।।

यह प्रश्न प्रभु के श्रीमुख से आया है। सबने उत्तर अपनी-अपनी मति के अनुसार दिया। श्रीहनुमानजी का जो उत्तर आया है वह सबको प्रेरणा देनेवाला है। हनुमानजी ने कहा प्रभु चिंता क्यों करते हो, कैसे पार होंगे-

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं।।
नाम लेत भव सिन्धु सुखाहीं। करहुँ विचार सुजन मन माहिं।।

बचपन में हनुमानजी ने सूर्य को अपने मुख में रख लिया था और आज मुद्रिका को मुख में रखा है।

यह सिद्धांत है कि जो सूर्य को मुख में रखेगा वह ही मुद्रिका को भी मुख में रख सकता है। सूर्य ज्ञान का प्रतीक है। जो ज्ञान का भूखा होगा सुना है न जन्म लेते ही पहले दिन भूख लगी। जिसको जन्म से ही ज्ञान की भूख जगी है। हमको बुढ़ापे में ज्ञान की भूख जागती है और जागती है भी कि नहीं। भगवान् जाने जिसको जन्म से ज्ञान की भूख होगी वही अपने मुख में श्रीराम नाम की मुद्रिका को डालेगा। मुद्रिका को मुख में रखने का अर्थ है कि मुद्रिका में जो लिखा गया था वह मुख में रखा गया। उस पर क्या लिखा था–श्रीराम नाम, प्रभु राम का नाम, प्रभु का सुन्दर नाम, उस श्रीराम रस मुक्ति को ही उन्होंने मुख में रखा है–

सीता राम, सीता राम, सीता राम कहिए।
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिए॥

मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में।
तू अकेला नहीं प्यारे, राम तेरे साथ में।

विधि का विधान जान, हानि-लाभ सहिये॥
सीता राम, सीता राम, सीता राम कहिए........।

किया अभिमान तो फिर, मान नही पाएगा।
होगा प्यारे वही जो, श्रीरामजी को भाएगा।

फल आशा त्याग, शुभ काम करते रहिए॥
सीता राम, सीता राम, सीता राम कहिए........।

जिन्दगी की डौर सौप, हाथ दीनानाथ के ।
महलों में राखे चाहे, झोंपड़ी में वास दे।

धन्यवाद, निर्विवाद, राम राम कहिए॥
सीता राम, सीता राम, सीता राम कहिए........।

आशा एक रामजी से, दूजी आशा छोड़ दे।
नाता एक रामजी से, दूजा नाता तोड़ दे।
साधु-संग, राम-रंग, अंग-अंग रंगिए॥
सीता राम, सीता राम, सीता राम कहिए........।

काम रस त्याग प्यारे, राम रस पगिए।
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिए।
सीता राम, सीता राम, सीता राम कहिए........।

मुख में राम नाम और हाथ प्रभु सेवा में जब हम आपस में मिलते हैं। पूरे भारत में कोई किसी भी उपासना को मानता हो लेकिन जब भारत के ग्रामीण लोग आपस में मिलते हैं तो राम-राम कहकर मिलते हैं। इसका अर्थ है राम को प्रणाम करो, वही जीवन का मालिक है। तो इस चौपाई के माध्यम से गोस्वामीजी हनुमानजी के मुख से यह बुलवाना चाहते हैं।

प्रभु मुद्रिका मेलिमुख माहि जलधि। लाँघि गये अचरज नाँहि॥
नाम लेत भव सिन्धु सुखाहीं। करहुँ विचार सुजन मन माहिं॥

इस कलिकाल को यदि पार करना है तो संसार भी सागर है, भगवान् भी सागर के किनारे विराजमान है। तब यह चौपाई आयी है। इस कलिकाल को यदि पार करना है तो किसी और कठोर पूजा अनुष्ठान में उलझने की जरूरत नहीं है-

एहिं कलिकाल न साधन दूजा। जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा।।
रामहि सुमिरिअ गाइये रामहिं। संतत सुनिय राम गुन ग्रामहिं।।

गोस्वामीजी ने बिल्कुल स्पष्ट घोषणा की है किसी और कलिकाल की बात नहीं जिस कलिकाल में हम और आप निवास करते हैं। इस कलिकाल में कठोर साधनों में उलझने की आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि हमारी क्षमता भी तो होनी चाहिए उन साधनों को पूर्ण करने की। योग, यज्ञ, जप, व्रत, तप, अनुष्ठान यह सब यदि किसी एक के द्वारा पूरे हो सकते हैं तो वो है केवल प्रभु-नाम। योग का भी यदि नाम लोगे तो भी भगवान से जुड़ना होगा ही। जिसका नाम लेते हैं, उसकी छवि, उसकी मूर्ति, उसका स्वरूप, उसका स्वभाव, ध्यान में आता है। योग भी नाम जप है, यज्ञ भी नाम जप है। जप भी नाम जप है। आप लेते चले जा रहे हैं। व्रत भी हैं चूंकि नियम है कि लेना ही है। नाम द्वारा ही प्रभु की पूजा भी हो रही है। यह जो सारे के सारे साधना के अंग हैं योग, यज्ञ, जप, तप, पूजा, अनुष्ठान आदि सब एक राम नाम में ही समाहित हैं, भगवान् के पावन नाम में समाए हुए हैं। इसलिए साधु लोग, आपने देखे होंगे, भक्त लोग हर समय नाम जपा करते हैं। हर समय अलग से अनुष्ठान आदि, कोई कुछ करने की जरूरत ही नहीं है। रामहि सुमरिए गाइए और यह कलिकाल तो बड़ा विचित्र है। हमारी शारीरिक क्षमता भी बहुत कम है। मानसिक सन्तुलन भी बहुत कम है। वातावरण में प्रदूषण भी बहुत फैला हुआ है। आज हमारा जीवन सब प्रकार की अन्तर, बाह्य अशान्ति से घिरा हुआ है और इसमें शान्त चित्त से बैठकर कर्मकाण्ड में बैठना कठिन है, समय का अभाव है। विधि-विधान नहीं आता है, संस्कृत का ज्ञान नहीं है। अच्छे पुरोहित व पण्डित नहीं मिलते हैं तो आचार्यों के मौसम के अनुसार हर मौमस के वस्त्र अलग होते हैं। हर मौसम में भोजन अलग प्रकार का होता है। उसी प्रकार हर मौसम का भजन भी अलग प्रकार का है। यह जो कलिकाल का मौसम है। यह बड़ा कठिन भजन करने का नहीं है। कठोर भजन करने का नहीं है। बस एक ही काम है-

रामहि सुमिरिये गाइये रामहिं। संतत सुनिय राम गुन ग्रामहिं।।

उठते, बैठते, सोते, चलते, गाते, नहाए, बिना नहाए, शुद्ध, अशुद्ध, भाव, कुभाव, आलस्य,प्रमाद में जैसे ही बन पड़े मन से, बेमन से हरि नाम जैसे चैतन्य महाप्रभु ने गले में ढोल लटकाकर सारे जगत को संदेश दिया है। **हर्रेनाम, हर्रेनाम, हर्रेनामैव केवलम, कलौ नास्तेव नास्तेव नास्तेव गतिरन्यथा।** महाप्रभु तीन बार बोले हरि नाम, हरि नाम, हरि नामैव केवलम् केवल केवल और केवल हरि नाम हो। दूसरा कोई साधन नहीं है और जब तीन बार कोई बात बोली जाती है तो शास्त्र प्रमाण शुद्ध मानी जाती हैं। मानस में भी इसी को गोस्वामी जी ने तीन बार कहा है-

तरहिं न बिनु सेएँ मम स्वामी, राम नमामि नमामि नमामि।।

केवल राम के नाम को नमन करो राम को नमन करो। बिल्कुल साफ लिख दिया गोस्वामीजी ने-

कलयुग केवल नाम अधारा। सुमिर सुमिर नर उतरिहं पारा।।

नहि कलियोग न यज्ञ न ज्ञाना। एक अधार राम गुन गाना।।

केवल एक आधार। उठते, बैठते, जागते, सोते हरि गुनगान और हरि नाम गाओ। गुरुनानकदेव ने भी कहा है-

नानक दुखिया सब संसारा। सुखी वही जो नाम अधारा।।

बचेगा कौन? बोले, सुखी वही, जो नाम अधारा, जिसने भगवान के नाम का आधार ले लिया उसको किसी दूसरे आधार की जरूरत नहीं है। एक बार किसी ने गोस्वामीजी से पूछ लिया कि आप बड़े निश्चिंत दिखाई पड़ते हैं। इस कलि से तो सब लोग डरे हुए हैं और आपको हम कभी डरा हुआ, सहमा हुआ नहीं देखते हैं, निश्चिंत रहते हैं। गोस्वामी जी ने कहा देखो भैय्या, मैं तो रामजी का पालतू कुत्ता हूँ इसलिए मैं निडर रहता हूँ। बड़े आदमी के कुत्ते को किसी का डर नहीं है। मतलब क्या? गोस्वामीजी ने कहा कुत्ते दो प्रकार

के होते हैं। एक पालतू, दूसरे फालतू और दोनों के साथ अलग-अलग प्रकार का व्यवहार होता है। पालतू को कोई छेड़ता नहीं है और फालतू को कोई छोड़ता नहीं है। जब देखो फालतू कुत्ते पर डण्डा पड़ेगा, डांट पड़ेगी। पालतू को कोई कुछ बोलता ही नहीं है। पहिचान क्या है कि यह पालतू है या फालतू है। गोस्वामीजी कहते हैं कि जिसके गले में पट्टा पड़ा होता है वह पालतू होता है और जिसके गले में पट्टा नहीं है तो समझो वह फालतू है। तो भैय्या, मैंने राम नाम का पट्टा गले में बाँधा है। अब मैं राम का पालतू कुत्ता हो गया हूँ। अब कलि का कोई प्रभाव मेरे पास आने का साहस ही नहीं कर पाता। गोस्वामीजी कहते हैं कि आपको भी निश्चिंत जीने की आदत डालनी चाहिए। अपने गले में रामनाम का पट्टा बाँध लीजिए, दुनियां की विकार, वासनाओं को छेड़छाड़ करने का साहस ही नहीं होगा। इसलिए उन्होंने पहले ही बोल दिया है-

ऐहि कलिकाल न साधन दूजा। जोग जग्य जप तप व्रत पूजा।।

राम ही सुमिरिए गाइये रामहि। श्रीरामचरितमानस का सार तत्व भी रामनाम ही है। आपने वह घटना सुनी होगी गोस्वामीजी ने जब ग्रन्थ पूरा कर दिया। पूरे रामचरित्र में हर चौपाई मंत्र है। एक आचार्य द्वारा मैंने सुना है कि पूरे रामचरितमानस में केवल चौदह चौपाईयों में ही राम नाम नहीं है। बाकी सम्पूर्ण चौपाईयां राम मंत्र से अभिमन्त्रित हैं एक तो मुझे भी मालूम है।

झूठहि लेना, झूठहि देना, झूठहि भोजन, झूठ चबैना। इसमें कहीं राम नाम नहीं है। यह इसलिए हमें मालूम है क्योंकि यह हमसे मेल खाती है। हम इसी में डूबे हैं तो हमें अपने मतलब की मिल गयी।

तो रामचरितमानस का जो सार तत्व है वह श्रीराम नाम है। काशी में जब ग्रन्थ लेकर गोस्वामीजी आए तो काशी के विद्वत् परिषद ने प्रश्न कर दिया। बाबा यह ग्रन्थ लेकर घूम रहे हैं। तुम्हारे इस ग्रन्थ में है क्या? इसमें क्या रखा है तब गोस्वामीजी ने कहा इसमें मेरे प्रभु का मधुर नाम रखा है-

एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा।।

गोस्वामीजी ने कहा कि इसमें मेरे प्रभु श्रीराम जी का नाम रखा हुआ है। इसमें रघुपति का उदार नाम है, और कैसा है अतिपावन, समस्त वेद, शास्त्र और पुराणों का जो सार है, जो निचोड़ है, जो रस है, जो अमृत है वह श्रीराम नाम इसमें विराजमान है। अच्छा यह राम-नाम वेद शास्त्र, पुराणों का निचोड़ है। इसकी महिमा भी बड़ी पुरानी है। विद्वत् परिषद ने पूछा महिमा क्या है आपके राम नाम की? गोस्वामीजी महिमा सुना रहे हैं-

मंगल भवन अमंगल हारी।।

यह मंगलभवन और अमंगलहारी है। इसका प्रमाण क्या है? इसका कोई प्रमाण है, क्या प्रमाण है? तो प्रमाण सुन लीजिए।

मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी।।
संतत जपत सम्भु अविनासी। शिव भगवान ज्ञान गुन रासी।।

यह प्रमाण है। काशी के विश्वनाथ भगवान् स्वयं काशी में बैठकर इसी नाम के बल से सबको मुक्ति प्रदान करते हैं-

महामंत्र जोइ जपत महेसू। कासीं मुकुति हेतु उपदेसू।।

भगवान् सबके कान में राम नाम के मंत्र की ही दीक्षा देते हैं, उसको मुक्ति प्रदान करते हैं तो ऐही कालिकाल केवल हरि नाम इसके लिए कोई विधि नहीं, कोई विधान नहीं। एक ही विधि है कि इसे नित्य सुमिरन करो और एक ही निषेध है कि इसका कभी विस्मरण न करो। सतत इसका स्मरण करो। उठते, बैठते, सोते, जागते, खाते, पीते। देखो एक आचार्य जी ने एक बहुत अच्छी बात कही है बोले अगर विधि-विधान से रामनाम लिया और तब परिणाम हुआ तो परिणाम नाम का नहीं होगा, परिणाम तो विधि-विधान का होगा।

कई लोग कहते हैं कि श्रद्धा से लो, वह कहते हैं कि श्रद्धा से लेने से परिणाम श्रद्धा का होगा। नाम का परिणाम नहीं होगा, नाम की महिमा तो तब है जब अश्रद्धा से भी लिया तो भी परिणाम होगा। जैसे लिया वैसा उसका लाभ। उदाहरण बहुत अच्छा देते थे, वह कहते थे कि बिजली का तार आप जान-बूझकर छुए तो भी झटका लगेगा और अनजाने में छुए, तो भी झटका लगेगा। अग्नि को जानकर छुए तो भी जलाएगी, अनजाने में छुए तो भी जलाएगी। अग्नि अपना काम करेगी, नाम अपनी महिमा देगा। श्रद्धा के साथ लोगे तो आपको रस आएगा, स्वाद भी आएगा लेकिन अश्रद्धा से लोगे तो भी रस ही आयेगा । गोस्वामीजी ने कह दिया है-

भायँ कुमायँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।

अब तो आपको कोई संशय नहीं है श्री रामचरित्र मानस ने प्रमाणित कर दिया है। भाव, कुभाव, अनख, आलस से, किसी तरह से भी नाम जपने से दसों दिशाओं में कल्याण होता है। प्रेम, वैर, क्रोध और आलस्य में ही नहीं यदि रामनाम जाने-अनजाने और यहाँ तक की वह विवशता में भी लिया जा रहा है तो भी उसके द्वारा हमारा कल्याण होना सुनिश्चित ही है।

राम राम कहि जे जमुहाँहीं। तिन्हहि न पाप पुँज समुहाहीं।।

हमारे द्वारा जम्हाई लेने में भी यदि मुख से राम-राम निकलता है तो हमारे पापों के ढेर सामने से उठकर चले जाते हैं।

सादर सुमरिन जेनर करहिं।। यह तो बहुत बड़ी बात है। कोई विधि नहीं, कोई विधान नहीं। एक ही विधि है, एक ही विधान है। जैसे हुनमानचालीसा के साथ गोस्वामीजी ने कोई विधि विधान नहीं दिया-

जो यह पढ़े हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।

हनुमान चालीसा जो पढ़े जैसे पढ़े कोई नियम नहीं कि आसन पर बैठकर, रीढ़ की हड्डी सीधे करके,

पद्मासन लगाए। जो पढे, जैसे पढ़े, जहाँ पढ़े उसे फल मिलेगा, भगवान् शिव इसके साक्षी बैठे हुए हैं, बोले मैं हूँ ना। जब शंकरजी शावर मंत्रों का भी फल प्रदान कर सकते हैं तो यह तो एक सिद्ध संत का सिद्धमंत्र है। इसका तो फल अवश्य मिलेगा। हम भोजन करते हैं मन से करेंगे तो भी पेट भरेगा, कुमन से करेंगे तो भी पेट भरेगा। मन से करोगे तो भी इससे शरीर में रक्त बनेगा, बेमन से करोगे तो भी रक्त बनेगा। मन से, स्वाद से करोगे तो रस आएगा, रुचि बढ़ेगी, आनन्द मिलेगा, मन प्रसन्न होगा, खुशी होगी। मन से करने पर भी वही बेमन से करोगे तो भी। ऐसे ही भगवान् का भजन भी है। किसी आचार्य ने नाममहिमा में बहुत अच्छा लिखा है-

दो बार द्वारिका त्रिवेणी जाये तीन बार।
चार बार काशी में गंग हू नहाये ते।।
पाँच बार गया जाय छः बार नैमीषार।
सात बार पुष्कर में मज्जन कराये ते।।
रामनाथ जगन्नाथ बद्री केदारनाथ।
दस अश्वमेध कोटि बार बार किये ते।।
जेते फल होइ सकल तीर्थन स्नान किये।
तेते फल होइ एक राम नाम गाये ते।।

शुभ-अशुभ भाव से, कुभाव से, अनख से, आलस्य से जैसे हो वैसे नाम का गायन करें। नाम का सुमिरण करें। इसकी एक ही विधि है, सतत् स्मरण करें, एक ही निषेध है। यह विधि है, इसका भूल से भी विस्मरण न हो जाए। विस्मरण हुआ तो मरण ही बचा है और कुछ बचा ही नहीं है। कोई विधि निषेध नहीं है। जैसे हनुमानचालीसा के लिए लिखा है।

जो यह पढ़ै हनुमानचालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।

संत एकनाथजी महाराज, महाराष्ट्र के बहुत बड़े संत थे। इनको हर समय विठ्ठल, विठ्ठल, विठ्ठल नाम सुमिरण की आदत थी। अब यह शौचालय जाएं जीभ को पुरानी आदत लगी, उसको कन्ट्रोल करना कठिन काम है इनको लगा परमात्मा जैसा पावन नाम, शौचालय जैसी अपावन जगह नहीं लेना चाहिए और जीभ को आदत है और जीभ न चले इसलिए गमछे से जीभ को पकड़ लेते थे। एक दिन सेवक ने देख लिया कि महाराज जी जीभ पकड़ कर शौचालय में बैठे हैं तो हाथ में जल लेकर सेवक हाथ धुलाने गया तो उसने पूछा कि महाराज जी एक बात पूछूँ। महाराजजी ने कहा कहो तो बोला: जब आप शौचालय में बैठे थे तो जीभ पकड़कर क्यों बैठे थे। एकनाथजी ने कहा कि तुमको तो मालूम है कि मेरी जीभ को हमेशा विठ्ठल-विठ्ठल कहने की आदत है और भगवान् का यह पवित्र नाम ऐसे अपवित्र जगह पर नहीं लेना चाहिए और जीभ मानती नहीं है इसलिए मुझे इसे पकड़ कर बैठना पड़ता है। सेवक ने कहा महाराज एक बात और पूछ सकता हूँ। बोले पूछो, तो बोला अगर शौचालय में प्राण निकल जाएं तो! एकनाथजी सुनकर दंग रह गए। जो ज्ञान मुझे गुरुदेव से भी नहीं मिल पाया वह आज तुमसे मिल गया। इसका क्या भरोसा है कि प्राण कब और कहाँ निकल जाएं। हमने सुना है कि ज्यादातर लोगों की लीला बाथरूम में ही समाप्त होती है। इसलिए कब प्राण जाएं हर क्षण प्रतिपल हरिनाम लें।

नाम अपनी महिमा दे रहा है। यह आचार्य बोल रहे हैं। शास्त्र प्रमाण है लेकिन अनेक लोग हैं वर्षों से नाम ले रहे हैं। मालाएं घिस गई, अंगुलियां तिरछी हो गयी, गांठे पढ़ गई लेकिन नाम जपते-जपते आज तक भी भरोसा नहीं आया है कि जिसका नाम जप रहे हैं वह सुन भी रहा है या नहीं। वह यह जानता ही नहीं कि कोई नाम जप रहा है क्योंकि नाम तो भगवान् का जप रहे हैं और भरोसा बैंक के खाते पर कि कुछ

बुढ़ापे के लिए डाल दो, बुरे समय में बुढ़ापे में काम आएगा। यह भरोसा भी नहीं कि जिसका नाम ले रहे हैं वह सहारा देगा कि नहीं। वह सुनकर आएगा कि नहीं, उठायेगा, बिठाएगा कि नहीं वह बुढ़ापे में कुछ खाने को देगा कि नहीं। अरे जिसने जवानी में दिया बुढ़ापे में देगा कि नहीं? लेकिन हमारा भरोसा नहीं है। कारण क्या है भगवान् के ऊपर भरोसा नहीं है, यह सत्य है। भजन भगवान् का करते हैं हम और भरोसा दुनियां पर करते हैं। हम भगवान् पर कभी भरोसा नहीं करके डाक्टर पर भरोसा करते हैं। भरोसा परिवार पर करते हैं यदि भगवान् पर भरोसा होता तो इतनी भागदौड़ की आवश्यकता ही नहीं, तो यह भरोसा क्यों नहीं जमता, इसका कारण समझ लीजिए। भरोसा या विश्वास उसी पर होता है जिससे हमारा प्रेम होता है और प्रेम किससे होता है जिससे हमारा सम्बन्ध होता है। जिससे हमारा सम्बन्ध होता है उसी से हमारा प्रेम होता है और जिससे हमारा प्रेम होता है उसी पर हमारा भरोसा होता है, उसी पर विश्वास होता है। सम्बन्ध का अर्थ ही यह है। सम्बन्ध का अर्थ है जितना भक्त भगवान् से बंध गया, उतना ही भगवान् भी भक्त से बंध गया। हिन्दी साहित्य में जितने भी मूल्यवान शब्द हैं सब सम से बने हैं। सम्बन्ध, समधी, समाधि, सम्बन्धी, सम्भोग, सम्बोधी, सम्यंक, समता, समानता, समाचार आदि अर्थपूर्ण शब्द हैं सब सम से बने हैं। भक्त और भगवान एक साथ बंधे हैं और उसी भरोसे के आधार पर हम अपने बेटे को विदेश भेज देते हैं कि जाओ हमारे सम्बन्धी वहाँ रहते हैं। और जब सम्बन्ध नहीं होता तो पड़ौसी पर भी हमारा भरोसा नहीं होता। जिससे हमको प्रेम होता है उसकी हमको याद करनी नहीं पड़ती, उसकी याद आती है। याद आती ही नहीं बल्कि याद सताती है, उसका एक अलग प्रकार का दर्द रहता है। दूसरा अर्थ है सताना माने जो सतत् आती है, बुलानी नहीं पड़ती, आती रहती है। जैसे पड़ौसी के लड़के को याद करने के लिए हमको सिर भी खुजलाने पड़ते हैं और कान भी कुरेदने पड़ते हैं तब पड़ौसी का बेटा याद आता है और अपने लड़के की यादें दिन-रात रुलाती हैं, दिन-रात सताती हैं। हर त्यौहार बेटे की याद में रुलाता है। बेटा अमेरिका में सर्विस करता है त्यौहार आया, माँ के आँसू आ गए। क्यों? बेटे

की याद सता रही है। बेटे की रुचि की कोई वस्तु याद आती है तो लोग रोने लगते हैं। याद दो प्रकार की आती है या तो प्रियजन की या दुश्मन की। प्रियजन की याद आती है तो मन मिठास, आनन्द से भर जाता है। दुश्मन की याद आती है तो मन कड़वा हो जाता है, कसैला हो जाता है। प्रेम के भी सम्बन्ध है और द्व ेष के भी सम्बन्ध हैं, दुश्मनी के भी सम्बन्ध है। दुश्मनी का सम्बन्ध कंस, शिशुपाल, दुर्योधन का था। रावण व कुम्भकरण का था। मोक्ष तो मिला, भगवान् तो मिले, मोक्ष तो मिला, हरिपद तो मिला लेकिन स्वाद नहीं मिला, रस नहीं मिला। भक्तों को रस भी मिलता है, पद तो मिलता है साथ-साथ पद, परमपद भी मिलता है तो भगवान् से प्रेम का सम्बन्ध होना चाहिए। तब देह काम करती है और याद भीतर सताती है। याद तो दिल में आती है देह संसार का व्यवहार करती है। प्रेम की यादें, प्रेम का मीठा-मीठा दर्द, प्रेम की टीस, प्रेम की कसक, प्रेम का दर्द, प्रेम का कराहट प्रेम की बैचेनी, प्रेम की व्याकुलता न बैठने देती है, न हँसने देती है, न सोने देती है, न जागने देती है, न मरने देती है, न जीने देती है। एक अलग प्रकार की व्याकुलता होती है। मीराजी बोली हैं-

ना मैं जानू आरति वन्दन, ना पूजा की रीति,
सखी मैं तो श्याम दिवानी, मेरो दरद न न जाने कोय॥
एरी मैं तो प्रेम दिवानी, मेरो दरद न जाने कोय॥
घायल की गति घायल जानें-कै जिन घायल होय।
जौहर की गति, जौहर जाने, कै जिन जौहर होय॥
सखी री मैं तो प्रेम दिवानी मेरो दरद न जानै कोय।
दरद की मारी बन बन भटकूँ-वैद्य मिला नहिं कोय॥

मीरा की ये पीर मिटै जब-वैद्य साँवरियाँ होय।
सखी री मैं तो प्रेम दिवानी मेरो दरद जाने कोय॥

प्रेम उससे होगा जिससे हमारा सम्बन्ध होगा और सम्बन्ध जुड़ता है गुरु के द्वारा, बिना गुरू के सम्बन्ध हो नहीं सकता। कई लोग कहते हैं कि जब राम नाम पुस्तकों में अंकित है हमको मालूम है तो इसके लिए गुरु की क्या आवश्यकता है। जैसे वर और कन्या का सम्बन्ध पुरोहित के द्वारा जुड़ता है जो बिना पुरोहित के सम्बन्ध जुड़ते हैं वह अमान्य होते हैं, अवैध, अनैतिक, असुरक्षित होते हैं। समाज उनको मान्यता नही देता है। पुरोहित के द्वारा जो सम्बन्ध जुड़ता है वह मान्य होता है। समाज आदर देता है, फिर वह तोड़ा नहीं जा सकता, वह घोषित होता है, वह छिपकर नहीं होता बल्कि छापकर होता है। विवाह से पहले पत्र छप जाते हैं। गाजे-बाजे के साथ होता है और वही शाश्वत होता है, वही शान्ति और आनन्ददायक होता है। अहंकार के कारण हम गुरु को नकारते हैं और इसलिए भगवान से सम्बन्ध नहीं जुड़ पाता। अगर मनुष्य रूप में सम्बन्ध स्वीकार नहीं कर सकते तो आओ हनुमान जी के चरणों में उन्हीं से प्रार्थना करो-

जै जै जै हनुमान गौसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं॥

श्रीहनुमानजी के चरणों में आश्रय लीजिए। आप ही गुरुदेव की भूमिका में प्रभु हम पर कृपा करें। सम्बन्ध जुड़े और सम्बन्धी-सम्बन्धी से मिलने आता है। हमारा अगर भगवत सम्बन्ध जुड़ गया तो हमको यदि फुर्सत नहीं है मिलने जाने की तो भगवान् आ जाएंगे कि हमारा सम्बन्धी निवास करता है। यहाँ हमारे नाम का सुमिरन करता है। चलो बहुत दिन हो गए भेंट कर आएं। भगवान् से सम्बन्ध घोषित करिए, वैसे कौन से सम्बन्ध? गोस्वामीजी ने कहा है कि **मोहि-तोहि नाते अनेक मानिए जो भावे।** गोस्वामीजी जिस कक्षा के विद्यार्थी हैं अभी उस कक्षा के द्वार तक पहुंचना भी हमारा नहीं हो पाया। वह भगवान् से कह सकते हैं कि

भगवान् तू सम्बन्ध मान, सम्बन्ध हमको ही बनाना पड़ेगा। कौन सा बनाएं सम्बन्ध? बहुत हैं लेकिन जिसमें सर्वाधिक शुद्धता है वह है, भगवान् हमारे स्वामी है, हम सेवक हैं दास भाव। भगवान् हमारे मालिक हैं हम उनके सेवक (दास) इसलिए वैष्णव परम्परा में दास परम्परा है। वैष्णव संतों के नाम के आगे दास लिखा होता है। जैसे नौकर मालिक से गिड़गिड़ाता है ऐसे भक्त भी भगवान् से, प्रभु हजार अपराध होंगे भूल मेरी बहुत होगी लेकिन कृपानिधान तू मत त्याग कर देना। आपने हमारे साधु-संतों को देखा होगा, माला झोली लेते हैं, बात भी करते हैं, माला भी जपते रहते हैं। कई लोग इसकी आलोचना भी करते हैं। आलोचना करना अज्ञानता, अविवेक है। अरे तुम तो इतना भी नहीं कर रहे वह इतना तो कर रहे हैं। तुम नाटक भी करके तो देखो। केवल आलोचना। आलोचना वही करता है जिससे कुछ नहीं होता। वह बैठा-बैठा देखकर कुढ़ता रहता है। दान की आलोचना वही करते हैं जो दान नहीं करते हैं। आपने देखा होगा कि संस्थाओं का हिसाब वही मांगते हैं जिसने एक भी पैसा दान नहीं दिया। आलोचक कुछ नहीं करता केवल आलोचना करता है। तो साधु अगर बात करने में भी माला फेर रहा है तो अकारण नहीं है। जैसे हमारा किसी से प्रेम सम्बन्ध जुड़ गया तो हम घर-परिवार, दुकान, मकान, फैक्टरी, कारोबार चलाते हैं कि नहीं चलाते। और इसके साथ-साथ हम प्रेमी की याद, टीस, कसक अनुभव करते रहते हैं कि नहीं या उसे कोई अलग से याद करना पड़ता है। वह यादों में बना रहता है। हमारी साँसों में। शरीर घर-परिवार का काम करता रहेगा। श्वांसें उसकी यादों में डूबी रहती हैं। यही हाल साधु का है और हर समय नाम जपना ये उनकी मजबूरी है। मजबूरी वो आपको दिखाने की नहीं है। अपने प्रभाव को उत्पन्न करने की नहीं है। आपको प्रभावित करने की नहीं। मजबूरी यह है कि वह बिना नाम लिए रह ही नहीं सकते। चूंकि भगवान् से इतना प्रेम का सम्बन्ध हृदय में जुड़ चुका है कि अब उसका नाम लिए बिना जिह्वा रह ही नहीं सकती। तुझ बिन रहा न जाए, तेरे बिना रहें तो रहें कैसे? सम्भव नहीं है। जैसे भंवरा है फूल की कली खिली, भंवरे की मजबूरी है गुनगुनाना, गुन, गुन, गुन, गुन। ऐसे ही

हृदय में भगवत्भक्ति का पुष्प खिला तो साधु की जिह्वा की मजबूरी बनती है **हरे राम हरे राम, राम राम हरे**, तो जो लेना पड़े वह मजबूरी है और जो चलता रहे वो मजबूती है। जो रोके से भी रुके नहीं। जैसे कई संतों को हमने देखा कि जैसे कोई मशीन लगी है उनके होठ ऐसे हिलते रहते हैं क्योंकि जीवन भर सम्बन्ध जुड़ा है। अब नाम रुक नहीं सकता जैसे सोते-जागते, उठते-बैठते प्रभु का नाम। मीराजी से किसी ने पूछा हम तो कलयुग के पापी प्राणी हैं। हमको बताइए, हम इस भवसागर को कैसे पार करें? मीराजी ने कहा एक ही तरीका है। क्या है? बोली- खूब नाचो और खूब गाओ। पूछा क्या गाएं तो बोलीं मुझे तो एक ही गीत आता है जो मैं गाती हूँ वह तुम भी गाओ बोली-

नटवर नागर नन्दा भजो, रे मन गोविन्दा।
श्याम सुन्दर मुख चन्दा भजो, रे मन गाविन्दा॥
तु ही नटवर, तू ही नागर, तू ही बाल मुकुन्दा। नटवर नागर...
सब देवन में कृष्णा बड़े हैं, कृष्णा बड़े हैं, श्रीकृष्णा बड़े है।
ज्यों तारों में चन्दा, भजो रे मन गोविन्दा॥ नटवर नागर......
सब गोपिन में राधा जी बड़ी हैं, राधा जी बड़ी है।
श्रीराधाजी बड़ी है, ज्यों नदियन में गंगा॥ नटवर नागर......
श्याम सुन्दर मुख चन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।
वृंदावन की कुँज गलिन में, नाचत बाल मुकुन्दा॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर...................
छूटत यम के फन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।

नटवर नागर नन्दा भजो, रे मन गोविन्दा॥

कलिजुग केवल नाम अधारा। सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा॥

भवसागर को पार करना कोई आश्चर्य की बात नहीं है जिनकी जिह्वा पर हरिनाम है उनके लिए कोई अचरज नहीं। **प्रभु मुद्रिका मेलिमुख माहि। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥**

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥

आगे की चौपाई- गोस्वामीजी कहते है जितने प्रकार के भी दुर्गम कार्य हैं, जो मनुष्य की क्षमता के बाहर हैं वे हनुमानजी की कृपा से सुगमता से हो जाते हैं। आजकल ज्योतिष के प्रति बहुत रुझान बढ़ा है। समाज में टीवी पर भी देखेंगे, कम से कम सात-आठ बार चैनलों पर ज्योतिषी आते हैं। अच्छी बात है, ज्योतिष विज्ञान है। किसी संत से पूछा कि महाराज आजकल हमारे सारे ग्रह खराब चल रहे हैं क्या करें? साधु संतों को तो भगवान् पर ही भरोसा होता है। नक्षत्र, ग्रह अपना प्रभाव डालते हैं। डालेंगे ही, यह कोई ज्योतिष की आलोचना नहीं। ज्योतिष विज्ञान है, विज्ञान तथ्यों पर हुआ करता है। विज्ञान भावना का विषय नहीं, विज्ञान तथ्यों का परिणाम होता है। ग्रह तथ्य रूप में अपना परिणाम देते ही हैं। उनके निराकरण के उपाय भी हैं। विद्वान लोग इस बात को जानते हैं, लोग कराते भी हैं। लेकिन कोई न कराना चाहे उसके लिए क्या करें? चूंकि ग्रह आदि शान्त कराने के लिए कुछ न कुछ अर्थ आदि भी खर्च करना पड़ता है। कोई गरीब व्यक्ति नहीं करना चाहता है तो बड़ी मुश्किल, वैसे गरीबों पर कोई ग्रह-नक्षत्र प्रभाव नहीं डालते। ग्रह आए होते तो वह गरीब ही काहे को होता। वह आखिर ग्रहों में कुछ न कुछ तो अच्छे होते ही होगें। हमने सुना है कि एक आदमी पर शनि आ गया। शनि पहले साढ़े सात फिर ढाई वर्ष ऐसे दो साढ़े सती शनि की आ गई। व्यक्ति बड़ा परेशान, एक ज्योतिषी के पास पहुँचा। बोला, मेरे पास शनि की साढ़े साती दो बार आ रही है। क्या करूं मैं बड़े संकट में

हूँ। महाराज ने कहा इसके उपाय हैं। शनि का अनुष्ठान करा लो। क्या करना पड़ेगा बोले ऐसे-ऐसे जप आदि। इतने पण्डित बैठेंगे उनका भोजन, दान-दक्षिणा और काली गाय दान कर दो तो शनि का प्रकोप चला जाएगा। व्यक्ति ने कहा महाराज काली बकरी भी मेरे सामर्थ्य में नहीं है, काली गाय की तो बात छोड़ो। तो ऐसा करो काली गाय के स्थान पर काला कम्बल दान कर दो। व्यक्ति ने कहा काला कम्बल होता तो ठंड में ठिठुरते बच्चे को न उढ़ा देते। बोला ऐसा करो साढ़े सात मीटर काला कपड़ा दान कर दो। अरे महाराज आप मेरी हालत देख रहे हो कि नहीं, यह फटी बनियान पहने आपके सामने खड़ा हूँ। साढ़े सात मीटर कपड़ा दान कैसे करूंगा मैं? इससे अच्छा अपने लिए कपड़े न बनवा लूं। अच्छा तो फिर ऐसा करो, साढ़े सात किलो काले तिल दान कर दो। कैसी बात करते हो सात छटांक की भी सामर्थ्य नहीं है, कैसे दान कर दूं? बोला और कुछ मत करो तो काला धागा दान कर दो। अरे घर में धागा भी तो नहीं है। उसकी भी तो सामर्थ्य नहीं है। ज्योतिषी ने कहा तो फिर तान दुपट्टा, जाकर सो जा। अब शनि तेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। जब धागा भी तेरे पास नहीं तो फिर वह तेरा क्या बिगाड़ेगा। शनि भी उन्हीं का बिगाड़ता है, जिनके पास कुछ होता है। महाराज ने कहा ग्रहों की चिंता मत करो। अगर तुम्हारे नौ ग्रह भी उल्टे हो गए तो चिन्ता मत करो। हनुमानचालीसा का पाठ करो इससे क्या फायदा होगा बोले-

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

महात्माजी ने कहा अगर नौ ग्रह तुम्हारे विपरीत हो गए हैं तो हनुमानजी की कृपा से सब ठीक हो जाएंगे। उन नौ ग्रहों के ऊपर एक विशिष्ट ग्रह हनुमानजी के हाथों में है। कौन से ग्रह, महाराज बोले, अनुग्रह और यह अनुग्रह हनुमानजी के हाथ में रहता है। बाकी ग्रहों को ठीक रखने के लिए आपको बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ेगा लेकिन यह तो बहुत सुगमता से हो सकता है। बोले-

जौ यह पढ़ै हनुमानचालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा॥

हनुमानचालीसा रूपी सिद्ध मंत्र का जो नित्य जप करेंगे, उनके ऊपर हनुमानजी के अनुग्रह की कृपा बहुत सुगमता से होगी और इस अनुग्रह से बड़े से बड़े दुर्गम काज हो जायेंगे, जो कोई सोच नहीं सकता। इसलिए हनुमानजी के बारे में जामवंत जी ने कह दिया था कि **कवन सो काज कठिन जगमाहीं। जो नहिं होइ तात तुम पाहीं॥** ऐसा कौन सा काम है। तुमने तो बड़े-बड़े काम किए हैं-

काज किये बड़ देवन्ह के तुम। बीर महाप्रभु देखि बिचारो॥
कौन सो संकट मोर गरीब को। जो तुमसो नहिं जात है टारो॥
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु। जो कछु संकट होय हमारो॥
को नहिं जानत है जगमें कपि। संकट मोचन नाम तिहारो॥

चार सौ कोस के सागर को पार करने का साहस किसी में नहीं था। रावण को फटकारने की सामर्थ्य किसी में नहीं थी। अक्षय कुमार को मारना सामान्य बात नहीं थी। अक्षय को एक वरदान था, अंगद ने कहा था कि मैं जा तो सकता हूँ पर मुझे लौटकर आने में संशय है। बोले क्यों, बोले अक्षय और अंगद जी एक साथ पढ़ा करते थे। अंगदजी अक्षय को बहुत तंग करते थे। एक ऋषि ने अक्षय को वरदान दिया था कि अंगद जब तुम्हारे सामने आएगा तो इसकी सारी शक्ति तुम्हारे अन्दर आ जाएगी। अंगद, अक्षय के सामने कभी जाते नहीं थे वह इसीलिए लंका जाने में डर रहे थे कि यदि अक्षय से मेरी भेंट हो गयी तो मेरी शक्ति क्षीण हो जाएगी और मैं लौट भी नहीं पाऊंगा। तो हनुमानजी ने पहले अक्षय का क्षय किया ताकि अंगदजी रावण को आकर फटकार सकें। जिस समय लक्ष्मणजी मूर्छित हो गए थे तो भगवान् का विलाप सुनकर सभी वानर विकल हो गए कि स्वामी की यह दुर्दशा है तो हमारी क्या होगी। उस समय जामवंत ने कहा था कि हनुमानजी-

कबन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं।।

हनुमानजी ने कहा क्या करूं, प्रभु बोलो, चन्द्रमा में से अमृत निचोड़ लाऊं, पाताल लोक में जाकर नागों के बीच से अमृत का घड़ा उठा लाऊं या मौत को ही मार डालूं, भगवान् कुछ बोले नहीं। एक संत कहते हैं कि भगवान् थोड़ी यहाँ चूक कर गए अगर सिर हिला देते कि हाँ ठीक है मौत को ही मार दो तो मौत का झंझट ही खत्म हो जाता । जामवंत ने कहा कि लंका के भीतर जाओ और वहाँ से सुषैन वैद्य को ले आओ। दुश्मन का नगर, रात्रि का पहर और हनुमानजी से कहा जा रहा है कि वहाँ से सुषैन वैद्य को ले आइए। यह दुर्गम नहीं, दुर्गमतम कार्य है, लेकिन हुआ क्या?

अति लघुरूप धरेऊ हनुमंता। आनेहु भवन समेत तुरन्ता।।

श्रीहनुमानजी गए दुश्मन के नगर में, युद्ध का समय चल रहा है। वैद्य आएगा कि नहीं, उस वैद्य के घर के बाहर हनुमानजी पहुँच गए कितना सुन्दर नाम है सुषैन। सतगुरु वैद्य और सतगुरु का आयन ही सुख का आयन होता है। जितना सद्‌गुरू से दूर रहोगे दु:ख के साथ रहोगे। सुखेन को लेने के लिए सद्‌गुरु हनुमान् स्वयं गए हैं और भवन समेत उठा लाए। हनुमानजी ने सोचा कि युद्ध चल रहा है दुश्मन का वैद्य है चतुराई कर सकता है। अगर मैं वैद्य को पकड़कर ले गया तो बहाना बना सकता है कि पहले क्यों नहीं बताया कि मैं औषधि नहीं लाया वह तो वहीं छूट गयी, नर्सिंग होम में, फिर लंका में जाना पड़ेगा, जासूस पकड़ सकते हैं। मुश्किल हो सकती है इसलिए मकान सहित उठा लाये। संत केवल एक व्यक्ति को ही भगवान् से नहीं जोड़ता बल्कि पूरे परिवार को भगवान् से जोड़ दिया। अगर साधु के सम्पर्क में परिवार का एक भी व्यक्ति आ गया तो साधु पूरे परिवार को भगवान् से जोड़ देता है। यही संत का कार्य है, धौलागिरी पर्वत पर जाकर वहाँ से औषधि लाना, बीच में कालनेमि के रुप में मार्ग की बाधा खड़ी है। फिर उससे संघर्ष करना उसको मारकर

जाना फिर संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण के प्राण बचाना यह कार्य और कोई नहीं कर सकता था, बाकी तो दुनियां में बहुत देवता हैं-

दुनिया में देव हजारों हैं। बजरंग बली का क्या कहना।।

जो कार्य कोई सोच न सके, जितने भी जगत् में दुर्गम काज हैं वे हनुमानजी की कृपा से, अनुग्रह से बहुत सुगमता से, हो जाते हैं। भगवान् के जितने कार्य थे जिनके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था लंका में पहुँचना, जानकीजी को प्रभु का सन्देश देना, रावण को धमकाना, लंका को जलाना, सुषैन वैद्य को भवन सहित वहाँ से ले आना, कालनेमि को मारकर धौलागिरी पर्वत पर पहुँचना, औषधि का पूरा पहाड़ उठा कर लाना यह कोई सामान्य घटना नहीं है इसलिए जामवंत ने कहा था कि विभीषणजी अगर हनुमान जीवित हैं तो सारी सेना जीवित है और यदि हनुमान नहीं है तो सारी की सारी सेना मृत मानी जाएगी। श्रीहनुमानजी जीवित रहने चाहिए, ऐसे श्री हनुमान जी-

राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।

हनुमानजी भगवान् के भवन के मुख्य द्वारपाल, एक तो शायद इसलिए भी द्वार पर हैं क्योंकि हनुमानजी के बारे में एक चर्चा है कि इनका कोई प्रातःकाल मुँह नहीं देखना चाहता, नाम के बारे में तो हनुमानजी भी बोल चुके हैं कि-

प्रातः लेई जो नाम हमारा। तेहि दिन ताहि न मिलहि अहारा।।

अनेक लोग जिन्होंने इस भय से कि यदि प्रातःकाल इनका मुँह देख लेंगे तो हमको भोजन नहीं मिलेगा। भगवान् ने सोचा कि चल अपने से तो तुम इनका फोटो हटा दोगे कोई बात नहीं लेकिन जब मेरे द्वार पर मेरा दर्शन करने आओगे तो तब तुम्हें पहले हनुमानजी का दर्शन करना होगा, तभी मेरा दर्शन मिलेगा। इसलिए आपको

रामजी के मन्दिर में प्रथम दर्शन हनुमान् का होता है। भगवान् का जो निजधाम है परम ब्रह्म भगवान राम जहाँ निवास करते हैं, साकेत में, श्रीहनुमानजी एक रूप में साकेत में हमेशा निवास करते हैं। जो भी कोई भक्त अपनी याचना लेकर हनुमानजी के पास आता है तो हनुमानजी ही प्रभु के पास जाकर प्रार्थना करते हैं कि प्रभु इस पर कृपा करें। साकेत में गोस्वामीजी ने भी भगवान् के दर्शन की प्रार्थना इसी प्रकार की, विनयपत्रिका भी जब लिखी है उस पर हस्ताक्षर कराने भी हनुमानजी के पास आते हैं। सकाम भाव से जो भक्त आते हैं हनुमानजी हमेशा उनको द्वार पर बैठे मिलते हैं और हनुमानजी की इच्छा है कि यह छोटे-मोटे काम जो तुम लेकर आए हो मेरे प्रभु को अकारण कष्ट मत दो। प्रभु बहुत कोमल हैं, बहुत सरल हैं लाओ इनको मैं निपटाता हूँ इसलिए हनुमानजी हमेशा द्वार पर बैठे मिलते हैं और कोई प्रेम के वशीभूत, भाव के वशीभूत आता है तो हनुमानजी उसे भगवान् के भवन के द्वार में अन्दर प्रवेश करा देते हैं। दर्शन के लिए कोई आता है तो उसको प्रवेश करा देते हैं, मनोकामना लेकर आता है तो स्वयं हनुमानजी पूरी करा देते हैं क्योंकि माँ ने पहले ही आशीर्वाद दे दिया था-

अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता। अस बर दीन्ह जानकी माता।।

माँ को भी मालूम था कि संसार में कितने लोग हैं जिनके कितने प्रकार के काम हैं। प्रतिदिन भीड़ लगेगी, भगवान् के दरबार पर कौन निपटाएगा, तो हनुमान् यह काम तुम पूरा करोगे। शायद इसलिए ही **राम दुआरे तुम रखवारे** का दूसरा भाव ऐसा ही लगता है, जैसे कथा से पहले कथा का मंगलाचरण होता है। ऐसे राम दर्शन से पहले मंगलमूरति मारुति नन्दन हनुमानजी का दर्शन आवश्यक है। घर के बाहर हम लोग जब कोई विशेष दिन होता है तो मंगल कलश सजाकर रखते हैं। भगवानराम ने अपने घर के बाहर प्रतिदिन मंगल कलश के रूप में हनुमानजी को विराजित किया है। भगवान् का भवन तो मंगल भवन अमंगलहारी है पर उनके द्वार पर भी तो मंगल कलश चाहिए। अपना जो मंगलमय परिवार का चिन्ह है यह मंगल कलश है न। इस कलश के रूप में श्रीहनुमानजी मंगल मूरति विराजमान हैं-

मंगल मूरति मारुति नन्दन। सकल अमंगल मूल निकन्दन॥
पवन तनय संतन हितकारी। हृदय विराजत अवध बिहारी॥
मंगल मूरति मारुति नन्दन। सकल अमंगल मूल निकन्दन॥
जय हनुमान ज्ञान गुण सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥
मंगल मूरति मारुति नन्दन। सकल अमंगल मूल निकन्दन॥
रामदूत अतुलित बलधामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥
मंगल मूरति मारुति नन्दन। सकल अमंगल मूल निकन्दन॥
मातु पिता गुरु गणपति सारद। शिवा समेत शम्भु सुख दायक॥
मंगल मूरति मारुति नन्दन। सकल अमंगल मूल निकन्दन॥
बंदऊँ राम लखन बैदेही। जे तुलसी के परम स्नेही॥
मंगल मूरति मारुति नन्दन। सकल अमंगल मूल निकन्दन॥
हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे, कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डरना॥

श्रीहनुमानजी की शरण में जो भी आ जाता है उसकी वह रक्षा करते हैं किसी भी प्रकार का उसको भय नहीं रहता। जो हनुमानजी की शरण में एक बार आ गया उसकी क्या अवस्था हो जाती है गोस्वामीजी ने लिखा है-

सुर दुर्लभ सुखकरि जग माँही, अन्तकाल रघुपतिपुर जाई॥

जो सुख देवताओं को भी दुर्लभ है उनका हनुमानजी की कृपा से साधारण सा मनुष्य भोग कर लेता है।

यह भोग, यह सुख सुग्रीव को भी मिला, विभीषण को मिला, वानरों को मिला। जो भी हनुमानजी की शरण में आया उसे सुख मिलता है। ज्ञानेन्द्रियों से, अनुभूति कौन करता है। सुख का अनुभव करती हैं हमारी ज्ञानेन्द्रियां और हनुमानजी ज्ञान, गुणसागर हैं। हनुमानजी ज्ञानिनामग्रगंण्यम् (कान, नाक, त्वचा, आँख व जीभ) ज्ञानेन्द्रियां हैं। यही रस का, सुख का अनुभव कराती हैं और इन इन्द्रियों का रस क्या है। इसका रस तो भगवतरस है और भगवतरस कहाँ मिलता है? **राम रसायन तुम्हरे पासा,** जो भी भगवत् भजन का रस है, आनन्द का जो सागर है-

जो आनन्द सिन्धु सुख राशी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी॥
सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा॥

आनन्द के सुख के महासिन्धु भगवानराम तो **राम रसायन तुम्हरे पासा,** इनके पास क्यों हैं? क्योंकि **अपने वश करि राखे राम** इसलिए **सब सुख लहै,** जो भी भगवत रस है वो हमारी ज्ञानेन्द्रियों को, हनुमान जी की कृपा से **तुम रच्छक काहू को डरना,** इसका अर्थ है कि जिसके रक्षक श्रीहनुमानजी हो गए उसको किसी से भी डरने की आवश्यकता नहीं है। गीता में है अभयम कुरु, हनुमानजी का सेवक है अभयम् भय रहित, भयमुक्त, देवी-देवता भी इससे डरने लगते हैं सब देवी-देवता सोचते हैं कि हनुमानजी का सेवक है इसको सताने से हमारी दुर्दशा हो जाएगी और इसके अनेकों प्रमाण हैं।

आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक तें काँपै॥

इतना प्रबल तेज है श्रीहनुमानजी का इसको केवल श्रीहनुमानजी ही संभाल सकते हैं। क्योंकि यह शंकरजी के अवतार हैं, शंकर सुवन, और शंकरजी प्रलय के देवता हैं जिसमें प्रलय करने तक की शक्ति और सामर्थ्य हो, उसको कोई और सम्भाल सकता है क्या? लक्ष्मणजी की मूर्छा के समय यही तो बोले थे **जो हो अब अनुशासन पावो,** भगवान् अगर आपकी आज्ञा हो तो-

जो हों अब अनुशासन पावो तो चन्द्रमा निचोड़ चेल।
जों लाइ सुधा सिर लावों, जो हो अब अनुशासन पाऊँ॥
कैं पाताल, दलो विहयावल अमृत कुँड मैं हिलाऊँ।
भेदि, भवनकर भानु वायु तुरन्त राहुँ ते ताऊ॥

यह तेज, यह प्रबल प्रताप यह श्रीहनुमानजी हैं। आप कल्पना करें, कितनी इनकी गर्जना भारी होगी, एक बार भीम को कुछ अभिमान हो गया और कोई पुष्प द्रोपदी ने मंगाया था तो इन्होंने कहा मैं लाऊंगा कोई कमल या विशेष फूल, हिमालय में होता था और उस सीमा के भीतर देवताओं का वास है। मनुष्य नहीं जा सकता। लेकिन भीम ने अहंकार में कह दिया कि मैं लाऊँगा। बद्रीनाथ के पास हनुमानचट्टी में बूढ़े वानर के रूप में हनुमानजी लेटे थे। भीम तो अपने अभिमान में जा रहे थे। भीम ने कहा, ऐ वानर एक तरफ हट जा, मुझे आगे जाने दो। बूढ़े वानर के वेश में हनुमानजी ने कहा बूढ़ा हो गया हूँ, अब हिम्मत नहीं है। तुम मुझे थोड़ा सा सरका दो तो भीम ने कहा कि लाँघ कर जा नहीं सकता, बीच में तुम पड़े हो। भीम ने पूँछ को सरकाने की कोशिश की, मगर हनुमानजी की पूँछ जिसे रावण नहीं हिला पाया बाकी की तो बात छोड़ो। बहुत पसीना-पसीना भीम जब हो गए तो कहा कि कहीं आप मेरे बढ़े भाई हनुमान तो नहीं हैं तब हनुमानजी ने अपना एक छोटा रूप प्रकट किया। भीम ने प्रणाम किया और कहा कि हम आपका वह रूप देखना चाहते हैं जिस रूप में आपने लंका जलाई थी-

विकट रूप धरि लंक जरावा॥

हनुमानजी ने कहा वह रूप तुम सहन नहीं कर पाओगे, देख नहीं पाओगे, बोले हम क्या कोई सामान्य व्यक्ति हैं, महावीर हैं। आप यदि महावीर तो हम महाभीम हैं। हनुमानजी ने वह रूप थोड़ा सा प्रकट किया।

मूर्छित होकर भीम गिर पड़े। हनुमानजी ने मूर्छा दूर की और समझाया, तो उस तेज को सम्भालने की क्षमता केवल श्रीहनुमानजी में है। तब भीम ने कहा आप मेरे पर कृपा करें। तब हनुमानजी ने कहा जब तुम्हारा युद्ध होगा तब मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। हालांकि इस युग में सामान्य मनुष्य को मारना यह वीर को शोभा नहीं देता है। तुम्हारी सेना में वीर हैं ही नहीं जिससे मैं युद्ध करूं फिर भी उस समय चलो, भीम को वापस कर दिया कि आगे देवताओं की मर्यादा है। किसी की मर्यादा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। यहाँ से भीम वापस आए तो बहुत गुणगान करते आए -

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी। गर्भ स्रवहिं सुनि निशिचर नारी॥

श्रीहनुमानजी की गर्जना इतनी जबरदस्त कि राक्षसों के भी हाल बेहाल हो गए। गर्भवती राक्षसियों के गर्भपात हो गए। हनुमानजी की हाँक सुनकर रावण भी घबरा जाता था। रावण के भी कपड़े ढीले हो जाते थे-

हाँक सुनत दशकन्द के भये बन्धन ढीले॥

रावण के वीरों को देखकर जब हनुमानजी गर्जना करते थे तो वीर सैनिक मूर्छित होकर गिर जाते थे, भगदड़ मच जाती थी। **हाँक सुनत रजनीचर भाजे, आवत देखि बिटप गहि तर्जा। ताहि निपाति महाधुनि गर्जा, चलत महाधुनि गरजेसि भारी,** केवल राम-रावण युद्ध में ही गर्जना नहीं, जिस समय महाभारत का युद्ध हुआ तो भगवानश्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा, अर्जुन, हनुमानजी की प्रार्थना करो, बिना उनकी सहायता के युद्ध नहीं जीत पाओगे। अर्जुन को थोड़ा गर्व था बोले नहीं महाराज, भगवान तो अपने भक्त को ही स्थापित करना चाहते थे। अर्जुन भी भक्त थे लेकिन अर्जुन भक्त कम, सखा ज्यादा थे-

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति॥

सखा भाव में कभी-कभी अर्जुन भगवान् के ऐश्वर्य को समझ नहीं पाते थे। उनको तो ऐसा लगता था

कि मेरे जैसा वीर कभी न हुआ है, न होता है, न होगा। भगवान् हनुमान् की वीरता को भी दिखाना चाहते थे कि अगर तुम वीर हो तो एक महावीर भी है। एक बार हनुमान् सागर के किनारे बैठे थे, अर्जुन घूमते-घूमते वहाँ आ गए तो परिचय हो गया। अच्छा-अच्छा आप हनुमान् हैं। अर्जुन ने कहा कि हमने सुना है कि आप इतने बड़े वीर और बलवान हैं। आपके भगवान् वीर और बलवान थे, परन्तु आप पुल नहीं बना पाये, पत्थर ढो-ढो कर वानरों को बनवाना पड़ा। अगर मैं होता तो अपने वाणों से ही सागर पर पुल बना देता। हनुमान जी ने कहा कि बाणों से पुल बाँध जा सकता था, लेकिन सेना इतनी भारी थी कि उनके भार को बाणों का पुल सहन नहीं कर पाता इसलिए हम लोगों को पत्थर लाकर पुल बनाना पड़ा। अरे ऐसा कैसे हो सकता है। मैं पुल बनाकर देखता हूँ बोले क्यों परिश्रम करते हो तुम्हारा पुल मेरा ही भार सहन नहीं कर पाएगा। अरे कैसी बात करते हैं आप, अर्जुन के बाण और निष्फल चले जाएं। जिद कर बैठे, शर्त तय हो गयी अगर मेरे बाण निर्मित पुल से आप पार हो गए तो तुमको चिता में जलना पड़ेगा और मेरे बनाए पुल को यदि तुमने तोड़ दिया तो मैं चिता में जल जाऊंगा। भगवान् को बड़ा अटपटा लगा, ऐसी भी कोई प्रतिज्ञा होती है? दोनों ही मेरे प्रिय हैं, और चिता में जलने को तैयार हैं जरा सी बात पर। अर्जुन ने बाणों से पुल बनाया, पट गया सारा सागर। बोले जाओ। हनुमानजी ने जय श्रीराम कहकर जैसे ही अपना दाहिना चरण रखा चरमरा गया। अब प्रतिज्ञाबद्ध अर्जुन को लगा, मुझे जीवित रहने का अधिकार नहीं। चिता बनाकर प्रवेश करने वाले थे। ब्राह्मण वेश में श्रीकृष्ण प्रकट हो गए क्या बात है किसकी चिता है। बोले, मैं प्रतिज्ञा हार चुका हूँ इसलिए मैं चिता में जीवित जलने जा रहा हूँ। कोई तुम्हारी शर्त के बीच में साक्षी था? तो फिर ऐसे कैसे शर्त पूरी हो सकती है। कोई न कोई बीच में निर्णायक चाहिए न, अब बनाओ हमारे सामने तब हम देखेंगे, दुबारा पुल बनाया गया, अब कहा जाओ, हनुमान जी गए। हनुमान जी ने थोड़ा सा मचका दिया, देखा सागर का जल रक्त से लाल हो गया। हनुमान जी समझ गए मेरे प्रभु नीचे आ गए। पुल भी नहीं टूटा, हनुमानजी भी आ गए। अर्जुन ने कहा, यह सागर का सारा जल कैसे लाल

हो गया? तब ब्राह्मण, श्रीकृष्ण रूप में प्रकट हो गए। अर्जुन तुमको बचाना था। ये देखो मेरी पीठ पर हनुमान् के भार के दाग हैं इस कारण इसका रंग लाल हो गया। इतने वीर थे हनुमानजी। तब भगवान् ने कहा, अर्जुन हनुमानजी से प्रार्थना करो। हनुमानजी ने कहा है कि मैं इस युद्ध में कमजोर लोगों को नहीं मार सकूंगा, क्योंकि मेरे स्तर का आपके यहाँ कोई है ही नहीं। लेकिन हाँ मैं तुम्हारी सहायता करूंगा। भगवान् ने कहा था कि आप इसके ध्वज की पताका पर बैठ जाइए इसलिए अर्जुन के रथ पर जो ध्वज लगी है, उसको कपिध्वज नाम दिया गया है। तो हनुमानजी ने कहा कि मैं कभी-कभी अपनी गर्जना कर दिया करूंगा जिससे सामने वाले दुश्मन डर से कमजोर हो जाएंगे। जब अर्जुन ध्वज से तीर छोड़ता था तो श्रीहनुमानजी गर्जना करते थे और हनुमानजी की जो गर्जना होती थी, भीष्म जैसे महापुरुष के हाथ से भी शस्त्र गिर जाया करते थे। **हाँक सुनत रजनीचर भागे तीनो लोक हाँक तें कांपे,** ऐसे श्रीहनुमानजी। जिनके लिए कहा गया है-

भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै॥

भूत पिशाच के पास आने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। जब भगवान् ने पद देने का प्रयत्न किया था तब हनुमानजी ने कहा महाराज पद के साथ भूत जुड़ा है और भूत हमारे साथ आ नहीं सकता। भूत-पिशाच अंधेरे में रहना पसंद करते हैं और अंधकार, अज्ञान का प्रतीक होता है और अंधकार और अज्ञान वहाँ होता है जहाँ भगवत चर्चा नहीं होती, जहाँ भगवान की कथा नहीं होती, जिस घर में भगवत चर्चा न हो, जिस घर में शाम को देवताओं के नाम का दीपक न जलता हो, जिस घर में कीर्तन न होता हो। प्रभु की मंगलमय आरती न गायी जाती हो उस घर में भूत-पिशाचों का वास हो जाता है। चूंकि भूत अंधेरे व अज्ञान में रहना पसंद करते हैं। श्रीहनुमानजी तो वहाँ रहते थे।

यत्र-यत्र रघुनाथ कीर्तनं तत्र-तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्॥
जहाँ जहाँ कीर्तन होता श्रीराम का।
लगता है पहरा वहाँ वीर हनुमान का॥
रामजी के चरणों में इनका ठिकाना।
छम छम नाचे देखो वीर हनुमाना॥

आपने कई घरों के बारे में सुना होगा कि यह भूत बंगला है, यह भूत घर है। क्यों, वर्षों हो गए बंद पड़ा है। दीपक नहीं जलता, तुलसीजी नहीं है, प्रभु का कीर्तन नहीं होता, आरती नहीं होती है, प्रभु के नाम का गुणगान नहीं हुआ, कोई चित्रपट नही है, तो भूत ही तो रहेगा। ज्ञान के प्रकाश में जहाँ हनुमानजी आ जाएं तो वहाँ भूत-पिशाच नहीं आ सकते हैं। पिशाच का दूसरा अर्थ है कि जो हमने भूतकाल में बुरे कर्म किए हैं, वह पिशाच बनकर हमारे पीछे लग जाते हैं। बुरे कर्मों की जो ग्लानि है। किए गए बुरे कर्म जो भीतर हमारी यादों में समाए रहते हैं वह हमारे पीछे पिशाच बनकर चलते हैं वह शान्ति नहीं लेने देते। वह हमको चैन से नहीं रहने देते। वह हमको छुपे-छुपे रहने को मजबूर करते हैं। हनुमानजी यदि हमारे साथ हों तो बुरे काम कौन कर पाएगा और अगर उन पिशाचों को हनुमानजी का नाम सुना दो तो हनुमानजी उनको हमारे पास नहीं आने देते। दूसरा भूत-पिशाच तो भगवान् शिव के गण हैं। और इनको तो राम नाम बहुत प्रिय है। इसलिए जो भी इनको राम-नाम सुनाता है शिव उनके पास भूत-पिशाचों को आने ही नहीं देते। भूत कौन है? हम लोग नवरात्रि में पूजा किसकी करते हैं-

या देवी सर्वभूतेषु, शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः॥

भूत तो भगवान् शिव-पार्वतीजी का वैभव है लेकिन थोड़ा भयानक है। शिव-पार्वती उनको हमारे पास आने नहीं देते। दूसरे सुख और समृद्धि की जो आसक्ति है, सुख की जो आसक्ति है। यही भूत-प्रेत है और कोई भूत-प्रेत नहीं है। पिशाच कौन है? गोस्वामीजी ने परिभाषा दी है-

कहहिं सुनहिं अस अधम नर। ग्रसे जे मोह पिसाच॥

यह मोह पिशाच हैं, यह मेरा-मेरा, इसके बिना मैं जीवित नहीं रह सकता। यह जो मोह का बन्धन है यह पिशाच है अपने को हम भूत हैं या पिशाच हैं, कौन बोले-

पाखण्डी हरि पद विमुख। जानहिं झूँठ न साँच॥

यह भूत- पिशाच, पाखण्डी, हरिपद विमुख, जो झूठ और सच का विवेक नहीं जानता, जो कामासक्त हैं वे भूत-पिशाच हैं। गोस्वामीजी ने लिखा है-

देव दनुज किन्नर नर व्याला। प्रेत भूत पिशाच भूत बेताला॥

यह सब काम आ सकता है। जैसे प्रकाश के सामने अंधेरा टिक नहीं सकता ऐसे हनुमानजी के सामने ज्ञान के सामने, प्रकाश के सामने यें भूत-प्रेत आ नहीं सकते। ऐसे श्रीहनुमानजी-

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत बीरा॥

रोग किसे कहते हैं? रोग कहते हैं मानसिक बीमारियों को। मानस रोग कछुक मैं गाई शारीरिक बीमारियां होती हैं, मानसिक रोग होते हैं और ये बहुत विचित्र होते हैं। शरीर में रोग बाद में आता है, मन में रोग पहले आ जाता है। मन के रोग भगवान् हनुमानजी की उपासना से ही दूर होते हैं। मन के रोग- काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर हैं। ये सभी रोग हनुमानजी की कृपा से दूर होते हैं। जब भी जीव कामासक्त होता है तो अन्धा

हो जाता है। नारदजी जैसे को भी इसने पागल कर दिया। लोभ जब मनुष्य के जीवन में आता है तो व्यक्ति कितना गिर सकता है और क्रोध जब आता है तो इष्ट का भी अनिष्ट करता है। ईर्ष्या, मद, लोभ, मोह के कारण सारे संसार में आज अशान्ति है, इसका कारण और कुछ नहीं, यह मानसिक रोग ही है। वह तो औषधि प्रयोग के द्वारा ठीक नहीं होते हैं। वैसे भी हनुमानजी वेदों के ज्ञाता हैं और वेद में आयुर्वेद भी है। आयुर्वेद का जितना ज्ञान हनुमानजी को है उतना किसी को नही है, क्योंकि संजीवनी बूटी को कोई पहचानने वाला ही नहीं था। हनुमानजी ही पहचानते थे लेकिन चूंकि रावण को मालूम चल गया था इसलिए रावण ने पूरे पहाड़ के शिखर पर आग लगवा दी थी तो पहचानना कठिन हो रहा था। हनुमानजी पूरे पहाड़ को ही उखाड़ लाए। अन्यथा आयुर्वेद की समस्त जानकारी हनुमानजी को है। इसलिए मैं निवेदन करता हूँ यदि मानसिक रोगों से मुक्ति चाहते है तो हनुमानजी की शरण में आओ, केवल हनुमानचालीसा का पाठ करो

जो यह पढ़ै हनुमान चालिसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।

हनुमानजी का सतत् ध्यान, निरन्तर ध्यान करें। हनुमानजी का सतत् ध्यान माने ज्ञान की उपासना, प्रकाश की उपासना, हनुमानजी का ध्यान माने हर समय भगवत नाम का सुमिरन, भगवान् की, धर्म की, सेवा यह सतत सुमिरण है। आगे-

संकट से हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।

यह नहीं कहा संकट से हनुमान बचावें, बचाने और छुड़ाने में बहुत बड़ा अन्तर है। बचाने में तो व्यक्ति दूर से बचा सकता है। जैसे कोई पुलिस केस हो जाए, कोई पकड़ लेता है आप किसी बड़े व्यक्ति के पास जाते हैं और बताते हैं कि ऐसा-ऐसा हो गया तो वह कहता है कि ठीक है हम कह देंगे, फोन कर देंगे। अब आवश्यक तो नहीं कि फोन मिल ही जाए यह भी आवश्यक नहीं कि फोन पर रिस्पोन्स पूरा दे ही दिया जाए? टाल-मटोल

भी हो सकती है। तो बचाया दूर से जा सकता है लेकिन छुड़ाया पास जाकर। छुड़ाना माने किसी के हाथ में से छीन लाना। जब भी भक्त पर संकट आता है, दूर से नहीं हनुमानजी बिल्कुल पास जाकर छुड़ाते हैं।

एक सुपंथ नाम का राजा था, धर्मात्मा था- एक बार अयोध्या में कोई संत सम्मेलन होने जा रहा था तो संत सम्मेलन में संतों का दर्शन करने जा रहे थे। रास्ते में नारदजी मिल गए। प्रणाम किया, बोले कहाँ जा रहे हो? कहा संत सम्मेलन में संतों का दर्शन करने जा रहा हूँ। नारद बोले जाकर सभी संतों को प्रणाम करना। बोले वहाँ झूठे ब्रह्मर्षि विश्वामित्र होंगे वह क्षत्रिय हैं। क्षत्रियों को प्रणाम मत करना, वह साधु वेश में कपटी हैं। ऐसा नारदजी ने भड़काया। हनुमानजी की महिमा और भगवान् के नाम का प्रभाव भी शायद नारदजी प्रकट करना चाहते होंगे। बोले जैसी आपकी आज्ञा। गए सभी को प्रणाम किया, विश्वामित्रजी को नहीं किया तो क्षत्रिय जाति का यह अहंकारी स्वभाव होता है। विश्वामित्रजी बोले इसकी यह हिम्मत, भरी सभा में मुझे प्रणाम नहीं किया। वैसे भूल हो जाए तो कोई बात नहीं। जान-बूझकर न किया जाए तो एक्शन दिखाई दे जाता है। विश्वामित्रजी को क्रोध आ गया और दौड़कर भगवान् के पास पहुंच गए कि राघव तुम्हारे राज्य में इतना बड़ा अन्याय, गुरुओं और संतों का इतना बड़ा अपमान? भगवान बोले ऋषि क्या हुआ उस राजा ने मुझे प्रणाम नहीं किया। उसको दण्ड मिलना चाहिए। भगवान् ने कहा ऐसी बात है तो कल मृत्युदण्ड घोषित हो गया। और सुपंथ को पता लगा कि मृत्युदण्ड घोषित हो गया और वह भी राम ने प्रतिज्ञा की है कि मैं गुरुदेव के चरणों की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि कल सूर्यास्त तक उसके प्राणों का अंत हो जाएगा। इधर लक्ष्मणजी ने बड़े रोष में प्रभु को देखा, पूछा प्रभु क्या बात है। भगवान बोले आज एक अपराध हो रहा है। कैसे? बोले कैवल्य देश के राजा सुपंथ ने गुरुदेव का अपमान किया है और मैंने प्रतिज्ञा की है कि कल उसका वध करूंगा। लक्ष्मणजी ने कहा महाराज, कल आपका कभी नहीं आता। आपने सुग्रीव को भी बोला था कल मैं इसका वध करूँगा। लगता है और कुछ दाल में काला होने वाला है। बोले नहीं, यह मेरी प्रतिज्ञा है। अब सुपथं रोने

लगा तो नारदजी प्रकट हो गए, बोले क्या हुआ। बोले, भगवान् ने हमारे वध की प्रतिज्ञा की है। अच्छा-अच्छा भगवान् के हाथ से वध होगा यह तो बड़ा भाग्य है, मौत तो अवश्यमभावी होती है। मृत्यु को तो टाला नहीं जा सकता। बोले कमाल है। आप ही ने तो भड़काया था, आप ही अब कह रहे हैं। नारदजी ने कहा, एक रास्ता मैं तुमको बता सकता हूँ। भगवान् के बीच में तो मैं नहीं आऊँगा। क्या रास्ता है, बोले तुम अंजनी माँ के पास जाकर रोओ। केवल माँ हनुमानजी के द्वारा तुम्हारी रक्षा करा सकती है। इतना बड़ा संकट है और दूसरा कोई बचा नहीं पाएगा। सुपथं अंजनी माँ के घर पर पछाड़ खाकर हा-हा करके रोए। माँ तो माँ हैं, बोली क्या बात है? बेटे क्यों रो रहे हो? माँ रक्षा करो, माँ रक्षा! किससे रक्षा करनी है? बोले मेरी रक्षा करो, बोली मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि तुझे कोई नहीं मार सकता। मैं तेरी रक्षा करूँगी। बता तो सही, फिर पूरी घटना बताई, लेकिन माँ तो प्रतिज्ञा कर चुकी थी। बोली, अच्छा कोई बात नहीं तुम अन्दर विश्राम करो। हनुमानजी आए, माँ को प्रणाम किया, माँ को थोड़ा चिन्तातुर देखा तो पूछा माँ, क्या बात है। बोली, मैं एक प्रतिज्ञा कर चुकी हूँ शरण ागत की रक्षा की और तुमको उसकी रक्षा करनी है। हनुमानजी ने कहा माँ, कैसी बात करती हो। आपका आदेश हो गया तो रक्षा उसकी अपने आप हो जाएगी। बोली पहले प्रतिज्ञा करो, बोले भगवानश्रीराम के चरणों की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि जो आपकी शरण में आया है, उसकी रक्षा होगी। माँ ने उस राजा को बुला लिया, बोली यह हैं। पूछा कौन मारने वाला है बोले भगवानराम ने प्रतिज्ञा की है। हनुमानजी ने कहा यार तूने तो मुझे ही संकट में फँसा दिया। दुनिया तो गाती थी संकट से हनुमान छुड़ाएं। आज तूने हनुमान् को ही संकट में डाल दिया। खैर, मैं माँ से प्रतिज्ञा कर चुका हूँ। देखो जैसा मैं करूँ, घबराना नहीं। भगवान् ने धनुष-बाण उठाए और चले मारने के लिए, हनुमानजी दूसरे रास्ते से जाने लगे तो भगवान् ने पूछा हनुमान् कहाँ जा रहे हो। तो हनुमानजी ने कहा प्रभु आप कहाँ जा रहो हो। बोले मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने जा रहा हूँ। हनुमानजी ने कहा मै भी अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने जा रहा हूँ। भगवान ने कहा तुम्हारी क्या प्रतिज्ञा है, हनुमानजी ने कहा

पहले आप बताइए आपने क्या प्रतिज्ञा की है। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा बताई। हनुमानजी ने कहा मैं उसी की रक्षा करने के लिए जा रहा हूँ। भगवान् ने कहा मैंने अपने गुरुदेव के चरणों की सौगन्ध खाई है कि मैं उसका वध करूँगा। हनुमानजी ने कहा मैंने अपने भगवान के चरणों की सौगन्ध खाई है कि मैं उसकी रक्षा करूँगा। यह लीला लक्ष्मणजी देख रहे हैं, मुस्कुरा रहे हैं, यह क्या लीला हो रही है?

जैसे ही भगवान् का आगमन देखा तो यह रोने लगा। हनुमानजी ने कहा रोइए मत, मेरे पीछे खड़े हो जाओ। संकट के समय हनुमानजी आगे आते हैं। भगवान् ने अभिमंत्रित बाण छोड़ा। हनुमान जी दोनों हाथ उठाकर **श्री राम जय राम जय जय राम॥** श्रीहनुमानजी भगवान् के नाम का कीर्तन करें और बाण विफल होकर वापस लौट जाए। जब सारे बाण निष्फल हो गए तो भगवान् ने ब्रह्मास्त्र निकाला। जैसे ही छोड़ा हनुमानजी की छाती में लगा लेकिन परिणाम क्या हुआ? प्रभु मूर्छित होकर गिर पड़े, बाण लगा हनुमान जी को, मूर्छा भगवान् को अब तो बड़ी घबराहट हो गई। हनुमानजी दौड़े, मेरे प्रभु मूर्छित हो गए। क्यों मूर्छित हो गए क्योंकि **जासु हृदय अगार बसहिं राम सर चाप धर।** हनुमानजी के हृदय में भगवान् बैठे तो बाण तो भगवान् को लगा, बाकी सब घबरा गए। क्या हो गया? हनुमानजी ने चरणों में प्रणाम किया और सुपंथ को बिल्कुल अपनी गोद में ले आए हनुमानजी ने उसको भगवान् के चरणों में बिठा दिया। प्रभु तो मूर्छित हैं। हनुमानजी बहुत रो-रोकर कीर्तन कर रहे थे। प्रभु की मूर्छा दूर हो जाए भगवान् की मूर्छा धीरे-धीरे दूर होती चली गयी और प्यार में, स्नेह में चूंकि भगवान् को अनुभव हो गया था कि बाण मेरे हनुमान् के हृदय में लगा तो उसे चोट लगी होगी तो भगवान् इस पीड़ा के कारण मूर्छित हो गए। जब यह कीर्तन करने लगे तो भगवान् हनुमान जी के सिर पर हाथ फिराने लगे तो धीरे से हनुमान जी सरक गए पीछे और भगवान् का हाथ सुपंथ के सिर पर आ गया और दोनो हाथों से भगवान् सुपंथ का सिर सहलाने लगे। नेत्र खोले तो देखा सुपंथ भगवान् के चरणों में था। मुस्कुरा दिए भगवान्। हनुमान् तुम जिसको बचाना चाहोगे, उसको कौन मार सकता है। **संकट ते हनुमान छुड़ावें।**

शनि को हमारे यहाँ संकट कहते हैं। एक बार हनुमानजी पहाड़ की तलहटी में बैठे थे। शनि आ गया हनुमानजी के सिर पर, हनुमानजी ने सिर खुजाया लगता है कोई कीड़ा आ गया। हनुमानजी ने पूछा तू है कौन? बोले, मैं शनि हूँ, मैं संकट हूँ। मेरे पास क्यों आया है? बोले मैं अब आपके सिर पर निवास करूँगा। अरे भले आदमी, मैंने ही तुझे संकट से छुड़ाया था, मेरे ही सिर पर आ गया। बोले हाँ क्यों छुड़ाया था आपने, इसका फल तो आपको भोगना पड़ेगा। अच्छा कितने दिन रहना है? शनि बोला साढ़े सात साल और अगर अच्छी खातिर हो गयी तो ढाई साल और। हनुमानजी ने कहा भले आदमी किसी और के पास जा। मैं मजदूर आदमी सुबह से शाम तक सेवा में रहता हूँ, मुश्किल पड़ जाएगी, तू भी दु:ख भोगेगा मुझे भी परेशान करेगा। शनि बोला नहीं मैं तो नहीं जाऊँगा। हनुमान जी बोले नहीं मानेगा? चलतो कोई बात नहीं। हनुमानजी ने एक पत्थर उठाया और अपने सिर पर रखा। पत्थर शनि के ऊपर आ गया। शनि बोला यह क्या करता है? बोले माँ ने कहा था कि चटनी के लिए एक बटना ले आना वह ले जा रहा हूँ। तो हनुमानजी ने जैसे ही पत्थर को उठाकर मचका दिया तो शनि चीं बोलने लगा। दूसरी बार किया तो बोले क्या करता है? बोले चिन्ता मत कर। शनि बोले छोड़-छोड़। हनुमानजी बोले नहीं अभी तो साढ़े सात मिनट भी नहीं हुए तुझे तो साढ़े सात साल रहना है। जब दो-तीन मचके दिए तो शनि ने कहा भैय्या मेरे ऊपर कृपा करो बोले ऐसी कृपा नहीं करूँगा। बोले वरदान देकर जा, शनि का ही दिन था। हनुमानजी ने कहा कि तू मेरे भक्तों को सताना बंद कर। तब शनि ने कहा कि हनुमानजी जो भी शनिवार को आपका स्मरण करेगा आपके चालीसा का पाठ करेगा मैं उसके यहाँ नहीं, उसके पड़ौसी के यहाँ भी कभी नहीं जाऊंगा। संकट उसका दूर हो जाएगा। फिर शनि ने कहा कि एक कृपा आप कर दीजिए। क्या है? बोले आपने इतनी ज्यादा मेरी हड्डियां चरमरा दी हैं, बोला थोड़ी तेल मालिश हो जाए तो बड़ी कृपा हो जाए। हनुमानजी ने कहा कि ठीक है मैं अपने भक्तों को कहता हूँ कि शनिवार के दिन जो शनि को तेल लगाएगा उसके संकट मैं दूर करूँगा। तबसे यह चौपाई आई-

संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥

दूसरा संकट क्या है? त्रिताप ही संकट है। दैविक, दैहिक, भौतिक तापा यही संकट है और इसकी मुक्ति का साधन क्या है? भगवान् का सुमिरन-

राम राज बैठें त्रैलोका। हरषित भये गये सब सोका॥

रामराज कोई शासन की व्यवस्था का नाम नहीं है, रामराज मानव के स्वभाव की अवस्था का नाम है। समाज की दिव्य अवस्था का नाम है। आज कहते हैं कि हम रामराज लाएंगे तो फिर राम कहाँ से लाएंगे? नहीं-नहीं व्यवस्था नहीं वह अवस्था जिसको रामराज कहते हैं। रामराज्य की अवस्था क्या है-

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥

यह रामराज्य की अवस्था है। व्यवस्था कैसी भी हो अगर, व्यक्तियों की और समाज की यह अवस्था रहेगी तो शासन में कोई भी बैठो राज्य राम का ही माना जाएगा। राम मर्यादा है, धर्म है, सत्य है, शील है, सेवा है, समर्पण है। राम किसी व्यक्तित्व का नाम नहीं है, राम वृत्ति का नाम है, स्वरूप का नाम राम नहीं है, स्वभाव का नामराम है। इस स्वभाव के जो भी होंगे सब राम ही कहलाएंगे। वेद की, धर्म की मर्यादा का पालन हो, स्वधर्म का पालन हो, स्वधर्म का अर्थ हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, इसाई धर्म, बौद्ध धर्म का पालन नहीं है। स्वधर्म का अर्थ है जिस-जिस का जो-जो धर्म है, पिता का धर्म, पुत्र का धर्म, स्वामी का धर्म, सेवक का धर्म, राजा का धर्म, प्रजा का धर्म, पति का धर्म, पत्नी का धर्म, शिक्षक का धर्म, शिष्य का धर्म। माने अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन, जैसे सड़क पर अपनी-अपनी लाईन में यदि वाहन चलेंगे तो किसी प्रकार की टकराहट नहीं होगी, संघर्ष नहीं होगा और जब आप लाईन तोड़ देंगे जैसे मर्यादा की रेखा जानकीजी ने तोड़ दी थी। आखिर कितने संकट में फँस गयीं। कितना बड़ा युद्ध करना पड़ा जानकीजी को छुड़ाने के लिए।

जरा सी मर्यादा का उल्लंघन जीवन को कितने बड़े संकट में फँसा सकता है। जो रामराज्य में रहेगा हनुमानजी उसके पास संकट आने ही नहीं देंगे। क्योंकि रामराज्य के मुख्य पहरेदार तो श्रीहनुमानजी हैं। तीनों कालों का संकट हनुमानजी से दूर रहता है। संकट होता है शोक, मोह और भय से। भूतकाल का भय ऐसा क्यों कर दिया, ऐसा कर देता तो मोह होता है। वर्तमान में जो कुछ सुख साधन आपके पास हैं यह बस बना रहे इसको पकड़कर बैठना यह मोह और भय होता है। भविष्यकाल में कोई छीन न ले कोई लूट न ले, भविष्य का भय। हनुमानजी सब कालों में विद्यमान हैं-

चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा॥

हनुमानजी तो अमर हैं, चारों युगों में हैं और सम्पूर्ण संकट जहाँ छूट जाते हैं शोक, मोह, भय, वह है भगवान् की कथा। कथा में हनुमानजी रहते हैं। अगर न छूटे तो हनुमानजी छुड़ा देंगे। बिल्कुल मानस के अंत में पार्वतीजी ने प्रमाणित किया है-

सुनि भुसुंडि के बचन सुहाये। हरषित खगपति पंख फुलाये॥

तीनों तब अगर दूर चले जाते हैं, छोड़ देते हैं मनुष्य को तो वह श्रीराम की कृपा से मोह का नाश होता है सत्संग से-**बिनु सतसंग न हरि कथा, तेहि बिनु मोह न भाग।**

मोह गएँ बिनु राम पद, होय न दृढ़ अनुराग॥

भगवत् कथा, सत्संग यह मोह का नाश करती है। संत-मिलन, संत-दर्शन शोक को दूर करता है। **तोहि देखि वेग शीतल भई छाती,** हनुमानजी मिले तो जानकीजी का हृदय शान्त हो गया, शीतल हो गया। **मिले आज मोहे राम पिरीते,** श्रीभरतजी बोले श्रद्धा से भय का नाश होता है। आपके मन में किसी के प्रति श्रद्धा है तो आप उससे भयभीत नहीं होंगे।

श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई। बिनु महि गन्ध कि पावउ कोई।।

श्रद्धा माने भवानी, भगवतीजी की पूजा माने श्रद्धा की पूजा है। श्रद्धा कहते हैं शुभ की भूख को, शुभ और बढ़े और बढ़े, जो कुछ पूजा-पाठ कर रहा हूँ वह और बढ़े, जो कुछ दान कर रहा हूँ वह और बढ़े, जो सेवा कर रहा हूँ और करूँ, यह जो शुभ की भूख है इसी का नाम भवानी है, इसी का नाम श्रद्धा है। जीवन में जितनी श्रद्धा बढ़ेगी उतना ही भय का नाश होगा। आगे की चौपाई-

और मनोरथ जो कोइ लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।।

और मनोरथ माने केवल भगवान् का दर्शन नहीं बंगला, कोठी, कार जो कुछ भी आपको प्राप्त करना हो-

आठ सिद्धि और नौ निधियाँ। भक्त लोग सिद्धियों से बहुत दूर रहते हैं। इसलिए हमारा इससे ज्यादा मतलब नहीं। क्योंकि भक्त तो शुद्ध होने का प्रयत्न करते हैं, सिद्ध होने का नहीं। यदि जादूगरी करनी हो तो सिद्धि प्राप्त करो। परमात्मा को प्राप्त करना हो तो शुद्धि प्राप्त करो।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा।
मोहि कपट छल छिद्र कपट न भावा।।

अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व यें आठ प्रकार की सिद्धियाँ और पद्म, महापद्म, शंख, मकर कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, और खर्ब ये नौ प्रकार की निधियाँ हैं जिनसे अपने को कोई लेना-देना नहीं-

राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।

रसायन औषधि को सिद्ध करता है और यह औषधि बहुत-बहुत कठिन रोगों का नाश कर देती है। राम-नाम का जो यह सिद्ध रसायन है वह हर रोग को दूर करता है। श्रीहनुमानचालीसा ही वह एक रसायन है ।

तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुःख बिसरावै॥

हनुमानजी का भजन करो भगवान् प्राप्त होते हैं।

अंतकाल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥

सभी सुखों को सब देवता प्रदान नहीं कर सकते। श्रीहनुमानजी सभी सुखों को प्रदान करनेवाले हैं।

संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥

जै जै जै हनुमान गौसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥

विपरीत परिस्थितियों में जब सारा संसार हमारा विरोधी हो जाये, अपने पराये हो जायें, प्रगति का मार्ग अवरुद्ध हो जाये, और चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखायी दे उस समय में भी श्रीहुनमानजी हमको सहारा देते हैं। हमारे बिगड़े हुए कामों को बनाते हैं इसलिए हमें मार्ग की कठिनाईयों को देखकर रुक नही जाना है। जीवन में चाहे कितनी ही कष्ट-कठिनाईयाँ आ गईं हो, सिर पर संकटों के बादल घिर आये हो हनुमानजी की कृपा से और उनके सुमिरण से वे पल भर में दूर हो जायेगें। उन पर भरोसा रखें और धैर्य धारण करें-

दुनियाँ रचने वाले को भगवान् कहते हैं।
संकट हरने वाले को हनुमान् कहते हैं॥
हो जाते हैं जिसके अपने पराये, हनुमान उनको कंठ लगायें।
जब रुठ जाये संसार सारा, बजरंगबली तब देते सहारा॥
अपने भक्तों का बजरंगी मान करते हैं।
संकट हरनेवाले को हनुमान् कहते हैं॥१॥
दुनियाँ में काम कोई ऐसा नही है,

बजरंग बली हनुमान के जो वश में नही हैं।
जो चीज मांगो वो पल में मिलेगी,
झोली ये खाली खुशियों से भरेगी॥
सच्चे मन से जो भी इनका धयान करते हैं।
संकट हरनेवाले को हनुमान् कहते हैं॥२॥
और देवता चित न धरई, हनुमत सेई सर्ब सुख करई।
संकट कटै मिटै सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥
इनके हृदय में हरदम भगवान् रहते हैं।
संकट हरनेवाले को हनुमान् कहते हैं॥३॥

हनुमानजी से बड़ा कौन गुरु हो सकता है। गुरु के रूप में श्रीहनुमानजी के चरणों का वन्दन करें। गोस्वामीजी ने आगे लिखा है-

जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बन्दि महा सुख होई॥

सत बार का लोग कई अर्थ लगाते हैं। कोई सौ बार लगाता है, कोई सात बार लगाता है लेकिन इसको संख्या में बांधना ठीक नहीं। मेरा मन कहता है न सात बार, न सौ बार, सत बार माने, सतत् बार, माने हर दिन। कभी खण्डित न हो, हनुमान चालीसा सातत्य के साथ एक दिन भी नागा नहीं। सतत् पाठ करें-

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा॥

कभी भी पढ़ें, कैसे भी पढ़ें, कहीं भी पढ़ें, बालक पढ़ें, बूढ़े पढ़ें, बिटिया पढ़ें, बेटे पढ़ें, स्त्री पढ़ें, पुरुष पढ़ें, शुद्ध पढ़ें, अशुद्ध पढ़ें, सिद्धि प्राप्ति होगी ही क्योंकि भगवान् शिव इसके साक्षी हैं- होय सिद्धि साखी गौरीसा॥

गोस्वामीजी कहते हैं कि जो श्रीहनुमानचालिसा का पाठ करेंगे वे भगवान् के प्रिय होंगे। भगवान् उनके हृदय में वास करेंगे ऐसे-

पवनतनय संकट हरन। मंगल मूरति रूप॥
राम लखन सीता सहित। हृदय बसहु सुर भूप॥

श्रीहनुमानजी की कृपा से और संतों के आशीर्वाद से और आप सबके सहयोग से इस प्रशान्त महासागर की गहन, गम्भीर गहराई में बैठकर इस क्रूज के आसन पर हम लोगों ने, जो भी समय मिला, श्रीहनुमानचालीसा के चालीस सिद्धि मंत्रों का दर्शन करने का प्रयत्न किया है। हनुमानजी हमारे सब प्रकार के संकटों को मुक्त करें और रामरसायन प्रदान कर हमको भगवान् के चरणों में लेकर चलें। ऐसी विनम्र विनती श्रीहनुमानजी से करते हुए फिर वही प्रारम्भ की चौपाईयों का एक बार गायन करेंगे-

सुन कपीस लंकापति बीरा। केहि विधि तरिअ जलधि गम्भीरा॥
संकुल मकर उरग झष जाती। अति अगाध दुस्तर सब भाँती॥

गुरुदेव भगवान् के आशीर्वाद से, श्रीहनुमानजी की कृपा से हनुमानचालीसा रूपी इन चालीस मंत्रों का सिद्ध-मंत्र, सिद्ध-ग्रन्थ, सिद्ध-पन्थ इसका दर्शन करने का हम लोगों ने प्रयत्न किया है। क्रूज की यात्रा से वापस लौटकर हनुमानचालीसा को भूलिए मत, सब प्रकार की सिद्धियां प्राप्ति होगी और समापन के लिए हनुमानजी की भाव भरी प्रतिमा को आँखोंमें बसाकर एक बार श्रीहनुमानचालीसा का पूरा पाठ कर लें, फिर उसके बाद हनुमानजी की मंगलमयी आरती फिर प्रसाद वितरण-

जै जै जै हनुमान गौसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥

श्री हनुमान चालीसा

-दोहा-

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधाारि।
बरनऊं रघुवर विमल जसु, जो दायकुफल चारि॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरों पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहुं मोहि, हरहु क्लेश विकार॥

-चौपाई-

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बलधाामा। अंजनि पुत्र पवनसुत नामा।।
महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवास सुमति के संगी।।
कंचन वरन विराज सुबेसा। कानन कुण्डल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र अरू धवजा विराजे। कांधो मूंज जनेऊ साजे।।
शंकर सुवन केसरी नन्दन। तेज प्रताप महा जग बन्दन।।
विद्यावान गुणी अति चातुर। राम काम करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धारि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धारि लंक जरावा।।
भीम रूप धारि असुर संहारे। रामचन्द जी के काज संवार।।
लाय संजीवन लखन जियाये। श्री रघुवीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई।।
सहस्र बदन तुम्हरो जस गावै। अस कहि श्रीपति कंठ लगावै।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनिसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहां ते। कवि कोबिद कहि सके कहाँ त।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना।।
जुग सहस्र योजन पर भानू। लील्यों ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख मांही। जलधि लांघ गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।

सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक ते कापैं।।
भूत पिचास निकट नहीं आवै। महावीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरे सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम वचन धयान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काम सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।।
चारो जुग प्रताप तुम्हारा। है प्रसिद्ध जगत उजियारा।।
साधाु सन्त के तुम रखवारे। असुर निकन्दन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधाि के दाता। अस वर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन रामजी को भावैं। जन्म जन्म के दुख बिसरावैं।।
अंतकाल रघुवर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धारई। हनुमत सेई सर्व सुख करई।।
संकट कटै मिटे सब पीरा। जो सुमरै हनुमत बलबीरा।।
जय जय जय हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहिं बंदि महा सुख होइ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसी दास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मँह डेरा।।

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप1

आरती श्री मंगलकरण भगवान की

आरती मंगलकारी की, पवनसुत अति बलधारी की।
गले में तुलसी की माला, बजाये मृदंग करताला।
हृदय में दशरथ के लाला।
भाल पे तिलक, अनोखी झलक, कथा की ललक।
मधुर छवि जनहितकारी की, पवनसुत अतिबलधारी की।
आरती मंगलकारी की .....॥

जगत के दुर्लभ जितने काज, कृपा से देते सबहिं नवाज।
नाम से भागत भूत-पिशाच।
राम के दूत, अंजनी के पूत बड़े मजबूत।
कठिन कलि कलिमलहारी की, पवनसुत अति बलधारी की।
आरती मंगलकारी की .....॥

साधु संतन के रखवारे, सभी भक्तन के अति प्यारे।
विराजत राघव के द्वारे।
श्री मंगलकरण, सकल भयहरण, मुदित मनकरण।
राम के आज्ञाकारी की, पवन सुत अति बलधारी की।
आरती मंगलकारी की .....॥

आरती सब जन मिल गावें, कृपा तब हनुमत की पावैं।
दयानिधि नाम, सकलगुन धाम, ज्ञान की खान।
अष्टसिद्धि नवनिधिकारी की, पवन सुत अति बलधारी की।
आरती मंगलकारी की .....॥

आरती सब जन मिल गावें, कृपा तब हनुमत की पावैं ।
दयानिधि नाम, सकलगुण धाम, ज्ञान की खान ।
अष्टसिद्धि नवनिधिकारी की, पवन सुत अति बलधारी की ।
आरती मंगलकारी की .....॥

बोलिए श्रीहनुमानजी महाराज की जय॥
श्री गुरुदेव भगवान की जय॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

हे ईश सब सुखी हों

हे ईश सब सुखी हों, कोई न हो दुखहारी।
सब हों निरोग भगवन, धन धान्य के भंडारी।।

सब भद्रभाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न होवे कोई सृष्टि में प्राणधारी।।

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे ना कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी, मेरे भगवन पूरी होय।।

विद्या बुद्धि तेज बल, सबके भीतर होय।
दूध पूत धन धान्य से, वंचित रहे न कोय।।

आपकी भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर।
राग द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर।।

मिले भरोसा आपका, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे नाम की, बनी रहे मन ईश।।

पाप से हमें बचाइए, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाइ के सबको करो निहाल।।

दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार।
हृदय में धारे दीनता, हे मेरे करतार।।

हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनिए कृपा निधान।
साधु संगत सुख दीजिए, दया धर्म का दान।।

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।